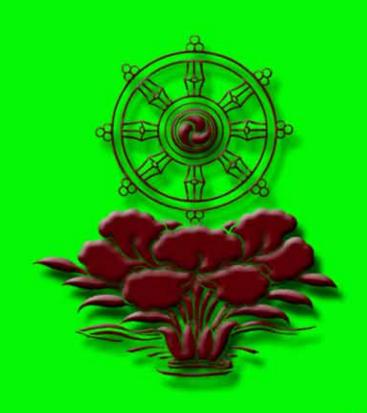
# श्चित्रवास्य वर्गेयाके वार्मा



স্ত'ন'সহ'ব'শ'শ। নন্নান'ন'সহ'ব'শ'শ। ক্রুমে'শ্রধান্ত্র' ক্রুমে'শুন'ন্ম'শ্রম'শ্রকার

ये दुः न्दः स्वा चुदः कुनः से ससः ग्रीः यदः पेवः न निदः या	. 1
नेश्रासहन्प्रित्रम्भ्रम् नार्डेश ग्रुट्रा कुनाशेस्र श्राम्य देश श्रुट्रा	1.ડા.
दह्याःसःयःत्रि	3
५५:देर् (बळव्की देव.)दे	
নান্ত্র শ'ন'(ব্রান্ট্রান্ত্রনা)ব্রা	
বা্ধ্যুম'ম'(গ্ৰুড্'গ্ৰাই্র')শ'বাই্ট্মা	
५८.स्.(इम.स.क्रेय.स.क्रेय.स.स.क्री.इस.स.य.च८.स.स.स.वर्थ.व.स.स.ची.स.स.म.	
८८.सू.(अक्ट्र-वर्ह्ट्र)त्य.याश्च्या	
<b>५५:३ॅं (</b> ५कॅ ४:५ॅ६ ५५८) <b>३</b> ।	
বাইশ্বা(ব্যুশর্বি)	
সাধ্যম'ম'(য়	
নাই শ'ন'(ব্ৰপ্ন'ব্ৰব্ৰত্ৰ')অ'ননী	
<b>५८:सॅ.</b> (वर्ह् र.च.हर.व.) <b>दे</b> ।	
गहिराम (र्रावर्षि हेर्याम स्राम्य ) दे।	
মাপ্রসাম (শ্রিশ না শ্রম না সুমানা ) ব্রী	

নল বি বি বি শ্রম্ম বা শ্রম বা নার বি বি শ্রম বা নার বি বি শ্রম বা নার বি বি শ্রম বা নার বি শ্র	8
पार्शेश.स.(प्रटशःशैटशःपुटःक्ष्यःतरःश्रीं यदुःभै अक्ष्यः)जायशिषा	8
न्दःसे (विदशः श्रुद्शः हे जाववः र्देवः नुः जाई र्वेदः सः सह नृः पः )दे।	
ম্ট্রিশ্ব'বর্ত্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র	
ग्रुस्पः (भ्रुवायायह्रयायाव्याग्रीष्यार्द्वात्त्रात्वात्यरावस्वर्याः)दे।	10
गहिरा'न'(व्यस'ग्री देशपान्त्र न्यान्त्र रा)त्य'गहिरा	10
५८:सॅ (५०१वर्ड्स क्रें हेब १०१ ब्रेट से जूट वर्ष क्रेंट से जून क्रेंट से क्रेंट से जून क्रेंट से जून क्रेंट से क्रें	11
गहिरामा (श्वेर संह स्वर से व से	13
८८:स्. (श्रुव:इसम्बन्तः)स्	13
মান্ত্ৰ শ'ম' (র্মার ইর বন্দ্র শান্ত্র শা	14
ব্দটো (গ্রদক্ষের শ্রী ক্ষম ক্ষ্রী ক্ষা মার মার ক্ষের ক্ষের ক্ষম ক্ষা মার ক্ষা ক্ষা ক্ষা ক্ষা ক্ষা ক্ষা ক্ষা ক্ষা	14
५८:स्.(जुद्धःयाबिरःयक्टेसः)ज्ञःयाष्ट्रेश	
५८:स्. (क्र्या.स.क्रॅट.खेट.२वो.य.क्षुय.५वाग.सर.यार्थश्य.)स्	
মৃষ্ট্ৰ শ'ম'(গ্ৰহজ্বাগ্ৰী শ্ৰমশাগ্ৰী শৰ্ব শেৰ্ব ক্ৰু শাবহাৰমমানা) ম'মন্ত্ৰি।	
<b>৴৴:য়৾৾৾৾</b> (য়ৢ৴৻য়ৢ৴য়ৣ৽য়য়য়৽য়ৣ৽য়য়৽৻য়য়৸ঀঢ়৽য়৽ৢঢ়য়ৢয়ৢয়ৢৢয়য়ৢয়	

५८.स.(क्रुंबा:स:अवय:रवा:यहूंशश्लेवा:रवो:य:अवय:रवा:यक्षुय:वेश:स:)तायश्लिश	16
५८.स्. (क्रीयो.स.क्रुये.स.स्.स.स.)	16
गहिराम (वरे वर्ष्य वर्ष वर्ष्य वर्ष वर्ष्य वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष	17
ग्रुसम्(हे.क्रेम्वर्ट्र्यत्र्र्य्यत्र्य्यत्र्यः वर्ष्यायः)त्री	17
गहिराम (क्षेट्र द्र द्व वित्य र उद्य क्षेत्र य ) दे।	18
ग्रुस्र'रा (व्रत्थित् प्रवेश प्रत्वेश प	19
५८:सॅ (५सदायासळॅगा.हानश्चूरानदेप्देर)दे।	19
ग्हिराम् (क्रिन्न्यायः विन्दिन् सेव्याम् रहेर निवे प्रति ।	20
ग्रुअ'रा'(वन्ध्रान्तुं से निर्देशकानिते र्ने )ते।	21
नवि'न'(ध्रेन्यामाळेन्यासेन्यामवर्हेसस्यामवे न्वे।)वि।	21
ह्मंत्रा (क्ष्रेया माळे या माये दार माये द्या माये द्या भागे हो	
५५ १ (स्वर्णेव्सर्ट्रस्य सम्बर्धिक स्वरं स	
ন্দ্ৰিস'ন'(নুদক্ষ্ণশ্ৰী শ্ৰমশশ্ৰী দিনি দিশন বুদনে) থ'না শ্ৰুমা	
५८:सॅ (इ.स्व. १३) व	
ग्हेश्राम्(न्बेजन्देश्यक्त्राम्)त्	

# न्ग्रन:ळग

ग्रुस्राप्त (र्र्भ्व पह्यायहेश ग्री सव र्ष्य ग्री हिन सम् निन्म ) या प्रेरा	27
५८:द्री. (श्रॅ्ब्स्अंश्रम:ग्री:यदःल्य्नः)दे।	27
মৃষ্ট্র শ'ম'(বর্বা ঐমম'শ্রী বর র্মের )বী	
মাপ্তামে (বি:অ:শব্রর্জিব:বি:ব্লাবেল্লুর:নবি:ক্লু:মক্তব্-)মে সেবিশা	29
न्दः सॅ · (ख्रान्स् न्स् ) दे	29
মৃষ্ট্র মান্ম (ইল্মান্মন ন্মুন ন') মান্ট্র মা	30
५८:मू.(श्रॅ्य, श्रंथ श्र	30
५८:स्. (२म) नः म्रुनः मदे न्त्रे न त्या सम्मानमा सम् सम् स्थित के न ) दे ।	30
गहिरा (दे.यशक्ष्या.यह.यव.श्रंथश्चावव.श्रंट.त.)रा.ची	31
ग्रुअ'रा'(शेसशाउदाम्सशायादो प्रदानवे स्वताशेसशार्टा देवादा प्राम्नेशायां)	ने। 32
प्रवि.स.(भर्या.पर्तेश.धे.पर्त्याग्र.स.)यू।	32
মান্ত্র শামা (বেছবা শ্রম শামার্য নার্ব বেছব্ বা ) মা বা ব্যুমা	
<u> </u>	
गहिराम (देवे प्यम् प्राप्त )दी	
নাপ্তম'ন'(ইল্ম'ন্নমন্দ'ন')বী	

निवे नि (बुद्दाक्ष्य क्षेत्र अस्य क्षेत्र यादा वाद्या वादा विक्षृत्यः) वाद्या व	36
५८:४.(श.पक्र्य.त्तरः श्रुटः हे .क्रुवे.स्थ.रटरभ.येशः सूर्योशः शहरे.तथः पर्वेयोशः तरः हूर्यः तः )	36
गर्देशम् (यद्ग्यःह्नः वद्ग्यः व्यान्यः वर्ष्ट्रम् वर्ष्यः वर्षः वर्ष्यः वर्ष्यः वर्ष्यः वर्षः वरः वरः वरः वर्षः वर्षः वरः वरः वरः वरः वरः वरः वरः वरः वरः वर	.37
ग्रिस्य (बिर्स्य केवा कि स्वीर्स्य व्याय स्वाय स	38
५८:द्राः (ब्रह्म स्थेय अया न्यवाया स्ट्रह्म व्याप्य स्थून प्यत्ये स्थाया स्थित स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय	38
गहिराम (१५ मा नक्षें साम में ना साम है ना सक्त ) है।	
ग्रिस्राम् (देशव्यायक्षयाविदःश्चित्रशास्य वर्षे वर्षात्रः)दे ।	40
নাষ্ট্ৰ শ'শ'(ঐন্ত্ৰি অক্তৰ্-)ব্যি	
ये दुःगहिराः या श्रेगाः यः निगराः या	
गहिरामाग्रह्मा क्रियामाग्रह्मा महिरामाग्रह्मी प्राचारी	र्वेच.सद्र.
कुंत्रात्रामिहेश	
५८.सू.(बर.क्य.मु.स्यम्बर्यःयः)यःयष्ट्रिया	44
<b>८८: स्रें (क्वें</b> र नदे प्यत याना सना नदा सकेंद्र न नदा सुन स वर्षे क्वें त न नदा से केंद्र न स न केंद्र न न नदा से केंद्र न न न न केंद्र केंद्र न न न न केंद्र केंद्र न न न न न न न न न न न न न न न न न न न	
र्स्च व्याया के वर्ष्य प्रायम्बर्ग वर्षा वर वर्षा वर्	
५८:मू.(ज्रुद्धःगर्बरःयन्द्रःयः)यः पद्धी	

न्दःसे (अर्हेन्यः)यःगहिषा	44
न्दःस्रिः(अर्क्चन्यःस्वःस्वेन्त्र्वेश्वःस्रिः)दे	45
বাষ্ট্রপ্রম:(অর্ক্র্ন্ন্ন্র্র্মা)মেবাধ্যুমা	
ব্দের্শি (বিশ্বাধ্যমান রুদেবেই ক্রাণ্ট্রামর্ক্রিদ্রা) থে বা ধ্রমা	
<b>与て・孔・(**) (*** (***) 名 )</b>	46
गहिरामा (हे क्षेर र्यं विष्य यह क्षेत्र ) दे।	48
মাপ্রমানে (বর্ণার্যুশ্যমাবর্ত্তার্রাইশাবর্ণার্রাক্তর্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত	
गहिरामा (रहानी सुराप्तु वारामा) दे।	49
ग्रुअ'रा'(र्ह्म् यार्युवार्यवे सर्केन्या)याप्रिया	50
न्दःसि (व्यान व्यान व्या	50
ব্দ:র্ম্ ( <sub>রিশ</sub> )প্রাবাধ্যুমা	
<b>5元光 (周ャルカエ) 名  </b>	51
মান্ত্র শ'ম'(খ্রিশনার্শ্র অ'নবি'স্কুঅ')বী	
স্ধ্র'ন'(শুষ্ট্র'ন')ব্য	
মান্ত্ৰ শ'ম' (ক্'ম্ৰন্থ)নী	

বাপ্তর্মেন (ক্রন্) বি	53
নৰ্ ম'(মুন্ন'ম')ব্য	
थ्र.स.(अ.ध्रेब.) <b>ध्री</b>	54
र्च्या.स.(श्र्य.)ट्ठी	54
न5्द'म'(बय:बर्ग)दे।	54
নক্র্র্-সাক্ষ্ম)ব্য	55
र्गु'रा'(ग्वयासेर्विराद्युव्यानः)दे।	55
নন্ত্ৰ'ন'(নান্নাশ)ব্য	56
নন্তু'বাউবা'ব'(ইঅর্জ')ব্য	56
ন্তু'ন্ত্রিশ'ন'(য়য়ৄৼয়য়য়য়য়ৣয়য়য়য়য়য়ৼয়ঢ়ৢয়	57
নাইশ্ন'(রুব্রের্রের্রের্রের্রের্রের্রের্রের্রের্রে	57
বাইশ্বা(শ্বনাবেল্যানা) প্রাবাইশা	58
५८.स्. (स्याःग्रीशःयक्षूर्भःयःयक्षूर्भःयः)	58
নাইশ'ন'(এশট্টশ'ন্ত্র্মা)আ'নাঝুমা	
५८:११. (८) व्यक्ति वा वा श्वा अ	

স্ঠিশ'ন'(গ্রহস্কেন'গ্রী-শ্রমশাশ্লী-নহি'নাৰি'র্মনাশা)বী	60
মার্থসাম (শ্রাম্ব-র্ষুব-র্ষ্মাশ-ল-রিমা-বক্তল-ব-)ব্র	60
মাপ্রস.ম.(শ্লীমপ্র.বর্ম্.ম.)ধ্র	60
८८.सू. ( <sup>क्री</sup> ड. <sup>भी</sup> चन्न.प्रक्र्य.)सू.	
মান্ত্র শ'শ'(বর্ষার্বি:শ্লুব্যাবর্ষ্র')ব্রী	
निन्। (क्र्निश्च विक्टा निवे क्रिंच विक्टा निवे क्रिंच विकास निवास	62
श्चेदिः इसः मान्यां दे।	
र्शे र्शिदे देव या निवे है।	
५८:म्.त.(क्यायर श्यापत्त्रियायत्त्रियायात्त्रः श्रृं रायते श्रृं यथा) राति श्रे।	64
५८.स्. (क्र्यायह क्र्यायह क्यायह वायह वायह वायह वायह वायह वायह वायह	64
५८:द्रीं (वादावाक्षेतायात्रभूवाक्षायात्रेतावाक्ष्यावाक्षयावाक्ययावाक्षयावाक्ययावाक्ययावाक्षयावाक्ययावाक्ययावाक्षयावाक्षयावाक्ययावाक्षयावाक्ययावा	64
স্ট্রসামা (বৃষ্ণাব্দ ক্রুণব্দ ক্রমানার্যাক্রার্যান্ত্রী ক্রমান্ত্রী ক্রমানান্ত্রী করে	
न्नेश्रास्त (लेकाविर्यंत्र १६४ का क्रुंच्य केष्य विष्यंत्र १५० विष्यंत्र १५०	
नवे'न'(श्रे वर्देन् मदे वर्ष म्यान सम्माने वर्षेन् मस्य निष्या । दे।	
प्रियापार्याप्त स्वापार्याप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्व	

ग्रुअ'रा' (द्वःश्रेद्रायदेःश्रेवायाः नुभायदेः द्वंयाः मुभायदः प्रभायभावभावर्ग्वेद्र्यः पर्वेद्वायाः )यः प्रदे	68
<b>८८१र्रे (</b> महेब्द्रान्यस्थर्मार्से द्र्या स्थित् मह्यः स्थान्यस्य स्थानस्य स्थानितस्य स्थानितस्य स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्यानस्य स्य स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्यानस्य स	ह्रेचा.स.
রুশ'ন'দ্র্র্রুব্'ন')ব্রি	.68
महिराम (वक्के नदे के इक् नदे खुवा हवा नुवा क्या नुवा नदे नदे नदे नदे के नदे के नदे के नदे खुवा हवा नदे नदे नदे नदे के नदे के नदे के नदे खुवा हवा नदे नदे नदे नदे नदे नदे के नदे के नदे के नदे नदे खुवा हवा नदे	.69
য়ৢয়ৼ৻(৻৸ঀ৽য়ড়য়য়৽য়ৼয়ৼঀ৽ড়য়৻৸ৼয়য়য়য়৻য়য়৻ঀ৽য়য়য়৻ঀ৽য়	
ब्रैवा'स'बुक्ष'स'दर्क्कें र्'स') दे	.70
नवि'न'(रदक्षेद्वसावक्षेदेशमासेद्यरस्स्त्रिष्यस्यस्थेष्यस्य स्वेत्रस्य वर्षेद्रस्य)दे।	
নবি'ন'(য়ৄলান্মন্ত্রিল্মন্ত্রিক্রন্মম্মন্ত্রা)নানবি	
५८:१. (क्र.ज.र्बूब्य.स.स्.च. १९८.वड्डीट्र.च्डीट्र.च्डीट्र.स्.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.	
नडरूपनबेद-तु-पक्के-नरूपन्दिन्नरूपः) <b>दे</b>	.72
गहिरा (भ्वानायानाकं विदेशेतान्यास्यान्यानाकं विदेशेतान्यास्यास्यान्यास्यास्यास्यास्यान्यास्यास्यान्यास्यास्यास्यास्यास्यास्यास्यास्यास्यास	
२८.मू. (र्ज्ञवासामान्यस्य विराध सूचातकर संतुर सूचा यहंता यहंता यहंता यहंता यहंता सूची मार्स्य विभास सुनि सहंत स्वास स्वास स्वास सुनि सहंत स्वास सुनि सहंत स्वास सुनि सहंत सुनि सुनि सुनि सुनि सुनि सुनि सुनि सुनि	
মৃত্তিকামে (বর্জন্বয়মায়ায়ৢমায়	
নাধ্যমান্ (বর্লুস্ম্মানাস্ক্রন্)ব্রী	.73
ग्रुअप्र'(पहेन्यश्यः क्रेत्रं प्रवृहः यदे क्रुः यक्तं )ते।	
•	

### न्ग्रन:ळ्या

न्ते न (मु: सरम् म्यान्य स्वाम्य मुरानित्य स्वम्य मुरानित्य स्वम्य मुरानित्य स्वम्य मुरानित्य स्वम्य मुरानित्य स्वम्य मुरानित्य स्वम्य स्यम्य स्वम्य स्वम्यस्य स्वम्यस्य स्वम्यस्य स्वम्यस्य स्वम्यस्य स्वयस्य स्य स्वयस्य स्वयस्य स्वयस्य स्वयस	.75
বাষ্ট্রপ্ন ম'(हेब्-ग्री-क्ष्र्य भा) অ'বাধ্যুমা	.76
५८:में (५:केंद्र:वय:दर्गेव:यर्केवा:वाश्वय:ग्री:श्रुवय:वःवहेव:यः)दे।	.76
মান্ত্ৰীক্ষ'ম'(য়ৣর'অয়'য়ৣ৾৽য়ৣ৾য়৵য়তয়'য়ৣয়	.77
ग्रुअपः (भुनमः सुः र्वेद्द्वमः दे 'द्वा'वी' चगावः चित्रेद्दुः च्युवः चः )दे ।	.79
মাধ্যম'ন'(নাৡব'য়্নায়'নিয়ৣ৾ৼ'য়ড় য়ৢ৾য়য়৽)ম'মাষ্ট্রমা	.80
ব্দটি (য়ৄঀ৽য়য়ৣ৾ৼ৽য়৽য়৽য়য়ৼয়য়ৼয়	.80
५८.सू.(४८.कु.२५४.कु.५८.कु.२.२.कू.२८.कू.५८.)त्त्र.याश्वा	.80
न्दःसे (५वे देव ५वे ५ वर्ष ५ वर ५ वर्ष ५ वर्	.80
गहिरापा(त्वामश्रमक्षेत्रक्षियान्धेम्यक्षेत्रक्षेत्	.81
ग्रुअ'रा'(देशदःश्चर्यः सर्ह्याः श्वृंदः सदेः ग्रुटः क्ष्ररःश्चुनः रेग्यायः )दे।	.81
गहिरामा (नायाम्बर्धम्य विष्यम्बर्धम्य विष्यम्य विष्यम्य विष्यम्य विष्यम्य विष्यम्य विष्यम्य विष्यम्य विष्यम्य विषयम्य विषयम्यम्य विषयम्य विषयम	.82
বাইশ্বাম (য়ু ম দু বিবদ বিশ্বম ম ম বাইশা	
५८:म् (१:३८:६८:४८:४४:४४:४४:४४:४४:४४:४४:४४:४४:४४:४४:४४	
মঠিশমে (ধূলাবশূল শ্রীমারী দেইলামানানা শ্রু মের্কর ভিলেন মৌন্মানামানার্শ্রমানানা	

# न्गानःळग

बे 'बें ' जु 'वर 'बे 'रे व्याय' पे ) ते	84
মন্ত্রিমান্থমান্ত্র্বান্ত্রের্ক্রমা) আমা প্রমা	
५८:स्.(क्रैबासायावक्क्रीरास्थाक्क्षेत्राक्षरास्य)त्याचित्र्या	
५८:स्. (१४ अरे. अरे. अरे. अरे. अरे. अरे. अरे. अरे.	
५८:द्रा. (ब्राट्याः क्रीट्रायाः वेद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्या	85
মান্ত্ৰ সামা (বাদ্ধির র্মি বাশ্বান্ত বাশ্বান্ত হা ইবাশ্বান্ত )ই।	85
पहिराम (देव सळव गुव रुष्ट्रेन सम्बन्ध सम्सि स्वर्थ स्वर्थ स्वर् स्वर्थ ।	86
বাষ্ট্ৰপ্ৰমান্ত্ৰশ্ৰন্থ্ৰশ্ৰমান্ত্ৰপ্ৰা	87
५८:द्री.(वलवाबाबादे:दर्दबार्डा)दी।	
गहिराम (मन्नरामदे क्या) दे।	87
মার্সমান (মান্ত্রির মানার্মি রেমান্ত্রমান থে মার্ম্মান মান্ত্রমান স্থান ১ বি	88
নাষ্ট্ৰ শ'ন'(ঐ ব্ৰে বি অৰ্চ্চৰ্ ) বি	89
जेतु'ग्राश्रुय'म्। जुर'कुन'ग्री'शेयय'र्षेरय'शु	বাৰুদ্ৰনা
ব্দ:মূর্ (এওর নাৰ্চ:নপ্দ্রেন) অ'বা ধ্রুমা	90
५८:मू.( <sup>श्रु∓.य.</sup> )ज.की	90

### न्ग्रन:ळ्या

न्त्रें (न्ने न य हे अ थे न्द्र न ) य न्यु आ	.90
५८:स्. (बर्ष्य अर्थे. कें. कें. कें. कें. कें. कें. कें. के	.90
ম্ট্রিম'ম'(য়ম'য়'য়ৢয়য়ৣয়ৣ৽য়য়য়য়ৣ৽৸য়	.91
ग्रुस'रा'(ज्ञुन्येर्'रावे जुर्क्ताक्चे कुंप्रव्ययायायी स्राम्यः)री	.92
गहिरामा (क्रिंग ग्री प्रिंद र्से प्रभू र प्रदेश र प्रभू या प्राप्त र र र र र र र र र र र र र र र र र र र	.92
ग्रुस'रा'(ग्रुप्टद्रायशभे विद्यानराम्रेसियानाम्द्रायः)दे।	.93
ননি'ন'নই্'ন')থ'ননি	.93
८८:मू.(श्चिम्पर्क्षानः)मू	.94
মাষ্ট্ৰ শ'ম' (বৃদ্দিই বৃদ্দেই বৃদ্দি স্থানি) বি	.94
ग्रुअ'रा'(नम्रेशःभूबासेवानवे र्नेद्र-नु नर्से नः)दे।	.95
नवे'न'(वर्र्न्न्गुवर्जुन्नवे क्रुन्नक्र्रेंन)दे।	
<b>त.रा.</b> (श्रुच.राष्ट्र.सर.द्वेच.क्षश्व.श्री.जुच.राष्ट्र.ताच.जाया.डूच.री.जीश.जूटश.श्रूट्.रोणु.झ.यार्ट्रट.यषु.	
য়য়য়য়য়য়য়য়ৢয়ৢয়ৢ	.96
५८.मू.(बिश.लूटश.क्र्री.२.२म).इ.मोट्ट.चढु.चश्रस्त.क्रीट.च.)ता.मीश्रसा	
५८:सॅ (महॅर्न्सदे द्धारा) दे ।	

गहिरामा (देशपर वहर देवाशपर वे कु अळव ) या विरा	97
५८:द्रा. (व्यथ्य.क्टर.ज्य.क्ष्योश.स.झेटश.बुट.चथटन्य.क्षेट.चर्य.क्षेट.चर्य.क्षेट.चर्य.क्षेट.चर्य.क्षेट.चर्य.क्षेट.चर्य.क्षेट.चर्य.क्षेट.चर्य.क्षेट.चर्य.क्षेट.चर्य.क्षेट.चर्य.क्षेट.चर्य.क्षेट.चर्य.क्षेट.चर्य.क्षेट.चर्य.क्षेट.चर्य.क्षेट.चर्य.क्षेट.चर्य.क्षेट्र.चर्य.क्षेट.चर्य.कष्ट.चर्य.चर्य.चर्य.कष्ट.चर्य.चर्य.चर्य.चर्य.चर्य.चर्य.चर्य.चर्य	97
गहिरा (शेयरा उदा श्चेत प्रदे विदायर्के वा प्रीदायरा ने प्यापित प्रेया परितारी का प्रीताय के विदाय के व	97
पश्चिम: (वहरः वश्चाहे: क्षेम: श्चिम: श्चिम: विकार के वा )या पश्चिम। विकार विक	97
५८:द्रें (देर:ब्रेब:कर:स्ट:बी:खुश्रावास्ट:द्वर:व्रेंट्संदे:क्रें:देंस:वर)दे।	98
महिरा (देवेर्द्व:क्रूब:चर्चन्वर्च:)दे।	98
ग्रुस्प (देग्राय प्रति प्रया सुर् प्रया सुर प्राप्त )दे।	99
ন্ধ্রিমান'(ব্লানাস্ভ্র্বায়ারাবরি ক্রুনার্ম্বারানার্ম্বারা	99
५८:द्रीं (माल्याय्यय्ययः विषाणी क्रूरः क्रेंव्यः )दे।	99
गहिरापा(नमसम्मान्द्रम्सीमानदेन्कुम्सूर्व्या)दी	100
ग्रुअ'रा'(ब्रॅुर्न्नःकुर्न्भे'ब'नवे क्रुर्न् ब्रेंन्नर्भे)ते।	100
নাপ্তিসামা (য়ৢৼ৵য়ৣ৾ৼ৸ড়য়ৢয়য়ৢয়৸৸৸৸৸য়ৢয়৸	101
५८:द्री (रूट हेर मान्द छी हेर अर्थि अवय र्ग मी क्रूर क्रेंद स )दे।	101
নাই শ'ন' (বৃশদ্দ শ্রীদ শেশ শ্রু টে নে ম শ্রুর বা দা) বি	102
না্ধ্রমামা (খ্রন্মান্তর্মান্ত	103

মাষ্ট্ৰ শ'ম'(নুইশ'নানি')ব্যি	103
নাপ্তাপ্তাম (অইনা.) ব্যান্ত পা	105
न्दःस् (रद्द्वावःवःवङ्ग्रह्मा । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	
न्दःसें (रदःमें देव सुनःसः)त्यः या शुस्रा	
न्दःसे (अयमःग्रेट्सःसूर्दःदेःद्रगदःचःवर्झ्यःसः)दे	
गहिरामा (सेसराने हेन्द्र प्रमाण्येन नहीं समा) दे।	107
ग्रुस'रा'(हेर्-र्गवःनदेःशेस्रशःहेर्-र्श्यन्त्ववःनःनहेर्स्यःरः)दे।	108
বাইস'ম'(শ্ৰহ-শ্ৰু-র্ম্ব-ম-)ম্ম'মাধ্যুমা	108
८८:मू.(श्रथ्य.१३५.की.की.य.र्थत.श्राच.)ता.की	108
५८:मू. (वर्ष्, यद्य वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष	108
गहिरामा(न्त्यानावर्ष्यसामा)दी	109
ग्रुस'रा'(व्र-प्ट्सिश्याना)दे।	
नवि'न'(श्चेर-श्चेर-सदे-श्वाप्तर्ह्सम्पार्ग)वि	
र्ति.स.(धिरे.सर्रस्थे.पर्युष्टु.र्सेयो.यर्ज्यातर्ष्ट्रश्चरातः)यू।	
ন্ট্রিশ্ ম'ম'(ব্রি ক্রু শ্লুব বা ঐ অম ব্রুম বা ) ম'মান্ট্রিমা	

# र्गार क्या

८८:स्. (११४:श्रीय:स्रोत्य:सः)	.110
याद्वेश्वःतः(विशःश्चेतःश्वःतः)द्वी	110
নাপুম'ম'(বর্'নই'য়	111
५८.स्. (सर्यासम्बद्धान्यानम्बीतासः)	111
महिरान (तरे ना सम्बद्धन पा निर्मुत पा )दी	111
স্ট্রিশ্সামা (বাল্বর দ্বার বাল বাল্বর	112
নাইশ্ন (ঐন্তর্ন অক্তর্ণ)ই।	.113
ये दुः नविः मा नगः विं नः नश्रू नः मा	
महिरामार्श्वे नामार्स्याम् स्वामुन्यायार्श्वे नामार्थे स्वायामित्र	114
५८५ (वटाकुनाग्री सेसमार्सुटानाद्दानडमानासी द्रसमान्य वेदानदे प्यत्रायाना	
বনার্লেন্-র্ম্র্র্র্রেল্ড) শে শ্রান্তি শা	.114
५८.स्.(जुदुःचल्ट्रचन्द्रचः)त्य.चाशुस्रा	
५८:सॅ (ननार्षे ५ नक्षें अ कुवा अर्दे र नक्ष्र्व पा) दे ।	
বাইশ্বাব (ক্রুশ্বর ব্রশ্বর ব্রা	
५८:१.(वटक्ष्यःग्रे:अंधश्यायायाः व्याप्य प्राप्त वर्षेत्रः वर्षे स्थायः )या प्राप्त है स्था	

५८:में (ब्रूट्स्प्याक्ती सेस्याईट्र्ट्स्य से स्ट्र्य से स्ट्रूप्स से स्ट्र्स्य से स्ट्रूप्स से स्ट्र्य से स्ट्र्य से स्ट्रूप्स से स्ट्र्य से स्ट्रूप्स से स्ट्र्य से से स्ट्रूप्स से से स्ट्रूप्स से	115
गहिरामा (र्म्यामिक ) या गुरा	116
५८:मू. (रथ. वर्ग्य र. वर्ग्य. युष्टा वर्ष.	117
५८:मू. (रथ. तसूर तसूर तसूर नहीं में सक्तर)	117
गहिराम (दे स्वरंभेश बेद द्वाद मार्गे दे ।	
নাপ্রস্থান (ব্যাঝান শ্বন্ধান ন)ব্রা	
বাষ্ট্র মান্ত্র বিশ্বমান্ত্রমমান্ত্রম্বর বিশ্বমান্ত্রম্বর বিশ্বমান্ত্রমান্ত্	119
५८:१. (व्हरक्ष्यक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षक्षक्षक्षक्ष्यक्षेत्रक्षक्षक्षक्षक्षक्षक्षक्षक्षक्षक्षक्षक्षक	120
गहिराप्त (ब्रह्म केस सम्बन्ध मान्य म	
भर्छ्दशःश्वेदःदर्बाद्य्यः पर्वे रादर्बे	121
ग्रुअ'रा'(दे'द्यांची'कु'यळंव')दी	122
गशुस्राद्धाः (सः इतः सः सः वत्रा वर्षे दसः सरः वशुरः तः ) दे ।	
মৃষ্ট্র শ'ম'(নশ্লুন'ন'অ'নন্'অঁচ্'ন্ত্র'ন')অ'মা শ্রুমা	
५८:सू.(केश्रास्मिट्यायायया.ची.या.मी.	
५८:द्री (ध्रेना:क्षुट:अ:अ्ट्रक्र व दर्वे र न क्रुट् ५ व व व व व व व व व व व व व व व व व व	

মাষ্ট্রপামা (মন্মান্ত্র্মার্রমানত্র্মান্ত্র্মান্ত্র্নার্ত্র্মান্ত্র্ন্ত্র্মান্ত্র্ন্ত্র্ন্ত্ন	124
বাপ্তরেমে (ব্লান্র্রিমান্ট্রিমা	125
५८:द्रें (ज्रूरक्ष्यःक्षेत्रः	125
गहिरामा (इंबर्स्स ह्यून प्रस्वाप्य विष्य प्रमान्य विषय )दी	126
नवि'रा'(६व.७र्क्ट्र्स् मुंग्रेश.व.२वो.च.श्चुच.चदे:भ्रवश्चेन्रचः)त्य'न्य्युया	127
५८:मू. (८व.७र्बूर.भ्रेश.व.८वो.च.भ्रुव.यदे.भ्रुवश्यंत्रेट्र.यः)दे।	127
गहिरापा (वदे वर्षे क्राप्त क्राप्त क्राप्त व क्राप्त व वर्षे क	127
ग्रुस'रा' (द्व'दर्बे 'यम्भंवेद'रु' घर'रार'र्गाद'र्व')दे।	128
स्याप (न्यायर्द्ध राह्ने न् न्यायायाये क्षु याळ्यः ) दे ।	129
বাইস'ম'( ব্লা'ন'নশ্লুম'ম'ম'ম্বান্ত্র'ন')ম'বাধ্রমা	130
5८:में (बूर्यानसन्सारिक्षेन्यामस्य स्थानस्य दे हुँद्यानस्य द्यात्मन्य देव्या	130
गहिरामा (त्त्र वर्षे मासूना नस्या वर्षिन स्था वर्षे वा र्र्धे मास्य स्था ने अन्ते अन्ते अन्ते वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे अस्ते । वर्षे	
ग्रुअप्र (देशव् क्षेन्य प्रेत् निष्ठे व क्षेत्र क्षेत्	
५८:द्रें (५०१० वर्डे र व्याप्त्र वर्षा प्रतो प्राच्याय वर्षा प्रताम वर्षे अत्रत्य वर्षे अत्रत्य वर्षे यात्र वर्षे वर्षा वर्षे वर्षा वर्षे	
गहिरामा (क्रे.वर्देस सुवा वस्या श्रीम प्राप्ता) दे।	

### न्ग्रन:ळग

ग्रिस्तर (ब्रिसर प्रत्वेदि स्वानस्य क्रिस्तर विस्तर )ते।	133
नवे'न'(देशदार्श्वापारार्श्वेदावेदाद्वोप्ताव्यव्यद्ध्यर्भेष्यायवेत्कुःसळ्द्र)यात्रेर्	133. ا
५६:द्रें (५०१० वृद्ध्य प्रमान्य व्यास्त्र प्राप्त प्रमान्य व्यास्त्र प्रमान्य प्रमान्य व्यास्त्र प्रमान्य प्रमान्य प्रमान्य व्यास्त्र प्रमान्य व्यास्त्र प्रमान्य व्यास्त्र प्रमान्य व्यास्त्र प्रमान्य व्यास्त्र प्रमान्य प्रमान्	133
गहिराम (र्स्ट्यायदे कु प्रयम्भान )ते।	
নাপ্তমানা (ধূৰাস্ত্ৰমে ক্ষুমান নান্ত্ৰনা) নানাপ্তমা	134
५८:मू.(११४.११८११११८१११८१८१८१८१८१८८८८८८८८८८८८८	135
५८:में (क्रॅब्सॅर्ऑट्सण्ग्रीसप्टरायामार्बेर्पान्त्रीट्रायानेस्त्राची क्रिक्स स्वामानेस्त्री क्रिक्स स्वामानेस्	135
५८:द्री.(रद:रेबर:श्रेरेकर:श्रेरेक्ट)	135
गहिराम (श्वाप्तस्याद्यवासेदायासे द्या से द्वाप्त से द्वापत से द्वा	136
गशुस्रात् (वर्षेत्राचेत्रवरेत्रास्रवराष्यायः)वे।	137
प्रवि'प्र'(हॅ्ब्'ब्रॅट्श'ग्रें)र्मे्ग्वराध्युर्ध्ये पुर्प्यदेत् क्रुं यहंद्र)दे	138
गहिरामा (ह्र्यास्यायाय वर्षे न्यायाय से म्याया । या प्रिया	
५८:मू.(अञ्चलक्र्याविष्ट्राचाने	
गहिरामा (सुरायाम् र्मान्यम् रामान्यम् रामान्यम्यम् रामान्यम् रामान	
ग्रुअ'रा'(दे'मर्विस'यदे'ळेद'रु'र्क्केदेश्च्रीयश्चर्सेद्वर्ग्यः)दे।	

येतुः स्था ने यः न विदः न यूरः या	
সৃষ্ট্ৰ শ্বান (ঐ ব্ৰে বি শেক ব্ৰ শ) বি	150
ग्रुअ'रा'(इन्वक्षाद्धूटक्'रेन्वक्षाय्यक्षेत्रक्ष्यादक्ष्यट्येर्ड्क्रिट्रेन्व्यायः)त्रे	148
মান্ত্ৰী শ'ম' (ক্ৰু: খ্ৰী ব'উ র্থে বা অ শ' ব্ৰুদ্দে ব শ' ব স্ক্ৰী ব'বা স্থাই ব'বা ব স্ক্ৰী ব'বা স্থাই ব'বা বিশ্ব বা স্থাই ব'বা বা বিশ্ব বা বা বিশ্ব বা বিশ্ব বা বিশ্ব বা বিশ্ব বা বা বিশ্ব বা বিশ্ব বা বা বা বা বিশ্ব বা	147
५८.स. (४८.कि.र.कु.र.की.क्ष्रेय.का.क.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.	146
মাপ্তমানা (বন্দ্রমাধ্যমের র্মুন্র্রমান র্মুন্নর্ম্নানা) মানাপ্তমা	146
गहिरापा(त्राव्यापारक्रिंव सेंद्रायि प्रत्युर्त्य विश्व विश्व प्रत्युर्त्य विश्व विष्य विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्	145
५८.मू. (ध्र्य. श्रू. श्र	144
ग्रुअ'रा'(देशक्रिंद्रॉट्शम्बिंद्रायदे श्रुंद्राचायावहेंद्रायद्रियाया )य'ग्रिश्	.144
সাধ্যমান (য়ৄয়	
স্ট্রিশ'ম'(নাল্ব'র্ন্ব'র্ল্বলস্কল্মণ্ট্র) ক্রু'অব'নমন্শান স্থ্রন্নর্রন্নিল্মণনা)বী।	143
५८:मूर् (रट:र्र्व:स्व:क्र्वंग्य:ग्रे:क्रु:धेव:यय:दगवःश्चुट:वर्वेट:देग्यःय:)दे।	142
गिरेश्या (ह्रॅब्स्सॅर्स्सम्बर्ब्स्स्यम्बर्स्स्यम्बर्स्स्वर्ध्यम्भ्या मि	142
५८.५. (११ व. ११ व. ११ व. व. ११	141
गहिरामा (इत्स्वर्स्य स्ट्रान्य देन्य प्रमुन्य स्ट्रान्य	140

८८:मुं (क्वेंदे:इस मानमा) या मा सुसा	151
५८:मू.(अंश्रम्यभेंदे.वंश्वर्यायाः स्थ्रियः देश्य्यं क्षेत्रः स्थ्रियः स्थिते स्थ्रियः स्थ्रियः स्थ्रियः स्थ्रियः स्थ्रियः स्थ्रियः स्थ्यः स्थ्रियः स्थ्रियः स्थ्रियः स्थ्रियः स्थ्रियः स्थ्रियः स्थ्रियः स्थ्रियः स्थ्रियः स्थिते स्थ्रियः स्थ्रियः स्थ्रियः स्थ्रियः स्थिते स्थ्रियः स्थ्रियः स्थ्रियः स्थ्रियः स्थिते स्थिते स्थिते स्थिते स्थ्रियः स्थ्रियः स्थ्रियः स्थ्रियः स्थिते स्याः स्थिते स्य	151
गहिरामा (वनशक्षाने में ने	
নাপ্রমান্ত (বশ্বনান শের্র্রান দের ইমানান প্রামান প্রামান	
বাইসামা(অর্থেশ্লান্স্র)থ্যবাইসা	
५८:मू.(जुद्धःमाबुदःम्बन्दःमः)त्यःमाद्गेशा	155
८८:मू.(४४४१४१.जुर्वःक्षेत्रःक्षेत्रःक्षेत्रःम्यरःयक्ष्टःसः)ज्ञःयत्वे।	155
५८:स्.(यक्षयःयःयक्षदःयदः व्यवसःस्रेसस्ययःयक्षुदःयः)त्यःयाशुस्याः	155
55.4. (มุทานที่ยนกายทาง เปลี่ยนกาย เปลียนกาย เปลี่ยนกาย เปลี้ยนกาย เปลี้ยนกาย เปลี้ยนกาย เปลี่ยนกาย เปลี่ยนกาย เปลี่ยนกา	155
५८:सूर् (अस्त्र वर्षे राया सर् रायक्षेत्र या) है।	155
गहिरामा (असमान्समानवे हेमान) है।	156
মাধ্যমান (প্রমশন শ্বুদান বিশ্বর র্টের ) মা স্বিধা	
<b>5</b> ८:द्रॅ. (अर्ट्र र प्रमुद्र)	
নান্ট্রশ্ন (ক্রশন্পদ্র)ব্য	
ন্ট্রিশ'ন'(বিশ্রন্তু অভ্নে) শ'ন্ট্রিশা	

५८.सू.(१४.१.४४४.४४.४८८)त्त्र.म् योश्रम	158
५८:द्रा.(बर.)द्री	
মাষ্ট্র শ'ম'(ইনাশ'ম')ব্রী	
নাপ্তমান (ব্ৰান্ধুন)ব্য	161
ন্ধ্রিসামা (অ্ব'দ্ব'শ্রম্মান্মান্মান্মান্মান্মান্মান্মান্মান্মা	161
५८.सू.(श्चेष्ट्रेय.स्थाय.स्या.स्थाय.स्या.स्थाय.स्या.स्या.स्या.स्या.स्या.स्या.स्या.स्	
५५:११ (श्वेत्रायंत्रायंत्रायंत्रायेत्रार्ट्ट्यायायाय्य्येत्रायायायायायायायायायायायायायायायायायायाय	
गहिरामा (महिन्मिते सेससमा मिससमा सम्मा सम्मा सिन्मित्र सम्मा समा समा समा समा समा समा समा समा समा स	
মান্ত্র সামে (ক্র্লাট্রমমার্মমান্মমান্যান্যমান্যা) মান্ত্রমা	
५५:द्री (द्वाया विस्त्रसा ग्री प्यमः विद्वा है नामा पार्से नामा वर्षा विदेश से स्रमा वदा वर्षा स्थाप स्थित । विद्याप स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्थ	
गहिरान (क्रिंट क्षेत्रक क्षेत्	164
মার্মেম (বর্হ দের্মম্মশন্ম ন্যান্ত্রম দে ) মে সার্ম্বা	
55:द्रॅ.(१४)द्री	
নাষ্ট্ৰ শ'ম'(ব্ৰ-)ব্য	
নাপ্তম'শ'(ব্ৰ'ইব্'শ্বুম্ন')বী	

नवि न (मईद्र प्रमुक्ष श्रेश्र श्रेश्र श्रेश श्रेश श्रेष्ट )दे।	166
न्यात्रात्रात्रव्यात्रात्रात्रात्रात्रात्रात्रात्रात्रात्र	
र्वाःतः(विश्वःस्वःश्रेश्रश्वःस्वाःश्रश्वःसः)द्री	167
নাপ্তম'ম'(য়য়য়য়য়য়ৣয়	168
५८.(यक्षेत्रतः)स्.सी	168
নাইশ্বা(নন্দ্র)অ'ননী	169
५८.स्. (अञ्चरानदेःक्ष्यः)द्री	169
বাইশ'ন'(বশ্বদ্দের্বিশদের কু'মক্তর')বী	
বাধ্যম'শ'(নশ্বুদ্ম'নাই'ন্বর'র্জর')বী	170
नवि'न'(श्रेश्रश्मर्युद्दन'य'सुर्म्सुरम्नुद्दन')वि	171
गहिरापा(अध्ययनधुरानवेष्यनयःइव्यप्तर्भ्यानवेष्यः वर्ष्यः वर्षः वरः वर्षः वर्षः वरः वरः वरः वरः वरः वरः वरः वरः वरः वर	171
५८.स्. (४४४.स.)स्	171
নাইশ্না(ব্ৰপ্নব্ৰা) প্ৰাবাইশা	
५८.स्. (चेश्रायविष्युर्ध्यायुर्धिययुर्धिययुर्धिययुर्धियुर्धियुर्धिययुर्धियुर्धिययुर्धियुर्धियुर्धियुर्धियुर्धियुर्धियुर्धिययुर्धिययुर्धिययुर्धिययुर्धिययुर्धिययुर्धिययुर्धिययुर्धिययुर्धिययुर्धिययुर्धिययुर्धिययुर्धिययुर्धिययुर्धियुर्धिययुर्धिययुर्धिययुर्धिययुर्धिययुर्धियय्ययम्ययुर्धियय्यम्ययुर्धिययम्ययम्ययम्ययम्ययम्ययम्ययम्ययम्ययम्ययम	
५८:११.(२४:५४:२८:२४:४.२८:२४:४:४४:४४:४४:४४:४४:४४:४४	

गहिरामा (विश्वास्याम्याम्याम्याम्याम्याम्याम्याम्याम्याम	173
মাপ্তমানে (জ্লাট্রমশার্কান্না-দু-র্মান্ক্র্যুম-র-)ব্রী	
नवि'न'(र्क्ष्व नगम्य मधि नमे न महिम्य मा भी	174
स्यात् (इराया न्याया विष्या प्रति । विष्या प्रति । विष्या । विषय	174
गहिरामा (वियानविदानशुमानवेषात्रमायश्चानव्यामानश्चमान)या गहिरा	175
५८:मू. (यक्ष्यःयः)	175
বাষ্ট্রপ্রমা (ব্রপ্রস্থা ব্রাধ্য ব্রা	
५८:सॅ (ध्रेंदे क्रेंद्र द्यो प्रदे प्र वेश याहेद या प्रहेद प्र )दे।	176
ग्हेरामा (बदानी क्रेंब स्वायन बेंब पीट पार्चेट पार्च पार्चेट पार्च पार	177
মাধ্যমান (হর মধ্য প্রমান নির মন্ত্রী ক্রমা) মান ক্রিমা	177
८८ स्था के क्षेत्र के कि प्राप्त के कि	177
गहेरामा(देल्यस्वेस्ववेदःश्चेर्द्धः)दे	178
ग्रुअ'रा'(इक्'य'र्द्द्रलेश'विक्'ग्रीश'शेशश'वश्रुद्द्रविः श्रुंद्द्र्याय'	
বর্মবশ্যব্যক্ত্রিন্দ্র বিশ্ব বিশ্র বিশ্ব ব	178
५८:मू. (য়ৄয়য়য়ড়য়	

### न्गरःळग

न्नःसं (क्वें नश्यः क्वें नुवाक्षः व्यव्यन् यः )यः नश्या	179
५८:मू.(बिश्चरचा.मी.पीय.बुँ २.ज.चध्या.च.)ज.य.चुं	179
५८:मू. (बिश्राक्ती.ची.यह सूर्य. २. भीष स्थ्राय के थी	179
गहेराम(क्ष्यार्थ्यार्थान्दरक्षेत्राचित्रस्यात्त्रः)याप्ति।	180
५८:द्री. (श्रेवा.वीश.चक्ष.वर्ष. गीय. श्री र. श्री र. वक्षेत. त. )	180
गहिरामा (त्रानदे के दे क्रम्या के के	180
ग्रुअ'रा'(ग्रास्त्रमाम्बद्गानुद्गर्द्रस्यायायाद्गेसूरानुन्न)दे।	
नवे'न'(द्यानक्षकानदेक्तें हे सून्तुन)वे।	181
गशुस्राप्त (श्वें प्रत्यसम्बद्ध प्रतः) दे।	182
नवे'न'(ग्रम्भानक्ष्म्याम्माम्भा)वे।	182
ন্ ব্ৰিম্ম শে (য়য়য়য়৾৽শুর য়ৣ৾ ৼ৽য়৽য়য়য়৽)য়৽য়য়৾য়	
५८:स्. (अत्रम्ये चतुः दश्चेषायायायायायायायायायायायायायायायायायायाय	
गहिरामा (न्नो नाया हे नाडेना समायगुमा से प्रमुमान महना सा ) दे ।	
মাপ্তমানে (বাধ্য-ব্নাবান্ত্র-বন্ত্র-শ্লব্য-বন্ত্র-শ্লব্য-বন্ত্র-প্র-শ্লব্য-বন্ত-শ্লব্য-বন্ত্র-শ্লব্য-বন্ত্র-শ্লব্য-বন্ত্র-শ্লব্য-বন্ত্র-শ্লব্য-বন্ত্র-শ্লব্য-বন্ত্র-শ্লব্য-বন্ত্র-শ্লব্য-বন্ত্র-স্লব্য-বন্ত্র-স্লব্য-বন্ত্র-স্লব্য-বন্ত্র-স্লব্য-বন্ত্র-স্লব্য-বন্ত্র-স্লব্য-বন্ত্র-স্লব্য-বন্ত্র-স্লব্য-বন্ত্র-স্লব্য-বন্ত্র-স্লব্য-বন্ত্র-স্লব্য-বন্ত্র-বন্ত-বন্ত্র-বন্ত্র-বন্ত্র-বন্ত্র-বন্ত্র-বন্ত্র-বন্ত্র-বন্ত্র-বন্ত্র-বন্ত্র-বন্ত্র-বন্ত্র-বন্ত্র-বন্ত্র-বন্ত্র-বন্ত্র-বন্ত্র-বন্ত্র-বন্ত-বন্ত্র-বন্ত্র-বন্ত্র-বন্ত্র-বন্ত-বন্ত্র-বন্ত-বন্ত্র-বন্ত্র-বন্ত-বন্ত্র-বন্ত্র-বন্ত্র-বন্ত্র-বন্ত্র-বন্ত-বন্ত্র-বন্ত-বন্ত-বন্ত-বন্ত-বন্ত-বন্ত-বন্ত-বন্ত	
ন্ট্রশমা(৪য়য়য়য়য়য়ৢয়য়)য়য়ঢ়য়ৢ	

५८.मू.(अय.ग्री.चश्चर.स.ध्यय.स.चश्चर.स.)ता.चीश्चरा	186
५८:द्री (क्षाम्बेरमी ५न८:५ क्षेत्रक्र न)	186
নাষ্ট্র শ'ম' (ইব্ মৌ ব্ দেই ক্ট্রির্ ব্ দেক্ত্র ক্ট্রের্ ব্ দেক্তর ক্ট্রির্ ব্ দেক্তর ক্ট্রের্ন ক্ট্রেন ক্ট্রের্ন ক্ট্রেন ক্ট্রের্ন ক্ট্রেন ক্ট্রের্ন ক্ট্	186
ग्रुसम्(बुक्वेन्यदेकेन्युक्केन्युक्केन्य्यस्यक्ष्यक्ष्यः	187
८८:मू. (यक्षेव.य.)ध्री	187
বাষ্ট্রপ্রমে.(বন্ধর্মনে)ক্রন্ত্রো	187
५८:द्री. (११व. ११८ ४ . १९) वर्षे र. १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८	188
বাইশ্নে (র্নিন্নে র্মন্থার ক্রাই শ্বেম্ন্ত্র বা )বি।	188
ग्रुस'रा'(ह्रेन्'नगुर्र्श्वाश'ग्रें)कें हे क्ष्र्र ग्रुन्)ते।	189
नवि'न'(ग्वित्र देव'वारोस्य मदेखें हे क्षूर ग्रुप्त )वि।	190
य्नात् (ब्रिंनन्दर्वुयामार्थेष्य्रासार्थेष्य्रासार्थेष्य्रासार्थेष्य्रासार्थेष्य्रासार्थेष्य्रासार्थेष्य्रासार्थेष्य्रासार्थेष्य	190
নাপ্তম'ন'(র্ষ্ব'ন্ধু'ন')বী	191
ন্ট্রেম'ম'(য়য়য়য়ৢয়	
५८:सॅ (ऑ.ऑवे.याहेद-सॅश.नशु८.या)दे।	
নাই শ'শ'( খ্রুব র্মিন নেই লাই ব র্মিন) বী	

# न्ग्रन:ळग

মা ব্যুষ্ণামা (নাই) বার্মারা নামার্ম্বারা নামার্মারা নামার্মিরা নামার্মারা নামারামার্মারা নামার্মারা নামার্মারা নামার্মারা নামার্মারা নামারা নামার্মারা নামারা নামার্মারা নামারা	.193
মৃষ্ট্রিমামা (ব্রী বরি র্ক্তমান্ধুর ঘরি ক্রু আরি মমানান্ধুর ক্রু না) মান্ট্রিমা	.194
न्द्रें (क्ष्याविष्ठश्याया क्षेत्रें नामने क्षु त्युशाया क्ष्याश्या श्वराना भागा श्वराना भागा श्वराना	.194
५८:मू. (धिमात्ताक्रयोमात्तरः शु. स्योमात्तपु. रेता मात्रपु. रेता मात्रपु. रेता मात्रपु. रेता मात्रपु. रेता मात्रपु. रेता मात्रपु.	.194
মৃষ্ট্র শ'ম'(এশস্ত্র নার্হ নেম নর্ম্ব্রি ম'ম')ব্রি	.195
নাপ্তিসানা শ্বিশ বা শ্বিশ বা শ্বিশ বা শ্বিশ বিশ্ব না না শ্বিশ বিশ্ব না শ্বিশ বা শ্	.196
न्नःसं (लुकावाक्तःन्दाक्तराष्ट्रोत्वकानह्याकात्राधीन्। नहत्त्त्रस्यात्रेदाक्ते स्क्रीदाक्ते स्वाति स्क्रीदाक्ते स्क्रीदाक्	196
गहिरामा (श्वेदार्श्येदायाक्षणक्षणयम् स्रोदिष्णयामः)दे।	.197
प्रवि'प्र'(स्काःकवाकाःसर्स्योः देवाकाःसदे क्रुःसळ्दः)दे।	.198
स्याप (ह्यू रात्रावहेना अप्य अप्नो प्याय में व्याय रात्रेना अप्याय विष्या विषय विषय विषय विषय विषय विषय विषय विषय	.198
५८:मू. (श्रुम.२.५:वक्के.चम.वर्ड्समायदे.धमावर्ट्न.म्बो.च.वा.चर्म्वास्यम्)	.199
गहिरामा (व्याव द्वार व्याप्त क्षेत्र व्याप क्षेत्र प्रमान क्षेत्र	
মাধ্যমান (য় হব ট্রিব বশ বর্ষ দেইন ইব স্থুব দু মান্ত্রমান স্থী	.200
न्ते न्त्रं (मुदेः क्वें न्ववा हे से सम्बन्धन मानी ने व क्वा मानी के व क्वा मानी के व कि का मानी के विकास के कि	
মৃষ্ট্র মান্ম (ব্রী বাব ক্ষ্মুর বাবে আব্রম বান্ম নুর না) যো বা ব্যুষা	

# न्ग्रम:ळ्या

५८:में (म्यायामवि:गुन्धुं ५:गुन्यास्याम्याम् अपा ग्यास्याम्याम्याम्याम्याम्याम्याम्याम्याम्याम	201
५८:मू. (गविष्ट्र-स्त्रे संस्क्रिक्ट है.क्षेक्ट वी. )	202
गहिराप (ल.वर्ना वर्त्र के वित्त वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष	202
ग्रुस'रा'(र्र्युट्र'यःसहंदस्यःयस्यागुद्रानुःचःनक्षुतःयः)दे।	
	203
५८:मू. (वर्षत्त्र वर्षः है.केर.वे.व.)	203
गहिराम (वर्ष सर क्षाय वर्ष स्थान वर्ष है स्थ्रम ज्ञाय ) दे।	204
ग्रुस'रा'(नर्स्न्वस्थानेन्यायाहेरक्ष्रान्यान्)ते।	204
ননি'না'(বালব'নী'র্লেব'নইন্'নই ক্র'ই'ম্বেন্ট্র'ম্ব')বি।	204
न्यात्र (नाव्य न्याय प्रमास्य	205
মাপ্তমানে (শ্লুনাগ্রমান্ত্রীলেশান্ত্রিশ্বরে ন্ত্রানাথামানশান্মন্ত্রানা) মান্ত্রমা	
५८.स्. (श्रु.चदे.क्.हे.क्षेत्र.चि.च.)	
गहेरापा(वस्वतं के हे सूर वु न )वे।	
ग्रुस्राप्त (द्र्यो वदे त्यम त्वव द्विया द्र त्ववेष वर वु वः ) व्या या शुस्रा	
५८:सॅ (श्वेदायवे विटाइट्यर उदाय श्वेदाय नुप्त )दे।	

### न्ग्रम:ळ्या

गहिरामा (न्वो वदे वसा इससा रूट क्षें वसा ग्री सा ग्री या ग्री	208
ग्रुअ:मः(न्ने नर्ने नर्ने नर्ने न्त्र भर्ने न्तु न्त्र भर्ने न्त्र में भर्म नह न्यू भरम् मा स्थान्य भरम् । से	
মাপ্রমান (প্রশ্ন হব ইব ট্রি ট্রি ন্ট্রি ক্রে ট্রেমমান্ম নম্মন না ) মা মাপ্রমা	
८८:द्री.(गवन:र्र्न, व्यून:व्यः)द्री	
ন্ট্রশ্ন (ব্রট্ড শ্রম রম মর্লি শ্রম ব্রম ব্রম শুবর শুর্বি শুর্বি হা ।	
५८:मू.(बर.बुर.बुश्वर)त्य.याश्वया	211
५८:सॅ (ब्रम्बॅम्ब्रुव्यद्दाक्षे क्षुव्यद्दाक्ष्य क्षुव्यद्दाक्ष्य क्षुव्यद्दाक्ष्य क्षुव्यद्दाक्ष्य क्षुव्यद्दा	211
মাই শ'ম'(ন্তু:ন:শ্ৰব্জেল্মান্ত্ৰী:জ্বি:বু:ব্ৰ্মান্ত্ৰালার্কিব্নেম্নে:খ্রান্ত্রানা)বী	212
ग्रुअ'रा'(खुक्षःश्चेद्वार्यरःवार्हेरःवदेःनुकान्दःन्वोकायःवन्नन्य)वे।	213
মৃষ্ট্র শ'ম'(ৼ্রশট্রশন্ধূ'ন')অ'মাসুমা	213
५८:मू. (क्ष्मानन्दिः क्षान्त्राचिः क्ष्मानाचिः ख्यानाचीः गुम्युक्ष्मानाची	214
মান্ত্ৰীকামে (ইনুন্ট্ৰী নম্মানন ট্রিন্নেম্নে ন্দ্র্যানা) বী	
মার্থানে (প্রথম হব শ্রী প্রথম ই ম শ্র-মধুন বিন দ্বম মার্ম র্ম মান্দ শ্রু ন মান্দ	
ন্ধ্রন্ম)শে'বাইশা	215
<u> </u>	

५८:में (स्कान्ते क्षेत्राच के का ना निर्मा के का ना निर्मा के का ना निर्मा के का निर्मा के का निर्मा के का निर्मा के का निर्मा के कि	216
गहिरामा (व्ययावार्सेन्यामासून्याचे के हे सूरा जुना) दे।	218
ग्रुसम्(क्ष्यानदेःगुन्हें नृहे क्ष्रम् चुन्न)ते।	219
নাইশ্বাপ্রান্ত)ব্য	
ননি'ন'(নমুন'ন'ধ্ব'শ্ব্ৰাইল্ম'র্ম'র্মার্রার্মান্রন্মন্র্রান্ত্রিমা	
न्दःसः(क्ष्यस्यक्ष्यः)यःन्त्री	220
न्दःस्र (वञ्चवःवःन्वाचेदःचेःकुः)दे।	
মৃষ্ট্ৰ শ'ম'(নপ্ত্ৰন্দেই নাৰ্ন) বি	
নাপ্তাম'ন'(৳৭:৭:৪:ন')ম'নাইপা	
५८:सॅ (२क्ने न सेसस उद्य वसस उद्य शे र्दे द र न क्रें न )दे।	
गहिरामा (विवानाकेदार्वित निवानाकेदार्वित निवानाकेदान्त निवानाकेदान निवानाकेद्यान निवानाकेदान निवानाक	
नवि'न'(ग्राम्बार्स्यान्यसम्बेन्यवेन्विः)य'निहेसा	
५८:स्. (बर्ट्-ब्रे-ब्र-ब-व्हेब-वर्-)	
गहिरामा (मङ्ग्रदानर्डेशायामहेदाद्यामञ्जानामा)दी	
गहिरामा(सहगानसूना)दी	

### न्ग्रम:ळ्या

गहिराप (क्षेत्राच्यायाणेदासरहेंदानुस्यासु ह्वर हर्षे यासदे ख्या श्री सासह ता नशू ना ) या हिर्	226
न्नःसं (नक्ष्मान्यते मान्याम्याम्यान्ना व्यान्नाम्यान्न विष्यामित्र निष्यामः)न्।	226
মান্ট্ৰ শ'ম'(নুইশ'ট্ৰাইন')বী।	226
মৃষ্টিশ্বামান্ত্র বিজ্ঞান্তর্ব )বি।	
गशुस्राय सम्भित्रभूगास नित्र स्त्रित स्त्रेत स्त्र स्वाय नि	229
न्दःसे (वर्षे न्याया श्वें वा स्वया ) या यहिया	229
५८:म्.(ज्रेष्ट्रिंगविरःयक्रेस्।	229
५८:सॅ (निहेद्दं न्युनःसन्दःन्युद्दरःन्युद्दरःन्युद्दःन्यं न्यूद्धःनःन्युद्दःन्यःन्यूद्धःनःन्युद्दःन्यःन्युद्दःन्यःन्युद्दःन्यः	
५८:मू. (पूर-व्युक्त के कार्यकाका) त्या या शुक्रा	
५८:मू.(य.प्रबूट्-यदुःश्रेश्नरश्चीयाश्चर)त्य.याष्ट्रेश	229
न्दःस् (व्राह्म द्र्ये क्ष द्र्ये क्ष या )दे।	
गहिरामा (क्षित्र प्रत्यक्षेत्र प्रतिः क्षेत्र प्रतिः क्षेत्र प्रति	
गहिरामा (सर्वेद निवेष हैरा न्येन सामा निवास ) या गहिरा	
५८:स्. (प्र्टाक्ष्मास्य अस्य सम्य सम्य सम्य सम्य सम्य सम्य सम्य स	

गहिरामा (सहवानिकार्सन्य विकार्सन्य विकार व	232
ग्रुअ'रा'(हेशर्वोग्रान्धुराहे'नक्ष्र्व'रा')दे।	
মৃষ্টিশ্বামা (বর্ষি ন্মন্ধান্মন্ধ্র রেম্মান্মা)বী	233
ন্ট্রিস'ন'(নর্ল্র্র্রান্রির্ব্রের্মার্ড্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র	234
५८:सॅ (बॅट बॅवि कु न्याया यर कु या प्राची	234
५८:मू (क्वेंद्र: क्वेंब्र म्बेंब्र व्याप्त व्यापत व	234
गहिरामा (विराह्म क्षेत्रा सदे विराध के	235
নাপ্রসামা (दे কুলা মরি ছবশ দুইশ) আ বাহিপা	235
५८:द्री. (ल्रिट्-स्रे-वर्डे-वर्डे-इ.सइ.स१.५)	235
गहिराम (देव क्रुप्यळं त्र )दी	
মন্ত্রিম (বিন্ট্রেন্ট্রু বির্দ্ধের বিশ্বন্ধ্বাথ ব্যার্থ নের বিশ্বন্ধের প্রা	237
५८:मू. (पूर्धः भ्री. यदुः तीया की. रेडी. यद्भेषः त्र भ्रेषः त्र भ्	
गहिरामा (शेरवर्देन मान्नेन मानामा ) या ग्राह्मा	
५८:सॅ (वर्वाकाकेश्वाचीर्यकार्वेर्यकार्वेर्यकार्वे वर्वावाया)यात्रेश	
५८:मूर्यात्रमूलात्रभ्रोट्रायायात्रम्भेरायायात्रम्	

# न्गानःळग

५८.मू.(र्वायक्षार्टर.रे.जुब्यक्ष्यच्याय्यक्ष्यक्षायः)ता.ज्	238
५८:मू. (व्यान्यक्षः स्वान्यस्या ग्रीः स्टाबेदायश्यायात्रस्यानस्यायः )द्री	238
ব্যষ্টিশ্বান্থ্য স্থ্ৰান্থ্য স্থান্থ স্থান স্থান্থ স্থান্থ স্থান্থ স্থান স্থ	239
নাধ্যমান (ব্র্মিশর বয়ৢর য়৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸	240
५८:मू.(क्ष्यास्य वर्ष्याः)यः प्रत्री	240
५८:मू. (ग्रांश्वरायक्षेत्रः	
गहिराम (देक्षेत्र द्येश वश्चुव यः) दी	
ग्रुस'रा'(ग्रूर'यार्वेर्'स्वे:धुवा)री	
निनं प'(म्बर्यान् नर्वेन् परि क्र्रेन्याः क्र्रेन्याः क्रेंन्याः क्रेंचे	
মৃষ্টিশ্ব'ন্ধু'ন')বী	
नवि'न'(हॅ्ब-ब्रॅट्श-ब्रॅट्स-व्यायन्यन्-प्रतेप्यव्यक्-प्रवेप्यव्यक्-प्यव्यव्यव्यक्-प्रवेप्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्	
त्रापः (भूगाः नस्याः क्षेत्राः सदः सदः स्व	
गहिरामा (क्ष्यायाने यानमा से समामित निर्मा निर्मा निर्मा क्ष्या निर्मा न	
<u> </u>	
५५:२ (क्व. प्रत्राहित्य क्व. क्व. क्व. क्व. क्व. क्व. क्व. क्व.	

### न्ग्रन:ळ्या

न्द्रमें (क्विंनन्द्रक्विंनः उद्यक्तिं नारम्बनान्द्रन्त्वरः उद्याधिदायः) या गुरुषा	245
५८:द्री (कृत्रं क्रॅट्शं ठत् छी:क्रें) चें त्या क्रिंत्वरं क्षे देवाशायवे क्रुं यळंत् )दे।	246
মৃষ্ট্র শ্বাস্থা (শ্রিল এই ব্যান জীবার ব্যান জীবার অধিব সাম জীবার সাম জীবা	247
गहिरामा (देन्या मी क्रुक्ते व रस्य प्रवस्य व व व व व व व व व व व व व व व व व व व	248
বাই শ'ম'(মন্ননতে ব্ ক্রি:ক্রু: অর্মান্নানামা) বা ধ্রুমা	249
५८:मू. (बाइ.स्थायकीर.रट.रेवट.रे.वश्चेर.य.रेबाबास.)मू.	
	250
गहिरामा (देवार्यामा उद्यासके नित्वा स्टान्नित उद्यान्या नित्या स्टान्नित उद्यान्या स्टान्नित अस्या स्टान्नित स्टान्नित अस्या स्टान्नित स्टानित स्टान्नित स्टानित स्टान्नित स्टानित स्टान्नित स्टान्नित स्टान्नित स्टानित स्टान्नित स्टानित स्टान	250
५८:स्. (क्ष्यास्थायस्थायस्थानः स्त्रीरायास्थायस्य । स्त्री	250
गहिराम (क्रिक् व्याक्षें रामाक्षे व्यवद्या )के।	
মাপ্তর'ন'(ক্রুব'ন্দ'রর্ল'ন'য়৾ন্'ন')বী	252
ग्रुस्राम् (वर्त्तानागुदाङ्कृषानाः कृतुरक्ष्यानरात्रुश्वर्षात्र्यात्र्याद्वेशानरास्यात्र्यात्र्यात्र्या	
মাপ্রমান্ত্র্নান্ত্র্ন্ন্ত্র্ন্ত্ন্ত	
गहिराम (र्न्न नहुन) दे।	
মাপ্তমান (নার্ব্র ন্যান্ত্রী ন্যান্যাই রি ায়ৢয়ার্যার নের্ন্ত্র নার্ম্বর্মার প্রা	

८८.स. (श्रुट हेवे वनश्येन वा नेन वा ने वा	255
५८:द्री (अंग्रमण्डम् विषयं के विषयं	
गहिरामा (क्षेत्रेयाम्याम्याम्याम्याम्याम्याम्याम्याम्याम्	
ग्रुसम्(देशद्देश्यः क्ष्रेरः हे ज्ञानरः रेग्यायः) दे।	
মাষ্ট্ৰ প্ৰামা (ছিন্ত্ৰ কু ন্ৰাৰান ) অ'মা খ্ৰু প্ৰা	
५८:मू. (ब्रिश्नासास्टामी स्टामिबेब प्लेब व ब्रिंग्नर क्षेत्रे म्यासा क्षेत्र व राष्ट्रे स्वासास के	
गहिरामा (वर्षेत्रमा होत्रमा होत्रमा होत्रमा हो स्वर्मा	
ग्रुअ'रा'(८्रॅश'शयामकु८'रादे'कु'वामह्याशत्रशर्क्चितराधे'रेग्शारा)दे।	258
ग्रुसम्(क्षेप्टर्न्प्यः वृत्य्द्रम्प्यो हेस्यस्यः )यः ग्रेस्	259
<u> </u>	
५८:मू. (विषयः ग्रीश्रास्टायावार्ष्ट्रसः ग्रीट्रायास्टावी हेशानश्रयायः )सू	259
মৃষ্টিশ্বান্ম্র্নান্ত্রী ক্রুন্ত্রশন্ত্রী কর্মান্ত্রী কর্মান্ত্র	
ग्रिस्ता (श्चे न क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या	
नवि न (रद्यो व्यक्षः ग्रीक्षः मान्त्र सूना नस्या ग्रीः मुः वः स्वु र न प्येतः प्रकारे वा स्वि न र स्वे रे न का से	
মূ'ন'(ম্র্লি'ন'ন্ট্রন'ন্ট'রের্'নির্বা'ন্টন'ম্বাশ্বা')ব্র	

गहेशमः(ह्रिम्स्यः)याग्रुस	264
न्नःसः (ग्व्रवःस्टःशःयवः चेन्-नुःश्चेः त्य्यन् स्थः सः भेनः नः )दे।	
गहिरा (रदामान्त्र वार्मे दाने दाने दाने दाने दाने दाने दाने दान	
ग्रुस'रा'(वद्वरद्वाशः चेद्वरायः व्याग्यः वश्चुतः यः द्वावाः यः )दे।	
गहिरामा (वहुरामार्सेन्यानर्स्नुनामायानर्सेन्यानुस्न्यामायान्सेन्यान्यान्यान्यान्यान्यान्यान्यान्यान्या	
५८:में (वक्क्षःक्क्ष्रं ५:र्श्वव्यक्षः क्षेत्रः व्यक्षः व्यक्षः व्यक्षे व्यवे व्यवे व्यक्षे व्यक्षे व्यवे	266
गहिरामा (ब्रिंग्न-५८ वर्षेया मदी मार वर्षा या स्टामी या ब्रिंग्नर क्रे सेवाया मार वर्षा	267
ग्रुस्रात् (ह्रेन्यदे न्यरक्त्र होन्य व्याक्षेत्र स्वाक्षात्र)त्य ह्या	267
५८:में (क्रेट्र-याश्चर-ट्र-व्यहेनायाययादेवे न्यरक्ष्याव्यक्षिंन्यरक्षे देनायाय) दे।	267
गहिरामा (व्यवायवे हेराय वर्षेत्र वर्षा रवावायः )त्र	268
ग्रुस'रा'(ह्रेन्'याया ब्रेन्'या क्षेत्रे प्राया विकाय प्राया विकाय क्षुताया) दे।	268
नते प्र (क्रुं र प्र त्य क्षेर प्र र क्षे रेग्य प्र वे क्रुं यळव् ) दे।	
त्रंत्र (क्र्राच क्षुव देवाका च त्वावा च )त्री	
पवि'प्र'(म्ववर्प्प्रप्रम्प्रम्म् नेर्प्यम् निष्यम् मिष्यम् भिष्यम् भिष्यम्	
५८:सं (रदःवाक्षेत्रुदाराङ्कायाद्दायाद्वर्याक्ष्रकार्याद्वेदाधीदायकार्विदायाविदायाक्षेत्रुदाराङ्काया	

ब्रिंचर:रेग्र्य:)ते।	271
মৃষ্ট্র শাসা (বালবান্তামান্দ্রমানান্ত্রিন্ত্রের্মিন্ত্রান্ত্রী ক্রান্ত্রমান্দ্	
यदःवर्शेदःसेवाशःवः) <b>दै</b> ।	272
गहिरामा (वन्यामी विक्राय हेरामा चेन्याय क्रिया विक्राय किराया केराया चेन्याय क्रिया विक्राया चेन्याय क्रिया विक्राया चेन्याय क्रिया विक्राया चेन्याया चिर्माय क्रिया विक्राया चेन्याया चिर्माया चिरमाया चिर्माया च	
५८:मू.(क्ष्यायाद्यायाद्यायाद्यायाद्यायाच्यायाच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच	272
५८:स्. (श्रुम्ब्ब्याश्रस्याश्रम्बर्म्स्यावेर्न्सः क्रेन्स्यः विद्यान्त्रः स्त्रम्यः स्त्रम् स्त्रम्	
गहिरामा (दे निविद्य दे निविद्य में निविद्य में निव्य में	
गहिराम (वर्षेत्र मान्नेत्र मान्य म	
५८:द्रा. (अंअअ.लूर.तयतःब्रेग.ल.व्रि.यमःश्र.तयः)द्री	
गहिरापा(क्रिंनरक्षेत्रेग्रायवेक्षुःयळंत्र)ते।	
ग्रुस'रा'(रदानी'हेशपरारात्रससामा)ते।	
ননি'ন'(নর্স্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র	
५८:स्. (यद्याःयी:देयो:य:स्रेश्स्य्यःयःवे:र्द्रेय:दे:ययदःयः)	
ব্যষ্টি শ্বান্থের প্রকার্ম ক্রিন্টেন্টেন্ট্রেন্ট	

कुं क्ष्म स्य स्व	278
८८.सू.)ध्री	
নান্ট্ৰ শ'ম'(র্ন্ন')ব্য	
না ব্যুষ্ঠা মে' (ই্ৰ'ক্টৰ'র্র'শ্লুব'ঘট'ন্শাব'শ্বুন্থে'ন্লাব্লাব'ন্ন-ইল্ম'ন' ) অ'বাই ্র	
<b>८८: स्र्र</b> (इस.क्ष्याः हे . इस.क्ष्ट्र . इस.क्ष्ट्र . इस.क्ष्यः . क्ष्यः . क्षयः . क्ष्यः . क्षयः . क्ष्यः . क्ष्यः . क्षयः . क्ष्यः . क्ष्यः . क्ष्यः . क्ष्यः . क्ष्यः . क्ष्यः . क्षयः . क्ष्यः . क्षयः . क्ष्यः . क्षयः . क्ष्यः . क्षयः . क्ष्यः . क्ष्यः . क्ष्यः . क्ष्यः . क्ष्यः . क्ष्यः . क्षयः . क्ष्यः	
स'मुन'मश'दर्मु न'म') <b>दे</b> ।	279
স্ট্রিস'ম'(ব্প্রের ব্যাব শ্লুব্ বর্শ ব্যাব্যার মার্মার্ম ব্যাব্র্রা ব্যাম্যর ব্যাব্যা বিশ্ব ব্যান্ত্র্যার ব্যাব্যা	
न्वादःचरःदेवा्बःचः) <b>दे</b> ।	280
স্থ্যাম (বন্দানী ন্মান্ম নামানা ন্রিন্ম নাম্ম নামানা স্থাম	
५८:स्. (२ म. १० १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १	280
५८.सू.(४८.यट्रे.यद्र.यंथ्र.यंथ्र.यंथ्र.यंथ्र.यंथ्र.यंथ्र.यंथ्य.यं.)	
স্ট্রিস'ম'(গ্রাপ্রর'নই'নই'কু'ড়র'য়য়য়য়'য়৾৽য়ইন্মায়'য়য়য়য়'য়	
५८:स्. (यावव नदे न से पर्दे द द रहा यो नदे न कुस्र स्ट प्या र प्या र न्या र न्य	
স্ট্রিস'ম'(देशदानाबदानदेन्तः स्त्र्र्न्देन सेवाश्वरं)दे।	
निहेश्य (निहेन्न म्झून माया शेन विहास स्थार में निहास स्थार मे	

#### न्ग्रन:ळग

ग्रुअ'रा'(ह्रेन्यन्ध्रुवय्यायायाये वर्षेन्यास्याया)याप्रेया	283
५८:मू.(४८:बी.वर्ड्र.य.बीय.वर्ष्याय.)का.चीश्री	
५८:द्रे.(अञ्चर्यः स्टःग्रीयः क्रेट्रः याञ्चरः प्रचावः वरः स्वायः वरः भेवायः वरः वर्षे	284
নাষ্ট্ৰ শ'ম'(ন্ন')ব্য	284
ग्रुअ'रा'(दे'क्षे'वर्देद्'व्'चुद्रक्व'ग्री'क्षेत्रक्षक्षक्षक्षक्षक्षक्षक्षक्षक्षक्षक्षक्षक	285
गहिरामा (क्षेत्र्र्न्यक्ष्म्यम्यक्ष्यम्)याम्युष्या	285
५८:मू. (यावय.की.क्रेट.स.स.स्वा.ट्वा.क्र.स्वाय.स.)मू	286
মৃষ্টিশ্ব'(ব্দেশ্লী র্মের দ্বলই ক্রম্মের মিল্মান্ম) বি	286
ग्रुअ'रा'(रूट्नो क्षेना राज्य ह्या ह्या स्त्र स्वाका ही नाविद ही दिने राज्य	
इनार्द्रन्थः सेन्य्यः भेद्री	287
মাধ্যমান (বর্দ্ ন্মই দ্রীলাশ দ্রীন্ম বার্দ্ধি নান্নালাম ) মান্ত্রিশা	287
५८:में (न्यायाम्ब्रिन्यायमुक्तिम्यायम्बर्ग्न्याम्बर्ग्न्याम्बर्ग्न्यम्बर्ग्नम्बर्गम्बर्ग्नम्बर्ग्नम्बर्गमम्बर्गम्बर्मम्बर्गम्बर्मम्बर्गम्बर्गम्बर्गम्बर्गम्बर्गम्बर्गम्बर्गम्बर्गम्बर्गम्बर्गम्बर्गम्बर्यम्बर्वरम्बर्वम्बर्यम्बर्गम्बर्यम्बर्यम्बर्यम्बर्वरम्बर्मम्बर्यम्बर्यम्बर्यम्बर्गमम्बर्यम्बर्यम्बर्यम्बर्यम्बर्यम्बर्यम्बर्यम्बर्यम्बर्यम्बर्यम्बर्यम्बर्यम्बर्यम्बर्यम्बर्यम्बरम्बर्यम्बरम्बर्यम्बरम्बरम्बरम्बरम्बरम्बरम्बरम्बरम्बर्यम्बरम्बरम्बरम्	
५८:मू. (२व्य.क्ष.२व्य.व.क.४.४८.व्य.क्ष.व्य.व.व.)	
गहिरामा (मायामर्वे नासेसमान क्षेत्रामाने वासे मार्वे नाम के वासे नाम नाम के वासे नाम के वासे नाम नाम के वासे नाम के वासे नाम नाम नाम नाम के वासे नाम	
নাপ্তমানা (ম্চালা নুর্নানা) মানা দ্বিশা	

५८:र्से (न्याः यार्वे न् प्राचुन् न्यायान्याय वर्षः सेया श्रापः) है।	.289
गहिरापा (दे.कार्याव यर य बेर व रस्ति देश कर्ष व स्वर्थ के व स्वर्ध के व	
गहिरापा (रदाद्दार्दा में मिना वास्त्र संदे मोना वा में दे दाया में स्वीत संदे तो माना में से स्वीत संदे दाया में	
श्चेन्य्यायः)यः पृष्ठेर्याः	.290
	.290
५८:में (रदायानकूर्गानदान्त्राम्यायाने मेन्यान्यायाने प्राप्ता विष्यायाने स्वराधी स्वरा	.290
५८:मू. (यक्षूर्यवाका. इ.स. वर्षे का.स. स्मेर्स. म.)	
गहिरामा (धिन्न्वादान इसादर्न्न्द्रिन्न् न्से सेवासाना) दे।	.291
মাধ্যমানে ( दे इंसायर्दे दार्च यहिंदा माध्येद छे विवायिद मा) পে মাঠি শা	.291
५८:मू. (यक्षूर् व्यावाका द्रं सामा पूर्वी का मा स्रोत् ना )	.292
गहिरामा (दे क्ष्यमानाया से प्रवादाना द्वीमाना प्रमहिर्माना )दे।	.292
ননি'ম'(য়ৢব'ড়'য়৾য়ৢ'য়য়৾য়')য়'য়য়ৢয়	.293
५८:स्. (यर्वा.का.यंश्व्रीर.वीर.रवाकायाकवायायर.का.स्वायायः)	.293
गहिरापा (दे निविदान्ताय न धिदान सर्देव प्रामित्रे मही धिदाव क्षेत्र मित्र मित्	
इन्नियम भित्र प्रिया	.294

#### न्ग्रन:ळग

55:र्से.(२१४)री	294
गहिराम (रदावर्ष्ट्र पाया प्रवादावादावादी सामवि र्श्वे प्रायम स्वर्ग्य ) दे।	295
गहिराम (यद पर्मिन्य सम्प्रसम्प्रसम्प्रसम्प्रसम्प्रमा	295
5८:द्रीं (वर्क्ट्र्न्य्वाश्राण्चे वोवाश्राचेत्रायन्त्रायम् वर्षेत्रायम् वर्षेत्रायम्	
देखार्ह्य से म्याया भारता भारता के या	295
५८:सॅ (वर्ष्ट्र-ज्ञान्याबेदाध्याहेयायानु वर्ष्ट्री-पा)दे।	295
ग्हेराम (दे वर्षा मा हो द न्द्र वर्षे पा हो द व्यो मा हो द व्यो पा हो द व्यो मा हो हो द व्यो मा हो है है व्यो मा हो है व्यो मा हो है व्यो मा हो है व्यो मा है है है व्यो मा है है व्यो मा है है व्यो मा है	296
নাইস'ন'(য়ৢ৴য়য়য়য়য়য়য়ৢয়য়ৢ৸য়ৢ৸য়	296
5८:द्रीं (वर्द्ध्दःश्वां वायायोग्यायोग्यायोद्दःयः अदःययः व्याय्यायः विदःययः विदःययः विदःययः	
ब्रे:देग्राबर्गः)दे ।	297
गहिराम (ध्वान्वर्या श्रीः र्स्वा वर्ष्या श्रीः र्स्वा वर्ष्य रित्र स्था वर्ष्य रित्र स्था वर्ष्य स्था वर्ष स्था वर्ष्य स्था वर्ष्य स्था वर्ष स्था वर्य स्था वर्ष स्था वर्ष स्था वर्ष स्था वर्ष स्था वर्ष स्था वर्ष स्था स्था वर्ष स्था स्था वर स्था वर्ष स्था वर स्था वर्ष स्था वर स्था वर स्था वर स्था स्था वर स्था स्था वर स	297
ন্ধ্রিমানা (বর্ষদ্রেমমান্ত্রীন্ন্রমানানার্মান্ত্রমানানার্মিন্দ্রমানানার্মান্ত্রমানানার্মান্ত্রমানানার্মান্ত্রমানানার্মান্ত্রমানানার্মান্ত্রমানানার্মান্ত্রমানানার্মান্ত্রমানানার্মান্ত্রমানানার্মান্ত্রমানানার্মান্ত্রমানানার্মান্ত্রমানানার্মান্ত্রমানানার্মানান্ত্রমানানার্মানার্মানানার্মানানার্মানার্মানানার্মানানার্মানার্মানানার্মান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্মান্ত্র	
५८:में (वर्षेद्वस्थराश्चे वोवास्य शुरुष्य विवस्त से देवास्य )य पि से सा	
५८:सॅ (५७१८:बुन:ग्रे:अर्ळेग:अर्ज्यात्रशःसर:बु:नः)दे ।	
गहिरा (दे वानेन्यानेन्याने न्यानेन्याने हे दार्था न्या व्यापने	

ন্ধি শ'ন' (নর্মির্বর্মমাঞ্রিন্নান্মামাঝির্বানা) শ'ন্ধি শা	299
५८:सॅ.(श्चेर्यक्ष्यंत्रा)	
गहिरामा (देन्द्रेशनङ्गुनमा)दी	300
মৃষ্ট্র মান্ত্র বিষ্ণুর মুল কুল কুল কুল কুল কুল কুল কুল কুল কুল ক	
५८:स्.(ल्ब्र.ध्येर.बुर.लुय.च्य.च्य.च्य.च्य.च्य.च्य.च्य.च्य.च्य.च्	301
५८:स्. (४८:व्यःवव वर्द्वाव्यक्के.वः)व्यःगशुस्रा	301
५८:स्. (बिटा हिट्र पर उदा पूर्ण व पर ) दे	
गहिराम (दे ला द्याय यर सेवायाय ) दे।	
ग्रुसम्(दे.य.सर्यद्र.यस्यस्यः ची.यम्.स्याम्यः)द्री	
ন্ট্রশ্ন (বশ্বম্বর বেইন্সাম ক্র বে ) মানা ব্রুমা	302
५८:मू.(सर्यायु:प्रश्रम्भम्यम् स्थून्यम्भम्भम्यम् स्थून्यस्थित्यः स्थित्यः स्थितः स्यातः स्थितः स्याः स्थितः स्याः स्थितः स्थितः स्थितः स्याः स्थि	
गहिरापा (मर्देन्यदे नसस्य पर्येन्यस्य सर्वेन्यस्य सेत्यस्य सेत्यस्	
ग्रुअ'रा'(देशद्गवर्डिन्यवेन्यवेन्यवेन्यवेन्यव्यक्तिन्यव्यक्तिन्यव्यक्तियः	
মাধ্যমান ( শুর্মান্ন বহানহানহানহা) আ মাধ্যমা	
<u> </u>	

५८.स. (अंअअः उदान्दायाम् अः नर्वे न द्वायाः में विदान् स्वर्द्धान्याः	
सिट.जम.चीश्रीटम.च.)ुर्	304
স্ট্রিশ্ব (বি ইল্মানমানশ্রুবারা) মাস্ট্রিমা	305
५८.मू.(अ८४)क्रिय,८८४,श्रथ,८८५,त्य,८५८,त्य,४८५५,यी,४४८,४४८,४५८,४५८,	
স্ট্রিস'শ'(ব্রান্ট্রমাশার্থান্ন্র্নমামন্মান্ত্রমার্ক্রমান্ত্রমান্	
वर्दे र खेब से रेवा य पा ) <b>वे</b> ।	306
নার্মেন (ৼূর্ম শ্রুম ন ) থে নার্ম্বরা	
५८:म् (ल्व-१५व-भ्र-४४-४४-४५-४-४४-४४-४४-४४-४४-४४-४४-४४-४४-४	
স্ট্রিস'শ'(বাইপাশাত্মান্ন্র্বারিটোরামন্মান্ত্র্র্বারার্ট্রান্ত্র্র্বারার্ট্রান্ত্র্র্বারার্ট্রান্ত্রান্ত্রান্ত্র্বারার্ট্রান্ত্র্বারার্ট্রান্ত্র্বারার্ট্রান্ত্র্বারার্ট্রান্ত্র্বারার্ট্রান্ত্র্বারার্ট্রান্ত্র্বারার্ট্রান্ত্র্বারার্ট্রান্ত্র্বারার্ট্রান্ত্র্বারার্ট্রান্ত্র্বারার্ট্রান্ত্র্বারার্ট্রান্ত্র্বারার্ট্রান্ত্র্বারার্ট্রান্ত্র্বারার্ট্রান্ত্রান	
र्श्वेष भेषा मा भी के विष्	
স্ব্সংশ (মদ্মান্ত্রমান্ত্রীর্টের দ্বাক্ত প্রথার্ড মান্ত্রমান্ত্র বিধ্যমান্তর বাবে মর্ক্তির দেই দেই	র্থি-ব্রুজ্
सबद'प्यश्र'म्बर'देद्ग्यर'देवास'स') <b>दे</b> ।	
गहिराप (द्वाप्य सुप्य )दी	
মান্ত্ৰ সামা (য়ৄর মান্তা মুন্তা মান্ত্ৰ মান্ত মা	
५८:द्री (अञ्चराञ्ज समयः न्यान्तुः याद्वेयाः सः स्ट्रान्यन्यां यो रास्ट्रान्यः	

## न्गानःळग

गुरुपर र गुरुप ) य ' य   शुरुप	309
ব্দ:মি (মন্মাল্রুমান্র্মামার প্রন্মাল্রী নার্কি র্ম্মুনারা) মান্ত্রিমা	
ব্দ: दें ( अरशः क्रुशःयः तुश्विशः देवः तुः वर्षे वर्षः वरः वर्षः वरः वर्षः वरः वरः वरः वरः वरः वरः वरः वरः वरः वर	310
ন্ট্রশম (বিষ্ট্রন ক্র্রুন ন ) ম না ধ্রু মা	310
५८:स्.(अध्ययः वर्षीयः वर्षितः याच्याः वर्षेतः याच्याः वर्षेतः याच्याः वर्षेतः याच्याः वर्षेतः वर्षेतः वर्षेत्र	310
गहिरामा (अयम उदाय द्येग माम दे विद्यामा सूदान )दे।	311
নাপ্তমানা (নার্চ্ নাপ্তমান্ত্রিকা	312
५८:में (निर्देर्-यानुःक्षे देन्या यायवे क्रु स्थळंत्र) दे ।	312
ग्हें राप (दे वा म्र्रिंद्र या मुर्था द मुर्था च द में या प्रदे मन या से द मा भी दे ।	312
गहिरामा (श्री सहेश मार्थ मार्य मार्थ मार्य	313
মাধ্যমান (খ্রিশাবরুদ ফুঁমানা)বী	313
गहिरामा (देशवासेस्राह्मा वापामा गुरामा मुरामा हे नसूदामा हे ।	314
ন্ট্রিস'ন'(নর্রন্দার্শ্রিম'নবি'লব্র্ডের্')অ'নাধ্যুমা	
<u> </u>	
गहिरामा (यदार्थेद द्वेशयन न्द्रामा )या गहिरा	

#### न्ग्रन:ळग

५८:में (यद व्यव वि नगर ५ व्यव प्रति दिन के प्रति । प्राप्ति वि	316
55.सॅ.(२४.)च्री	316
নাইশ্বা(ব্ৰা)ই।	316
মাপ্তিস্মান্ (শব্দের্শ্রের্শ্রি) ক্রমানুদ্ধান্ধুর্শনি) মোমাপ্তিমা	318
५८:मू. (प्रम्थानिक्स.मू.स.मू.स.मू.स.मू.स.मू.स.मू.स.मू.स.मू	318
মান্ট্ৰ শ'ম'(মর্ছন:র্জ্ঞান্ট্র,দের্শ:র্.)ব্রা	319
মাপ্রমানে (ব্রুমাস্থ্রিব্-গ্রী-দের্শান্ত্র-কপ্সান্ত্র-কপ্সান্ত্র-ক্রি	319
বাইশ্বা(ঐন্তর সার্ভর )বী	
ले उ. नर्तु ना न हें त त्यु या न सूत या	
गहिशायान हैं वाया शाया सम्यास्य स्थाया स्थाया है शा	321
५८.मू.(जुद्देन्ववर्त्त्वन्त्त्ववर्त्त्व)य.य.यहेश	321
५८:मू.(वर्ड्डव्यव्युम्बर्ड्स्य-वर्ष्ट्रम्बर्यःवर्श्वस्य-वर्वस्य-वर्श्वस्य-वर्श्वस्य-वर्श्वस्य-वर्श्वस्य-वर्श्वस्य-वर्श्वस्य-वर्श्वस्य-वर्श्वस्य-वर्श्वस्य-वर्श्वस्य-वर्श्वस्य-वर्श्वस्य-वर्वस्य-वर्श्वस्य-वर्श्वस्य-वर्श्वस्य-वर्श्वस्य-वर्श्वस्य-वर्श्वस्य-वर्श्वस्य-वर्श्वस्य-वर्श्वस्य-वर्श्वस्य-वर्श्वस्य-वर्श्वस्य-वर्वस्य-वर्ष्वस्य-वर्ष्य-वर्वस्य-वर्ष्य-वर्ष्य-वर्ष्य-वर्ष्य-वर्ष-वर्ष्य-वर्ष-वर्ष-वर्ष-वर्ष-वर्ष-वर्य-वर्ष-वर्य-वर्ष-वर्य-वर्ष-वर्य-वर्य-वर्य-वर्य-वर्य-वर्य-वर्य-वर्य	
5ूद:सॅं (५६ूस.)से	
মান্ত্ৰ শ'ম' (নৰ্ক্তৰ্ দেশ্ৰু শ'ৰ্ম ন ব্ৰুদ'ন') বী	
মান্ত্রীকামে'(নিইর্বিব্যুকাই শ্বেম্ইর্মানেই স্কুলা)মান্ত্রীকা।	

५८:मू. (यक्ष्य त्वी अ. क्षेत्र व्यी अ. क्षेत्र व्या व्या अ. क्षेत्र व्या व्या अ. क्षेत्र व्या व्या व्या व्या व्या व्या व्या व्या	322
५८:मू. (म्र.मध्य व्रि.म.म.म.म.म.म.म.म.म.म.म.म.म.म.म.म.म.म.म	322
বাইসামা(देहं क्षेर श्रूर श्रूर श्रूर श्रूर वह क्ष्यं) या বা ধ্যুষা	323
५८:मू. (श्रृंश्वात्वश्वार्म् श्रुट्रान्नदे तो त्ये सूट्रान्न )या पहिला	323
८८:मू.(ज.ख्रु:वेध्वेशक्वेश्वेशक्वेर.य.)मू	323
বাইশ্বাম (ই শ্বাম শ্রুম শ্রুম শ্রুম বাই শ্বাম বাইশা	324
५८:मू. (क्र.पट्रेट्रेड्ड्रियट्र्ड्डिय्र्ड्ड्रियट्र्ड्डिय्र्ड्ड्रिय्य्य्य्य्य्य्य्यः स्थ्यः स्यः स्थ्यः स्थ्यः स्थ्यः स्थ्यः स्थयः स्यः स्थयः स्थयः स्थयः स्थयः स्थयः स्थयः स्यः स्थयः	324
५८:मू. (श्रुम:५:५ळे.चम:५इंसम:५२ंसम:५५:म.)ता.मुहेसा	324
५८:मू.(८कु.यम.८ह्समास.स.स्य.श्या.स.स्य.स.स.स.)	324
गहिरामा (देन्द्रेश्याम्बर्गामा) दे।	325
মৃষ্ট্র শেমে (মন্ট্রিস্তান্তে ক্রি সরি লাব্র স্বান্ত্র্যুম্ব শর্মি ক্রেস্ত্র্যুম্	
बे <sup>-</sup> रु-र-न <b>ं)पःन्ति </b>	325
५८:मू. (४८:१८८:४८४) चर्चाची र्यर र जुर र स्थाये व्यासी स्यासी स्थाये व्यासी स्थाये व्य	
गहिरामा(श्वरावरावके वर्षान्त्रो वायाववन्तर )दे।	
মাধ্যমান্ত (বক্টাবাইকেনি কেন্ট্রন বান্ত্র মান্ত্র মান্ত মান্ত মান্ত মান্ত মান্ত মান্ত মান্ত্র মান্ত মান্ত্র মান্ত্র মান্ত মান্ত মান্ত মান্ত মান্ত মান্ত মান্ত	

निन्म (वर्ष्	327
ग्रुअपः (५वे न व व व व व व व व व व व व व व व व व व	327
५८:द्रें (५क्के नवे क्के सुन्द्र मुक्त मानुद्र सम्। द्री	
गहिरामा (नः संदेन क्यान के नाया न हैं नाया साम्यान के या नाया से विद्यान या	328
गहिरामा (क्रें क्षे अदे सूना नस्यानससस द्याने क्रें सून न )यानि	329
५८:मू.(र्भवात्वर्षात्वर्ध्यात्वर्ध्यात्वर्ध्यातः)मू	
মৃদ্ধিশ্বংশ (ই'নইন্'ন্শবংশ)বী	329
ग्रुअपः (नदे नवदेर्ना न्दर्ने नव्यक्षे नक्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र व्यव्यव्यक्ष न	330
न्ते न्त्र (भूग नर्था वस्य सम्मान्त्र मन्य वस्त्र मन्य सम्मान्त्र स्व सम्मान्त्र समान्त्र समान	331
गहिराम (ज्ञान प्रताया बेदा प्रदेश के विष्ट्रा के विष्ट्रा प्रदेश के विष्ट्रा प्रदेश के विष्ट्रा प्रदेश के विष्ट्रा के विष्	331
ग्रुसम्(५ने नःश्चि ५ ख्ना संदे के के स्थूर नः) या ग्रुस	332
५८:द्रीं (क्रुं ५:ख्रानाः निवेश्नाहेनः र्वेश्वाः वित्रवाद्य ५:यः निव्यव्य व्याः निवेश	
गहिरामा (महेदार्स् हे लूमाह्म ह्या शुर्मेदार्म हेवा )दी	
गशुस्रासः(बद्धायम्बद्धारमः)यः पति।	
५८:द्री.(वर्ड्डव्रायदे:ब्रूव्यथावश्चेत्रव्याद्वराद्व्यार्ड्डवार्ड्	

ग्हें अ'रा' (ग्रुट:क्रुन:क्षुन:क्षुन:परे:न्ग्रव:क्षुन:परेंदि:क्षुन:नक्ष्य:ग्री:क:र्वंस:प्पट:	
सेन्-प्रश्नवर्शेन्-देवाश्वर्यः <b>)त्यःयाशुस्रा</b>	335
गहिरामा (त्यावर्षि सूना नस्याक उसायता स्ट्रिंट से पूर्वा रामा )दे।	337
ग्रुअ'रा'(दर् केद्रार्थे मिर्विधासंदे केट्र रुष्मानस्य क्टर रुष्टे महेट्र मेर्ने प्रथमेरे रुपे )दे	337
মাপ্রসামে (শ্বর্মের শ্রু পর্যে কার্কি লা বেছ্ মার্মি কর্ন ক্রির শ্রমের নাম বিদ্যাম	
বর্ল ব্যান্ত্র বাধ্য বা	338
<b>८८: में (</b> क्रॅब्स्य मार्थे न्युन् ग्री सूना नक्षण डंबा प्यट ह्येंट की न्वें वास्तर क्रें वास्तर क्रें वास्त्र क्	
নার্ম্ নের দ্বন্ম র্ষ্ট্র ন্ম মার্ল্ব নে )ব্রি	338
गहिरान (शुर्यामहिंद न व्याद्रमाव नवि क्वें व्यादि नवि क्वें नविंद नव नवाना नवि ।	339
ग्रुअ'र्'(क्वॅन्सम्हॅन्नन्द्नन्द्नन्द्रम्यंस्स्रस्तेकेंख्समहिन्नरम्स्स्रम्	
5्रमादःचःसोर्-्रचः) <b>ते</b> ।	339
निने नि (दे त्यः भूवा नश्वा से द केंद्र नदे न क्रु या स्याद्वाद नदः देवाया सः) या नि	
<b>८८:स्. (</b> त्यक्षः क्षुतः प्रदेः देक्षः प्रायाक्षे स्मापका प्रदे गामः वर्षा त्या खुका क्षेत्रका क्षेत्र वर्षे प्राय	
सम्बर्गः सः त्यादार्श्वे दः श्रीः सून् वास्त्र स्वरः से दः सः ) दे ।	
ग्रुअ'र्'(क्रु'सळंद'देशद'यस्य नर्में ५'र'याचेवा'र'५सद'र'यस्य सावस्य स्वर्गार स्वर्गास्य स्वरंगास्य स्वर्गास्य स्वर्गास्य स्वर्गास्य स्वर्गास्य स्वर्गास्य स्वरंगास्य	

342
342
342
343
344
344
344
345
346
347
348
348
348
349
349

বাষ্ট্রপ্রমে (বপ্রদেশ) মে বাধ্যুমা	349
५८:मू.(पट्टेश.सप्ट.तश्र.पर्यश्र.यश्र.यश्र.वश्र.यः)ध्री	349
गहिरामा (म्डेम् मुन्मूर नदे व्यय व्यय व्यय व्यय व्यय व्यय व्यय व्य	351
ग्रुस'रा'(ग्र्ग'रादे'लश'दर्शरानश्याप')दे।	352
বর্ন বি	353
गहिराम (वश्व परिश्व परिश्व परिश्व ।	353
८८:मू.(यक्ष्यःयः वध्यःयः)त्यः यद्विश्वा	353
न्दःसः (क्वाकारान्यम्बन्धक्राक्षःसः)द्री	353
गहिरामा (वहस्रव्यक्षां द्रान्यक्षेत्रव्यवस्यवस्यवस्यक्षेत्रवेत्रव्यक्षेत्रवेत्रवेत्रवेत्रवेत्रवेत्रवेत्रवेत्रव	354
মৃষ্ট্র মান্ত্র মান্ত ম	355
५८:मू. (वर्ष्ट्रश्चरः)मू	
ব্যষ্টিপ্রান্ম (শু.শুন্নপ্রন্তা) অ'বাপ্রুমা	
ব্দ:শ্র্ম:কুম:)ম্যবাধ্যমা	
५८:स्.(लश.मी.ट.मील.ह्श.चर्चर.च.)स्	
गहिरामा (दे स्वर वेद म् स्वर क्र क्र स्वर क्र क्र स्वर क्र स्वर क्र क्र स्वर क्र क्र क्र क्र क्र क्र क्र क्र क्र क्	

#### न्ग्रन:ळग

ग्रुअ'रा'(ग्व्र्व्चुं)द्रम्बर्मदेख्यमायाप्यत्व्व्द्व्यंद्वेद्व्यंद्वेद्वः	357
মাষ্ট্রপ্সমে (ব্রশ্বন্ন হাক্রন্তারা সাম্প্র	357
५८:मू. (बेशायाताटामितासूटीयासूटीयासुटीयास्त्र)	357
বাষ্ট্র শ'ম'(দক্তু অ' ব্রু ম'মবি খব্দ আঁব্দ)বী	
ग्रुस'रा'(गहेद'र्वेद्र'ट्कुल'ल'ग्र्व्रक्ष'र्यर्ग्नुन')दे।	
प्रवि'प्र'(ईव्सॅर्थप्यवेप्ट्रमुव्यमुप्यप्रेप्त्रम्थप्र)प्र'प्राशुस्रा	360
५८:मू.(ध्रेय.ब्र्ट्स.ब्र्य.ब्र्य.ब्र्ट्स.ब्र्ट्स.ब्र्ट्स.ब्र्ट्स.ब्र्ट्स.ब्र्ट्स.ब्र्ट्स.ब्र्ट्स.ब्र्ट्स.ब्र्य.ब्र्ट्स.ब्र्ट्स.ब्र्ट्स.ब्र्य.ब्र्य.ब्र्य.ब्र्ट्स.ब्र्य.ब्र्य.ब्र्य.ब्र्य.ब्र्य.ब्र्य.ब्र्य.ब्र्य.ब्र्य.ब्र्य.ब	360
गहिरा (देवे हे सद्येग्य ) दे।	
ग्रुस'रा'(दे:श्वर:वर:देवाय:यः)दे।	
ह्म.स.(बाहेब.स्पु:र-मिक.मी.सब.लूब.)चू।	
নাপ্রপ্রান্ন ( ধূর্র র্মন্থ্য নান্দ ক্রিন্দ নান্দ ক্রিন্দ নান্দ ক্রিন্দ নান্দ ক্রিন্দ ক্রিন ক্রিন্দ ক্রিন ক্রিন্দ ক্রিন্দ ক্রিন ক্রিন্দ ক্রি	
५८:स्. (११४:श्रूटमानेय:स्याम् नेय:स्यामानेय:स्	
गहिरामा (देवे द्वर दु इर बद उस प्यर से व्यू र वर वु व ) दे।	
ग्रुअ'रा'(गहेद'र्सं नहद्रासंदे नश्रम्भाना हित्सर उद्दान होत्रामः हित्सर ह्या नहेता ।	
মাধ্যমান্ত (ব্ৰাব্ৰের ফুব্ৰা) মানাধ্যমা	

365
365
366
367
367
367
368
368
368
369
370
371
372
372
375

# 

गशुस्रामः मुत्रःसिन्द्रमः मुत्रःसिनः सामिनः विः ग्रात्रः	n.মূখ.
नसूर्यायदे नर्यसमान्त्या ह्यू न रहुषाया महिर्या	376
५८.मू.(जुदुरम्बर्यन्यः)ज्यःयाश्चा	376
ব্দটি (বশ্বমান্ত্র বশ্লুষান্ত্র নাত্র্র সাত্র	376
८८:द्री. (बि.योर्थाः वर्षेत्रः राष्ट्री श्रायदः क्रुः सळ्दः )द्री	376
বাই শ'ন' (নি'লারশ'শ্রী'য়য়য়ৢর'র্শ্রীলাশ'য়ৢৼ'নম'লান্মশ'ন')বী	377
বাই শ'ম'(নি'লারশ'শ্রী'য়য়য়ৢর'র্ল্লীলাশ'য়ৢয়য়য়)অ'বাই শা	378
८८:मू.(वह्नाःहेवःग्रीःवरःवहःश्वाशःश्वरःवः)यःग्रिशः	378
८८:स्. (वहेबाःहेदःबःळवाशःसवेःकुःस्शनत्रःचः)दे।	378
गहिरापा(देहेल्द्रम्ध्रम्बर्ग्वदेख्यः)यानि	378
८८:मूर्वेष्ट्र्यं स्थानबुरानः)यःग्रिया	378
८८:मू. (क्ष्योश्वास्त्रस्य स्वार्यश्वास्य भ्रम्	379
ম্ট্রিম'ম'(ক্রল্ম'মার্স্ট্রন্ট্রন্ট্রাল্ট্র্র্রেন্ট্র্ম'ন্ত্র্র্ন্ন)ব্রি	
বাট্ট্র শে (নাট্ট্র র্ন র্ন নাষ্ট্র স্থা নাষ্ট্র ক্ষা	

५८:मू.(बर.मुंश्य अ.१९व.क्यां या.मी.मी.मी.मी.	380
८८:मू.(क्यांश.संपु.धेंश.र्थायांश.)ता.जी.	
५८:मू. (वर्र् र.संवर्: व्याप्त व्यापत	
মান্ত্ৰ শ'ম'(বৰ্ণ নৃত্ৰীশ'নাখাৰ শ্ব্ৰু ন')বী	
ग्रुअ'रा'(इॅच'ण्ड्रक्र्वा'झे श्वेश'रा')दे।	
नवे'न'(बर्चायायोग्यायोग्याचेन्या)वे।	
न्यात्र्र्यः क्ष्राम् व्याप्त्र्यः व्याप्त्रं वायाः विष्	
বাইসামা (ইমান্মান্মান্মান্মান্মান্মান্মান্মান্মান্	382
५८:स्.(१४८-४)यायाद्वेया	382
<u> </u>	382
५८:द्री. (र्ह्न क्रेव र्स. वहेग इट रव वर्से र विहेट रा )दी	
ग्हिं राम् (ब्रियामिय क्षाम्य क्षेत्र विमान स्रेत्र विमान	
ग्रुअ'रा'(दे'लशम्बद्गमंभे'र्बेच'हेदम्बिद्गमंभ्यंभूद्वा)दे।	
गहिराम् (र्वन्यू न)दे।	
गहिरामा (दे: क्रिंग निवे: क्रिंग) दे।	

মান্ত্র সামা (খ্রি-ফ্রির-রন্যুর-র্মান্তর্মান ক্রম্মন ক্রম্মন স্থান ক্রম্মন ক্রমন ক্র	387
८८.सू.(लिज.हथ.कु.हेश्य.त.)ज.याष्ट्रेश	387
८८:मू. (८:क्व.व.कु.हेश.र.भूवाश.)मू	387
गहिराम (क्रवास प्रति हेस प्रेश प्रश्ने ।	388
বাষ্ট্রপ্রমে:(অ্বাঞ্জির্জার)মেবাষ্ট্রশা	388
५८:सु. (वर्र् र.संदे:स्प्रयायापी र.सर्हे व.र.सं.स्ट.सः) दे।	389
गहिरामा (नक्ष्र्न क्षून वार्म नार्मेन क्षेत्र	389
নাপ্তমাম (বহু বেইবি দ্বিশ দ্রীনাশ ) নে নাদ্ধিশা	390
	390
गहिराम (दे स्थाने या ब्रेट्स विद्या )दी	391
निवे म'(५वेब मन्बेब मदे मब प्यूव )याया	
55.स्.(ब्र्यका.)च्री	
মাষ্ট্ৰ শ'ম'(শ্ৰন্থ,)ব্ৰী	
নাপ্রসাম (এই নের দ্রিন্ নম ) ব্রী	
ননি'ম'(য়য়য়ৼৢয়	

५८:मू. (धिकाताक्रयोकाराषुः योष्ट्रेयास्त्रः सूर्यः सूर्यः सूर्यः म्ह्याः सः ) सू	394
মৃষ্ট্র শাসা (মহবান নি শাল ক্রমাশ নাই বার্ট্টর র্মান র্ম র্ম স্ক্রমাশ নাম সুমা	.395
५८:मू. (बह्दानक्षात्वाक्षात्वरः क्षेत्रं निष्यः तः)	
ন্ট্রিশ্ শ্রে (ব্রি ক্রু অর্জন) বি	
না প্র অ'শে (নার শালাইনা দু নেনা নাইনা নী নের্মির র্মি দ্ব মে অন্ত্র্ব শালাম নাম মে সম্প্রমান স্থিতি	397
स्या (क्षेत्रम्भेद्रप्तदे विद्रप्तरः) त्या प्रहेश	397
५८:मू. (अधिकात्त्रकार्यम्थेषेत्त्वर्यात्रक्षेष्ठ्यत्त्रम् सूचीकात्तः)मू	
মৃষ্ট্রিস'ম'(দ্বेর্মেনষ্ট্রমের র্মির্মির স্বর্মির স্বর্মের স্বর্মির স্বর্	398
५८:मू. (श्री प्रच. श्री अ. यो २८ अ. या अ. यो २. या ) में	398
गहिरामा (न्नो नदे सुँग्रास से क्राय के मान में	399
ग्रुसम्(देशक् न्वन्वाक्तिन्त्वेद्रायात्रक्षेद्रायम्भेदायम्)दे	399
गहिराप (धेव डे विवा मी क्या हैं मा श्वर प्राप्त के या	
५८:मू.(वर्स्ट्रायाःश्चीयायाः)त्यायाश्चित्रा	
५८:मू.(वर्ष्ट्र-मायाःश्चर-नदेःव्ययानुःवहेषायाःमन्दः नठयाःमरः नययःमः)त्यात्रेया	
५८:द्रीं (५मे न म न ईं व न र म न स्थान स्थान )दी	

गहिरापा (वर्रे र प्रांदे हे या र श्रे वा या प्राया या ) दे।	401
गहिरामा (स्थाय संग्रामय से में मार्ड मार्ड मार्च	
५८:मू.(२४:व्र्य.क्र.क्षेत्र.क्षेत्र.क्षेत्र.क्षेत्र.व्याव्यक्ष्य.क्षेत्र.क्षेत्रव्यव्यव्यव्यक्ष्य.क्षेत्रव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यक्ष्य.क्षेत्रव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव	
५८:मू.(इ.बर.वर.व.यद्यश्चराच.क्रु.क्र.च.)चू।	
गहिरामा (अवरानुरार्विन्नु विरानायमायन्यायन्यामा) ने	
ग्रुस्राप्त (रूर्ग्विद क्री खुर्रा से र सूर्य न सुर न से रेग्य परा )दे।	
नवे'न'(क्व्यान्यायायायायायायायायायायायायायायायायाय	405
ह्मं प्र (विद्याहिषाया सर रेवाया सर)दे ।	
ঠুবা'ম'(র্ল্ম'শ্রিম'নার্ল্রাম'ম'ম'ল'ক্রন্মান্ম'র্ম'ইন্ম')ব্র	
বাষ্ট্রপামা (বার্ষ্র্বেরেইর্জ্পারায়ুমাট্রার্মারার্মারার্মারার্মারার্মারার্মারার্মারার্মার্ম	
५८:मू. (श्रु.च.व.र.स.च.श.व.श.व.श.व.व.व.व.व.व.व.व.व.व.व.व.व.व	
५८:मू. (र्मा मि.स. १८ में स्वांश स्वांश स्वांश में वांश मार्ग )	
गहिरामा (वाड्र व्यर ह्वा य न्वावा य ) दे।	
মাপ্তামান (এম শ্রম শ্রম শ্রম শ্রম শ্রম শ্রম শ্রম শ্র	
नवि'न'(हेशमने'न्नाम्मास्युम्स्वर्थम्ययाम)दे।	

न्यं प्रं (न्त्रीत्रश्राक्षणश्रायदे मात्रश्रायोत् स्यं)त्रे ।	411
মান্ত্র শ্বান্ত ব্যান্ত ব্যান ব্যান্ত ব্যান	
५८:में (क्षे म्वर निवे प्रमुद्द विद्याधिव न्यम क्षे म्वर निवन म्यम मार्थ ।	412
गहिरापा (देवे प्रत्यका तुः पोद्यान सका सो ना इतः तमः नक्षसः मः )दी	412
ग्रुस'रा'(लुक्ष'क्षे'ग्रुड्ट'न'र्नेक्ष'नक्ष्र्व')दे।	
नवि'रा'(रूट्नी'खुअ'से'ग्राइट्नर्न्यस्स्रायः)त्य'निहेश	
५८:मू. (ध्रम.म्बर्ध.म्बर्ध.म्बर्ध.म.)मू	
_2	415
মাপ্ত্রেমের বার্ত্র নেম নের বাবার প্রামান্ত্র স্থা	416
ব্দ:মিঁ (নইশ:মনি:কুন্:ক্রীশ:মুঝাল্ডার্ন:নন্:ম্রী:নুঝানা:)আ'বারীমা	
५८:सॅ (खुअ:भ्रेम्बर्ट्स्नर्ड्स्प्त्र्र्स्म्याधी:देशम्बर्ट्स्न्र्स्चेन्स्भे:बुश्यः)दे।	
गहिरामा (वर्षेयासे दाग्री दे माविष्याक्षणक्षणक्षण्याचे क्रुप्यक्षत्र दुःसे दुराया) दे।	
गहिरामा (सुरायहेनामदे म्हानविद्यासास स्वर्थामा )दे।	
ग्रुस'रा'(धेर्'द्रुर'नदे'म्र्र्स्स्स्य र्स्स्स्य )दे	
ग्रुस'रा'(क्षेप्ट्र्र्न्यानुक्षानश्चेत्राच्यामश्चेत्राच्यामश्चर्या)यात्रेया	

५८:मॅ (वश्रुव:वः)वै।	.419
বাষ্ট্রস'ম'(বন্ধন্'ন')ত্ম'বাষ্ট্রসা	
५८:मू.(वर्र्र्यःस्वःस्वःसः)यःम्बी	.420
५८:मू. (वर्र् र.स.चक्रेब.सव.सवका.स्व.स.)	
गहिरामा (दयानदे सूनानस्याग्री शादर्न् नामस्रे वासी जुरामा) दे।	
	.421
नविःमः(म्वदःग्रीःन्नरःनुःग्रुरःमशःश्रेःवर्द्नःमःनुःशःर्वनःमः)दे।	.421
गहिरामा (क्षेत्र दूर्मा नुः स्रोते क्षेत्र प्रत्योवामा )वास्या	.422
५८:मेर् (स्ट-द्यट: बोद-केट ब्यू स-दु-क्र्या) वि	.422
गहिरामा (मन्द्रमी न्वर मी न्वर निर्मा के स्थान में में मान में	423
ग्रुस्राम् (बर्यायायोग्याचेत्रिक्राम्यावेत्राच्यायचेत्राच्यायचेत्राच्यायचेत्राच्या	
नवि न (हेशन्द्रीयाशन्यस्थस्य द्रश्चन्य महेन नहेन नहेन नहेन नहेन नहेन नहेन नहेन	
स्या (वर्द्दायावाळवायायाक्षेयाद्येवायागुदाग्रीव्यग्नुमात्रात्यायायायायाक्षेया .	
५८:मू. (वर्र् र.संद.धेश्वर.संयायान्यस्यातः)	
ব্যষ্টিশ্বামা (ব্ৰীক্ষা নামা ব্যামান ব	

५८:सॅ (बङ्ग्वर्यः)दे ।	427
ব্যষ্ট্রসামা (ব্যব্দ শ্রমা) ন্যা ব্যক্তিয়া	
ব্দ: ব্যব্ধ অংশ ক্রিমান্ত প্রব্ধের স্ক্রমান্ত প্রব্ধের ক্রেমান্ত ক্	
নাষ্ট্ৰ শ'ম'(ম্ন'ন্নন'ৰ্স্থল'ন্ন')বী	
নাপ্তামান (ক্র্যানিকানের র্লের দ্বন )বী	
নাপ্তমানা (ঀৢ৽য়য়য়৽ঢ়ৢ৽ড়ৢয়৽য়য়৽য়ৢয়৽য়য়৽য়ৢয়৽য়	
	430
५८:मू. (यर् र.वसूव व.व.)	430
মান্ত্র শ্বাস্থ্য ব্যালা বিশ্বাস্থ্য বিশ্বা	
५८:मू. (यर्या.यावय.अक्ष.यरःश्च्रीय.यहःरूव.यत्य.)	
বাইসামা(বদ্বাবাৰ্ব্যমন্ত্রমান্ত্র্মা)থাবাইসা	
५८:मू. (यर् सूनानी वर्रे र खेव सळ्ट्र र या से रेन र या सूर या भी	
<u> </u>	
५८:सॅ.(६व.२ब्र.७५)	
ন্ট্রশ্ন (৪৭ শন্ধুন শ) শে ন্ট্রশ্	

5年:発·(周母:劉母:万芒村) 3	435
বাইসান্ (देवे नो বাশ বৰ্ষ শ্ৰম ন)বী	
ग्रुअ'रा'(वन्नामावव्यक्रमम्यक्ष्यम्यक्ष्यम्यक्ष्यम्यक्ष्यम्यक्ष्यम्यक्ष्यम्यक्ष्यम्यक्ष्यम्यक्ष्यम्यक्ष्यम्यक्ष	
নাষ্ট্ৰ শ'ম'(র্ন্ন ন্ধু ন')ব্য	
নাপ্রস্থান (ৼূর্ন্স্রন্ন) শে বাঙ্গিশা	
5८:द्रीं (য়য়য়৽ঽয়৽য়ৢ৽য়ৄয়৽য়	
माल्क प्रवर पुरावा के प्रवर्ग भी	441
মান্ত্র সামে (মুনা নম্প্রান্ম্র্যান্ম্র্যান্রি দ্র্রাম্যান্র) বি	
ग्रुस्य (दे क्ष्र क्ष्रिं क्ष्र क्ष्रें क्ष्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र ) त्य थ्रा	
५८:द्री (वालवः र्वेवः वः वाडेवाः हः वार्वेवः यः वः स्वाः वस्वः क्रेवः ये से दः यः )द्री	
মাষ্ট্র শ'ম'(देवे:बदे:बःबळॅबा:हु:बुर:बशःवाबद:देंदःबःबह्वाःवः)दे।	
ग्रुअ'रा'(रूरमें देग्रायक्षेत्रर्वे नरक्षुर नः)दे।	
निंप'(व्यव्यन्त्रः ह्वा ह्वेव व्यः ह्वें याया हे याया हे याया हे याया हे याया है याया हे याया है याया	
हि.स.(क्री.सक्ष्य.र्ज्ञ यर्चा.चाचय.स्वेश.सर.चस्त्र्य.स्चाना.स.)ह्य	
नवे'रा'(नन्गाम्बद्गासहस्य स्त्रेंस्य स्व दे स्व स्त्र स्त्रें सुर् न स्त्रें न सुर न से ने नि	

মান্ত্রী শ'ম'(বন্দাশালব বছু মন্ত্র ক্রমা) শেমান্ত্রিশা	447
८८.सू.(यर्ट्र-केंब.स.)ज.याष्ट्रेश	
५८:मू.(यर्या.योवध्यच्ड्रं सह.सह.क्ष्य.)चू।	
गहिरामा (दे क्षेत्रम् स्था श्राचिरायह क्षेत्रम् व्यव्यः)दी	
মাষ্ট্রপ্রমান ( ক্রুপ্রমান ন্বপ্রমান ন্বসান ন্বপ্রমান ন্বমান ন্বপ্রমান ন্বপ্রমান ন্বসান ন্বস্রমান ন্বসান ন্বপ্রমান ন্বপ্রমান ন্বস্রমান ন্বস্রমান ন্বস্রমান ন্বস্রমান ন্বস্রমান ন্বস্রমান	
५८:मू.(यर्या.योवध.यहं.यषु.क्षत्य.यन्तर्य.)त्य.याष्ट्रेश	448
<u> ५८:मू. (केश.सर.यक्ट.स.)ज.याश्रीशा</u>	448
५८:मू. (याविष्य वाड्रिश वहूं बे. व्यू श्रम्भ न्य र म्यू न्य ) त्य ह्या	449
५८:मू.(यर्या.योवध.यह.वेंश्व.संपुर.क्ष्य.या.वे.यर.व्याप्त.य.)	
गहिरामा (इस क्षेत्र वा से व्हेंस पर ने नक्षेत्र या वा	450
ग्रुसम्(देशक्षाव्याद्वाद्वाकेदाकेदाकेदाकेटाकेटा	450
বল্লীমে (শ্রম্পর নশ্লী ন ভ্রমন স্থী	
त्राचा (यन्त्राचाल्यःश्रृताःवश्रः श्रृताःवशः श्रृतः वर्देनः यश्रः यन्त्रः वाल्यः वर्देनः यात्रः यात्रः वर्देनः यात्रः यात्रः वर्देनः यात्रः यात्रः वर्देनः यात्रः वर्देनः यात्रः यात्रः वर्देनः यात्रः वर्वः यात्रः वर्वः यात्रः वर्देनः यात्रः वर्वः यात्रः यात्रः वर्देनः यात्रः व	
মৃষ্টিশ্বানার শতেই বাবেন ন্যান্য ক্রান্ত কার্মা ক্রান্ত কার্মান্ত	
५८:द्रीं (न्द्रमाम्बेशम्बद्देवाशम्बस्यस्याम्बर्गम्बर्गःक्षेत्रमः)द्री	

गहिरामा (हेश क्षेत्र सम्बर द्या या क्षेत्र सम्बर सम्बर सम्बर्भ	453
ग्रुअ'रा'(वन्तान्दःनाव्दःनार्डःचॅर्चरःचेन्द्रःक्ष्र्वःन्दःर्व्वःन्वस्यःराः)य'ग्रेशः	
न्तः सं (यन्याःयालकः याडे श्रयः या बुदः यदे छे शः न्धेयाशः न्दः यकः व्यकः क्षेत्रः व्यक्षेत्रः क्षेत्रः कष्टे क्षेत्रः क	
<u> </u>	
5.स.(श्चेय.स.स.स.स.स.म.)	
বাষ্ট্র শ'ম'(বার্ব্র-মন্ত্র-	
নাপ্রমানা (বর্ষুদ্রাবাশ শ্রী দ্বন দ্ব্রিশ না)বী	
निने'म'(वशवार्श्वेर् नवदे'न्वर-नु-ग्रमम')ने।	456
स्यापः(मन्तर्वेदेन्दरः नुम्यः)द्री	
মৃষ্ট শ'ম'(র্ব'ন্ধু'ন')বী	
गहिरापा(देशवान्त्वान्विशावहेवार्देरासेवायाना)यानि	
५८:स्. (य.प्रब्र्ट्र. य.प. १९४१ - १९४४ - १९४	
गहिराम (अर्बेट निर्देश मित्र म	
ग्रुअ'रा'(हेशद्भेग्रायम्भाने निम्नायः)दे।	
नवि'म'(देशव्यव्यव्यव्यव्यद्वय्यद्वय्यद्वयः वर्षेत्रः वर्षः वरः वर्षः वरः वर्षः वरः वरः वरः वरः वरः वरः वरः वरः वरः वर	

মাষ্ট্রপ্সমে (র্বি ন্ধু নি ) অ'মাধ্যুমা	.461
५८:द्री (यद्याःयाबदःयहेःयदेःद्धयः)दी	
गहिरामा (वहेशव्याव्याव्यम् क्षेत्राच्याव्याव्याव्याव्याव्याव्याव्याव्याव्याव	
মার্মান (খ্রির উ মার্মান মন্মুর মা)বী	.463
गहिरामा(वन्याविवावहेरावरावरावरावरावराहेरासुवावदेरहेवा)याविरा	
८८:मू.(यक्षेत्रःयः)ध्री	
বাইশ্বন(বপ্রন্থে) অ'বন্ধা	
न्दःस् (यह्नःचःयःव्याद्याःच्याःच्याःच्याः)यःयहिया	
५८:मू. (श्र्र्यामदे:क्ष्या)	
মাষ্ট্র শ্বামা (বর্ষ্ণ শ্বশ হ শ্বেমা শ্বুবা ঘটে ক্টেবা ) বি	
মাষ্ট্র শ্বামা (মন্ত্রমান্য নেশ্রব্র ক্রিম্মান শ্র্রিমান্ত্রনা) মানবি।	
५८:मू. (क्रुंट्-वर्गस्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्	
বাষ্ট্র শ্বাস্থান বিশ্ব দের দের বিশ্ব না বিশ্ব	
ग्रुस'रा'(वेग्रथ'रादे'क्रथथ'स्र्रथ'यादश्वर्गः)ते।	
नवे'स'(वर्द्दिन्यःवःश्चुरःवःवःदववयःवःवश्चेद्द्रःवः)दे	

#### न्ग्रम:ळ्या

गशुस्रापः (वर्षेन्यायाश्चरायायान्ववियायामश्चेन्या)यान्वे	471
८८:मू. (८:क्विताः सूत्रायाः) है।	
মান্ত্ৰ শেম (শ্লুষামান্ত প্ৰেৰ্জন চন্ত্ৰ চন্ত্ৰ) বি	
गश्यापः (वर्ष्म् स्रमाद्यसः र्र्ष्ट्र रायमानुस्यमार्थः स्वरायदे स्तृताप्ताः)दे।	
नविःमः(देःक्षःचिवःदःक्वयःददःवयःववेःक्षेयःद्येष्ययःवययःगः)दे।	
निवे'रा'(नर्भू स'सदे'त्र्य स'तु')य'निवे।	
५८:सॅ (नद्वाःवाडेशःसरःवाडुदःनदेःहेशःद्येवाशःनशयःसः)दे।	
गहिरामा (म्वरम्मे सम्मानुस्य मान्यस्य स्यान्यस्य स्यान्यस्यस्य स्यान्यस्य स्यान्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्	
মাধ্যমান (শ্বন আঁব দ্বি ন্মপ্র শ্বন প্র	
नवि'रा'(देशक्षाव्यावेशवहिंदावाववद्गार्वेशवहिंदावाववद्गार्व्याव्यक्षक्षक्षाः)दे।	
गशुस्राप्त (र्श्वे राप्तराहेश शुसूत प्रते रहेला) या पहिला	
5्ट्र-प्र. (२्ट्र√)यःग्राश्चया	
ব্দার্থী (ব্দানী নৌ বামার ক্রম মান্ত দ্বাৰ্ক না ক্রম্মান স্থানিক বা ক্রমান ক্র	476
५८:मॅ. (२१४.)म्	
गहिरामा(रद्यास्त्रार्च्यास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रा)दे।	

गहिरापा(रहाकेरायाववार्रेवार्प्रस्वायविष्यविष्यविष्यविष्यविष्यविष्यविष्यविष्	477
८८:मू.(४८:बी:ब्रिव:बध्या:वर)स्त्री	478
गहिरामा(अय्याक्रियामानुयामान्यत्वायामान)दी	
ग्रुस'रा'(५८४५'रादे माद्रश'र्सुर सुर नः)दे।	
ग्रुस्राम् (ब्र्म्मान्यमाश्चायाः व्यवस्य विष्यान्यस्य विष्यान्यस्य विष्याः विष	
गहिरापा(नन्नान्वन्द्रेभान्यार्बुन्न्नभान्न्यभार्बुन्न्नभार्वे स्वाप्तिःस्वे स्वाप्तिःस्वे स्वाप्तिःस्वे स्वाप्तिःस्वे स्वाप्ति स्वाप्तिःस्वे स्वापतिःस्वे स्वापति	.481
५८:द्रॅ (कॅ्ट्रनग्, हुःग्वर्थायः कंट्रन्यदे कुंवा)दे	481
गहिरापा(रदर्द्वायनवादीयात्वार्स्व्यादेशेश्वर्स्ययात्वीयात्वार्स्वेयात्वार्था)त्यायासुसा	
५८:में (हेशन्भेग्रान्थस्यस्यस्यस्यस्टिन्यन्यःविग्नम्भूनःयःर्देरःनः)दे।	482
মৃষ্টিশ্বামা (শ্ৰন ই্ন'মা শ্লুমান) বি	
নাপ্তামান (বধুশদ সমূদ্যান)বী	484
বার্ষ্মান্ত্র (এ্রাট্রান্ট্রান্ত্র বার্ত্বান্ত্র) বার্ত্বা	
५८:मू. (क्र्या:कुन्नःसंदुःहेन्नःसः)त्यःयाद्विन्ना	
<u> ५८:मू. (क्षेत्र.क्षेत्.सपुर्व.क्षेत्र.मपुर्व.क्षेत्राच्याचा.)मू</u>	485
স্ট্রিশ'ম'(বিশব্দের্শনে:কল্মান্ত্রশান্ত্র্র্শনিন্দান্ত্র্	

বাইশ্বাম (বার্জ বার্ম বার্ম দির্মান )বী	487
ग्रुसप्(र्इस्ययंदेक्षयः)यपति।	488
५८:मू.(ज्याबाक्षेत्रात्यःक्ष्र्र्यात्यः)मू	489
गहिरामा (वर्ष्ट्र अन्य संस्थायः) ते।	490
মাপ্তাম'ন'(दे'অ'ईব্'ন'র্গ্রুব্'ন')বী	
नवि'न'(लुकावाक्षेत्रामहेकामनु स्वति वहुत्वावकाधिव ध्यत्त्व वावहित्वाक्षेत्र	
ब्रूट-नदे·क्वेट्-र्-नश्रुट-नर-वु-न·)दे।	491
নন্ত্র'ন'(য়য়য়৽ৼৢয়ৼ৽ৼৢ৽য়ৢ৽য়৽)য়৾৽য়য়ৣয়ৄ	492
५८:द्री. (२) त्रे त्रदे त्रमः कर त्रिमा सम् मु.म.)	
गहिरामा (महेदासं या नहेंदा संदेश सून या न स्रोत पा )दे।	
ग्रुअ'र्'(द्र्यो'नदे'द्रभेग्रथ'राखाक्चे'याक्चेग्'तु'स्रक्ष्य'सर्'नव्यासर'त्र्याचे	493
गहिरामा (बेदिवं सक्दं ) दे।	494
ये दु: द्यु: या ने रा: स्व: य सूद: या	
नवि'न'भूग्।अर्घेट'में 'टें 'ने अ'र्न' य'न सून'कुंय'य'गिहेश।	495
५८:मू.(जुद्देन्व्वर्न्व्वर्न्व्यः)यःग्रुम्	495

55. त. (बरायार्चियायर पर्देन्य यारे विषय के निर्देश याराय के याराय के निर्यास के विषय पर्वा विषय व	₹.
বমূব্রমা)অ'বাইশা	495
८८:देर् (क्वेकेट्रेंक) दे। 495	
নাষ্ট্ৰ শ'ন' (অব'অনানী'ৰ্ন্ন')বী	498
प्रिशास्त्रिक्षंत्रित्र्वित्रक्षेत्रित्र्वाक्षायवेःलेकार्यः हे स्वरायक्षेत्रायवेश्वर्यः )याप्र	শ্ .498
५८:सॅ (वनेव विवेश क्षेत्र क्ष विवा ) य पहिरा	499
८८.सू.(२६४.)ज.योशिया	
<b>८८: मुं. (</b> यरेब.बाहेब.कु.क.कु.र.कु.च.)	499
বান্ধ্য শেশ (মার্ক্রন ন্ট্রিন) ব্রী	500
নাধ্যমান (ই লাচ্ব অ বেইনম মই লাম রনাই ম ন রুম ন ) আ নাই মা	
५६: १ (वर्ष मिष्ठेशमाहत्र संवित्र संवि	
মাষ্ট্ৰ শ'ম' (য়ৄ৾য়য়ৄ৾৻৴য়ঀ৾য়ৣয়ঽ৻য়য়৸ঀঽ৻য়৻)য়ৢ৾য়	
गहिराम (क्रून क्षेत्र वान्वीय नुया सेन्य वे क्रून वाक्ष्य न्या के वा	
55.सॅ.(२६४.)च्री	
নাই শ'ন' (ই'অ'ল)র্বির্মান্ত্র স্থানা ব্যুমা	

५८:में (सर्रे: ब्रें प्रायार्से वाकायते प्रदेश क्षुप्त क्षुर प्रवावाया) या प्रेरा	508
५८:में (अर्हेद्र-शुअ:ग्रीशःगार्वेद्र-य:द्याया:यः)दी	508
বাষ্ট্রপামা (প্রদেশীশ শার্কি দ্বাদ্বাদ্বাদ্বাদ্বাদ্বাদ্বাদ্বাদ্বাদ্বা	509
५८:में (वर्षान्याक्षाक्षाक्षाक्षाक्षाक्षाक्षाक्षाक्षाक्ष	509
गहिराम (देश द्वा धेव प्य प्यापाय )दी	510
गश्चारा (दे.क.क्योक.य.श्चर.य.)पा.हा	510
५८:मू. (ग्रव:कूच.ध्याचीय:म.स्ट्रांच.)	510
বাষ্ট্র শ'ম' (র্ক্তবাশ বার্শ বান্তর্গ বেলহ'ন শ্রহ'ন') বী	511
মাপ্রমান্য (জিন্মেজ্মম্মর্শ্রু ন্মের্ম দেরন্দ্রন্ম শুন্ম )বী	512
निने'न'(न्नो'क्ष्न'नी'क्स'न्द्रो'से'व्यन्'स'क्षून'न')ने।	513
न्यात्रा (वर्षिमःवन्याः श्रीः इसान् श्रीः र्यम् रोत्रामः स्थान्यः स्यानः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थानः स्थानः स्थान्यः स्यान्यः स्थान्यः स्थान्	
মৃত্তিসামা (য়	516
<b>5年発(今天中華子中)</b>	
মৃষ্টিশ্ব'ম'(ই'ব্ৰাবাৰ্ম')অ'মৃষ্টিশা	
<u> </u>	

বাষ্ট্র শম (ইরি অর স্বাধান ) শে বাষ্ট্র শা	517
५८:द्रॅ.(वर्र्ट्सम्बर्ह्ट्स)द्री	517
মৃদ্ধিসামা(ইন্মানান্মা)ন্মামৃদ্ধিশা	518
५८:मू. (योष्ट्रेश्राचीट यो स्वेश्राचाट यो श्राच्याट स्वास में हर या अर्थे हर य	518
गहिरामा(स्टर्भग्नग्नग्य)त्या	518
<u> ५८:मॅ. (बिट.म्ब</u> श्चर्याया.स.)	519
ব্যক্তিশ্বাশ্ন ব্যান্ত্র বিশ্বান্ত্র বিশ্বান্ত বিশ্বান্ত বিশ্বান্ত্র বিশ্বান্ত বিশ্বান বিশ্বান্ত বিশ্বান্ত বিশ্বান্ত ব	520
५८:मू.(२४:२४४)को अर.सुटु:२४:२४१४)	520
বাই শ'শ'(ইৰ'ন্নানানা)বী	521
মাধ্যমান (মন ইলা ইন্ নার শ্লুব শূল্ব শ্লুব শ্লুব শ্লুব শ্লুব শ্লুব শ্লুব শ্লুব শ্লুব শূল্ব শূল	522
५८:द्री.(रट:इया:ब्रेट.क्रेट.स.क्रे.च्रेट.चर्च.)द्री	523
गहिरामा (स्टारेना सेट्वानव्य सेना से प्यत्र साम्याना मा ) या निर्मा	
55:र्से (5र्ह्स )दे। 526	
गहिराना (अंधर्यात्र क्षुं साने किन्ना नावतानु नार्केन नामाना कि	527
नवि'रा'(वहनाशः विद्वाशः विद्वाशः विदेशः विदे	.528

#### न्ग्रम:ळ्या

ग्रुअ'रा (क्रूंटक्टेन्ह्र्यायायदे वायान्तु यावावटान्त्र्यायावटान्त्र्यायावटान्त्र्यायाय विषया वायाया स्वराया भित्राया विषया वि	530
५८:सॅ.(क्र्ं.ं.)च्री	530
বাইশ্বাং(অব্-)শেবাশ্ব্রশা	531
५८.सू.(श्चि.स.सपर्याक्रयाक्षात्रात्राश्ची.यपु.सक्ष्य.)सू	531
স্ট্রিস'ম'(য়ৄ৾ৼ৾৽৽ৢৼ৾ঢ়ৢয়	1.
र्श्वेर न त्वन् न न न न न न न न न न न न न न न न न न	533
८८.सू. (श्चेर.चक्रेब.च.) <b>ट्री</b>	
স্ট্রশ্সে (ই:রশ্ড্রেরপ্রস্পর্যা)ব্রী	534
নার্মান (য়৸য়ড়৸য়ড়৸য়	536
५८.स.६वा.सर.वर्षाचित्रः वर्षः वरः वर्षः वरः वर्षः वरः वर्षः वरः वरः वरः वर्षः वरः वरः वरः वरः वरः वरः वरः वरः वरः वर	536
गहिराम (दे का क्रिंद म क्रिंद म क्रिंद म क्रिंद म क्रिंद म	
স্ট্রিম'ম'(য়	
५८:मॅ.( <sup>€</sup> ५.४.)च्री	540
বাইশ্বা(অব্-)শেবাশ্ব্রমা	
५८: ११ (क्रॅट क्रेट क्रॅन क्रम मार्च क्रम मा	

गहिरामा (भ्रेम्प्रम्य स्वरं स्वाद्याय स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं प्रसं मुन्यसः) या प्रिया	542
५८:सॅ (अर्वे अर्द्ध्य वीश्वरम् )दे।	542
ন্ট্রস'ন'(র্বামার ইল্মান্মনর্ম্বুন'ন')ম'নব্বি	
५८:में (क्रूटक्षेट्विमानवेक्ष्मानवाद्यान्त्वयान्त्वावर्षेमान्द्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्या	
भ्रे.श्चेर्-सर-प्रश्नुव्यः )दे ।	545
স্ট্রিস'ম'(য়'ঢ়য়য়য়য়য়য়ড়ৢঢ়ৢয়য়৾য়য়য়ড়য়ড়য়য়ৢয়ঢ়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়	
র্ষাম্রীশামিশ্রেম্রেম্বেশ্বর বিশ্ব	
সা্ধ্যম'ম'(देवे'यद'द्याया'य')दी	
	550
गहिराम् (क्षे म्वक्षामदे ह्याम्कायम् स्वत्यामदे त्यस न्वत्यस न्वत्यस्य न्वत्यस्य न्वत्यस न्वत्यस्य स्वत्यस्य स्वत्यस्य न्वत्यस्य न्वत्यस्य स्वत्यस्य स्वत्यस्यस्य स्वत्यस्य स्वत्यस्यस्यस्य स्वत्यस्यस्यस्य स्वत्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्	
সাধ্যমান (देशवः में वाया ने देश पहिन में अर क्रेंट हिन न क्रें अर में प्रायम पान्य अर पार हि	
মাপ্তমাম (য়ৄঢ়ৡঢ়য়ৣয়	
५८.स.(यर वयाची यर्या से र स्थुय संदे रेग्य संदा) या या शुर्या	
५५:सॅ (व्वरक्केश्वरक्केशक्केशक्केशक्केशक्केशक्केशक्किस्थित्यन्त्रम्यात्यः)स्	
স্থিত বিশ্ব	

५८:मू. (बरशक्र वर्षान्त्राक्ष्राचर वर्ष्ट्र स्वत्वावाचा) या प्रिमा	561
5ूप: द्राया विकास प्रमुख्या के प	561
गहिरामा (ब्रेज्यमान्य निवासे सम्बर्ग निवास	567
মাপ্তামান (বনাবানে আইন বাস্থান বাস্ত্রী আ	568
न्दःसः (व्यम् व्यव्यमः से व्यव्यम् यम् यव्यक्षः व्यव्यक्षः यात्रः स्वयः वः स्वयः वः स्वयः वः स्वयः वः स्वयः वः	568
५८:द्रॅ.( <sup>₹५.५.</sup> )दे।	568
বাষ্ট্র শ'ম'(অর')অ'ব্য	569
गहिरा (श्वेराहे नर्से सम्भाना से प्रम् प्रमान स्थान स्	571
বাইস'ম'(ইমাট্রান্বনামান্ট্রমান্ত্রন্বন্না)আবাধ্রমা	574
न्दःसं (इत्रयःहेरःग्वम्यवेदेः क्षेय्यः क्षेयः क्षेयः क्षेयः चित्रयः स्वर्यः स्वरं स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वरं स्वर्यः स्वर्यः स्वरं	574
न्दःसें (लुक्षःइदःयःहे न्दरःग्विगःयः नक्षें व्यःयः)त्यः निहे।	575
५८:द्री (क:ठव:ख्राराप्तवेव:योर्प्याप्तव्यप्तव्यः)द्री	
गहिराम(क्रम्याण्यमाम्ययाम्ययाम्ययाम्ययाम्ययाम्ययाम	579
ग्रुअ'रा'(देशव'र्द्द्वविद्येद्यवे'खुश्रःक्षे'खश्रःक्ष्युवाक्ष्यक्षाक्ष्यःस्थे'रेग्रायःमः)दे	581
नवि'रा'(देशम्दानम्यादारस्दानविदासेद्रास्त्रम्यान्याः)दे।	581

गहिराप (क्रमान प्रत्या के मान निष्या महिला प्रति ।	582
५८:सॅ (क्रॅर्न्नर्र्ने स्क्रिंस्ट्र्ने स्ट्र्निव्यक्षेत्रः मुन्न्न्न्न्न्न्न्न्न्न्न्न्न्न्न्न्न्न्	582
५८:सू. (क्र्य-य-स्वाप्य-प्र-प्याचेत्र-मीक्ष-प्र-प्याचीय-प्र-)	582
ग्हें राम (क्रम्य वर्षेत्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त वर्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र स्माया वर्षेत्र क्षेत्र स्माया वर्षेत्र सम्माया वर्षेत्र सम्माया वर्षेत्र सम्माया सम्माया वर्षेत्र सम्माया वर्षेत्र सम्माया वर्षेत्र सम्माया सम्मा	583
ग्रुअ'रा'(देशदःक्षरःमःररःमद्वेदःशेदःमरःक्ष्र्यःमदेःक्ष्यःपर्द्वेरःयःमद्वश्यःसरःमद्वश्यः।)दे	585
ন্ধিমান (ক্রুমের বির্ক্তিমানুর মান্বাবার ) যে বাধ্যমা	586
५८:द्रीं (५वट:द्रॅब:इट:व:रट:वविव:क्रीश:गुव:व:दग्गा)दे।	586
মাষ্ট্র শ'ম'(ক্রমপ্রশার্র বান্ত্র বার্ত্র মান্ত্র বার্ত্র মান্ত্র বার্ত্র মান্ত্র বার্ত্র মান্ত্র বার্ত্র মান্ত্র বার্ত্র মান্ত্র মান্ত মান্ত মান্ত মান্ত্র মান্ত্র মান্ত ম	588
ग्रुअ'रा'(देशदांदे माशुक्षास्त्राच्याचीत्राचेदांदेवीयार्यात्तराचित्रचीकात्राचीताया)दे	588
ग्रुअ'रा'(५भ्रेग्रम्ध्यम्रम्मित्रेष्ठ्रम्मुम्मम्मित्रम्भः)दे	590
निन्यं (क्रॅन्निन्दिः धुवाड्वान्द्रान्विवान्नीकान्त्रान्त्रान्यान्यः)दी	590
নার্সামা (য়য়য়য়য়য়৸য়	
५८:द्रीं (धेर्-ग्री:वेश-प्र-र-प्रवेद-ग्रीश सेर्-प्र-प्रमूद-प्र-)दी	
गहिरामा (इसक्षान्य मान्य	
निं'रा'(क्रॅंश:इव:य:हेर:वाववा:वर्क्क्रेंब:य:)दे।	

गहिरामा (नने व महिर्या के राम्मी प्रमान प्रमान के स्मान प्रमान के सम्मान के समान क	595
५८:सॅ.(२.१८८:वेता अंत्र वेता अंत्र वेता वेता वेता वेता वेता वेता वेता वेता	595
गहिराम(बुग्ने द्र्रम्य न सूर्य न सूर्य न सूर्य न	597
ग्रुअ'रा'(र्द्दन्वेशप्तदेदप्तरम् ग्रुवप्यायाः श्रुवप्तेद्रप्तरम् वस्त्रवप्ता)दे।	599
না্ধ্রমানা (নদ্মান্ধ্রদান্ত্রদান্ত্রদান্ধ্রদান্ধ্রদান্ধ্রমা	602
र्रः र्रे (र्हे हे महेन्य अये महत्रे के न्या ) या खू	602
५८:द्र.(क्.स्रेर.२.क्रे.च.२वावाऱ्य.)द्री	602
মৃষ্ট্ৰ ম'ম'(দ্বান্ত্র ক্রুনালব অম শ্লুন্ন ন্বান্ত্র মান্ত্র মান্ত্র মান্ত্র	603
५८:में (५वट:ध्वांनी:र्नेक:देश:व्य:५वावा:वर)	604
गहिरामा (ह्यामा धेवावाक्रेवा स्वागुवाक्री क्रुमा के स्वामा क्रिया स्वामा	606
ग्रुअपः (हुलाञ्चत्रह्मानाक्कुः से दार्थित्राचाद्मामान्याच्यत्र विवाद्यत्याद्वाञ्च द्वाद्यत्याद्वाञ्च द्वाद्यत्याद्वा	609
মার্মেমে (বার্হ র্ট দ্বানেরমার্ম্বী বাহবাবারে ) মে মার্ট্র মা	609
५८:द्रॅ (वर्रेट्स्न्र्क्न्स्)द्री	609
ন্ট্ৰ'ন্ (বিশ্বৰ'ব্ভূনৰ) অ'ন্ট্ৰ্ৰা	
५८:मू.( <sup>१६४</sup> )ज.याश्रुश	

५८:द्री (वार्ड के का से दार्ग्य हमा प्रान्त्र स्वाय क्यू का स्वाय के का स्वाय के कि का से दाय के कि का से दाय के कि का से दाय के कि	.610
गहिरामा(ह्यामायाधेवामाया)दे।।	612
ग्रुसम्(व्यम्यः स्ट्रम्येन्यम् स्ट्रेश्चेन्यः म्यान्यः )ते	614
गहिरामा (१वु:सामाया क्रिंदासी सहद्दर्भामा)दे।	617
नवे'म'(क्रु स्थेन्न्यायानवे र्नेब्न्यूर्यः)री	619
त्रंत्र (नन्ना निष्य महिष्य मा त्य शक्षे न न्ना ना न ) दे ।	619
गहिराप (हेद प्रत्वेष ग्री माहद केंग्र भ )दे।	
মার্মেম (য়৴য়ৢ৽য়য়৸য়৸য়ঢ়য়য়৸৸)য়য়য়	
५८:द्रें (गह्रदःक्षेत्रायान्ध्रुवयाद्याः क्षेत्राचाराः निष्णात्रायाः क्षेत्राचाराः कष्णात्राचाराः क्षेत्राचाराः कष्णात्राचाराः चर्णात्राचाराः चर्णात्राचाराः कष्णात्राचाराः चर्णात्राचाराः चर्णात्राचाराच्याः चर्णात्राचाराच्याः चरात्राचाराच्याः चर्णात्राचाराच्याः चर्णात्राचाराच्याः चर्णात्राचाराच्याः चर्णात्राचाराच्याः चर्णात्राचाराच्याः चर्णात्राचाराच चर्णात्राचाराच्याः चरात्राचाराच्याः चराचाराच्याः चराच्याचाराच्याच्याच्याच्याच चर्याच्याच्याच्याचाराच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्य	622
गहिरामा (देशवनानाम स्टानिवेद मीश्रम्मान सामेनासमा)दी	625
ग्रुअ'रा'(देशक्षेत्वं शेत्रक्ष्यायक्षेत्रः गुनायः)दे	626
ग्रुअप्र (देशक् क्रूटक्षेटक्षेत्रक्षेत्रके प्रमण्यायन प्रमण्यम् स्वर्ष्ययाया । या स्वर्षा	627
५८:मू.(यर्थश्यःस्ट्र्स्थः)त्यःयष्ट्रिश	627
५८:में (मद्रशास्त्रम्राक्षेत्रम्रम्भद्रम्यः)दे।	
गहिरामा(देक्षिकाराव्यावनद्वन्यम् सेवाकारा)दे।	

गहिराप (वर्षेर वरे हे सन्धेना सन्ध्र वरे क्षेत्र वरे क्षेत्र वरे के दे वरे वरे वरे वरे वरे वरे वरे वरे वरे वर	630
५८:में (क्रें विदेव हे अ ५ से नाय ) दे।	630
गहिरामा (वहिनाहेदा द्वी स्वेद हेरा द्वी नाया )दी	631
ग्रुसम्(नदेःवर्म्स्भ्रुमःग्रुर्द्रम्स्रेन्स्यःवरेःक्रमःभ्रुतःवरेःवर्यःवरेःवर्यःवर्यः)दे	
বলি'বা'(ব্যাদের্ব্র মাণীর দুট্ট্র ব্যাদার ব্যাম্যার স্থান	
न्त्रात्त्र्यः (देशःवःस्टःमानव्यःवर्षेत्रः नवेः श्रृमाः नश्यः श्रीशः सव्यः नः वः श्राःस्वः न्तः नः वर्षेशः मा	
ग्रुअ'रा'(श्वेदाहे केवारीती क्यायती पहीं वासूद्र या प्रस्वाय )वे	637
गहिरामा (विद्वित्सळ्द्) दे।	641
येतु'नडु'मा नर्शें न'नश्रुव'मा	
न्दःस्र्रं (खेद्धदेःम्बुदःम्बुदःम्बुदःसः)त्यःम्बुद्धा	642
न्दःसॅ (बेदुदेःब्बुहःब्ब्वृहःबः)त्यःम्बुझ	642
५८:२ॅ. (जे.दे.च.व.इच.व.च.) प्र.चा श्रुसा         ५८:२ॅ. (जे.दे.च.व.इच.व.च.व.च.व.च.व.च.व.च.व.च.व.च.व.	642
प्रिंग् (वर्षे व क्रिया क्रिय	642 644

५८:मुं (म्रम्भन्यः क्रीन्यदे न्यं न्यं न्यं न्यं न्यं न्यं न्यं न्यं	644
गहिरामः (अवरः विवानी नदे नदे द्वार् न क्ष्यः न ) दे।	
মাষ্ট্র সামে ( হর হের্লিই স্থুলা নম্প্র নার ইর হিন্দ্র নার স্থা নার স্থা	645
८८:मू. (२१०१:यह्या:यह्यःवे:यः)यःयहिया	645
५८:मू. (क्ष्यानक्ष्यक्षुर-५:ब्रेनर-नर्क्नः नः)यः माशुसा	646
५८:मू. (मूनानम्यः श्वेरावे नरानर्थे नः)म्	646
মাষ্ট্র শ'ম'(মান্ম শ্রান্ত্রী শ্বুনা নশ্বনারী না)বী	
মাধ্যমান (ক্র্ন্স্রিন শ্রী শ্রুবা নহুবা লি নহন বহু নি ) মান নি	
५८:में (बुरक्ष्यःश्रेसशन्द्रवे:क्रियाशःग्रेशःश्रेदायशःबुर्य्यवे:क्रुशःश्रृष्यानश्र्यःवे:वर्य्यः	
गहिरामा (हे त्विर्म्य विस्वान स्वान स्वान विस्वान )ही	
ग्रुस'रा'(न्ह्यूत्र'म्ब्रूर्गं न्व्रूर्गं न्व्यूर्गं न्व्रूर्गं न्व्यूर्गं न्यूर्गं न्वयूर्गं न्ययूर्गं न्ययूर्यं न्ययूर्यं न्ययूर्गं न्ययूर्गं न्ययूर्गं न्ययूर्यं न्ययूर्यं न्ययूर्गं न्ययूर्यं न्यय्य्यं न्यय्यं य्यय्यं य्यय्यं य्यय्यं य्यय्यं य्यय्यं	648
निन्दि निर्देश्य निष्ट्र निष्ट	
বাষ্ট্ৰ শ'ম'(গ্ৰাল্ব-গ্ৰী:য়য়ৢয়'ল্লি:বম্বর্ষ্বে)ম'মল্লি।	
५८:मू. (श्वा व हैं है क्षूंवर्य ग्रीय स्वा वस्य वि व )	
गहिरामा (शुक्रम्यावीवाया ग्री श्रुवाया है ) दे।	

#### न्ग्रम:ळ्या

ग्रुअ'र्भ'(वहस्रामवे:न्बुर्याक्चे:क्वेंव्युव्य)र्दे	652
प्रवि'प्र'(हे.यदु.श्रंश्याविष्य.मी.वेश्यायशावि.यरःश्लॅ्य.य.)ये।	653
गहिराप (५५ वर्षे दे सूना नस्या दे नर नर्षे न )दे।	654
মাপ্তাম'ম'(ঋ'বৃল্শ'গ্রীব্রব্,ব্রফ্র্ন')বী	654
মাধ্যমান (दे-यदे वर्षे देव देव देव देव वर्षे वर्ष ।	655
न्दःस् (ध्वाःवर्षःन्दःच्यःवरःवर्षःवः)त्यःन्त्वे।	655
५८:स्. (२२८:स्.स.क्टर्यःस्ट्रेट्ड्रिट्स्स्ट्यःमी:ब्रियःस्ट्रेस्स्ट्रेस्ट्रेट्र्यः	655
गहिरामा (न्तुयानदे सूनानस्यान्दाधेन्द्री नदे सेन्यम् नर्से न )दे।	656
ग्रुअ'रा'(द्रानवे:धूनानध्यान्द्रध्यान्द्रध्यान्द्रध्यान्यस्याक्षेत्रवानध्याक्षेत्रवान्यस्याक्षेत्रवा)दे।	657
न्ते न्तः (द्विम् शःशुःवर्त्ते नवे सूमानस्यान्दासे साधित क्रीमिर्दिन साबे नन्दानर्से ना) दे।	.658
মৃষ্ট্ৰ শ্ব (বইন্ দেই ব্ৰায়ুন দেন ন্যূ নি ) অ'মৃষ্ট্ৰ শ্ব	
८८:मू. (श्चेर:श्चेद:र्व.२.वर्ष्.य.)पःगशुस	
न्द्रमें (स्वरक्ष्म अर्डेन यर नर्षे न )य नि	
५८:मू.(१४८-४०.४१२.११८-११८०)	
पहिराप (वळे न से प्रेंट मो ने महे प्रमुद्दा सुद्दा सुद्दा स्राह्म मार्ग मार्ग में मार्ग मार्ग में मार्ग मार्	

#### न्ग्रन:ळ्या

ग्रुअ'रा'(ग्रुग्भःसुद्राळेंग्भःद्रःद्यद्रायःसळेंग्।तुःद्युरःचःवर्थेःचः)दे।	661
नवि मः (न्नो नः सुद्रासुद्रास्त्रमः स्वर्गनः नर्स् नः )दे।	662
ন্দ্রিশ্বামারিকার বিষয় বার্বিকার কর্মানার বিশ্বামার বিশ	
५८:मू.(वर.जंशःश्चीय.तंत्र्यंत्रःश्चितःक्ष्यंत्रःतंत्रंत्रंत्रः)मूर्यः ।	663
বার্ষমে:(বার্ষাপ্শবশাবর্ত্তিমানান্দাবন্দাবন্দাবর্ত্ত্বানানান্দাবন্দাবন্দাবন্দাবন্দাবন্দাবন্দ	663
५८:द्रॅ (क्रेंस्ट ब्रेट क्रॅंस्ट क्रेंस्ट क्रेंस क्रेंस्ट क्रेंस्ट क्रेंस्ट क्रेंस्ट क्रेंस्ट क्रेंस्ट क्रेंस क्रें	664
गहिरामा (यदायर्ग्नायाये क्षुं नें यानाम विमानने नाया क्षुं नाम नक्षें ना) दे।	665
ग्रुस्र'रा'(न्र्व्रश्यंत्रेर्थं ग्रुन्रकंटाबेटावार्वेन्यावें न्यावें न्यावें न्यावें न्यावें न्यावें	666
বাষ্ট্র শ'ম'(ঐ রুণ'ড় মন স্তুদ নবি দ্বিদ্য নর্ই ন') অ'মু।	668
५८:सॅ (५ने ५५, व. में ५५ में ५५ में ५०) दे।	668
মৃষ্টিশ্ব'দে'(দ্লী:র্শ্লুদ্লী:দ্র্লিন্দ্র্বন্ত্র্নিন্দ্র)বি	668
নাধ্যমানা (ব্লা-র্য়ুন্মের ব্র্রু-র্ন্ত্র্র্র্ন)ব্র	
न्ते न (क्ष्य विस्वर सुद्द सुद्य र्से वा वा सम्मान के वि	
स्या (त्व्र अ त्यु न ने न न न न न न न न न न न न न न न न न	
नवे'न'(अंसम'ठद'ग्रे'न्द्रंन')दे।	

#### न्गारःळग

गहिरा (वहिना हेदायस वर्षा प्रति देव प्रति हेंदा प्रवर्ष प्रति हेंदा प्रति हेंदा प्रति हेंदा प्रति हेंदा प्रति हेंदा प्रति हेंदा प्रति हैंदा है देव प्रति हैंदा प्रति हैंदा है देव प्रति है	671
५८:में (ब्रट्स्वरंशेस्रश्रद्धतरंशेस्रश्रद्धतरंशेरविद्दित्रत्युवरंपरंवर्शेर्वरं)दे।	672
মাষ্ট্র শ্বাসে (মহমাক্রু শান্ত্রী মার্চ্বামারহ্ব প্রীর্বান্ত্র নহার্ক্ত্রিক বিদ্যান্ত্র	672
ग्रुस'रा'(१९व:रर:मी'नबेर:र्नेव'वश्चन'यर-नर्थे'नः)दे।	672
गहेशप'(रहर्न्न'र्'नक्ष्रें न')य'निही	
५८:मू. (विष्ठ अ.भैवश.भैवश.भै. वर्च अ.चे. कूच त्यर क्षूच त्य. )चू	
गहिरामा (वहसामने न्वर्या ग्रीयान्स्यास्य स्वास्य स्वास्य स्वास स्व	674
ग्रुस'रा'(जुरःकुनःशेस्रशःद्यदेःश्चुन्यःयात्रश्यःस्ट्यूॅव्यःयः)दे।	674
पवि'प'(मालव'र्नेव'सम्मेश्वेव'सम्ब्रेव्सा )वि।	675
মাপ্তমানে (বই বর দেলু দেলার শাব মূর দালু শাবর ইর দ্বাদ করি না) বী	676
ग्रुअ'रा'(नगवर्देवर्ह्शर्युर्द्वर्घश्युत्वर्वयात्रः)ते।	676
মান্ত শ'ম'(बे दुवे सळंत्) বী	677
বল্লী ব্ৰ'(মূচ্যাণী ব্ৰ') থ' বাষ্ট্ৰ শা	
५८:स्. (नक्ष्र्य नर्डे अःग्राद्यो अः सहदः यः )दे।	
गहिरामा (ग्रामी साम्बुस्मिते संवा) दे।	

य मिर्ग्या भून्यसमित् कृष्यसि द्वार्या स्वर्या भ्राप्य क्ष्यस्य क्षयस्य क्षयस्य

शेर-श्रुन्न्यर-वह्य-नुग्नुह्य-नश्रिन्न्ययाग्रीया

देन नर्डे अ वेद पद्माय अप्याद्ये अद्युक्त कुर्द्य अदेद से प्रिय केंद्र इक्तु प्राप्त हुर्द्य marjamson 618 @gmail.com

# २० | | ज्ञान्य क्ष्या क्ष्य क्य क्ष्य क्ष

स्टाक्षेट्राक्कें स्वर्थागुन्न जुन्द्रिशास्त्री स्टाह्म स्टाहम स्टाह्म स्टाह्म स्टाह्म स्टाह्म स्टाह्म स्टाह्म स्टाह्म स्टाहम स्टाह्म स्टाहम स्टा

रटाक्ष्यक्रिनावहें वावन्यस्थान हेट्याया । द्यवायक्षेत्रावहें वावन्यस्य होट्याया । वनः र्रोदिः ने छिनः हिंगायाया से 'न्यों या वेया। नवेन प्रायेगा प्रमायकन ह्याया या या स्था विया।

दे.ल. तदे र क्रिंश श्राण्य प्राया प्

देव्यायदे मुयायदे न्याय्याय व्याय्याय व्याय व्याय्याय व्याय व्याय्याय व्याय्याय व्याय्याय व्याय व्याय्याय व्याय्याय व्याय व्य

ने त्यः श्चे र वाश्वर र त्या अवय र वा वी र वी र सं या स्वाय वि र वि र या र या र या र वि र या र या र या र या र या र या र

मश्रदःस्वः स्वयः द्याः वेयाः सः क्षेत्रः स्वाः सः द्याः स्वयः स्वयः याद्याः स्वयः स

देशसहर्भित्रम्भ्रम् नर्डेश ग्रुट्रम्भ्रम् सेर्थे श्रुट्रम्भ्रम् स्ट्रिया स्

यळ्व श्री देवा वशुर श्री श्रम गल्द भी देवा यह गामी देव हैं। । दूर से (यळ्व श्री देवा यह गामी देव हैं।

कुःगरःभूतःतु। र्वः क्रे स्वरूषः वः हुः स्व र्वेतःभूतःतु।

मु-ग्र-तुन्येस्य-निवे र्थेन्यः यस्य स्थितः स्वि न्यः व स्व

नर्डेशप्देविः भेटार्ने हैं ते 'र्नेन्भून'तु म्हन खुन'त्रा शानु ते शेश्रश्यान्यवः त्रा दूड ते श्रुंत्यान्या अया हू र ते पहुनाया लेश मुद्री । नशर्यान्यः या

सदसः मुसः द्वात्रः विद्यात्रः स्वीत्रः स्वीत्यत्रः स्वीत्रः स्वीत्रः स्वीत्रः स्वीत्रः स्वीत्रः स्वीत्रः स्वीत

বাধ্যমান (বার্চ বার্ট্র) প্রাম্বিশ

श्रेण'रा'केत्'र्यि'य्यय'श्रेष्ट्री'र्यय्य'र्य्यत्वि'र्या'र्यंत्रि'य्यय'श्रेष्ट्री ।

 र्यायात्र्र्। व्यायात्र्र्या व्यायात्र्र्या व्यायात्र्र्या व्यायात्र्र्या व्यायात्र्या व्यायात्र्यात्र्या व्यायात्र्यात्र्या व्यायात्र्यात्र्या व्यायात्र्यात्र्या व्यायात्र्य

শান্ত শাংশ (ব্যুশ ব্রুশ ব্রুশ

यदे याने यात्रा केंत्रा श्री भुग्यदर श्रू शाय दश्य प्र

ध्याःदेशःगुत्रःययरःगुरुःयर्द्धयाःवळवःहे।।

८र्गेव् सर्क्रेवा वाश्वस ५८ । । सर स्वा १ वर्ष स्व १ वर्ष । स्व १ वर्ष स्व १

শৃशुअ'स'(क्षेनार्देवः)दी

शुः वा 'हते : श्रुं श्रुं स्था सं नि हे वा श्रुं सं स्था सं स

स्त्रीत्रां स्त्रीय्यात्र स्त्र स्त्रीय्यात्र स्त्रीय्यात्र स्त्रीय्यात्र स्त्रीय्यात्र स्त्र स्त्रीय्यात्र स्त्र स्त्रीय्यात्र स्त्रीय्यात्र स्त्रीय्यात्र स्त्रीय्यात्र स्त्रीय्यात्र स्त्रीय्यात्र स्त्रीय्यात्र स्त्रीय्यात्र स्त्रीय्यात्य स्त्रीय्यात्र स्त्र स्त्रीय्यात्र स्त्रीय्यात्र स्त्रीय्यात्र स्त्रीय्यात्र स्त्र स्त्रीयात्र स्त्रीयात्र स्त्रीय्यात्र स्त्र स्त्रीयात्र स्त्र स्त्र

प्राप्त स्थानि । विक्रित्त स्थानि । विक्रित स्था

महिश्राय (वलन्यस्य वज्य) त्या विश्वाय क्ष्याय विश्वाय विश्वाय

#### ५८:सें (वर्ह्न्युद्धार्था वर्द्धार्था)दे।

## नदे निवेग्य श्रय ग्री क्रिया । ।

यहर्नियात्यः विश्वास्त्र विश्

गहिरामा(स्टान्डेविक्रियामाञ्चरामा)दे।

वित्रिंश्रिश्चर्या वर्षे स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स्वापति

### ·····व्ह्यायकी।

# स्र-निव्

वेग्।यःकेत्रःविष्य्याग्चीःत्रेयायायवदान्गानन्त्रःयःवःद्वायात्रेः केत्रायदेःख्रान्याकुतःत्रयाद्देःकृतायवित्रःतुःवकत्याधेत्रःवितःवित्रःवि

गशुस्रास (क्ष्यास क्षर स ) दे।

र्दे त्राप्तराया नहेत्र त्र अहिंग्या स्ट्रास्य किंग्या प्रदे । न इस्र सामा के मुल्ले त्र

# यर्रेर'नशुराद्यादे 'नर्हेर्'यर'ग्रा

र्ह्मेश्वराधेन्द्रम् । विक्रान्य विक्रम्य विक्र

नवि'न'(५र्मेशःर्सेन्यश्चवि'र्देशःनबुदःसः)वि

वेगामळे त्रिति त्यस्य त्यस्य स्त्र प्राप्त स्त्र स्त्

ग्रुअ'रा'(विदशःश्चुद्शःविदःईसःसरःश्चॅं प्रवे:क्वुःसळ्वः)य'ग्रुस

विद्रशः श्रुद्धः प्रविद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः श्रुद्धः प्रविद्याः विद्याः श्रुद्धः प्रविद्याः विद्याः श्रुद्धः प्रविद्याः विद्याः श्रुद्धः प्रविद्याः विद्याः व

५८.स.(विरमः श्रुटमः हे नावतः ईवः ५ नाई वर्षः सह ५ नः )दी

# र्श्व कर साम्यानय प्रति र महिंद से द्वा । र्श्व कर साम्यानय प्रति स्थित से स्थित से स्थान साम्यान्य प्रति ।

याश्वरःस्वाहे 'क्षुं' वा विद्यहें दि 'च्या विद्यहें विद्

रनः यश्या स्वाद्या स

महिरामा (नक्ष्यम्बर्धस्य क्ष्यम्बर्ध्यम्बर्धः निर्मा प्रमानित क्ष्यम्बर्धः निर्मा प्रमानित क्षयम् प्रमानित क्

 यर त्युर तथा वद्यां वी प्रत्या प्रत्या व्या विष्ट प्रत्या प्रत्या प्रत्या विष्ट प्रत्य प्रत्या विष्ट प्रत्या विष्ट प्रत्या विष्ट प्रत्या विष्ट प्रत्य प्रत्य विष्ट प्रत्य व

# वन्यान्द्रः भूवान्यक्ष्यः याव्यव्यक्षः याद्या । विश्वेषः याद्या ।

यावन् श्री दें न्द्राया स्थान्य स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य

दश्या छे त द हैं । हैं

महिषान।(व्यक्षित्रेन्नान्नेन्नान्नेन्नान्नेन्ना)यामहिषा न्यायर्जेन्नाजी:हेदायाक्षेत्राची:ज्ञूतानदे:श्रीतान्नीयानेना क्षेत्राची हे:क्ष्र्तायोदायोदान्तिन्तान्निमानिकायाः 

### नयायम् रायने ने ने ने नियम् भी न प्राप्त ।

न्यायर्चे नः र्षेनः प्रते हेन यदे या ने स्वायन्त्र स्वायन्त्य स्वायन्त्र स्वायन्त्य स्वायन्त्य स्वायन्त्र स्वायन्त्यस्वयः स्वायन्त्य स्वायन्त्यस्य स्वायन्त्य स्वायन्त्य स्वायन

श्चेशःत्रेः द्वःश्चनः श्चनः स्याः यश्चनः । वायः हेः यदेः यः यव स्याः यश्चनः याः यः यश्चनः । श्चेशः यदेः यदः प्याः यश्चनः याः यः यश्चनः ।

न्याय में राष्ट्र से नाय पेर हे नाय दे प्या के भारत है नाय के नाय प्राय के नाय के

नर्गोबरमये धेरर्ने।

द्यात्र्र्च्र्रह्न्द्रग्याय्यात्र्व यन् अश्ची स्थान्यत्र्व्याः स्थान्त्र्यः स्थान्त्रः स्थान्तः स्थान्तः स्थान्तः स्थान्त्रः स्थान्तः स्यान्तः स्थान्तः स्थान

त्र्र्चर्या विष्ठः द्वेरहेन द्वेर्या विष्यः या विषयः या विष्यः या

गहिरामः (श्वेदः संस्थितः विद्यान्त्र विद्यान्त्य विद्यान्त्र विद्यान्य विद्यान्य विद्यान्त विद्यान्त्र विद्यान्त विद्यान्त्र

नश्रव नर्डे भारते भाश्चे भागु के दार्ध न स्था मार्श्वे दान देश प्यव प्या मार्श्व न विद्या स्था न स्

शेश्वर्गात्रेश्वर्गात्रेत्र्वर्गात्रेत्वर्गात्वर्गात्रेत्वर्गात्रेत्वर्गात्रेत्वर्गात्रेत्वर्गात्रेत्वर्गात्रेत्वर्गात्रेत्वर्गात्रेत्वर्गात्रेत्वर्गात्रेत्वर्गात्रेत्वर्गात्वर्गात्रेत्वर्गात्रेत्वर्गात्रेत्वर्गात्रेत्वर्गात्रेत्वर्गात्वर्णात्रेत्वर्गात्वर्गात्रेत्वर्गात्वर्गात्वर्वर्गात्वर्गात्वर्गात्वर्वर्गात्वर्वर्वर्गात्वर्वर्वर्गात्वर्वर्वर्गात्वर्वर्वर्वर्णात्वर्वर्वर्वर्वर्णात्वर्वर्वर्णात्वर्वर्वर्वत्वर्वर्वत्वर्वत्वर्वर्वर्वर्वत्वर्वत्वर्वत्वर्वत्वर्वत्वर्वत्वर्वत्वर्वत्वर्वत्वर्वर्वत्वत्वर्वत्वर्वत्वर्वत्वर्वत्वर्वत्वत्वर्वत्वत्वत्वर्वत्वत्वत्वत्वत्वत्वत्वत्वत्

न्दःश्रेशः नश्रुदः निर्देशः नश्रुदः निर्देशः न्त्रिशः निर्देशः नि

योद्धार्य स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्यान स्थान्य स्थान

गहिश्यः (अः अवेद्वान्त्वन्तः) व्यानिश्वा ज्ञानः कुत्रः ग्रीः सेस्रशः स्त्रें स्यतः व्येत्रः त्रस्यः स्त्रः प्र गहिश्यः नक्षेत्रः त्रसः श्रीत्रः स्वरः कुष्यः व्यानि

५८:में (ब्रह्म क्षेत्र से सम्बद्ध स्वर्षेत् प्रमास मार्थ मार्य मार्थ मार्य मार्थ मार्य मार्थ मार

ষ্ঠাম্বম্য

ये दिवे मानु र मन् र भ र र । ये दिवे अळ द दें॥

५८:में (बेदुवे महिरम्बर्ग )य महिरा

श्रेग'राःश्वेदःबिदःद्यो'राःश्चुरःदेयाशःसरःयाद्यशःसःद्द। ग्रुदःकुराः श्रेग'राःश्चेदःखेदःकुशःसरःवश्वशःसर्दे।।

५८.स. (इवासार्बेराबेरास्वोत्तर्वोत्तर्वे वाश्वास्य वार्ष्यश्वरायाः)द्री

म्नियात्याः भ्रद्भायम् भ्रद्भा ।

# ने'स्वा'हेव'नर्शन्यक्ष'कुर'हेन्'य'ह्या । यहेवा'हेव'नर्शन्यक्ष'कुर'हेन्'य'ह्या । ने'स्वा'न्यक्ष'कुर'हेन्'य'ह्या ।

र्दारुवार्वो नाष्ठ्रस्य सुदाबित् भ्रेवारा भ्रेवसाळे नवे त्रादिर श्रेवा पदि विहेत सॅर नर्झे सामायायन पर रेवा साहे है सूर हे प्रेर त यक्षत्रः श्रेत्रात्वनाः श्रेतः तुयात्वयः श्लेनाः त्यूत्रः नितः स्तेतः स्तेतः स्तेतः स्तिनः स्ति। यत्राधियानकु त्ययात् वहिषा हेत् या इयया वा वर्षे दात्रयया चु खूया यदे । न्नो न सून परे र्हें र्शे अ से र प्याय र स यह र नी। नु स कु न नु से प्रहुर यः क्रुः सळ्दः ने व्हः नशः दः न्वो नः हसशः कुरः नः हेनः यः नुशः हवा हुः वादशः यन्ता श्वेत्रस्या शुन्यत्यन्तर्यः वर्षः वर्षे वर्षे न्यत्रे न्यत्रे स्वाकेत्रयः र्देनशक्तेत्र में मुन्यस् नगर विद्या यहेनश्यक्तेत्र में नहीत्यश्वितः वर्गेयाप्रभावन्त्राच्यो वास्त्र मुक्तावाद्र देवापा देवा माने विकास *য়*ॱঀेয়ॱয়ৼॱॻॖॱয়देॱर्नेबॱत्ॱড়ৼॱয়ঀॸॱॸॆ॔।।

 क्र्याग्री सेससार्स्स्र सामदे माटा वर्षा ता महेंदा महिं।

५८म् (ब्राक्ताक्षेत्राक्षेत्राक्षेत्राक्ष्य प्राचित्राक्ष्य प्राचित्राक्ष्य प्राचित्राक्ष्य प्राचित्राच्या

श्रेवा'य'स्त्रवय'द्वा'यह्स्स्रसंभिवा'द्वो'त'स्वयःद्वा'तश्चुत'तुस्र'य' द्रा भेर'द्राह्यद्र'यर'ठत'र्वेत'य'द्रा यत'र्थेत'द्वेस'त्वप्र'यंद्र्य

५८.स.(क्रिया.स.सवत.र्या.पह्स्स्स.ल्या.र्या.सवत.र्या.पक्षीय.वेसा.म.)ता.या.श्रीया

श्रेनामा केतार्रे पहेँ समाया निष्य के नाम क

५८.स्. (क्र्यानाक्षेत्रस्यक्ष्याना)दे।

श्चेताः संभूत्र राक्षेत्र राक्षेत्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राक्षेत्र राष्ट्र राष्

न्यो यावव यार यो य वेष की यावें व यर वकुरा।

च्रत्त्वत्यः श्रेश्वस्य विश्वस्य विश्य

স্ট্রশ্ন (বই বার্ক্র্লাব্র্র্র্বার্র্র্বার্

नङ्गलायानु स्वरास्त्रान्ति रुष्ट्राय्यायान् । श्रुतान्त्रान्त्रस्य स्थित् । श्रुतान्त्रान्त्रस्य स्थित् । श्रुतान्त्रम्य स्थित् । श्रुतान्त्रम्य स्थित्। । स्त्रियां स्थित्। । स्त्रियां स्थित्। । स्त्रियां स्थित्। । स्त्रियां स्थित्। ।

ग्रुअ'रा'(हे क्रूर पर्रे र पर्वे र्रे व नश्चुन वु य पा) दे।

श्रीत्राप्ते श्रूणात्रश्यात्र श्रुणात्र श्रूणात्र श्रूणात्य श्रूणात्र श्रूण

### इट दुन से समाहेट ह्या हु नहर से इ।

यह स्वार्थ स्

वहिना हेत थु सेर नडरा परे सुना गुर वशुरा।

 वनाम्बर्णवर्ते निर्मार्थित स्थानि स्

ग्रुअ'रा'(वद'ळॅद'न्वेश'वन्द्र्रां)त्य'र्ज्जा

५८:सं (न्यदायायळॅगानुन्नश्चरानवे न्वे)दे

यश्चरः स्टेश्यः स्टेश्यः स्टेशः स्टे

स्वायाय्य स्वाय्य स्वायाय्य स्वाय स्वायाय्य स्वायाय्य स्वायाय्य स्वायाय्य स्वायाय्य स्वायाय्य स्वाय स्वायाय्य स्वायाय स्वायाय स्वायाय स्वायाय स्वायाय स्वायाय स्वाय स्वायाय स्वाय स्वायाय स्वयाय स्वायाय स्वायाय स्वयाय स्वयाय

स्वाधारक्षे मार्थर निर्ध्य स्वे । विष्य स्वे स्वाधारक्षे मार्थ स्वाधारक्षे मार्थ स्वाधारक्षे स्वाधारक

गहिरामा (क्रिन्न्ग्य बिन्ने क्रिन्ने प्रति प्रति

त्र्वीं निर्देश्वे नि

ग्रवेग्रथःयदेःध्रेरःर्रे।

ग्रुअ'रा'(वन्र्यानु'स्रे'न्द्र्वेद्रायसेव्यानवे'र्वे)ते

न्यो न यावन गान कुरी न यावन गान कुरी । याक्ष न यावन गान कुरी न याक्ष मान या

द्वो नः श्रे : बद् : हिंदि : विक्या नि स्व : विक्या क्षेत्र : विक्य क्षेत्र : विक्या क्षेत्र : विक्य क्षेत्र : विक्या क्षेत्

श्वाप्यायक्षेत्र प्रश्चन व्याप्य व्याप्य वित्र प्रयाप्य वित्य वित्र प्रयाप्य वित्र प्रयाप्य वित्र प्रयाप्य वित्र प्रयाप्य वित

# न्यानम्बन्ध्यान्ये अः भ्रेष्यात्यु नः न्या

त्रुट्ट व्यक्ष्याचे स्वास्त्र क्ष्याचे स्वास्त्र स्वस्त्र स्वास्त्र स्वस्त्र स्वस्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र

य्रंपः (ध्वानःक्रेवाश्वेदःसःस्वह्स्स्रास्वेद्वेः)द्री

# न्यान्य स्थान्य स्थान्

শ্বুনম:র্মা |

५५ १ (यदः ऍदः सर्चे त्यमः नमूदः सदे द्वं यः )दे

# ने धी सव धें व नमग कु से नम ।

ग्रुस्र सर्गेत् र्र्ते द्राप्य स्था र्रे र न वद न वदा ।

বাই শ'ম'(গ্রদক্ষর শ্রী শ্রমশ শ্রী ই র ই শ ব রু দ ব) আ বা ধ্যু আ

र्रे वित्रे न्रे न्या न्रे न्या न्ये या न्या क्षेत्र व्या मित्रेया क्षेत्र व्या मित्रेया वित्र वित्र

५८:सॅ (इ.संबे ५३) मा)

न्द्राक्ष्याक्षेत्रकार्ते स्वर्देरान्युकात्।

# इसःसःगहेराःश्वेराःसेराःसेराःसे।। इतःकुनःस्विराःसेराःसेराःसेराःसे।। इतःकुनःदिनाःसःहेतःधेर्वाःसे।।

चिरः कुनः चीः सर्वे न्याः स्थाः स्य

ने त्या दे त्या के श्री विश्व का की नि कि ना माने का नि के त्या की की नि की न

र्श्याचित्र'न्न्य्येश्व्यान्न्न्न्न्न्ये अस्यान्न्न्न्न्ये अस्यान्न्ने । वित्राचित्र'न्न्ये अस्यान्ने । वित्र वित्र'न्न्ये अस्यान्ने । वित्र वित्र'न्न्यं अस्यान्ने अस्यान्ने । वित्र वित्र'न्ने अस्यान्ने अस्यान्ने अस्यान्ने अस्यान्ने वित्र वित्र'न्ने अस्यान्ने अस्यान्याने अस्याने अस्यान्ने अस्यान्ने अस्यान्यान्ने अस्यान्यान्यान्यान्ने अस्या

र्श्वेद्रायाः श्रे स्वायाः स्वित्रायः स्वेद्रायः स्वायाः स्वित्रायः स्वेद्रायः स्वायाः स्वित्रायः स्वत्रायः स्वित्रायः स्वत्रायः स्वत्यायः स्वत्रायः स्वत्रायः स्वत्रायः स्वत्रायः स्वत्यायः स्वत्रायः स्वत्रायः स्वत्यायः स्वत्रयः स्वत्यायः स्वत्यः स्वत्यायः स्वत्यः

तह्याः यः श्रेश्वर्याः श्रेतः यः श्रेतः यः श्रेतः यः स्वरः स्वरः

गहिरामा (न्वे न न्वे राम्ये राम्य न न न मा

स्यान्त्रवित्त्वा ग्राम्य प्रति । म्यान्त्र वित्त्र प्रति । चित्र चित्र प्रति । चित्र च

त्रुर्ते ख्रुय्यायते स्रोध्याय स्रुप्य स्रुप्

गशुस्रायाः (श्वायहणामहेत्राचीहेत्राचित्राच्यायवेत्राचे । यह्याः सेस्याचे । यह्याः । यह्याः सेस्याचे । यह्याः सेस्याचे । यह्याः सेस्याचे । यह्याः सेस्याचे । यह्याः । यहः ।

त्यवाश्वारा ग्रुश्रश्चारा विश्वार विश्व विश्वार विश्व

त्रम् अस्ति । वित्र के त्र वित

## नर्भेन्'क्रम्भ'कुक्'क्रम्भ'वतुन्'न'सेव्।।

त्रुट्याः भ्रेष्ठ्यः प्रेष्ट्रेष्ठ्यः भ्रेष्ठ्यः भ्रेष्यः भ्रेष्ठ्यः भ्रेष्ठ्यः भ्रेष्ठ्यः भ्रेष्ठ्यः भ्रेष्ठ्यः भ्रेष्य

স্ট্রিশ্ব (বেছ্লা শ্রম্ম শ্রী পর বর্টের ) বি

म्यास्त्र स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स

यादात्रश्चात्रात्र्यः श्रेष्ट्रश्चेश्चेश्चात्रात्र्यः स्त्रात्र्यः स्त्रात्रः स्त्रात्र्यः स्त्रात्र्यः स्त्रात्र्यः स्त्रात्र्यः स्त्रात्र्यः स्त्रात्र्यः स्त्रात्र्यः स्त्रात्र्यः स्त्रात्र्यः स्त्रात्रः स्त्रात्र्यः स्त्रात्रः स्त्रः स्त्रात्रः स्त्रः स्त्रात्रः स्त्रः स्त्रात्रः स्त्रः स्त्रात्रः स्त्रात्रः स्त्रात्रः स्त्रात्रः स्त्रात्रः स्त्रः स्त्रात्रः स्त्रः स्त्रात्रः स्त्रात्रः स्त्रः स्त्रात्रः स्त्रात्रः स्त्रः स्त्रः स्त्रः स्त्रः स्त्रः स्त्रः स्त्रः स्त्रः स्त्रः स

> माशुस्राया (देःवायदार्थेद्दिः द्वायद्वुहः विदेश्चुः यद्धदः)व्यापिहेस्य खुहः दुर्वोद्दायाद्वाया देवासायस्य सङ्ख्यायद्वा । दुहः सें (खुहः दुर्वोद्दायः)दे।

यदी'ते'यश्चर'रा'द्दर'यठश'राम्। यया'यबद'यीश'ते'लुश'रा'यश्च। दस्रत'र्सेश'शेशश'ठत'र्देत'ग्री'शेम्। दे'यलेत'यानेयाश'रा'हेद'ग्रीश'याश्चरश्च।

यहिनाःशेश्रश्रादिः देः स्वराधेवः देः द्वाः द्वाः स्वराधः स्वर

यशः मिन्यान्य स्थान्य स्थान्य

## नश्चन'यर'वर्देन'य'र्श्चेश'रे'न्गेश।

देन्द्रवेत् अहं त्रेति तुः श्रें सुरान् श्रेष्य क्ष्यः कुरान् अश्रेशः व्यान् श्रेष्यः तुः त्रे स्राय्यः व्यान् श्रेष्यः तुः त्रे स्रायः स्राय

महिरा (दे नमा स्वाप्ति स्वतः स्रोस्तर माव्यतः स्वेदः स्वतः स्रोस्तर माव्यतः स्वेदः स्वतः स्वेस्तर माव्यतः स्वतः स्

स्ययाप्यद्वास्य स्थाप्य स्थाप

यदःशेश्रश्यः प्रदेशः प्रदेशः

श्रेश्वराद्ध्याः श्रेश्व। । स्टामी देव द्वाप्त स्टामी श्रेश स्टामी देव द्वाप्त स्टामी स्टामी

शेसश्चार्त्त प्रति । प्रति ।

नवे मः (अह्नानसूर्याने नस्नायमः )दे।

यालवरप्रयाः स्टानी दिवर् प्याः । भेययः ग्री सेवरळे वर् विद्याः यदि। । भेययः ग्री सेवरळे वर् विद्याः यदि। । भू वर् सेदर् सेवर सेवर् सेवर्व सेवर् सेवर्

शेश्रेश्रश्चात्वर प्रात्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्व

महिश्याप्त (वह्ना सेस्र व्यवस्त विष्ट्र व्यवस्त विष्ट्र विष्ट

सर्दित्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्

নার্মেন (ইল্মন্নমন্নন)বী

स्वानस्य वर्षेत्र वर्षेत्र स्वानस्य वर्षेत्र वर्षेत्र स्वानस्य वर्षेत्र वर्षेत्र स्वानस्य स्

### रटाची नदे ना न्या सुरावहें समा।

सेसमान्न हिन्न निम्न निम्न हिन्न हि

म्हानियानिरेन्यस्य स्वानित्या ।
स्वानस्य स्वाने स्वानित्या ।
स्वानस्य स्वाने स्वानित्या ।
स्वानस्य स्वान्य स्वानित्य हिन् हिन् हिन्।
यहि स्वा ग्राम् है स्वानित्य हिन् स्वानित्य हिन्।
यहि स्वा ग्राम है स्वानित्य हिन्।
दे निन्नित्य है स्वानित्य हिन्।
है सक्ति ने स्वानित्य है स्वानित्य स्वानित्य हिन्।
है सक्ति ने स्वानित्य है स्वानित्य स्वानित्य

याद्यात्र विया याद्रे त्र व्या विद्या व्या व्या विद्या याद्रे त्र व्या विद्या विद्या

# ने रदिरे ने ने श्राम्यायाया भेता।

नितं निरक्तामे असम्भूषानि निरम्म निस्ति ।

५८:में (अप्तर्हेकाप्पराश्चेराहे क्रेवार्स्य इत्यावयार्मेन्य अहर् प्राया वर्ष्य वर्षा वर

## यत् निम्मारायत् वित्नामाराधित् ना ।

न्यात्र स्वियाः त्र स्वा । सः तर्दे सः से या सः स्व नः सः स्वी । सः तर्दे सः से या सः स्व नः सः स्वी ।

त्र क्ष्याक्षेत्र क्षेत्र क्ष्य प्रत्य क्ष्य क्

गहिरामा (सदासा हुमा बन्ना न सूना सामा न सूना सम्बन्ध न सम्बन्ध न सम्बन्ध न सम्बन्ध न सम्बन्ध समित्र सम्बन्ध समित्र समित्य

पर्ची न हुर बद्दा व्यास्थित । अद्देश न क्षेत्र क्षेत्

## ह्या हु श्रु व य श्रु विया श्रू रा हे प्रों या।

वहेगा हेत वर्शे न शुर वर्ग न कु वा से ग्रास या पा दिसा से दसदाया वरःसदेःवरार्श्वेरःचः ५ सः भ्रूनः हेवाः भ्रेः एव वहः ५ सः वश्वेरः ब्रुवायर वेदायाद्या ब्रुवायाद्याया में के के विदायर वहुं का या दरःवरुषायादरायदाया छुरावाद्गेदायाद्यार्याया होदायाया प्राप्ता होता । नः हो दः भे दे । भे दे निकार के दे । भे दे निकार के निकार सेससाउदान्द्रास्यासन्यापयापायादिरानाहे सेरानी नुसारेटानु से ह सवयः द्याः ह्या शायरः हो दायाः श्री राया ग्री शाया द्राय रुषाः द्याः *ज़ॖॱॾॗॖऀ*ढ़ॱय़ॸॱॸॖॖ॓ॸॱय़ॱॸग़ॖॸॱॸॸॱढ़ॕ॔ॺॱय़ॱख़ॢॱढ़ॏॴॱॾॣॕॺॱढ़ॆॱॸॖ॔ॺॕॴॸ॓ॺॱढ़ॺॱ Àअअ:८्ग'ष्ट्रत'स्यान्त्र्रा'क्षेत्र'सेस्य'८्रा'दे पार्ट्रग्'त्र्र्य्यास्र গ্রহা

ग्रुअपः (बिरासक्वारिः श्रीरायस्यस्यस्यस्य स्याराष्ट्रस्यः ।)यः ग्रुस

५८:मी (ब्राट्स्य सेसस्य प्रत्याय स्त्राच्य स्त्राच स्त्राच स्त्राच्य स्त्राच स्त्राच स्त्राच्य स्त्राच्य स्त्राच्य स्त्राच्य स्त्राच्य स्त्राच स

यार विया ने प्यत्वे कुष श्रुष श्रुष निया या।

# प्राथान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्था । प्राथान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्था । प्राथान्य स्थान्य स्थान

सेससाउदानाराविनायदानदे समयादना श्रुवायरा हो दायादे । क्रियाञ्चराञ्चेत्राचन्याः सन्नरः श्रुयाः साया सुरायः दिन्यः विरायाहेन् सरा नःधेवःहे। दवःशेस्रशःनश्चेदःसरःहोदःवःस्नःहःवेःनःहसःसरःदेशःसःहैः वर्षुयाग्री अर्दे यथ। वह्र अप्रयाग्रदास्त्र क्षेत्र से स्रया ग्रदास्त्र स्रया स्रया न्यदःयः विन्तिः नदेः सेससः नस्ने न् केरः नक्ष्यः यदेः सेससः नस्ने न्याने श्रेन्त्र नेयानन्यानभ्रयायम्न्यायम्यान्यम्यान्यम्यान्यम् विकार्वे कः नर्वे नर नुर्वे वेया गुर्याय प्रत्येयय न भेर प्रते येयय गी भूर ठेगामी म्यर्थान बित्र प्रम्थ रे से द्रेप्यी नस्यापर दे प्रमुख नरमात्र्या धरादशुरारें विश्वास्त्रामश्चार्यायश्चार्याम्याम्याम्यान्यावर्यात्रास्त्री न्नःसदेःक्र्रियमःयक्षेत्रःसःयः यह्वाःसदेः स्ववाः क्रदेः सर्वे व्यम्। वाक्तदेः सुदःवीः <u> चे</u>ॱसःश्रेट्'ग्रे'सर्केट्'हेर्'न्नेवा'सदसःनश्चेन|रा'यश्चेन|रा'केर्द्रायः बॅर्यायदे नुम्कुन सेस्यान्यदायान्तिम् सेस्यार्थेन्यायान्तेन् सेस्यायान्त्रेन्यस्याया ळे अ : ब्राट्य : ये दे : या से : व्या : व्या से : व्या : য়ৢ৴৻য়ৢয়৾য়য়৽ৢঀয়৽য়য়৽য়য়ৢঢ়য়৽য়য়ৼয়৽য়ৢয়৽য়ৢ৽ कुःवान्त्रेर्पानुसारम्भास्यास्याद्याप्त्रानुप्त्रान्त्रान्त्राम्याद्याप्त्रान्त्रा

वर्त्रोवान्द्रान्यस्यान् स्थान्यस्यान् स्थान्यस्यान्

गहिरापा (५५ पान क्षें सामर देग साम दे कु सक्त ) दे।

र्वतः हे नार बना नार विना ग्रह रहेन से सस्य प्यापित स्वाह रहितर वर्षा है निर्मा है ते प्रवास स्वाह स्

ग्रुअ'रा'(देशद्मुन्यल्लाबेटःश्चनशर्यःवर्त्यानरःदेशपः)दे

कृषःश्रभः इसमायः दें नायः केतः समा । भूगः मः से प्रमुद्दः द्यो नः दद्दः यो मः दसेय। ।

कृषां श्रश्रक्ष के देश हैं हिस्स श्राण महिंद्र श्राण निर्मा के द्राण निर्मा निर्मा के द्राण निर्मा के द्राण निर्मा निर्मा

यारायाश्रेश्वराणीः द्वारायाः स्वारे केवान्। ।
श्रेश्वराप्ते प्रार्थाः श्रुप्तायाः स्वार्थाः वितः। ।
यारायायार्वे प्रार्थाः श्रुप्तायाः स्वार्थाः वितः। ।
यारायायार्वे प्रार्थाः श्रुप्तायाः स्वार्थाः यारायाः स्वार्थाः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्याः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्याः स्वर्थाः स्वर्याः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्थाः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्थाः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्याः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्याः स्वर्यः स्वर्यः स्वर

कुः अळ्वः ने प्रश्ने वान् प्राप्तः से अश्राणे प्रश्ने प्रश्ने से के वि ने से अश्राणे प्रश्ने प्राप्तः से वि अश्राणे से प्रश्ने प्रश्न

सर्न् रावश्वभाव स्वाभाव राव्य प्राप्त स्वाभाव त्र स्वाभाव स्व

दरः वड्याः प्रतियाः प्रति । व्यवः श्री । व्यवः । व्यवः श्री । व्यवः श्री । व्यवः । व्यवः

सर्देव् सर्वे दिर देश से वाका स्त्री स्व स्वे त्या है का से प्य के वित्त स्त्री दिन स्त्री देश स्त्री देश स्त्री देश स्त्री देश से स्व स्त्री स

न्यायर्श्वेन् स्थाय्य वित्राचित्र से स्थाय्य न्या ।

ह्यायर्श्वेन् से स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स

विराक्ष्यासेस्यान्यति क्ष्यां विराक्ष्यां विराक्ष्यं विराक्ष्यं विराक्षयं विराक्ययं विराक्षयं विराक्ययं विराक्षयं विराक्षयं विराक्षयं विराविराक्षयं विराविराक्षयं विराक्षयं विराविराक्षयं विराक्षयं विराविराक्षयं विराक्षयं विराविराक्षयं विराक्षयं विराविराक्षयं विराविराक्ययं विराक्षयं विराविराक्ययं विराविराक्ययं विराविराक्ययं विराविराक्षयं विराविराक्षयं विराविराक्ययं विराविराक्ययं विराविराक्ययं विर

## ये दः महिरामा श्रेमा मन्मिरामा

মান্ট্রমানা প্রদান্ত্র না শ্রী ক্রমানার্ট্র মানার্ট্র মানার্ট্র ক্রমানার্ট্র মানার্ট্র মানার্ট্

त्रदःक्वाणे शेषश्वा व्याप्त क्षेत्र व्याप्त क्षेत्र व्याप्त क्षेत्र व्याप्त क्षेत्र व्याप्त क्षेत्र व्याप्त व्य

५८:में (ब्रह्म क्षेत्र क्षेत्र से समाग्रह त्र )य प्रिम्

श्चें र निर्धायन या स्वाप्त स्थित र स्थित र स्थित र निर्धाय स्थे स्थित र निर्धाय स्थित स्था स्थित स्था स्थित स्था स्थित स्थित स्था स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्था स्था स्था स्था

५८:द्री (ब्र्वेर्-नवेरणद्याना स्वमान्दर अर्केन्-नर्दर श्रुन्य वर्षे व्याप्त स्वमान स्वत्य स्य

येदिवःमानुरःमन्दःभाद्रः। येदिवःसळ्वःर्वे।।

५८सॅ (बेदुवेम्बिहरम्बर्म)यामि

अर्क्टर्नर्द्ध श्रुवर्गित्र भ्रुवर्गित्र भ्रेवारावर्गिया

८८.सू.(४९६८.स.)य.याधेश

मकेंद्रमास्यामदेर्द्वीमामाद्रमा मकेंद्रमाद्रमार्था।

५८:मू. (अक्ट्रिंग्यःस्वयःस्वे रस्त्रीश्रायः)

द्रस्यार्थः के के स्वास्त्राच्या स्वास्त्राच स्वास्त्राच्या स्वास

यिष्ठेश'रा'(यक्ष्म्'र्यम्हर्यः)याम्बुया यद्या'यश्रायञ्चर'यदे ह्या श्री'यक्ष्म्या श्री'यक्ष्म्या स्टामी'ख्याद्याः यद्या'यश्रायञ्चर्यायदे यक्ष्म्या ।

बे 'हेंग'वन्नश'तु'हे 'स्रे द'र्षेद'श'दर'।। श्चन ग्री क्यायाना विमार्थिन यान्या। वहिया हेव देव केव है से दे प्यें द पर दिया। कु'गार्डर'धेर्'र्'र्देर'म'रे'र्थेर'र्र् रेव केव रे में न्दर वे ने मवेव न्।। वग्राक्षाक्षाकार्त्वे ग्राक्षान् नेव विदायमान्यादान्या र्धेवःनिरः से 'हेंग' क्रुव' श्रूष' श्रूप' प्र'प्प' क्षेरमार वज्ञ राजजर प्रवास प्रवास प्रवास व ञ्चःश्रीयाशायहियाःहेत्वाताः प्यानः द्वी। र्श्वेरान्द्रन्यमान्यस्याः निद्रन्दर्देत् केत्रः निद्रा यः र्रे यः यहित्यः यदेः व्यः र्रेगः इयः यः ५८। । ग्वित पर सर्वे द राम् रे से स्टिश्चित स्था स्टिश

# यर्के निर्देशम् स्थानम् वारान्य ।

वहेगा हेत त निर्मार्थे अया न बुद निर्मेश हें मा सङ्ग र्श्वे मुरा से हिंगा ८८। अ.२.४.श्रवाशयव्यश्चरात्रेहेरश्चेत्राय्यन्या वात्र्यःश्वेवाशः श्चर ग्री:रेग्राराग्री:इस्रायानान्यार्थेन्यान्या व्हेग्राहेत्ग्री।वस्रयात्रायोरा यार्डरप्पेर्-र्वेर्द्रप्राचेरपेर्द्रप्राच्रा यासेर्व्यसेयास्य सेवर्देन्देवरकेवर्द्र *वें नकुन्यः श्रेनश्रामान्द्रते ने नविव*न्त्रत्वमश्रास्यान्द्रस्थार्सुनश्रान्तेवः विदःहस्य द्वायः नद्दः वे व स्विदः स्विदः स्विदः स्वी से के वा सूर के वा सार्यः सुव सी सा श्रुर्भाभित्रास्त्रे श्रापित्र श्रुत्र पात्ता भित्राचात्त्र स्त्राच्या स्त्राच्या स्त्राच्या स्त्री स्त्राच्या स्त्री स्त्राच्या स्त्री स्त्राच्या स्त्री स्त्राच्या स्त्री स्त्राच्या स्त्री स्त्री स्त्राच्या स्त्री स्त् नश्राध्याना मुरायात्त्रायात्रा सुर्दा सुर्दा सुर्वा स्त्री वार्वे विदेश हेता सुर्वा धरा थ्रव डेग भ्रे अपादर श्रुराव या अपाद्धा व्यूराय या व्यूराय या व्यूराय या व्यूराय ये दिया विष् नवर में न्द्र के न्त्र्या प्रवे क्षेत्र न्द्र न्त्रे र प्रवेद प्रवेद न्यया नश्यः र्थेविन्दिन्दर्भेत्रः हेव्यक्षेत्रः हिन्द्राच्या व्यवस्थितः स्वित्त्रः स्वित्त्रः स्वित्त्रः स्वित्त्रः स्वित्त सर्कें न्द्राबुर्या ग्री हेदानु सद्यास्य सम्बन्ध वासान्द्र दे वाद्यासी वाहु श्रुप्त स्व राञ्जेयायाधीत्रत्रेदर्यन्ता वेदावर्षयाग्रीयास्यास्याप्तान्त्रविद्या यदे खें हिंगा नी इसाय ५८ दे ला से नासाय दे नावत प्यट द में तास के ना या सक्रें न्यर देश सदे कुत सहे शाय हस शादी न्युया यर न की दे । विक्रेया यदेर्देवः अर्चो न वर्षे वर्षे वर्षे अर्वात् राष्ट्रे वर्षे वर्षे देश अर्वात्व दर् वर्षे देश

गहिरामा (हे सूर प्राय विष्य )दे।

त्यायायः स्वायत् स्वायत् व्यायायः व्यायायः व्यायायः व्यायायः व्यायायः स्वायः व्यायायः व्यायः व्यायायः व्यायः व्य

মার্মামা (বন্দার্ম শমান রুদানবি ক্রমানর ক্রামকর ) বি

यद्यादी'यश्रद्ध्य अश्रित्य स्वाचित्र के व्यक्ति । । अर्के द्राप्त के द्रित्र या व्यव्य यद्या या व्यव्य अर्थे द्रित्य या व्यव्य यद्या या व्यव्य या व्य या व्यव्य या या व्यव्य या या व्यव्य या या या व्यव्य या या व्यव्य या या या

### नन्यायी दिन श्चन हिन् ग्री अश्वरानि राजिया।

धेर्यश्रानुद्द्र निर्देशकेंद्र मार्ड आरडे दे हो राने द्र निर्देश में धिर् इ. देंद्र नारे प्रत्रे प्रदेश श्रुप्य म्यूप्य म्यू

गहिरामा(स्टाबी खुर्यान्तुवाना)दे।

यन्तात्यःन्त्र्यःयम् ग्रुः त्यं त्यः यम् यात्रः त्यः याः विष्यः यम् यात्रः विषयः यम् यात्रः यात्रः विषयः यम् यात्रः यात्रः विषयः यम् यात्रः यात्रः विषयः यम् यात्रः यात्र

गशुस्रासः(ब्ल्यास्यक्षेत्रस्यक्ष्यम्यक्षेत्रस

भ्रम्भान्त्र व्यावस्त्र म्यान्त्र व्यावस्त्र व्यावस्त्

प्राचित्रं (ह्या) या महास्या प्राचित्रं विश्वा प्राचित्रं (ह्या प्राचित्रं विश्वा प्राचे प्राचित्रं विश्वा प्राच प्राचित्रं विश्वा प्राचित्रं विश्वा प्राचित्रं विश्वा प्राचित्रं विश्वा प्राचि

गहिरामार्थकानवे स्वा )दी

दे निविव निविच नि

নাধ্যম'ম'(भुद्धान)दे।

ने न्या सुष्य अद्धन्य या सेन्य प्रेति स्व

गड्रायादी र्यायक्षेत्रायका भुष्टित्।

देवयने यात द्वाय व्याय स्था ।

में अया वर्ष्यायायह्यायाञ्चाळेषा अपद्या

त्री में मान्या स्वराहे स्वर्था सक्षेत्र स्वर्था स्वर्य स्वर्

#### শ্রুম'শ'(কুন্)ব্য

# क्रुवः अर्क्वेनाः नकुः स्रमाः नेः नदः नेः नमाः मेशा

वसमायाम्ग्राम् मुन्नाम् । वसमायाम् ।

वहेगाःहेत्र-न्नरः धुमाः श्रेम्थाः यवरः नकुतः यरः नकी।

म् मुन्यायार्थे न्यायाय्ये मुन्यायाय्ये मुन्याये स्वायाय्ये प्रम्याय्ये । प्रम्ययायाय्ये स्वायाय्ये । प्रम्ययाय्ये । प्रम्ययय्ये । प्रम्यय्ये । प्

नवि'म'(व्यायः)दी

कूर्याश्वरागुन्द्र-द्वान्ध्यान्य । विश्वर्यान्य विश्वरागुन्द्वान्य विश्वरागुन्द्व विश्वरागुन्द्वान्य विश्वयम्य विश्वयम्य

र्मूर्यासुस्रागुत्र हुंदे विसारियः हर्ष्ट्र निये दे सर्वे वा इसस्य ग्रीस् श्रुव द्वर गुत्र ग्री स्नु वासे र दे स्य श्रुह्य प्रये वार्ष स्य ग्री दे र वे वास्य प्रयः श्रुम प्रवित हुंदि र कवास्य विहाय स्य प्रयो स्था श्रुवा प्रमान ग्रीहि । श्रामा (क्षेत्रमा)दी

खुड्रवायाश्चिम्याद्वीतियावस्य राउट्दा

म्रेट्य सेयाययायायी द्वार म्राम्य संस्था से स्था से से स्था से

त्रुनः न्वरः सर्हेन् ग्व्याय सर्हेना या न्यः न्युर्वे । ग्वारः ग्वेशः व्यायः प्रदेशः विष्यः प्रदेशः विषयः प्रदेशः विषयः प्रदेशः विषयः प्रदेशः विषयः व

त्र्या'स'(र्ह्यूयः)दे।

श्रुंश्रायक्रियाः भेरायश्री ।

नर्गामवे श्वेत केंग्रास्यया ग्राम ने त्या ।

नत्वार्यतेःश्विष्यः स्ट्रेंनाः धिन् त्र्येवाः प्राप्ताः स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्

नर्तुःमः(लयःवयः)द्री

विषात्रभागत्रत्रप्रमु:र्केष्मभागरम्भाभा

## थु'नर्नेश'ह्रस्रश'गुर'रे'व'र्नुव'नर'नग्री।

व्यान्त्राण्डी । विद्रायम् यो । विद्रायम्यम् यो । विद्रायम् यो । विद्रायम् यो । विद्रायम् यो । विद्रायम् । विद्रायम् यो । विद्रायम् यो । विद्रायम् यो । विद्रायम् यो । विद

नकुर्यः(श्रूरःग्रथः)दे।

गर्भराग्ची:मङ्गाळरातु:न्दरानाधी।

र्ब्यायार्थेराम्येराम्येराक्षेत्र्यास्त्रेत्र्यास्त्रेत्र्यास्त्रेत्र्यात्रेत्र्यात्रेत्र्यात्रेत्र्यात्रेत्र्य नव्यायार्वेत्रव्यम्यविष्टेव्यक्षेत्रस्त्रेत्रस्त्रेत्रस्त्रेत्रस्त्रेत्रस्त्रेत्रस्त्रेत्रस्त्रेत्रस्त्रेत्रस्

र्गुःमः(नाब्यःसेर्नायरःर्गुयःनः)द्री

यानि नश्चर्या श्वास्त्र न्या श्वास्त्र न्या ।

यानिया से द्वास्त्र न्या स्त्र न्या स्त्र न्या ।

यानिया से दे स्वास्त्र क्षेत्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वा ।

यानिया स्वास्त्र स्वास्त्र क्षेत्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वा ।

प्राची स्वास्त्र स्वास्त्र क्षेत्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वा ।

प्राची स्वास्त्र स्वास्

नडुःमः(नर्नमः)दे।

देव-केव-यानुयाश्रासहंश्याश्री-विद्यान्य-विद्याय-विद्याय-विद्याय-विद्याय-विद्याय-विद्याय-विद्याय-विद्याय-विद्याय-विद्याय-विद्य

নত্ত্যান্টবামে (হ্ৰাইন) বি

ने 'यश मान्त 'या प्रस्य सकें न प्रदेश कें या शा । स्यास मान्य प्रस्य स्था । से सका स्व स्था मान्य सका से सामित से सामित स्था ।

न दुःगहिरापः (अर्केन्पितः इसामः क्वृत्ये प्रकन्पमः वित्यक्षिणानक्ष्मानः )दे।

न्यार्केशन्गित्यर्केगाः श्रम्भाग्यस्य । सर्केन् हेत् ह्रम्यस्य न्यास्य । स्वाकेत्रां हेत् स्यस्य न्यास्य स्वास्य । स्वाकेत्रां स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य । स्वाकेत्रां स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य ।

यश्रद्रास्तायम् व्ययान्त द्वा विश्व स्वर्णात्र स्वर्णा

गहिरामा (इस्सेन्सिक्ट्रिस) दे।

मुत्यःत्रम्बर्यात्यः सर्वेत् सर्त्यः । मुत्यःतः मुस्ययः त्यासर्वेत् सर्द्राः या

# ने प्रवित प्रम्यायी अपे प्रवित या ने या शा

हे 'क्षेत्र' तह सान्वत्र स्वार्य न्त्र मुंत्र' त्र के वित्र मुंत्र स्वार्य स्वार मुंत्र स्वार स्वार मुंत्र स्वार स्वार

न्ग्रिंब सर्वे प्रत्या के प्रत्य

महिश्यः (ध्यायळ्यान) या महिश्या द्या मीश्रानश्चेत्र पा नहें त्या नहें त्या नहें त्या में श्वा या नहें त्या में श्वा या नहें त्या में श्वा या मे श्वा या में श्व या में श्य

देश'सर'गुद'र्'तवुर'कुर'हेग।

বাইশ্বান (এশট্রশন্তর্ন না) প্রবাধ্যমা

न्गॅ्र सक्त स्वार्थ स

५८:द्रीं (५र्गिव सकें ना नाश्या)दी

र्वश्चार्यस्यान्त्रेयाश्वर्याः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्याः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः

विट:ह्यःगुव:ग्री:ग्राम्यःश्रेट्रग्री।

स्यान तृत्र प्राधिया नित्र मा स्वाप्त स्वाप

तुर-५८-हेंग्र-५८-हेंब्र-ग्रेन्य श्राध्य म्याध्य म्याध्य म्याध्य स्वर-५८-हेंब्र-ग्रेस्य स्वर-५८-हेंब्र-ग्रेस्य स्वर-१८-हेंब्र-ग्रेस्य स्वर-१८-हेंब्र-प्र-१८-हेंब

यद्यम्भः सः द्रान्तः स्वर्थः सः स्वर्थः सः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्

न्तरकुन सेसया ग्री पानि इसया ५८।।

यर्केन हेत इससाया निया श्रमा पर्काया

यहर्ष्या की स्थान क्ष्या वित्त के स्थान कि स्था

মার্মাম (মাবর শ্লুব র্মাবাশ নে প্রবাণ বর্জন ব ) বি

# यानवःसँ ने निवेदः श्रूमः न्सँ वः न्म।

नहुषः वुनाराः अर्केनाः यः श्रुनाः वर्कयः वेषि

याप्यम् वित्राप्तक्ष्याव्यं। ।

याप्यम् वित्राप्तक्ष्याव्यं। ।

याप्यम् वित्राप्तक्ष्याव्यं। ।

याप्यम् वित्राप्तक्ष्याव्यं। ।

 त्य्रश्चित्रः भ्रीत्र । व्यक्षः स्वेतः भ्रीत्र । व्यक्षः स्वेतः भ्रीत्र । व्यक्षः स्वेतः भ्रीत्र । व्यक्षः स्व

८८.स्.(क्षेत्रःश्चित्रायक्त्)द्री

युनः चेत्रः परि प्रोति सर्के गाण्यस्य प्रहेग्या साम्य सः क्षेत्रः परि हेत् प्रा यहेत्रः सः धेत्रः या

गहिरापा(वन्यानुदेःश्चनयावर्षा)दे।

रटः क्रुंद्रायः र्वेतः सर्वेतः स्वेतः सर्वेतः सर्वेतः

यस्य निर्देश प्राप्त स्थान विश्व स्थान स्

র্চ:ক্রন:শ্ব্রিচ:শ্বিক:মান্ত মান্য:শ্বর ম

# कैंशन्दानुस्कुनःसेससान्धराधी।

## क्ष्मियाययदाने निवित् भुनया शुः यक्षे।

निन्। (क्रूनशनिक्टरनिक्क्रेन्स्स्मिन्सन्निक्स्सः)या

### श्चेतः इयः ग्वावना दे।

न्दर्सिः हेन्द्रमः हेमः हुँ न् श्री न् श्री म्यायाय वनन् स्वर्णा स्वर

धेरःवर्रेशःयःदे। क्रॅवशःवविदेःक्षेष्ठ्रात्रुःक्षेष्ठ्रा क्रॅशःवविःवस्रुवःयदेःसर्देः यथा व्यथ्यान्य विद्यस्थ विद्यस्य स्थ विद्यस्थ विद्यस्य स्थ विद्यस्थ विद्यस्य स्थ विद्यस्य विद र्रे। निवेगिर वे व वरे क्षेत्रे। इसम्म स्थापर सुसाय होताया गुर हु हु राय रा गहेन में गुन हु र्रें न मन्दरहे अया यश न र्रें ग मदे र्रें न अन्दा हेन ही क्रेंत्रअः शॅं वियापाशुरया हे । तुर्या विराययाया याये । यया वे । श्रॅं रारे या प्येतः वे से द्वो नदे यस गुराय य वर्गे द्वारा सद न पीत हे वदे हो न या से द्वो नदे यस ग्रीस दन्स नु नासुस न से नु र रहेया से नास न म ने से सि से नि नहेव'य'न्दा र्रेट'यर्डेन'नर्डेक्य'य'न्दा न्रह्म्य'य'य'नहेव'य'न्दा सु ग्रा बुग्र अंतर प्राप्त में अर्के दिन स्वाप्त में के स्वाप्त में स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप र्भेग्रायार्थे। स्निय्याम्बुयायार्वे स्नित्रक्षाः स्वीप्यायाः स्वीया मर्दे। निवि मन्ते निर कुन ग्री से सस निर्देश मार्थ निर्देश है निर् ८८:मू अ.सर.चाशुरशःश्री ।

ने'त्य'प्यर'श्वेषा'य'त्रुश'यदे'त्र्य'त्रा कु'त्र'र्श्वेत्र'त्र' क्वेत्र'य'त्र'। धुत्य'त्र'हे'उंश'त्रुश'य'क्र्यश'द्रव्य'यर'त्रुदें।

र्शे स्ट्रिन्द्र त्य प्रवि स्ट्री

इयायर शुयाद चेवायागुवा हु श्रुं नायते श्रूं नया निता हेवा ची श्रूं नया

न्दा गहेत्रसंगुत्रमुर्डिन्यदेश्वयान्दा हेयाययास्य सूर्यायदे । सूर्ययासी।

५८:स्.ता.(म्यानराश्यावन्नेवानाग्वाकः मुंद्रान्यतः मून्या) निवे से

श्वाप्तः हे प्रमान्त्रः द्वाप्तः विष्यः विषयः विषय

५८.स. (क्रुंग.य.हे.केर.वेश.य.व.क्य.य.के.वक्र्य.य.वे.व.)त.य.वे

यादायाः श्रेवायाः वत्ववायाः विश्वायाः सिव्यायाः सिव्यायः सिवयः सिव्यायः सिवयः सिवयः सिवयः सिवयः सिवयः सिवयः सिवयः सिवयः सिवयः

५८:द्री (मटायाक्षेत्रामान्यभवाकामवे खुवावासावितासमाचितासमावितासमावितासमावितासमावितासमावितासमावितासमावितासमा

मुँग्रास्स्रम्ग्गुत्रःत्रः प्रत्यायः प्रतेः ह्रेंग्रयः प्रदेशस्यः मुयः ५८ः

त्रुतः श्रेश्वरात्रेश्वरात् श्रुवाशः हे 'केत् 'र्यः अद्यात् 'त्रुत्रः श्रुतः श्रेशः प्रत्यः त्रुवाशः श्रुतः हे 'हे 'हे प्रतः त्रुतः श्रेशः प्रतः त्रित्रः प्रतः त्रुवाशः व्यव्यव्यः श्रेतः प्रतः त्रित्रः त्रित्रः प्रतः त्रित्रः प्रतः त्रित्रः प्रतः त्रित्रः प्रतः त्रत्रः त्रित्रः प्रतः त्रत्रः त्रित्रः प्रतः त्रत्रः त्रित्रः प्रतः त्रत्रः त्रित्रः प्रतः त्रित्रः प्रतः त्रित्रः त्रित्रः त्रत्रः त्रत्रत्रः त्रत्रः त्रत्रः त्रत्रः त्रत्रत्रः त्रत्रः त्रत्रः त्रत्रः त्रत्रत्रः त्रत्रः त्र

र्षण्यास्त्र प्रम्भावितः न्यान्त्र ।

के प्रम्भावितः प्रम्भावितः प्रमान्त्र ।

मही प्रमानित्र प्रमानित् प्रमानित्र प्रमा

निव्दान् निर्मा । विष्या प्रमानिक विष्या । विष्या । विष्या । विष्या । विष्या । विषया । विषया । विषया । विषया ।

निने नि (क्षे पर्दे द्रायदे प्रत्य मान्य प्राय मान्य मान्य निन् मान्य )दे।

हेश्यः प्रः न् स्थाः श्रुवः स्वत्रायः प्रदे। । स्थाः उदः प्रद्याः गीर्थः स्थ्याः प्रः यादः। । स्थितः हः स्थाः प्रज्ञाः प्रः यादः। ।

वस्र १ उर्दे व स्य इस्र १ व व व व

न्ह्ययानायार्सेन्यायाये वर्ष्ययं प्रायति हिं क्यायार्सेन्या रेश

चयरार्श्वितः कवारायिः श्वेवाः उतः यनवायीर्यः श्वेवाः वर्षेत्रः श्वेवाराश्वेतः श्वेवाः वर्षेत्रः श्वेवाः वर्षेत्रः श्वेवः वर्षेत्रः श्वेवः वर्षेत्रः श्वेवः वर्षेत्रः वर्येत्रः वर्षेत्रः वर्येत्रः वर्येत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः

महिरामा (कृषानान्दान्वसानिवन्तुन्तिक निर्माद्यानिक निर्मानिक क्षित्र सानिक स्थापनि । विष्

श्रेना मं ने स्थान स्था

धेन् नह्रवः शेः नुनः वक्षेः नन्नाः वन् । । व्यान्दः शः श्रुवः शेः श्रृनः यथा । वः नृनः शेः वः गुवः श्रीयः ग्रुनः । श्रृः नुनः कें वः यथिनः शेः नह्रवा । त्राञ्चन्द्रभ्यात्राच्यात्राच्यात्र विष्णाक्षेत्र विष्णाक्य विष्णाक्षेत्र विष्णाक्य विष्णाक्षेत्र विष्णाक्षेत्र विष्णाक्षेत्र विष्णाक्षेत्र विष्णाक्षेत्र विष्णाक्षेत्र विष्णाक्षेत्र विष्णाक्षेत्र विष्णाक्षेत्र व

মার্কামান (ইব্নমান্নমান্ত্রমানার্কার্কিরা ক্রুমান্নমান্ত্রমান্ত্

याहेत्र-दराखुआर्येद्रआरश्चेत्र-श्चेत्रायाः चुआर्यायः चित्र-दर्शः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर

५६ दि (महेद्र १८ त्युक्ष वेद्र का क्षेत्र महेद्द्र के स्वर के

श्वाराद्वरायाञ्चर्ते व्यायाञ्चर्या । यद्वायाचीयादे स्थ्रम्यात्वे याच्या । यहं वर्ष्ट्रम्यात्वे यहं वर्षे वर्षे याच्या । श्वाराद्वयायाञ्चर्ये वर्षे वर्षे याच्या ।

याहेत्रं द्रायेद्रशः श्रुं द्रायेवाश्रुतः हेवाः श्रुवः विवास्तरः वाहेत्रः द्रायः वाहेत्रः द्राये वाहेत्रः विवास्तरः वाहेत्रः विवास्तरः वाहेत्रः विवास्तरः वि

नन्नाःगिश्चानेः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्

ने'नविव'ष्रस्य सं'उन्'सेन्'स्युम्।

गहिरामा (वक्के नवे के न्वर मंदे सुवा हमानु विश्व माने नवे नवे नवे के

म्युम्पः (धिन्नह्रवःभेः तुन्नने प्रमः प्यन्यस्व स्थान् न्युन्य स्थाने न्या मे न्विन् स्थेया स्यान्य स्विन् सः

रे विया यार्श्व के प्यति हेन प्ययम्। । सहय प्रमानित के प्रमानित स्था । रे प्रमानित के प्रमानित स्था । से प्रमानित के प्रमानित स्था ।

न्त्रवाद्याः स्थान्त्रवाद्याः स्थाः स्थाः

निने'न'(रद्धेद्वयावक्केंद्रेशयायेद्वयर्थाह्म्वयाययार्थेवायात्र्याद्व्यद्विद्या)दे

ने स्थान क्यां के स्था । यह स्थान क्यां के स्था । यह स्थान क्यां के स्था । यह स्थान क्यां के स्था । स्था क्यां के स्था ।

निन्। (क्षेत्रान्यकायहेत्रकायवेत्रक्ष्यान्यक्षयाः)यानि

कें त्यः श्र्रें त्र पासे दे हिर त्रे दे हो दे प्रस्था कर है ज्ञार प्रस्था है त्र प्रस्था है त्

५५११ (क्रें पार्बे्द्र पार्थेन हेरावदीन होन् परासाकत्नु प्रेन् प्रसारे सामरावक्रे बिराधेवा पान्रान्य सम्बद्धान सम्बद

हेन'यळन'र्थेन'रा'र्णेन'येन्।। के'रिने'ह्ना'रु'र्गेन'रियुम्न'नेन।। कें'रिने'स्ना'रु'रेके'रेन'येन।। नन्ना'यू'रिके'नम'रेक्य'ये'रियुम्।।

तर्वे त्रक्ष कृत्य म्ह्रा । त्र्वे द्र कृत्य क्ष्य क्

पित्रेश्वाद्यां स्थान्य स्वाद्यां स

५८:में (ध्रेनाचा साम्यान्य त्रास्त्र क्षेना पळ ५ प्रते सूना नस्यानिहेत प्रते सामे निकासी सामे का में निकार के

यद्याः वे : अयः व : यद्याः यविव : द्याः । याहेव : यने अ : गुव : श्री अ : अवयः यञ्जी र : श्रा । श्वा प्रकट् प्राची क्षेत्र स्व प्राची ।

या के व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व ।

या के व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व ।

चर्शन्त्रस्याः श्रुस्य दिन्दे । वर्शन्त्रस्य स्त्राः स्त्रस्य स्त

ने के नर्भन्य मार्च मार्

गहिरापा (नर्भेन्द्रसम्यास्त्रसम्यादिन्नमाना)दे।

नेतिःकें भ्रुन्याः तर्में न्दर्ख्या विस्रयः नश्चितः स्वर्याः विस्रयः नित्रे विस्रयः नित्रयः स्वर्यः स

নাধ্যমান (এর্লুন্নমানার্নন)বী

अर्मेविःसं नमा सेन् नम्मा मी सादी।

यहेगारायदी'यद्दायायळ्यात्रम्। भेगारायदारेते के दाद्यापुत्। भेगारायदारेते के दाद्यापुत्।

श्चन्यं निव्यास्त्राचित्रं । ह्वा प्राचित्रं विष्यं विषयं विष्यं विष्यं विषयं विषयं

মাধ্যমানে (মেইনামানাজ্বার্ন্মন্ত্র্নান্ত্র্নান্ত্র্না)ব্রী

भ्रे में त्याय विया करं संय कर् संये में वे में तु . प्याया या केंद्र संये

यम् निर्मात्र स्त्र स्त

निने मं (ब्रे. सर स्वानस्य क्रेशन्तर नर वक्रुर नरे हुवा) दे।

য়ुःलेनायदेनाश्राक्षेत्रयदेःयश्राचन्ना।
येन्यश्राक्षेत्रयदेःश्रेनायम् छेन्यश्राक्ष्याः न्याः
छेन्यश्राक्षेत्रयदेःश्रेनायम् छेन्यश्राक्षेत्रयम् छेन्।
छेन्यश्राक्षेत्रभ्राक्ष्यः अन्यत्र्वेत्।
छेन्यश्राक्षः सुन्यश्रेन्यश्रेन्यश्रेन्।
देखः निर्मानीश्राद्धः सुन्यश्रेन्यश्रेन्।
देखः निर्मानीश्राद्धः सुन्यश्रेन्।
देखः निर्मानीश्राद्धः सुन्यश्रेनः स्राप्तिनः स्रापति।

न्युवानरः भ्रेमान्यान्युवाः सुरयाः इसयाः सर्वेटः नदेः कें ग्रीः नुनः

ने अव न् श्रुव्यानि विषय ने स्वास्त्र मात्र प्राप्त मात्र प्रित्य प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्त

गहेशमः(हेन ग्रेक्षिक्षः)यम्बुधा

न्त्रिःहेन्द्रभान्तेव्यक्ष्याः विष्ठ्याः विष्याः विष्ठ्याः विष्ठ्याः विष्यत्यः विष्यत्यः विष्यत्यः विष्ठ्याः विष्यत्यः विष्ठ्याः विष्यत्यः विष्यत्यः विष्यत्यः विष्यत

५८:में (८.के.क्रेट.यक.ट्ग्र्य अळ्चा.यक्ष्य.क्रे.भ्री यक्ष्य.व.च.क्ष्य.य.च.क्ष्य.य.च.

दे नियम कुष्य न पर्यो नियम स्था । स्था न भू न य से दे न न के न य से न यर्वितः निरं यहे ग्रामा से या निरं । ज्ञान कुन से समा निरं के ग्रामा या पारा । ने नि विदाय र न्या सुनम संस्था सि

त्वास्तर्भ्यास्तर्भे स्वास्तर्भे स्वास्त्रभ्यास्तर्भे स्वास्तर्भे स्वास्तर्भे

गहिरामा (र्भूत प्यमा ग्री सून मा उत् ग्री मुला नवि स्ममा पा नहेताना) दे।

त्रत्वाने त्रहेवाश्वर्श्व स्थान्त्रवाहित्त्व्य ।

यह्याने त्रित्वा श्वर्णा त्र स्थाने त्र व्यापा ।

यह्याने त्र व्यापा त्र स्थाने त्र व्यापा त्र स्थाने त्र व्यापा ।

यह्याने त्र स्थाने त्र व्यापा त्र स्थाने त्र व्यापा ।

यह्या स्थाने स्थाने त्र व्यापा त्र स्थाने ।

यह्या स्थाने स्थाने त्र व्यापा त्र स्थाने ।

### श्व स्याप्त विषय स्था विषय स्या विषय स्था विषय

यद्वाने रद्दा दे त्र दे वा सार सार स्थान स्थान सार हिंदा स्थान सार स्थान स्थान सार स्थान स्थान

हे सूर ले ता

# र्स् हि खराया भूग्या राष्ट्रीय या स्वारा स्

श्वाश्वर निर्माण नश्चन हुन निर्माण नश्चन हुन निर्माण निर्माण नश्चन निर्माण निर्माण

याश्रुस्रायः (भ्रुवस्रशुः स्वस्ते द्वानी विष्टुः वश्रुवः वः )हि।
हिन्यः भ्रुवस्रायः स्वस्त्र स्वस्त्र स्वस्त्र ।
हिन्यः भ्रुवस्त्र स्वस्त्र स्वस्त्र स्वस्त्र ।
हिन्यः भ्रुवस्त्र स्वस्त्र स्वस्त्र स्वस्त्र स्वस्त्र ।
हिन्यः भ्रुवस्त्र स्वस्त्र स्वस्त्र स्वस्त्र स्वस्त्र स्वस्त्र ।
हिन्यः भ्रुवस्त्र स्वस्त्र स्वस्त्र स्वस्त्र स्वस्त्र स्वस्त्र ।
हिन्यः भ्रुवस्त्र स्वस्त्र स

होत्राची । भिनामर्थे ।

पार्श्वासः(महेबः मॅंग्यूनः हुर्चेन्यः म्व्यून्यः) व्यापित्रेश्वा भैयाः स्ट्रेन्यः व्याप्त्यम् स्याप्त्यास्य स्वयः स्वयः

५८.सॅ.(क्ष्णमक्ष्यां प्रमानम्बर्गम् स्वायां क्ष्यां प्रमानम्बर्ग व्याप्त स्वायां क्ष्यां क्ष्यां क्ष्यां व्याप्त स्वायां क्ष्यां व्यापत स्वायां व्यापत स्वयां व्यापत स्वायां व्यापत स्वायां व्यापत स्वायां व्यापत स्वायां व

५८.सू.(४८.कु.२१४.कु.५८.कु.८८.कू.५८.)य.य.श्रुम

द्ये देव द्या प्राप्त । द्या या श्रुष्ठ या श्रुष्ठ व्या श्रुष्य व्या श्रुष्ठ व्या व्या श्रुष्ठ

५८:सें (५वे देंब ५वें५ वर्ग )दे।

वर्ग्येशह्यायहरार्श्वेशकिर्वेश।

शुर अविशःश्रीवाश प्रविवाश प्रवेष प्राया प्रवेष वर्ष ग्रीश प्रदेवाश

न्यादः विन्दः द्वान्यः विन्दः विनद्धः विन्दः विन्दः विनदः वि

गहिरा (त्वानश्याक्षी वदाक्षेत्रान्धी व्यक्ति विदाने व्यक्ति विदाने विद्यक्ष प्रवि श्वव प्रवि विदान

गुन्न न्या भी के न्या निकार के निकार में निका

ग्रुअ'रा'(देशक्श्चर्यायळॅग्सूॅ्रक्रायदेग्म्स्र्राय्येन्स्र्राक्ष्यःस्र्याय्येन्स्र्राय्येन्स्र्यःस्र्याय्येन्स्र

ने त्यः श्रुव पा श्रवा ।

#### निव हि. ब्रह्म अरु हिन स्त्री विका । विव हि. ब्रह्म अरु हिन स्त्री विका । विव हि. ब्रह्म अरु हिन स्त्री ।

क्रिंत्र व्यास्त्र स्त्र न्त्र न्या ने क्रिंत्र स्त्र स्त्र

गहिरामा (नायम् अदे न्ये अ श्रुम् न्वे अ सम् नश्र्वामा) दे।

यापदः अः श्राय्यः कुदः तुः ययदः । । नयाः क्षेत्रः यान् अः यत्रः श्रुः दर्गे अः न । । नयाः क्षेत्रः श्रृं हिः तुः श्रुदः नः प्ये। । ध्युनः सेटः यापदः अत्रः श्रूँ अः छेः दर्गे अ। ।

वि १३ अ १३६ १ अ वा अ १ वा प्रत्या १ अ १ वा प्रत्या अ व वा प्रत्या अ १ वा प्रत्या अ व वा प्रत्या अ व वा प्रत्या अ व वा प्रत्या अ वा वा प्रत्या अ व वा प्रत्या अ व वा प्रत्या अ व वा प्रत्या अ वा वा प्रत्या अ वा वा वा व

यात्रभः नवीं भः नः त्या व्या व्या नवीं भः नः श्री भः नवीं भः न

गहेशमः(इर-५-वन्यम्भमःमेण्यमहेश

दे:देरहेर्द्रभःश्चेषायदेगाहेर्द्रभंत्रभ्रद्रभःयःयःवनद्रभः न्युः नद्रभः श्वाः नश्वः श्वेशः श्रेः विदेषाश्वः याः श्वः श्वः श्वः श्वः याः याः व्यः वर्श्वः श्वः याः याः वर्श्वः श्वः याः याः वर्श्वः याः याः वर्षे । याः याः योः वर्षः श्वः नद्रशः सेषाश्वः यादेशे ।

५८:में (दे-हेट हेट वर्ष क्षेत्रा मधेता महेव में नक्ष्र मान्य वर्ष मान्य कर कर कर के

महिन्दें स्थाप्यन् द्वी श्राण्य ह्या हो स्थाप्य हो स्थाप्य हार स्थाप्य हो स्थाप हो

बेर्यस्य राज्ये। विष्यारे वार्रेव के बार्य राष्ट्रिय विष्याय स्वर्ये ।

नन्नात्यः श्रे त्यहे नाश्रःशुः धिश्रः निहा।
यदे त्यश्रः हे त्थृरः हे श्राय्य स्त्युरा।
यदिवः श्रे वात्रः श्रे दः त्युरः दा।
हे त्थृरः नन्नाः धेनः नने ननः त्र्वा।

तके प्यत्त्वहे ना भारा नु सारा भी स्व राय भाराहे ना भारा र होता भारा स्व राय स्व राय

निन्ति सं (हेशसायश्चर सून्यंना संदेर सून्यर) या ना शुरा

र्म्या सिंद्येत्य प्रति । स्वा सिंद्य प्रत्य प्रति । स्व प्रत्य प्रति । स्व प

५८.स्.(ईवायायावस्तियायावस्तियायात्रीयायात्रीयायात्रीयायात्रीयायात्रीयायात्रीयायात्रीयायात्रीयायात्रीयायात्रीयाया

र्देन सेट प्रति श्वेग पा श्वेट न प्रति । हेन सर्वे गुन हु श्वेग पायस । बर प्रते बनस या प्रति ।

८८.स्. (र्र्यः स्ट्रेन्स् स्ट्रेन्स्

५८:१.(ब्रट्स ह्यू र प्यापी र नहत्र क्षे र र र न स कन्य स र से से न स र र )

र्श्वेत कर श्रिट हो विया यायया।

नन्नात्यः भूना सः हे च्येन्त्र।

नन्याने ने त्या अर्देन लेन न्या।

त्रु:सदे:नगद:५८:दम्याय:नर:ग्रुम्।

गहिरामा (निहेद्रास्त्रामा वाकन्यामा सम्स्री मेन्सामा)दे।

गर्शेव के परी पर ने प्रविव रा

# याहेत्। त्रामानेत्। याहेत्। याहेत्

महिरामा (देव सळव गुव हु क्षेत्र माय अ वर सदे वर्ष स्वर्थ प्रवर्ष माय के वर्ष स्वर्थ प्रवर्ष स्वर्थ प्रवर्ष स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वयं स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वयं स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्

शेन्याः न्याः स्याः न्याः विष्णः । ने त्याः नि त्याः नि

श्रॅग्गार्वेद् श्रॅग्गश्च भ्रात्वे न्यायाः स्वायाः स्वायाः स्वयाः स्वयः स्

गुवःश्चे पदी त्यायन प्रमाश्चे । पाछिषाः ह्रिंदा पाष्ट्रे न त्या हे दाया हे दाया हे दाया हे दाया हे दाया हे दाया है दा

महिरास (इस्वयम्बर्ग्य )या महिर्या न्याय ज्ञी प्रतिस्थास प्रत्याय प्रति स्था स्था । न्याय ज्ञी ।

नन्यानि स्थे भे श्रामित्र स्था । स्ट निव्यापान स्था विष्या ।

नडरामदे श्रेमामणम् पीत् यया ।

यटलटर्टियायक्रीश्रास्त्रश्रा

यद्मान्ते त्यस्य त्यस्य स्ट्रिं स्थान्त स्थान स्थान्त स्थान स्थान्त स्थान स्थान्त स्थान्त स्थान्त स्थान्त स्थान्त स्थान्त स्थान स्थान स्थान्त स्थान स्थान स्थान्त स्थान स्थान स्थान स्थान्त स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्य

স্ট্রিশ্বামানটার্ড্রেমা)বী

यता श्री र र्जिया यर्जा यह या था श्री था ।

#### 

यद्या मुया श्राया प्रताप्त व्यापित स्त्री स

ग्रुस्यः (स्ट्रेन्यम्स्य स्ट्रेस्य स्ट्रेस्य

कुं अळंदारे न्यादादादादा स्यया श्री स्वाप्ता स्था स्वाप्ता स्वाप्

श्री म्याप्य प्राप्य स्था । यह प्राप्य स्था । य

र्टा श्रम्भारव्य श्री । श्रम्भारविष्य श्री । श्रम्भारविष्य श्री । श्रम्भारविष्य श्री । श्रम्भार्थ । श्री ।

ळग्र-१८-अग-१म-र्ज्ञ अन्य-१म-र्ज्ञ अन्य। व्यय-१-अग-१म-र्ज्ञ अन्य। युग-१म-र्ज्ञ अन्य। १-गुव-१-र्या-प्रश्न-१-र्ज्ञ अन्य।। १-गुव-१-र्या-४-४-४-र्ज्ञ अन्य।। १-गुव-१-र्या-४-४-४-र्ज्ञ ।।

गहिरामा(विद्वेश्यळ्वा)दे।

श्री प्राप्त वित्र क्षेत्र क्

यदः द्वीयः प्रति॥ । व्ह्वाः द्वाः प्रते । व्ह्वाः । व्व

#### येतु'ग्रासुस'म्। जुर'कुन'ग्रे'सेसस'र्षेरस'सु'म्बुर'न्।

महिस्रायान्त्रे नात्त्राह्म् सास्राधी स्टायार्स्य महित्र स्त्रे स्त्रे

५८:म्.(अदुदेःग्विदःम्वरःमः)यःग्रुम

क्रिंर-न-५८१ ५६४ माने ५८१ सह्यामी ग्रुप्ते ।

८८.सू.(श्रुरःयः)यःह्य

न्नो न या हे अ थी प्रत्य न्ता कि अ शे यो प्रिंस के प्रेस् प्रिंस प्रेस प्रेस

५८.स.(२व) व.व.हं श्र.ल. ४८.व.) ता श्रुश

५८:मी (अर्देव अर्थे कु प्रत्य मार्गे प्रामे प्राप्त के मार्ग प्राप्त प्राप्त के मार्ग के मार्

शेस्रशास्त्र गुत्र ग्री । इत्र श्री र मी

स्वानस्यादयार्थिः द्वी ना ना न्या । स्वानस्या उदान्या निराम्या । द्वारानस्या हे सासु प्यो ।

त्विं रायराविश्वास्तिःश्रेश्वश्वास्तिःश्वास्तिःश्वास्त्रिः।

रायायश्वास्तिः।

रायायश्वासिः।

रायायश्वसिः।

रायायश्

गहिरामा (बरायाच्याची कुप्यव्यक्षाची प्रवीप्यायाधी प्रदाया)दी

नुरःकुनःकुरःचुरःदगेःनश्रगश्राधाः नुरःकुनःकुरःचुरःदगेःनश्रगश्राधाः

द्यायम्बर्धम्यये स्वाप्तस्य ।

त्रव्यस्ति। वित्रकृताशिक्ष्यायम् स्वर्षः वित्रव्यम् स्वर्षः वित्रव्यम् स्वर्षः वित्रव्यम् स्वर्षः वित्रव्यम् स्वर्षः वित्रव्यमः स्वर्षः वित्रव्यमः स्वर्षः वित्रव्यमः स्वर्षः वित्रव्यमः स्वर्षः वित्रव्यमः स्वरः स्वर्षः वित्रव्यमः स्वरः स्वर्षः वित्रव्यमः स्वरः स्वर्षः वित्रव्यमः स्वरः स्

श्चीतायाम्ययाची श्वीतायाची ।

श्वीतायाम्ययाची श्वीतायाची ।

श्वीतायाम्ययाची ।

श्वीत्रायाम्ययाची ।

श्वीत्रायाम्ययाची ।

श्वीत्रायाम्य स्वात्रायाम्य स्वात्राया ।

श्वीत्रायाम्य स्वात्रायाम्य स्वात्राया ।

श्वीत्रायाम्य स्वात्रायाम्य स्वात्रायाम्य स्वात्रायाम्य ।

श्वीत्रायाम्य स्वात्रायाम्य स्वात्रयाम्य स्वात्रयायाम्य स्वात्रय

तर्शें नगिवतः क्रें नग्न स्ययः ग्रें हें नयः प्रें न्यान स्ययः ग्रें न्यान स्ययः प्रें न्यान स्ययः स्ययः प्रें न्यान स्ययः प्रें न्यान स्ययः स्

महिश्यः (इश्वीयम्यः स्वान्त्र्यः मुन्यः नि

#### केंग्रा भें विष्या

अदशः क्रुशः द्वशः देदः स्वार्याद्वः प्रः क्रिशः श्रेषः वाश्वदशः प्रदा तत्वाशः प्रदेः श्रेषाशः द्वश्वशः ग्रुवः श्रेषः श्रेषः प्रः श्रेष्ठः श्रेषः श्रेष्ठः श्रेषः श्रेष्ठः श्रेषः प्रदेशः श्रेष्ठः प्रदेशः प्रदेशः प्रदेशः श्रेष्ठः प्रदेशः प्रदेशः श्रेष्ठः प्रदेशः प्रदेशः श्रेष्ठः श्रेष्ठः प्रदेशः प्रदेशः श्रेष्ठः श्रेष्यः श्रेष्ठः श्रेष

मुल्याना सुन्द्र त्यन्त्य त्य विन्त्य । वर्षा वर्षे सुन्द्र त्ये व्याप्त त्ये । वर्षे त्यने व्याप्त त्ये प्रमान के प्रमान के

#### नभूषायाम्यास्यासेन्। नत्वायायास्यास्या

मुलाना शुः ह्वा त्या विद्या व

नवे'न'(५मे'ननक्रून)य'नवे।

मित्रे निक्षा विकास क्षेत्र क

८८:स्.(श्चिरवर्ष्यः १८)

ने अन्तर्भाष्ट्र न्या गुन् न्यू अप्तर्भाष्ट्र । । न्यो प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त । । ने अप्तरे अध्यक्ष उत्र व्यव्यक्ष उत् ग्यू । ।

श्वाप्तश्वाप्तरायम् विवा

दे'श्वर'सर्केन्'याद्वर्यात्र्

गहिरामा (वन्नवे र्नेवन्नवे र्नेवन्नवे वि

न्यो नरे न्या यो सञ्ज्ञ न्या क्षेत्र स्थ्र न्या क्षेत्र स्थ्य क्षेत्र स्थ्र न्या क्षेत्र स्थ्र स्थ्र न्या क्षेत्र स्थ्य क्षेत्र स्थ्र न्या क्षेत्र स्थ्य स्

সাধ্যমান (বন্ধ শুর্ম শ্রমণ বর ইব দ্ব দ্ব হ

वश्याद्याः अत्याद्याः वित्याः वश्या । वर्षे व्याद्याः व्याद्याः वश्या । वर्षे व्याद्याः व्याद्य

नग्रेशःभूँ अरुव्ह इस्रश्यां व्याप्त द्रभूँ अर्ग्धे राज्य स्थानित स्था

नविःमः(वर्द्दन्द्रगुःवर्गुद्दव्दवे क्रुन्त्वर्थ्दे नः)दे।

शेश्रश्राच्यात्रे स्थान्त्र स्थान्य स

श्रेश्वराष्ट्रं नेत्र्ये महिर्त्युम् नेत्रं नेत्र्यः वित्रम् नेत्रं नेत्त्रं नेत्रं ने

यावश्यास्य स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्यापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्था

२ दा (श्वेत्रायदे प्रमास अपनेत्रायदे प्यमास्त्र प्रमास्त्र प्यमास्त्र प्रमास्त्र प्रमास्

खुशर्षित्रार्श्वे दःद्यो स्यार्हे दःयदे यश्चारा श्वे दःयदि । इदःशे वःयदे श्वे दःश्वे दःयदि । विद्यार्श्वे दःयदे श्वे दःश्वे दःयदे ।

५८.स.(अंश.लूर्या श्रुर्या हिरायहराय समारा श्रुराया भ्रम

महिंद्र निर्देश्च व्याप्त के व्याप्त विष्ट्र में मुन्त प्रकेश के विष्ट्र में मिल्ट्र में मिल्ट्र

५८:सॅ (विह्टानवे कुवा)दे।

ख्यान्द्रान्ते निव्यक्ति । व्यव्यक्ति । व्य

चन्तान्ते सुभाद्यः चर्या भारतः भी भारतः भी मान्यः स्थितः सुर्वे द्वा स्थान्तः स्थानः स्थान्तः स्थानः स्थान्तः स्थान्तः स्थान्तः स्थान्तः स्थान्तः स्थान्तः स्थानः स्थान्तः स्

गहिरामा (देशमान्य निर्मा स्वाप्त निर

५८.स्. (वश्वश्वरीयाक्ष्यविरायकेरायभ्वरायाक्षेत्राया)द्री

#### वस्र १८८ वर्ष १८८ वर्ष १८८ वर्ष

नन्गः र्र्ते : ह्यः न्द्रायः सुन्।

र्वेद्रशःश्चित्रः विश्वः स्वयं अः उत्यावितः र्तेतः तुः यार्वेदः यतः रेवायः है। देः श्वरः यय्यावितः रेतः तुः यार्वेदः यतः यार्वाः वितः वितः यार्वेदः यार्वेद

गहिरापा(सेस्र एडव् क्षेत्र प्रदेखेट स्र से वा प्येव प्रस्ते प्यापित प्रमाने प्यापित प्रमाने प्राप्त के वा प्रमाने प्रम

### वस्रशंख्यार्नेट्यार्म्य स्वर्थायार्थेयाया

शेसशाउदाद्वसशायानहरानासर्हेन।

वस्रश्राचित्रं प्रत्ये क्ष्म्य क्षित्रं विष्ट्रं प्रत्यं क्ष्म्य क्ष्

ग्रुअ'म'(नहरत्यहे हुर क्षुन प्रते हुय) या ग्रुआ देर क्षेत्र कर 'सर गी 'सुअ' या सर 'द्वर थें द 'से के क्लें दें स्वादर प्रते हुया है के स्वादर प्रते हैं के स्वादर ५८:द्राः (देराधेवाकन्यरावी सुमायायरान्यराधेन्यवे क्विंद्रान्या)द्री

तत्वाःवीशःसुश्राःस्त्रवः वस्रशःस्त्राः । सुशःस्ते स्त्रे तत्ते रः चितः चेतः चित्राः । स्वाः प्रः वार्शे तः तत्र रः चितः चेतः चित्राः । तत्त्वाः श्रे वार्श्वः तत्वारः चेतः व्याः रवा

सुश्रःश्वांशं यहं त्रश्रः हैं स्ट्रें र ग्रुं ते वित्वां विश्वां स्ट्रिं श्वां यहं स्ट्रें र ग्रुं ते वित्वां विश्वां स्ट्रें र यह र ग्रुं यह

गहिरापा (देवेद्वाम् रायम्य विषयः । देवे

यद्यायी खुरुष सः हे खेद द्या । हे त्य प्राप्त क्षेत्र खु खेद खु या । यद्यायी खुरुष त्य हे खेद खेद खेरा । यद्यायी खुरुष त्य हे खेदा खेटा ।

मी श्रभावदी स्रोधा स्वर्धा प्रमानिक स्वर्धा स्वर्या स्वर्धा स्वर्धा स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स

ग्रुस्पः (देन्यमःसदेःसमास्यः सुरःनः)दे।

# ने या मार्ने न सम् से यहा मानि ।

## यश्यादाधीत्राययदाचीदातुः कुमा।

स्थाने त्यायने स्थानित क्षान्य स्थाने स्थान

गहेशःमः(न्ने नः कुन् से चन्ने कुनः क्षेत्र मा भूमा

वाववःषःषवःपःपववःविवावीःकुरःश्चेवःपःद्रः वश्वाःप्रेवःशेः

५८:स. (यावयात्रास्त्रास्त्रयस्त्राची क्रिम् क्रिंस्स्र)

# नन्यात्यःन्द्रीयायात्रयात्यान् ।

# विमायः भरः र्ने वा से दासा सुर रहेगा।

नन्नात्यः नश्चिम्रान्यः नुसः नुसः स्यान्यः प्रमः श्रेस्याः उत्तः व्यादः परः नेतः स्यान्यः परः नेतः स्यान्यः परः नेतः स्यान्यः स्यानः स्यान्यः स्यान्यः स्यान्यः स्यान्यः स्यान्यः स्यान्यः स्यानः स्यान्यः स्यान्यः स्यान्यः स्यान्यः स्यान्यः स्यान्यः स्यानः स्यान्यः स्यान्यः स्यान्यः स्यान्यः स्यान्यः स्यान्यः स्यान्यः स्यानः स्यान्यः स्यान्यः स्यान्यः स्यान्यः स्यान्यः स्यान्यः स्यानः स्यान्यः स्यानः स्यानः स्यानः स्यान्यः स्यान्यः

गहिरामा (नश्यामा कुन्से ज्ञानदे कुन्सूर्व पा) दे।

तन्तात्यः नक्षेत्राक्षः तक्षः त्रानः न्त्राः त्री । विषयः न्नः प्रदेश्ये स्रक्षः श्रुमः त्रा । ने 'हेन' हना' हुने 'न्ना' ते ।

र्नेन'गुन'दशुन'रावे कुर'शुर'रेग।

नद्गायः दंशेम् श्राह्म स्त्राह्म स्त्राहम स्त्

यार र्या यार्य या त्या वित्र स्या । यात्र प्रायार्थे प्रायार्थे प्रायाय्य । प्रेयाले व्यास्त्र या यार्थे प्रायाय्य ।

### वस्राक्त क्रिन क्रिन क्रिन क्रिन क्रिन

श्ची में प्राप्त । विकार के प्राप्त के प्रा

गशुस्रामः (बॅद्सार्श्वेद्गानिः क्वार्त्त्रामः) त्यात्राशुस्र।
रटा हो दायसा क्वार्त्त्रा विद्या क्वार्त्त्रा विद्या क्वार्त्त्रा क्वार्त्त्र क्वार्त्र क्वार्त्त्र क्वार्त्र क्वार्त्त्र क्वार्त्त्र क्वार्त्त्र क्वार्त्र क्वार्त्र क्वार्त्र क्वार्त्र क्वार्त्र क्वार्त्र क्वार्त्त्र क्वार्त्र क्वार्त्त्र क्वार्त्र क्वार क्वार्त्र क्वार्त्र क्वार्त्र क्वार्त्र क्वार्त्र क्वार्त्र क्वार्त्त्र क्वार्त्र क्वार्त्र क्वार्त्र क्वार्य क्वार क्वार्त्य क्वार क्वार्त्य क्वार क्वार्त्य क्वार्य क्वार्य क्वार क्वार्य क

यद्यां वे सर्वो व से दा हु स्वर्था की सर्वो व देन हैं । यद्या से जान व स्वर्था की स्वर्था की सर्वो व स्वर्था की स्वर्था

> ख्राःचिव्रवेद्द्रः द्राः स्वायः यव्याः । देवाः स्वायः य्यायः य्याः स्वायः स्वयः स्वयः

व्यास्त्रभाविषाः स्वास्त्रभाविष्ठ्य

गहिरामा (र्याद्याचेराययाकु के नम क्रिंदाया)दे।

राश्चित्रप्तः केत्रप्तः प्रमानित्रप्तः । वयः यात्रप्तवितः पुः ह्माः यत्रप्तः । से ययः उतः प्रमाः पुः से प्राय्ये।। इयः यपः हेतः पर्केतः प्रवितः प्रावितः प्यपः वित्रा शःश्रीवाश्वाद्युद्दानाः केत्रःश्वीत्राध्याः श्वाद्याः व्याद्याः व

ग्रुअ'म'(धुल-५ूब-ळ५-प्रासेन-पर-क्वॅ्र्न-पर)दे।

ने निव्यक्ष समित्र सम्रम्भ गातुग्रम्भ भिष्

शेसराउदापसरायाद्यागुदाहा।

वस्र १८८ स्था १८५ १८५ १८५ १८५

नन्गाने हेर पर्टेंदे कुर पर र्नेग।

गहिरामा (इस्यामि) है।

इन्द्रिन्ध्रिन्ध्रिन्ध्रिन्दिन्ध्रिन्दिन्।

ग्रान्थ्य स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्य

हे सूर क्रें त क्रे निर्मायर मिलेग्यर महस्यय क्रीयाय महीत यान बुदानवे के दात्र वह्मा यवे ग्रुदा कुना ग्री से समान से दुरा कुना सेसस-न्यदे नक्षुन पाया सेसस-न्यवाने न्या है खूर हैं न यदे नेसपा निवन्र्रेनिकेट मार्थान दे निविद्यान में भागान प्रमानिक मार्था निवास ग्रवश्रभ्रवश्चार्यः स्वार्याः में स्वर्यदे देवः त्र्र्य्वार्यदेः र्देशन द्वापर प्राप्त स्वर्भन दिन्य शुर्षित प्रवस्य सेत्व प्राप्त क्रियान श्रभागवस्थासतुन् तुः शुन् इत्याने। द्यर सें राष्ट्रिया सें या स्था श्रीन परि ग्रह ढ़ॖॻॱॻऀॱऄ॓ॺॺॱ**ढ़ॆॱॸऄॗॸॖॱॸॸॱॸॻऀॱढ़ॎॸॱॸ॓ॱॸढ़ऀढ़ॱॸॖॱढ़ॸॖ**ॻॱऄॺॺॱॿॖॸॺॱ हे सुरम्भायदे नक्षुनाय त्यदर रेमाय निविद्य निक्रा विवासी अर्था में नियम् नियम्

श्चित्र-दर्भव न्त्री हे या शुः श्चिया या प्रदान द्विया या स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स श्रभागवसाग्री हे भाशु ह्रिंभागिर हैं भागिर हैं भागिर हों। दिसामा निवाद निश्च निश्च निश्च निश्च निश्च निश्च निश्च गुरान् हेरायर द्यूराय द्रा हेराय से द हिरासे वारा के त्राय है। र्शश्चेर्यस्याश्रम्भयाक्ष्रर्यस्यायान्त्रेत्रः स्वार्यान्त्रेत्रः स्वार्यान्त्रे भेष्यायम्भेष्याउत्नुर्द्वेनप्रम्ष्यम्प्रक्षिप्येत्रेन्द्वे । । प्यम्प्रम् रोसराप्तरपद्वार्भ्सायेतपवेरकेंगार्सेर्स्र त्रेत्रप्राधरपेत्रहेळेत्रसे शुःग्राद्यो प्यद्यविद्यायाधिव विद्ये प्यत्रद्ये । श्रिव्याये सेस्यायश्चित् ब्र-निर्यायश्चित्रायास्य तर्द्रम् स्ट्रिया स्राप्त स्ट्रिया स्ट्रि यदी मार बना मी छिन् यर त्या बन या अर्केना मुंगूर या धेवाया न गुरु विना गरिमायारेसामानविदानु यो दादायारा सुरानाधीदार्दे। । है यूरायेदानिया द्धयार्शेन्य राष्ट्रे स्मान्य विष्टा स्मान्य स्मान्य स्मान्य स्मान्य स्मान्य स्मान्य स्मान्य स्मान्य स्मान्य स नसूत्रनर्देशः इस्रायायाये राष्ट्रियायः नुप्तायः वित्रायः वित्रायः

मशुस्रास (सह्म) त्या महिन्य ।

रहार्या (सहमा) त्या महिन्य ।

८८:मूर्यः(रद्यं र्व्याच्यः)याम्बुमा

५८:सें (अंअअम्बोह्याक्ष्ट्रं द्वादान वर्ष्ट्रं अपना )दे।

ने 'कृर'र्त्ते 'न्द्र' कृत'र्या थे या ।

यह या 'ग्रम' क्रिक्र 'या वे द्र्या या वे द्र्या ।

यह या 'ग्रम' क्रिक्र 'या वे द्र्या या वे द्र्या ।

यह या 'ग्रम' क्रिक्र 'या वे द्र्या या वे द्र्या ।

यह या 'ग्रम' क्रिक्र 'या वे द्र्या या वे द्र्या या वे द्र्या ।

ने द्वार क्षेत्र क्षे

#### য়ৼয়৾৾য়য়য়য়য়য়য়য়য়ৼঢ়

स्रेश न्त्री । स्रित्र स्रिश्च स्रिश्

गहिरामा (अयम दे के द्वम नगार्षेद नक्षें समा) दे।

न्ते नन्यायोश्याके न्यायान्। । देयाश्यान्त्रसञ्ज्ञात्त्रस्यश्यान् इस्रश्याते। । क्रिंत्रस्य न्यान्त्रस्य स्वायान्त्रस्य । । क्रिंत्रस्य स्वायान्त्रस्य । ।

म्बुस्य (क्रुन्न्याय नवे स्रेस्य क्रुन्य सन्वाय न नक्षें सामा)ते।

व्यट्ट-वर्षाः स्त्रान्त्रः स्त्रान्त्रः स्त्रान्त्रः स्त्रान्त्रः स्त्रान्त्रः स्त्रान्त्रः स्त्रान्त्रः स्त्र दे प्रतिवर्षे स्त्रान्त्रः स्त्रे स्त्

न्त्र्यः विदः सिंद्र्यः प्रतः सिंद्र्यः प्रतः सिंद्र्यः प्रतः सिंद्र्यः सिं

বাইশ্ন-(বাৰ্ব-শ্ৰ-শ্ৰ-শ্ৰ-শ-)ন্য-বাশ্ৰ্মা

शेशशास्त्र में स्वानमें स्वान

८८.सू.(अथम.२४.मी.सैया.यर्षा.भुषा.येषा.येषा.ये

यम् प्रति । व्या प्रति । व्या

५८.स्. (वर्से.यद्र.यद्र्य.यर्स्स्स्र.स.)द्री

दर्शे नदे दक्षे नद्या दहें अया हो दारिया

## नर्रः हे अर्केना ग्राम्यरे पीत हैं।

र्ट्ट्रियं सेट्र्यं प्रत्ये प

गहिरामा (न्त्रवानावर्स्स्रमाना)दे।

दर्ने निरं न्त्रयान सेयान थी।

श्रे वित्रम् यात्रे र प्यार प्यति प्येत वित्र

बर बेर प्रत्ये अग्री किर्म के के बेर प्रत्ये के किर किर के किर किर के किर किर के किर किर के किर के किर के किर के किर के किर के किर के

বাধ্যম'ম'(ব্দ্বই্ষশ্ব।)বী

दर्शे नदे नदे नद्भाने निष्ठे न नदे ।

श्चन ग्री अर्केमा ग्रम प्रमे प्येन में।

दर्शे निर्दे त्र स्वाप्त प्रमास्य प्राप्त कि निर्देश हो निर्म हो । विष्टि विष्

निन्। (श्चिरःश्चेरःमदेः भूगानस्यादह्सस्यातः)दे।

श्चेन्ययायव्ययावेन्द्रन्ययाधी।

वर्गे नदे नय रे वें व निर पे व

श्चिन्दित्यसान् विद्यालेटान् नामा भी विद्या निर्मा निर्मा

यश्विः याव्यः यश्वेयः यः श्वेरः यदेः श्वेषः भूवाः यश्वेषः श्वेषः व्यवः वर्षे व वर्षे वर्षे वर्षे व वर

दर्गे.य.वश्रश.क्ट.ट्रच.पर्गे.जशा

श्रुवायम् ने नियम् नियम्

मी न्या प्रमाण के अर्था प्रमाण के स्था के के स्थ

गहिराया (देव कु क्षेत्र या सेस्य कुराया) या गहिरा हिंद क्षेत्र सेया न प्राप्त कि सक्षेत्र सेया नर्दे। प्राप्त (हिंद क्षेत्र सेयाया) दे।

दर्शे निवे हैं व से इस मानु ह से या निवे।

सेसराग्री:ह्यानभूमानाधिता।

शेश्रश्री । श्रेम्प्रान्ति । वित्रित्ति वित्रित्ति । वित्रिति । वित्रित्ति । वित्रिति । वित्रित्ति । वित्रिति । वित्रित्ति । वित्रित्ति । वित्रित्ति । वित्रिति । वित्रिति ।

गहिरामा (विशक्षेत्रसेयाना)दे।

न्ध्रेशप्रीव के सक्वेत्र में भीवा।

वर्त्ते निवे क्रिंत से त्या पा उत्या धीत पाये सामे वा भी वा भी निवा सी निवा सी

देन'न्न'न् है अ'हे 'इ'न'व्याप्त अ'प्रहो व'प्रि'हे 'या के व'र्से 'व्याप्त 'प्याप्त 'प्रे हो वेया के के 'र्से अ'न क्रुव'प्रदे 'हें न'हें न या प्रदे 'वेया 'वेया प्रदे 'वेया प्रदे 'वेया प्रदे 'वेया प्रदे 'वेया प्रदे 'वेया 'वे

गशुस्रास्य (यद्याय म्यून व्याय म्यून व्याय म्यून व्याय म्यून व्याय म्यून व्याय म्यून प्राय म्यून प्रा

न्यःक्रेंशःद्वःयः स्थ्रा ।

शेश्वर्यात्रेश्चर्यात्रे ते वाश्वर्य्य प्रत्ये के शेश्वर्यात्रे हे स्वर्यात्रे ते वाश्वर्य्य प्रत्ये के स्वर्या के स्वर्या क्ष्य्य के स्वर्या के

স্ট্রশ্ন (বই বাষরদান্যুবার) বি

महिरामा (मन्द्र न्याय म महिन् न्यान्य )दी

यद्याः यो अप्ते : सेटः क्कृत्यः यः श्रुआद्दः यह अप्यादे : श्रुक्तः श्रुक्तः यह विष्यं यह विष्यं यह विष्यं यह विषयं यह यह विषयं यह यह यह यह यह यह यह यह यह य

सेस्र पाहिस्र निश्चेत्र प्रेत्र में त्र प्रेत्र प्रेत्र प्रेत्र प्रेत्र प्रेत्र प्रेत्र प्रेत्र प्रेत्र प्रेत् स्रमा प्रवाय क्रेत्र श्चेत्र प्रश्चेत्र प्रवाय क्रेत्र श्चेत्र स्त्र प्रवाय क्रेत्र स्त्र प्रेत्र स्त्र प्रेत् तु प्रताय क्रेत्र श्चेत्र स्त्र स्त्र प्रेत्र स्त्र प्रेत्र स्त्र प्रेत्र स्त्र प्रेत्र स्त्र प्रेत्र स्त्र स् सर्हेग हिने श्रायदे ग्रम न्या प्रमान होते ।

प्राप्त हें मा से प्रमान होते ।

हु या प्रमान हो से प्रमान होते ।

हु या स्रमान हो प्रमान हो से प्रमान हो ।

हु या स्रमान हो प्रमान हो प्रमान हो ।

हु या स्रमान हो स्रमान हो ।

हु या स्रमान हु या स्रमान हो ।

हु या स्रमान हु या स

श्रु-तो तु-ता श्रु-सा-ति श्रु-ति-ता-ति त्रा-ति त्रा-त

# येतु निवे मा नग र्थे न नमून मा

५८:में (ब्रह्म्स्याक्ती सेस्रम् क्रिंद्य द्वारा विस्तान स्वरंभागा से क्रिस्य स्वरंभागा स्वरंभागा

५८.स्.(ज्वेद्वत्यविरायविरायविराय

नगः भेंद्रानक्षें अर्द्ध या अर्दे रात्र सुद्दा या प्रदा क्रिश्व या प्रदा वि

५८:म्. (वनाः वर्षेत्रः वरव

म्यायते श्रम् श्री । म्यायते श्रम् श्री । म्यायते श्रम् श्री । म्यायते श्रम् श्री ।

### नक्षुनःवर्षाः से विद्यादनदः परः ह्या

मुत्रविर्ध्वाधित्रम् ।

मुत्रविर्धित्रम् ।

ন্ট্রিশ্বার্নির্বার্নির্বার্নির্বার্নির্বার্নির্বার্নির্বার্বার্নির্বার্ণির্বার্নির্বার্ণির্বার্নির্বার্ণির্বার্নির্বার্ণির বিশ্বিরার্ণির বিশ্বিরার্ণির বিশ্বিরার্ণির বিশ্বিরার্ণির বিশ্বিরার্ণির বিশ্বিরার্ণির বিশ্বিরার্ণির বিশ্বিরার্ণির বিশ্বিরার বিশ্বির বিশ্বির বিশ্বির বিশ্বির বিশ্বির বিশ্বির বিশ্বির বিশ্বির বিশ্বির ব

५८.सॅ.(बटक्ष्यक्षेत्रंश्वेश्वेश्वयाय्य्यवाय्य्य्यक्ष्य्यः)प्याविश्वा ब्रटक्ष्यःक्षेत्रंशेश्वयःक्ष्यःक्षेत्रं स्ट्रां क्षेत्रं स्ट्रां स्ट्रां

५८:सॅ (बुरक्ताक्षेत्रकेसमार्देरपुःसे सुरानदे क्रुस्स्त्र )दे।

ननःर्देयःनङ्ग्रमःमानःधेत्रःमद्य।।

यार:विया:येयाय:यर:य:यह्याय:या।

ने ने न्यानस्यानुयानु रागुरागुरा

ग्रद्यायहरालेयायहगायदेःरेगया।

ठु:नःग्राद्विगः श्रुॅंदः पॅद्रायः नह्ग्यायः सरः ननः रेवः दुः न इसयः सः

यादः धेवः प्रत्या चुः नः यादः विषा द्वदः बदः द्वादः यादः धेवा श्राः यादः यादः विषाः विषाः

सदसः क्रुशः इससः द्वारं देः भेषः स्वारं विद्या । विसः द्वारं हे दे श्रेषः यादः यहवासः भेदः । । विसः विद्यादः हे विद्याः भेदा । दे स्थः वर्षियः दुः हे विद्याः भेदा ।

न्युत्त्व वत्त्वी । व्याप्त स्थान्य स

वर्गुर-त-द्रा अः र्वेत-धायाः श्रमा नश्चेरशः धरः वर्गुर-वर्षे ।

न्दः सें (द्वावर्ष्य प्रविष्ठ क्षात्र स्वाविष्ठ स्वाविष्ठ

५८.सू. (८४.५मू.५५मू.४४६४)

यायाने ने स्ट्रान्यान्य यायाने स्ट्रान्यान्य यायाने स्ट्रान्यान्य स्ट्रान्य स्ट्रान्य

प्राप्तः ने प्रम्मः से स्र प्राप्तः व्याप्तः व्यापतः व्या

माने अपा (दे व्यक्ष अ बेद दर्गे द्वार ) दे।

दर्दशःसंग्ययात्र स्वरायदा। धेराग्रेशःश्चेत्रप्रायश्चरा। भेराग्रेशःश्चेत्रप्रायश्चरा। भेराग्रेशःश्चेत्रप्रायश्चरा।

## ने प्यर पी र्वा या राष्ट्री र वा शुरु या या ।

श्ची व निर्देश में स्वाप्त मान्न व निर्देश मान्न मान्य मान्न मान्य मान्न मान्न मान्य मान्न मान्य मान्न मान्य मान्न मान्य मान्न मान्न मान्य मान्न मान्य मान्न मान्य मान्

য়्व'য়ेद'য়दे'য়दे'য়दे'য়देद्द्याव्यात्र अस्त्र अदे 'য়द्व्यात्र अस्त्र अदे 'য়द्व्यात्र अस्त्र अस्त्र 'য়द्व्यात्र अस्त्र 'য়द्व्यात्र अस्त्र 'য়द्व्यात्र अस्त्र 'য়द्व्यात्र अस्त्र 'য়द्व्यात्र अस्त्र अस्त्

वर्तें नशःश्री

নাপ্তমান (বন্দ্রন স্থান স্থান না

यसम्बाधारा-वृःदेवे-तुःश्रम्थाः श्रीम्याधाः माद्राः स्वाधाः स्वधाः स्वाधाः स्वाधाः स्वाधाः स्वधाः स्वाधाः स्वधाः स्वधाः स्वधाः स्वाधाः स्वाधाः स्वाधाः

महिरापा (मान्दर्देव प्यमाष्ट्रसमाय प्रमान प्रमान

याव्यक्तः में अस्य अस्य अस्य अस्य अस्य व्यव्य व्यव्य में प्राप्त व्यव्य व्यव्य

सक्त त्री। सक्त त्री।

५८:द्रा (ब्रट्स्क्र नः क्री स्थेय अवस्थ स्था स्था निष्ट न निष्ट न निष्ट न निष्ट स्था निष्ट स्था

देने ज्ञान्द्वतः सेस्यान्यवा । सुन्यते व्यान्ते स्थान्य स्था । स्रोत्यते व्यान्ते स्थान्य । सेस्या उत्यान स्थाने स्थान्य ।

क्रमान्नी निक्रम्भान् निक्रम्

गहिराप्त (ब्रह्म के अअग्रम प्राविद क्षेत्र में प्राविद क्षेत्र में प्राविद क्षेत्र क्ष

यादःयाववः अदः हे याः हं सः प्यदः यदिया। वर्षे दः वस्र सः वदः स्वा यात्रः हो दः या। से स्र सः हवः दे वि त्यः दस्र वः शुरः प्र स्था। दे प्ये द्वः दर्शे सुः सम्रदः से द्या।

ग्राम्यायात्र में अर्भून के ग्रास्य या या स्वाप्य के स्वाप्य स्वाप्य विदेशन से दिन समारि दियो। याया यह स्वता दिन यो या सा हिना सा हिना <u>ढ़ॖ</u>ज़ॱऄ॓॓॓॓॓॓॓॓ॺग़ॱॸॖॺॱॸॖ॓ढ़ॱऄ॓॓॓ॺॺॱढ़ढ़ॱॻॖऀॱॸॕढ़ॱढ़ॻॖज़ॱय़ॱॺॱज़ॖॺॱय़ॱॸॺढ़ॱय़ॸॱ सवयसेन्यरवर्म्य । रवर्ष्वियस्य स्यापरिकार केव्युवामी सर् यथा यायाविवायीयायह्यात्रिये भ्रीतावी स्थेयया उत्वयया उत् ग्री निर्वा यः स्वार्थः भिरः स्वाप्तरुप्तः प्रथा स्वाप्तः स्वाप्ते स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स यः बदः करशः ग्रंडे गः श्रुं दः प्रदेः चरः करः ग्रुश्यः दः श्रेगः पः केशः ग्रद्यः सेरः धर्याशुर्यास्याम्ब्रायदेग्याम्बर्यास्य गुरुष्ट्रे। गुरुकुरायेस्याद्या याराम प्यूराम भी मानी राष्ट्रेमामा यदी प्यारानी माना मही राष्ट्री सामित है। वर्दे खेग्र रायर नशुर त्या दार्ग राया वित्र राये हे या परि श्रेर या केरःश्रॅरःत्रश्रामधेःधेरःर्रे।।

गशुस्रामः (नेन्नामे कुः सन्तरः) है।

स्राम्य प्राप्तः शुम्य प्राप्तः स्राप्तः स्रापतः स्राप्तः स्राप्तः स्राप्तः स्राप्तः स्राप्तः स्राप्तः स्राप्तः स्रापतः स्राप्तः स्रापतः स्राप्तः स्रापतः स्राप्तः स्रापतः स

श्रेश्राच्या विवानी श्रेंगा माद्रश्राचि निया प्राचित्र मित्र मित्

শ্রুমান (মর্লিন রাজ্যরা নর্লিন মান্তর্ভুমান )

ने'स्ट्रन्स्ट्रन्तःस्ट्रन्तःस्ट्रन्तः। ज्ञान्द्रस्य से स्ट्रम्य स्ट्रन्य । ज्ञान्द्रस्य से स्ट्रम्य स्ट्रम्य । स्ट्रिन्स्य स्ट्रम्य से स्ट्रम्य । स्ट्रम्य से स्ट्रम्य स्ट्रम्य । स्ट्रम्य से स्ट्रम्य स्ट्रम्य । स्ट्रम्य से स्ट्रम्य स्ट्रम्य ।

स्तान्त्र स्तान्त्र स्त्र स्त

रे स्थ्रणी प्रची चित्र प्रथा के त्राची स्था के त्र

নাই শান (বশ্বনান্ত্র ব্রান্ত্র ব্রান্ত ব্রান্ত্র ব্রান্ত্র ব্রান্ত্র ব্রান্ত্র ব্রান্ত ব্রান্ত্র ব্রান্ত ব্রান ব্রান্ত ব্রান্য ব্রান্ত ব্রান্ত ব্রান্ত ব্রান্ত ব্রান ব্রান্ত ব্রান্ত ব্রান্ত ব

हेश्रासञ्चर्तायायमाञ्चात्रात्ता प्रमेत्रात्रायायमाञ्चात्रात्ता । हेश्रासञ्चर्तायायमाञ्चात्रात्ता ।

८८.स्.(ध्रायाश्चरायायायायायायाया

५८.स्. (क्र्या क्षिटा साक्षर साम्यान प्रत्ये रामक्षर प्रत्ये साम )द्री

देग'व्रश्रद्धा'त्र'द्या'त्रथ्या'त्रथ्या'त्र्या'त्रथ्या'त्रय्या'त्रथ्या'त्या'त्या'त्रथ्या'त्रय्या'त्रय्या'त्या'त्या'त्रय्या'त्रय्या'त्रय्या'त्

ने ख्रान्य व हे ख्रून न्यान उया न व व न न के या अव कि न न के य

पश्चिम्यः (अद्याक्त्र्य्यस्य व्याक्त्र्यः व्याक्त्रः व्याक्त्रः व्याक्त्रः व्याक्त्रः व्याक्त्रः व्याक्त्रः व्याक्त्रः व्याक्त्रः व्याक्त्रः व्याक्तः व्याकतः व्याक्तः व्याकतः व्याकत

अद्याक्त्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्या

५:५८:५:नविवःनन्गः छेन्। प्यम्प्रम्यम् १:५८:५:नविवः १। प्रम्यम् १:५८:५:नविवः १। प्रम्यम् १:५८:५:नविवः १।

#### বত্তদ্বদ্যাপ্ৰাংশীৰাশান্ত্ৰীদ্যবদ্যব্ৰুদ্য

নাধ্যমান (ব্ৰাৰেই মান্ত্ৰ স্থানার মা

त्र्वा । व्या १ में अस्त्र स्वा १ में त्र प्राप्त १ मे त्र प्राप्त १ में त्र प्राप्त १ में त्र प्राप्त १ में त्र प्राप्

नुषान्ध्रीमार्चिमार्चनायान्यम् सूर्यान्।

ने निविद्याने विद्यास्य स्यूट निव्यान

५५:५८:के:खुकःर्वेन:म:५८।।

न्मोर्मोस्यान्द्रम्याने स्थान्।

न्गॅ्व'व'वय'वेग'र्चेन'यर'वशुर्।

धु:रुअ:स:रदे:बे:र्नेग:क्रूर:यहेगा:हेर्व:रु:रे:नवेद:गानेग्राय:

प्रचुर्न्तर्न्र हें हें न्याद्यका कें।।

प्रचुर्न्तर्ने हें न्याद्यका कें का व्याक्षेत्र व्याक्षेत्र

गहिरामा (इतायाण्या शुरानु प्रदेशायकाप्यन् प्रसात्वाता) दे।

व्यायहर्षा प्रति । व्यायहर्षा । व्यायहर्ष

ग्रानरादाकेंद्रित्वयायनदायराग्राहें।

निने न (द्व वर्गे र क्षे अव द्वो न क्षुन वर्षे अव अव अव वर्षे ।

५८:में (८५.५र्च्स अंक्षेश्वर्यने न श्चुन यदे अन्य से ५.४१) दे।

द्यायम् न्यायम् न्यायस्यम् न्यायस्यम्यम् न्यायस्यम् न्यायस्यम्यस्यस्यम् न्यायस्यस्यस्

नन्यायी श्चेन्य प्रमे प्रम्य भी।

श्रे भी शुर्वा गुरादर्शेत शे त्युरा

शेख्रार्वेन'यर'यागुरद्या

श्रेवाययमयलेवादवीयार्यो ।

श्वामं होत् छित् त्वो न्या होत् मित्र वित्व वित

गहिरापा(नने पर्वे के सम्बन्ध के सम्बन्ध पर्वे पर्वे स्वापन स्वापन

नारके निगे शुरु श्रम्य थ्रम परा।

ग्रुअ'रा'(द्व'वर्त्ते'व्ययःविव्'तुःचर'यर'द्ग्वरवः)दे।

न्यो'न'न्या'ग्यर'स्य म्यास्य । स्या'न'न्या'ग्यर'हेर'नस्य स्यास्य । स्या'न'ने 'न्या'ग्यर'हेर'नस्य स्यास्य । न्ये'त्र्वेदे'सु'प्यर'र्वेस्य स्थाप्त

त्राः ध्रियः न्याः वर्षे सः वितः सः वितः तः न्याः द्रे । त्रे सः वर्षे सः वर्षे सः वर्षे । वर्षे सः वर्षे सः वर्षे । वर्षे सः वर्षे सः वर्षे । वर्षे । वर्षे सः वर्षे । वर्षे । वर्षे सः वर्षे । वर्षे । वर्षे सः वर्षे । वर्षे । वर्षे सः वर्षे ।

न्याम् (न्यायर्क्च मङ्गेन न्याय नवे कु सक्त )री

ने 'हेन' छे र'न पर्ड स' ख्व खुर खुर । ज्ञासकें 'के र'न प्योप र स' माहत स्वी र प्यो ज्ञासकें 'के र'न प्योप र समाहत स्वी र प्यो ज्ञासकें 'के र'ने वा प्रमास समाहत स्वी र प्या क्षेत्र स्वी त' स्वी र स्वी र स्वी र स्वी र स्वी र क्षेत्र स्वी त' स्वी र स्

द्यः श्रॅटः व्याप्त ने प्रक्रीं क्रेट्र प्रायः न पे कि प्रायः न के संस्थितः । - प्रायः निकासिक स्थानिक वन्याग्रीयापरान्वापराय्वापरित्यारायया न्वीः श्रूरान्वाया केवारी वर्रे क्च अर्कें के दर्भे र क्यू र हे दर्दे द माइव निर्मु मामि की माधा विमार्थे द यः क्रुटः वीशः वाषीटः विटः वदीः वशः वर्क्केट् । यद्भाः न्याः विवाः ल्रिन्यानु अः श्रयाधाराकें विद्वानि । विद्वानि । या विद्वानि । विद <u> न्नोः श्लॅर-न्नाप्त्रे के सूस्र न् सेस्र स्कुः सर्के के त्र में दे जावृत्य विनानीः</u> नु'ग्रान्-रुष'श्रुय'ग्री'सर्ग्रेन'पर्खुन'पर्ने'ह्रेन'प्रनःश्लु'न'प्रेन'न्या नर्डेय' <u> विवादन्याने वित्रायम्यायायाया । पर्वे याय्व पदन्याम्य यादास्याया</u> नगे र्ह्सेन नग ने नविव न् से केन किन किन में में न मन नग केन के जिला याशुर्यायाष्ट्रमान्यो याया ग्रुया भीता श्रेया याययायाय या यते पर्योदी श्रुप्यात शे. इश्रामाने हेन ग्री. ही मान नाई साध्न प्रम्या ग्रीया क्रा सर्के के मान प्रोमा है। कुःसर्ळें केत्र में सरमाधेरमा कुरमाधेरमा हेर सदे माहतः विरातामा याडेया'य'विया'ॲं ५'यदे'या६दःविद्यो'तु'याद'र्वे'यकु'यकु'वद्रश्राय'द्रास्ट्रेद

द्वीःचःवन्द्रः न्यतः न्यादः न

स्रावस्त्रम्भाराते स्वाप्तायस्य प्रस्ता देशा स्रावस्य प्रस्ति । स्रावस्य प्रस्ति स्वाप्ताय स्वा

५८.मू.(क्र.चश्चमश्चर्षःक्ष्मानःश्रम्भःस्थान् क्षूरःचःव्यवन्तरःक्ष्मानः)ही

श्रूनश्रम्भ्रम्भ्यान्यस्य विद्यान्यस्य विद्यानस्य विद्यानस्

पर्वे त्य अप्तर्भात्र स्वाप्त्र स्व

देख्यावित्रश्चरम्यात्व्या । देव्यावित्रश्चरम्यात्व्यात्व्याः पदेश्वरादेवेश्चरम्याद्याः भेगायायाव्याद्याः

क्र्याना क्रियाना क्रियाना स्थान स्

ग्रुअ'रा'(देशदाध्वापवित्वाहेदार्यात्वर्ताप्यत्वर्त्त्वास्यत्वे व्याप्यत्वर्त्त्वास्यत्वे व्याप्यत्वे

न्यायर्श्वे सः र्वे न्याय्य स्थाय्य स्थाय स्थाय्य स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स्थाय

55. र्रे. (रक्ष वर्षेत्र क्षेत्र क्ष्म द्रमे न व्याय यावन द्रम्य मे अस्ट न क्षु यावर वर्षेत्र स्व

यदी यदिये प्रयान हो द्या प्रयान हो प्रयान है प्रयान हो प्रयान है प्रयान हो प्रयान हो प्रयान हो प्रयान हो प्रयान है प्रयान है

हेन्द्रगायः विदःहेन्यः र्वेतः भीतः हुः के नायने यद्रः नयः नयः हुनः नयः स्वान्यः स्वान्यः स्वान्यः स्वान्यः स्व स्वान्यः स्वान्यः

यहिरामः (के विदेशस्य निष्य स्वित्तर्गे रामः)दी

यायाने प्रत्यायोगाने साने हिंगामान । सिन्साममा सिन्सामान ।

नते-नुष्णि । नत-न्यम् नुष्णि ।

न्निश्यः (ब्रे. अर प्रचेति सूना नस्या ग्री अन्ति प्रचर प्रचीर न ) दे

न्ध्यायो स्थ्यायान्ये न्यायाः स्थ्यायाः न्या ।

शेस्रशम्तुरःदशुरःनमित्रं से वा

त्रुट्या क्षेत्र क्षे

५८:११. (२०१०वर्षे र.क्ट्र-वाबदादशास्त्रराधरान्द्यायानराष्ट्रिन्दासेस्रसासेन्यानरासक्रेर्स्याना)दे।

यन्याकेन्नेश्वर्यः यन्त्रः वित्रः । श्री स्थारः नश्चर्यः यन्त्रः वित्रः । श्री स्थारः नश्चरः यन्त्रः यन्त्रः । श्री स्थारः नश्चरः यन्त्रः । श्री स्थारः नश्चरः यन्त्रः । यन्याः स्थारः वित्रः । यन्याः स्थारः स्थारः स्थारः यन्त्रे । ।

त्याय श्रीं सः भिवा तुः हे तात्रायः विता हे तां वात्रायः विता हे तात्रायः विता हे तात्रायः विता हे तात्रायः विता हे तात्रायः विता हे तात्रायः विता हो तात्रायः विता होता विता हो तात्रायः हो हो तात्रायः विता हो तात्रायः हो तात्रायः विता हो तात

ठेशः हेर्यायम् ग्रुयाने त्रा

विशः से निश्चान्य विश्वान्य विश्वान्

तुः देशः र्रेत्यात्रयात्रयात्रयात्रयाः विद्याः विद्या

दगायःश्चर्यः श्चें प्रत्ये। प्रवर्षः व्यवस्थाः श्चित्रः व्यवस्थाः श्चेत्रः व्यवस्थाः विष्णाः व्यवस्थाः विष्णाः विष्ण

५८.स्. (ध्र्य.स्य.संत.केश.संत्रीवीश.संत्रासः)ता.य.सं

र्हेन्सें स्थाण्य स्टाया महिंदा राष्ट्रीत्र स्थाय स्थाय स्टाया हिंदा स्थाय स्

५८:में (क्रॅब्स्स्याम्भारतायाम्बर्ग्नान्त्रेन्याम्बर्ध्यानस्यामा)यानि

च्रान्त्र क्षेत्र स्वा क्षेत्र स्व क्षेत्र क्

५८:सॅ (रद्द्वद् सेद्व्यर होद्वर )दे।

वि'स्ट्'शेट्'श्रिवाश्चर्यात्रात्र्यात्र्याः मट'यमा'य'श्रिवाश्चर्यात्रात्र्यात्र्याः न्यय'यहंटश'श्रेव'यार्यःहे'विमा'क्ष्ट्रा

ने 'न्या'यो अ'यन्या' ख्रु 'यले व् ख्रु आ।

इ.य.र्ट. छे.यह. छूर श्रूर श्र

यहंदश्यायाः स्रेत्राध्यद्वात्त्रेत्राः हित्राः स्रेत्राः स्रेत्राः स्रोत्याः स्रेत्राः स्रेत्राः स्रेत्राः स्र तुः स्टार्न्यत् स्रोत्राः स्रोत्राः स्रोत्राः स्रोत्राः स्रोत्राः स्रोत्राः स्रोत्राः स्रोत्राः स्रोत्राः स्रो

गहिरामा (स्वानस्यानस्यासेन्यास्र्रिना

नन्गामी सेस्रायाम् स्थानिक निवास

न्यायः अगुरः यन्याः यार्वे नः छेनः या । ने ययदः भे विं यर्वे नः यदः भे विं यर्वे नः यदः भे विं यर्वे नः यदः भे विं य

ন্ব্ৰান্থ্য মান্ত্ৰ বাৰ্থ্য বাৰ্থ বাৰ্থ্য বাৰ্থ্য বাৰ্থ বাৰ্থ বাৰ্থ্য বাৰ্থ্য বাৰ্থ্য বাৰ্থ্য বাৰ্থ বাৰ্থ

त्रवाःमीःश्रेश्रशःयाव्यः निव्दः प्राचेतः स्वादः स्

भेजन्विन्छेन्द्रम्याभेज्या। हेन्द्रस्य स्ट्रिन्य उत्तर्मा प्यत्ते स्ट्रिन्य प्रम्य प्

শ্রমান (বার্বিদ্রান্ত্রিদ্রার্বিদ্রার্

यद्याः विश्व स्थान्यः विश्व स्थान्यः विश्व स्थान्यः विश्व स्थान्यः स्थानः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थानः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थानः स्थान्यः स्यानः स्थानः स्थानः स्थानः स्थानः स्थान्यः स्थानः स्थानः स्थानः स्

हेशन्भेग्रायाव्य प्यान्यस्य प्राचन्यायी हें व सें द्रान्य ने प्राचित्र

र्शः सेटार्सः क्रिंगः स्वतः सेटार्मः स्वतः स्वत

सम्भागनम्यान्त्रेत्। । इत्राचित्रम्यानम्यान्तिन्याः । इत्राचित्रम्यानम्यान्तिन्याने ।

यहिरामः (ह्र्यस्यायम्बर्धन्यम्बर्धस्यायम्)यः यहिरा रोस्रयः यदिन्यः ग्रेन्यः न्यान्यः युर्यः यापित्यः ग्रेन्यः न्यान्यः यदिन् ८८:मू.(अअअव्यामार्च्यः मान्नेर्यः भेरी

ने भूत अप्तर स्वाक्ष्य स्वाक्ष्य स्वाक्ष्य स्वाक्ष्य स्वाक्ष्य स्वाक्ष्य स्वाक्ष्य स्वाक्ष्य स्वाक्ष्य स्वाक्षय स्वाक्ष्य स्वाक्य स्वाक्ष्य स्वाक्य स्वाक्ष्य स्वाक्ष्य स्वाक्ष्य स्वाक्ष्य स्वाक्य स्वाक्य स्वाक्य स्वाक्ष्य स्वाक्ष्य स्वाक्ष्य स्वाक्ष्य स्वाक्ष्य स्वाक्ष्य स्व

गहिरामा (सुराया नार्वे न माने न मरामारा ) दे।

यवित्रः निर्वे निर्वे

र्हेत् सेंट्रंस देश प्रतियः नायश प्रत्य से से या से प्रतियः निर्मा निर्मा प्रतियः निर्मा प्रतियः निर्मा न

त्रः अर्थः त्रे अः शुक्रः वार्शेतः यतः श्रीतः यति वार्शः वित्रः श्रीतः वित्रः यति । वित्रः यात्रः श्रीतः वार्शः वित्रः वार्शः वित्रः यात्रः यात्यः यात्रः य

ग्रुअ'रा'(दे'निव्यक्तिकेद्र-तुःक्विकेत्रक्तिकानक्षेत्रका)दे।

देश्वरःहेश्वेद्गत्वायोश्वर्तायदेश्वर्त्ताः । देश्वरायदेश्वर्ताः श्वेद्गत्वायदेशः वर्षेत्रः श्वेद्द्याः । देश्वयायदेत् श्वेद्गत्व्यः प्रदेशः वर्षेत्रः श्वेद्द्याः । देश्वयायदेत् श्वेद्रः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः । दः श्वरः वर्षेत्रः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः । दः श्वरः वर्षेत्रः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः ।

भे प्यर्देन् साम्रवाद न्या कें त्र व्याद्य स्था मा भे न्या ने न्या स्था ने स्था न न्या प्रे त्र प्रे त्या प्रे त्या

मित्रेश्वास्य विष्ठाः त्र्याः विष्ठाः विष्ठाः

यम् भे मुन्य प्रति क्रिं क्रि

स्रान्त्वेत्रात्कः नश्यम् स्वान्य्याः स्वान्त्रात्ते स्वान्त्रात्त्रात्ते स्वान्त्रात्ते स्वान्त्रत्ते स्वान्त्

रदः निविद्दा है। सानसद्ग्राद्दा स्वी दिद्दा में स्वा निव्दा स्वा निव्दा स्वा निव्दा स्वा निव्दा स्वा निव्दा स्व निव्दा स

त्रान्ता होन् प्रते स्टान्ति विष्ण प्रत्या विष्ण प्रते । विष्ण प्रते स्वान्ति स्वानि स्वान्ति स्वान्ति स्वान्ति स्वान्ति स्वान्ति स्वान्ति स्वानि स्वान्ति स्वान्ति स्वान्ति स्वान्ति स्वान्ति स्वान्ति स्वान्ति स्वान्ति स्वानि स्वान्ति स्वान्ति स्वान्ति स्वान्ति स्वान्ति स्वानि स्वान्ति स्वानि स्

महिरामा (इत्स्यम्बिर्यामित्रः मित्रः मित्रः

र्ट्य इत्त्र्व क्ष्म्य व्याप्त व्याप्त क्ष्म्य व्याप्त क्ष्म व्याप्त क्ष्म्य व्याप्त क्ष्म्य व्याप्त क्ष्म व्याप्त क्ष्म्य व्याप्त क्ष्म व्याप्त क्षम व्याप्त क्ष्म व्याप्त व्य

५८.स्. (रट.र्र्व.स्व.क्ष्यं मात्राक्षी:क्षु.ल्येव.स्यार्गायःश्चरःवर्वेदःर्यात्रायः)

नन्नायः स्नानस्य हे से र मोर्ने न से न

नक्षेत्रप्र- होते। भूत्र म्यान्य स्थाने स्थ

कृत्यमिर्वित्यात्वेद्दात्यात्रेयात्रेयात्रेया

११न११ नर्भा तर्के निर्मा निर्

ग्रुअ'रा'(श्रू-'न्यानडश'यायवर'द्वेत्'यर'त्वे-'न्येंश'यदे कु'यहंत्)दे

विन्निः मुन्निः हिन्निः विन्निः निन्निः निन्न

द्यायान्य स्थाययान्य स्थाय स्था । वर्षे निर्मे निर्मे स्थाय स्था ।

न्यानव्यान्यान्यः स्वान्यः वित्यान्यः । हिंद्रासेन्यान्यस्य स्वयान्यः व्यान्यः । न्यान्याः स्वित्यः स्वयान्यः स्वयान्यः । स्वान्यः स्वयान्यस्य । स्वान्यः स्वयान्यस्य ।

त्र्वाश्वान्त्रः व्यवस्थानिः स्वस्थानिः व्यवस्थानिः विद्यान्त्रः विद्यान्त्रः विद्यान्त्रः विद्यान्त्रः विद्यान्तः विद्यानः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान

गशुस्रासः (देशवर्ष्वर्स्यमार्वेशवर्षे स्वायत् क्ष्र्वर्यस्त्रे म्यायत् क्ष्र्वर्यस्त्रे म्यायत् क्ष्र्वर्यस्त्रे म्यायत् क्ष्र्वर्यस्त्रे म्यायत् क्ष्र्वर्यस्त्र म्यायत् क्ष्र्वर्यस्त्र म्यायत् क्ष्रिक्षः स्वायत् क्ष्रिक्षः स्वायत् क्ष्रिक्षः स्वायत् क्ष्रिक्षः स्वायत् क्ष्रिक्षः स्वायत् स्वयत् स्वायत् स्वयत

ने स्था हिन से स्था विषय प्राया । हमा हा से स्था से स्था प्राया ।

### 

श्वरः वरः व्याप्तः देशः देशः वर्षः वर्षः

### क्यायाने प्यत्वे केत्र स्थाया । क्रिंत स्थाय हें स्था हो ना सामित्र स्था ।

महिश्यापाः (५ अवस्य प्रति स्वास्त्र स्वास्त्र

तत्वाक्षे तश्चेवाश्व ने तश्च न्याक्षे तश्च न्याक्षे तश्च न्याक्षे तश्च न्याक्षे त्याक्षे त्याकष्ठे त्याक्षे त्याक्षे त्याकष्ठे त्याकष्ये त्याकष्ये त्याकष्ठे त्याकष्ये त्याकष्ठे त्याकष्ये त्याकष्ठे त्याकष्ये त्याकष्ये त्याकष्ये

त्रवादि सेर तसेवास हे तसर सर शुर हस तर्वा वी सर्वे ते तसर है तसर

५८:में (रटक्रुन्थे केंब्रबॅट्या इन्यावया सुटाव ने मावया परि हेवा सेन्या)

यायाने कें त्रें त्र स्वायन क्षेत्र यात्र स्वायन स्वयन स्वायन स्वायन स्वायन स्वयन स्वयन स्वायन स्वयन स्

ब्रस्य न्यार्ने पुष्य द्रमा सुर पर दे।

# खुव्यः वाववः प्रवाः हुः वावव्यः भिष्टः व्याः वाव्यः वाव्य

श्रे अद्धर्माने श्रायामा प्रदेश हेत् प्रते प्रवासी प्रवासी विकासी विकास

र्हेन्स्रॅन्स्ययन्डेम्ड्यान्स्य स्थून्त्यम्स्रित्तेन्त्रेन्स्य स्थित् हिन्सेन्स्य स्थित् हिन्सेन्स्य स्थित् हिन्सेन्स्य स्थित् हिन्सेन्स्य स्थित् स्थित् स्थान्य स्थित् स्थान्य स्थित् स्थान्य स्थित् स्थान्य स्थान्य

प्रत्यत्वाख्यार्वेत्र्यः चुत्रः स्त्रेत्रः स्त्रेत् स्त्रेत्रः स्त्रः स्त्रेत्रः स्त्र

ग्रुअ'स'(इनक्ष्य्यूह्य ने म्वक्ष्य विदेष्ट्रें महत्व प्यत्ये हें क्ष्य स्था के ने के स्था स्था के स्था

हें वर्धेत्याम्ययाने पुषावर्धी पावयान्तरार्केषायाया सेवानरावयरा सेवा।

ने यश्यमान्त्र त्रदर सेत्र दिन प्रमाना सम्मान्य स्था देश मार्वे प्रमाने प्रमाने प्रमाने प्रमाने प्रमाने प्रमान

कृतः र्वेद्याद्याः स्वय्याः त्वा स्वयः विष्यः विष्यः स्वयः स्वयः

वर्ने वे श्रुप्त ने श्री मार्थि मार्थ मार्थि मार्थि

#### र्देवासेन्छिन्द्राचन्यात्यान्स्यास्य स्यस्यस्य स्वरं से यार्वेन्या होन्।

हें द्रार्थित स्वर्त ने स्टान विद्राण्य स्वर्त स्व

गशुस्रायार्देव नसु नादी

र्गेर-र्-तन्त्रन्दे-स्वर-ह्न्य-स्वर-ह्न्य-त्र्य-स्वर-ह्-स्वर-ह-स

#### र्श्वे न त्र मा उत्तर्भाया केता श्री

रटः कुट् छे अप्यदे के वाप्तान्दर व्यव्यानिता।
देवी प्राप्ता प्रम्या प्रम्य प्रम्या प्रम्य प्रम्य

महिरामा (येद्वेस्म्ब्रम्) है। इट कुन से सराद्य से हुँ ट्रायाय हुमा प्रायस्य नमार्थे ट्रायह्म प्रायस्य स्था हुन से हुन

#### ये दुःष्ट्रःमा ने सः न वे दः न सुरः मा

श्चितः इसः यावयाः प्रमा थवः ययाः योः देवः हैं।

५८.स्.(श्वेष:म्यानावनाः)याम्युमा

श्रेमश्मेत्र्वर्गं न्यान्त्र्यः व्यान्त्र्यः व्यान्त्रः व्यान्तः व्यान्त्रः व्यान्त्यः व्यान्तः व्यान्त्यः व्यान्त्यः व्यान्त्यः व्यान्त्यः व्यान्त्यः व्यान्त्यः व्यान्त्यः व्यान्त्यः व्

५८:द्री (श्रेश्रयानश्चेत्रव्यानश्चनायाः श्चेत्रान्वे श्वास्त्रेत्रान्वे श्वास्त्रः भ्वे

श्रूव्यक्षेत्रभावत्र व्यानश्चेत्य प्रत्या व्यान्य व्याव्य व्य

कुनः भेः वर्षेनः में विश्वान्य स्था | निश्चनः मः प्याः स्थाः महाराज्य स्थाः विश्वान्य स्थान्य स्थान्य

गहिरामा (वनसन्वेसारे रोजायानश्चनसामा सरमा क्राया वर्षाना सरमा सून्या । दे

सदसः क्रुं सः श्रुं तः त्यते वित्र स्वार्थः वित्र स्वर्थः स्वर्धः स्वर्थः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्व

সাধ্যমান (বশ্বনান না শ্রুবান নি নি নান নি না

श्चित्रसेस्य न बुद्द्वस्य स्थान स्थित्त न स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान

वसासराधिवानुमानुः महसारे सामर्दे।

मिल्लेश्वास्त्री श्चित्रमित्रास्त्री । व्हिलाविश्वास्त्री मिल्लाविश्वास्त्री मिल्लाविश्व

चतः क्रॅंशः श्रुन् नः न्दः शेश्रश्रान् वित्रः वितः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः

विष्यं वे इत्वे व्याति व्याति

महिश्या (ध्वत्यमानि र्वतः) या महिश्या यो द्वितः मालु रामित्र प्राप्त स्वतः स्वा प्राप्त स्वतः स्वा प्राप्त स्वतः स्वा प्राप्त स्वतः स्वतः स्व प्राप्त स्वतः स्वतः स्व प्राप्त स्वतः स्वतः

नश्चनः नश्चनः नश्चनः विष्य व्यवस्थितः विष्य व्यवस्थितः विषयः विषय

 ระวัง (สลูสาขาสลูสาสสลุสาสสิตสลาผิมผาสลูสาสาผิงสุมา

श्रेश्वर्थः तथ्यः वश्वर्थः वश्वर्यः वश्वर्थः वश्वर्यः वश

55. (มุลมาปุลัยมาปุลามาปุ

शेस्रयानश्रुदादर्गियायासर्दितानश्रुदायाद्वा। हेस्रायाद्वा। सेस्रस्य स्थितः स्वाधिदार्दि।

५८:इ. (अस्त्राचर्यान्य्यान्याः १९)

नश्चन'म'नशुद'नर'वर्दे द'म'भेश।

रतः तुः नश्चे अया त्या ये अया नश्चरः श्रे । । ये अया पदी 'नश्चरः नरः या ग्रयः व । । नश्चनः पः नश्चरः नरः प्या न्या ।

श्चेत्रः श्वीत्रः श्चीः नश्चनः सः स्वाद्धः स्वादः न्यः द्वितः सः स्वादः न्यः स्वादः स्वतः स्वादः स

गहिरामा(अयमान्यमानविन्नेमाना)दे।

श्रेश्रश्चात्त्र स्थात्त्र स्था । स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्य

शेश्रश्चात्री श्रुव्या श्री त्र कि त

प्रतः स्वार्थः (यहँ रः वश्वः) वे।

गुवः वर्षः प्रवः प्रवेः व्याः प्रायेशः ।

यव्याः याः प्रवः प्रवः प्रवः याः प्रवः वा।

यहे याः याः व्यायः प्रवः याः प्रवः विदः।।

प्रवेः प्रवः व्याः प्रवः विदः।।

प्रवेः प्रवः व्याः प्रवः विदः।।

मांहेश्यः (क्वर्यं च्वर्यः) हो।
श्रृताः प्रस्ति प्राप्ति स्वर्यः विद्याः स्वर्यः प्रस्ति स्वर्यः ।
श्रृत्यः प्रस्ति प्राप्ति स्वर्यः स्वर्यः ।
श्रृत्यः प्रस्ति प्राप्ति स्वर्यः ।
श्रृत्यः प्रस्ति प्रस्ति स्वर्यः ।
श्रृत्यः प्रस्ति प्रस्ति स्वर्यः ।
श्रृत्यः प्रस्ति प्रस्ति स्वर्यः ।
श्रृत्यः प्रस्ति स्वर्यः स्वर्यः ।
श्रृत्यः प्रस्ति स्वर्यः स्वर्यः ।
श्रृत्यः प्रस्ति स्वर्यः ।

### सेससादि गडिया गुन हत्यानसाद्या

#### ने 'न्या'त्रसम्भाउन्' शुव्य'नम्'व्युम्।

शेशश्चान्ते निर्दे निर्धान्य स्त्री विश्वान्तः स्त्री स्त्री

বাইশ্বন (देवे कु अळव ) প বাইশা

हेश्यास्त्रेस्यायास्याय्यस्याप्यस्या व्यव्यात्र्यस्य व्यव्याप्यसः सर्वे ।

युर-प्र-। देवाश्वर्भ-प्र-। देव-पश्च-प्राचीशुस्र।

इम्सॅं (ख्रा)वे।

स्रान्ति विश्वास्त्र स्त्र स्

মান্ট্র শ'ম'(ইন্স্ম্ম)রী শ্রম্ম'ডর'ব্ধ্রুম'ম'র মঠির'লে ক্রম্মা। शुः विना नो शः वे रळ ८ १ ५ १ छ शः । शुः विना नो शः वे राज्य शः शुः या शः या श

शेशशास्त्र न्ह्या निष्या निष्या श्री न्या श्री न्या से स्टा नी स्व ग्रीःभ्रेगाःमदेःस्रेस्रायस्यानुद्रान्यस्यित्त्व। स्रेस्रसः उत्त्वुयः नदेःसर्वेदः ळ:अर्ट्ररयामी:य:र्शेनाश्रापाइअशामेट्रापान्त्रःशु:विनान्ग्राश्रादे छेट्रा र् चुरुप्तर्द्वार्श्वार्थाय्यार्ट्रिक्टर् क्रिय्त्वात्र्वर्षः विद्वार्थाय्या धेशनुराष्ट्रयायान्य वाद्यमान्त्रेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राच्या कुःगावव रे वया गुर ग्रेन पावव से न प्रेन भी कु से न त्या । हुर:नर्भ:षर:भ्रे:वन्नर:मर्भ:दे:वर्-दे:द्या:न्रस्भ:उर्-ग्रुट:स्ट-ग्रीश-भ्रेया:धः चुर्यासदे सेस्रायमा चुरानर मुनास्यान्या पदे केंगाइन साहेरान्वना श्रीम्यायश्रम्याश्रम्याश्री । व्रोक्षिम्यावेयान्ये। विष्ठमायश्रम् सुरायहै द्ये सन्मायर्दे । इव य हेर मावमा यथा सेस्थ हे द्या वद द्या केव है। । ने यश माल्य मंद्र न्या से न में । विश्व से माश मासु मारी। । ने माश यदेःग्रात्रश्राःवितः हुःशःश्रुद्रशःविदःषशःदत्रश्राःयः श्रुद्रःतः ददेवशःदर्देदः

कं नेनान्त्वारोत्ना सेन्यस्य स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त

বাধ্যম'ন'(র্ব্নম্থু'ন')বী

## ने भूर यहिमा हेव माशुक्ष से वा

#### शेसशायशायहैगाशायाववायगायाभेता।

हेश्रामात्रस्य राज्य स्थान स्

५८म् (श्वेष्ट्रेयास्त्राचारमास्त्राचारमास्त्राचारमास्त्राचारमास्त्राचारमास्त्राचारमास्त्राचारमास्त्राचारमास्त्राचारमास्त्राचारमास्त्राच्या

५८:१. (श्वेष्ठ स्वरः श्वेष्ठ क्वा मान्य स्वरं नाम स्वरं नाम नित्व स्वरं स्वरं

यायाने पर्यो नाम्यान्य प्राप्त स्था ।
श्री नामाने पर्यो नामाने नामाने पर्यो नामाने नामाने पर्यो नामाने पर्यो

ण्याने श्री वायते श्री वायते श्री वायत् विष्णा वाया के श्री वायत् वायत् विष्णा वायत् व्याप्त व्यापत व्

নর্দ্রান্য প্রথম তথ্য বর্ষ প্রথম বর্ষ দি।

श्चेत्रं गुव्यायहर सेस्रश्चेत्रं गुरुष्याहे। । श्चेत्रं प्रदेश्यास्य स्थान्त्रं प्रश्चेत्रं प्रश्चेत्

नेश्वास्त्रस्त्रस्त्रस्त्रस्ति ।

देश्वास्त्रस्त्रस्ति ।

देश्वास्त्रस्ति ।

गहिरामा (क्याविस्राम्भेस्राचन्त्राख्रामा)या गहिरा

द्वाराविष्ठश्राधिष्रश्राधिष्ठश्राधिष्य

> हार्यास्य विष्याः । ने प्रवास्य विष्याः । ने प्रवास्य विष्याः ।

रे.र्याश्चर्द्वः अ.स्याश्चर्याश्चर्यात्रः विचा.प्रः हे.र्याः स्रवदः र्याः

शुश्राग्याराम् स्वाप्ताराम् स्वाप्ता स

गहिरामा (ब्रिट्सोस्रमार्ग्स्समायस ह्वासायर प्रशुराय )दे।

र्श्वेट नियं के अवस्ति में नियं प्रायम्

कुषाविस्रभामार्स्याष्ट्रीत्रामरामन्।।

कुः सळ्दाने सादायळे निया स्वाप्ता निया स्वाप्ता स्वाप्ता

ग्रुअ'रा'(वर्डेन्'राक्षेत्रकायाम्याख्रकारा)याग्रुका

र्नेन-प्रान्धिन्य प्रमेन्नि श्रुर-वर्षे ।

८५८ से (र्न्न) है।

रोस्रयाउदासी सुदाद्या सामदामिदा।

ने न्यायिष्य की अप्यें र से त्यर ।

मिं नदे से समायदी मिंडिया नर्डे साद्या

न्माने प्रसम्भाउन केंसान्न प्रमा

खुश्राश्ची।

यहिश्यः (५२) है।

राष्ट्रेट्रशंदि प्राणीं श्राणीं श्राणीं गाहा।

देखें प्राणीं प्राणां श्राणीं श्राणीं गाहा।

श्रुध्या स्रित्रशं स्राणीं गाया स्राणीं ।

श्रुध्या स्रित्रशं स्राणीं गाया स्राणीं ।

राष्ट्रेट्रशं स्राण्ये स्राणीं गाया स्राणीं ।

राष्ट्रेट्रशं स्राण्ये स्राणीं गाया स्राणीं ।

> म्बुस्य (५२१ ईव श्वर्य) है। दे प्रविद श्वे स्य प्रदेश से प्यप्ता । प्रद्या यो अ श्वे स प्रहेश से प्यप्त यो ।

# यविवः इस्राय्य विवादि ।

द्ये दे निविद्यं है देया ही निविद्यं है निविद्यं निविद्यं है निविद्यं निविद्यं है निविद्यं निवि

न्ते न (न क्रिंव प्रमुक्ष क्षेत्रक प्रमास्य प्रकार ) दे।

श्रेश्रश्चार्यत्राचित्राच्युत्रीत्त्वर्यः तुःवादः।।

क्रद्रभाषाः सेवासायाधितः पाष्ट्रम्।

खुर्यान्या पर्व्यापदे त्रम्या मुः पर्

श्चेरियान्त्रायमारे स्थाने ।

मी विश्वास्त्र स्थान के स्था के स्थान क

त्र.स.(यश्रम्यायेध्य.श्रम्भ.क.स्यी.क्षेत्र.स.)ट्री

नत्त्रभामहिंद्रद्राचे प्रमायः श्रुवः गुवा । ध्रुवः देदः दुर्भः शुः श्रुद्रः ग्रुवः ग्रुवः ग्रुवः । ध्रुवः देवः द्र्याः श्रुवः श्रुवः श्रुवः श्रुवः । दे छेदः देवाः प्रभः देवः श्रेदः यश्रुद्रभा ।

व्याःसः(लेशस्यःश्रेशश्यःयःस्याःस्याःस्यः)द्री

# नरे वित्रस्यानस्य गर्वस्य ।

लेशन्तरणद्रश्रेश्वर्यान्त्रयात्र्यात्यात्यात्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्

५८:(वक्षुव्यः)स्रि

ने भूषा नन्या यी से समा यने वी।

येग्राम्बुद्रायेग्राम्याम्बुद्रान्य ।

श्रेस्रश्चर्यं त्रुयः त्यायायाया विवायः या

नहुयः लुग्रायायार में या है विग्रा हा।

क्षेत्राचार्श्वराचार्याच्याः वित्राच्याः वित्राचार्याः वित्राचार्याः वित्राच्याः वित्राच्

गहेशमः(वन्यः)यःनि

यः इरकः ग्रेंवः चिरे विर्ग्वक्षः वा

श्चेसराने साधी नमा हो न निवा

भ्रे में प्रताहिंद्यात्र या या या ।

शेसशाग्री सादि ह्या हुनशुरा।

याद्वर्था में व्याप्त के के में निष्ठ निष्ठ में निष्ठ म

गहेशःसः(नश्रुटःन्व्रायायेःक्वुःयळवः)दे।

इ.लु.क्यायकंत्र.क्ट.र.लुया।

त्र अः श्री स्ति स्व प्र स्व

म्शुस्यः (वश्वस्यः विद्यः विद

र्हेन् अंद्र अपन्यानि प्रते श्री द्रायान्त्र अस्त स्वान्त्र । स्वान्त्र अस्त स्वान्त्र । स्वान्त्र अस्त स्वान्त्र । स्वान्त्र स्वान्त्र स्वान्त्र । स्वान्त्र स्वान्त्य स्वान्त्र स्वान्त

नवि'म'(भेस्रमान्सुमानमान्स्मान्सुमान्सूमान)दे।

यद्यायो के द्राप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्यापत स्थापत स्य

यद्याः मी : ब्रश्चे से स्थाः स्था स्थाः स

महिरामा (अंअअम्बर्गानवे मनअम्बर्गान्य क्षेत्र निर्मानवे सामके सामक

नमून मन्द्रा नन्द्र ।

५८:सॅ (व्हूवर्ग)दे।

शेशशानश्चरायर्दित्याः इश्रशायाः वै।। इत्यायान्द्रायाः श्वर्याः श्वर्यः श्वर्याः श्वर्यः श्वर

इव ने र्राप्त व के सरा न सुर से जुरा राया से सरा न सुर

देन्-प्राम्ययायाः विद्यान्ययाः विद्यान्ययः विद

५८.स्. (ज्यानब्रेयायर क्रियानक्षेत्रायर)ता.स्

इत्रंभेशन्दर्वात्रयात्रः व्याप्तः व्यापतः व्या

५८:स्. (२४.७४.२८.२०.४.२.२०.४.४.४.४.४.४.४.४.४)

वर्ग्येशन्य्यम् श्रायेश्ये प्रतानि । यशः इस्रशः गुवः यश्यः स्रद्धः सेर् प्रा रे प्रविदः सेर् रूपः प्रश्चे स्रशः र्युग्यशः प्रा यशः इस्रशः गुवः यश्यः स्रद्धः सेर् र्वे । वन्ग्री अप्त्याम्याप्तिः श्रेष्ट्रमाः वे विद्रायः श्रेष्म्यायः यथः स्वयः गुव्रायः सञ्चः श्रेष्ट्रायः दे प्रविद्राद्राः विद्रायः विद्रायः श्रेष्ट्रायः स्वयः स्वयः

गहिरामा (वियासना इसाम्वा पुः से विश्व स्वा रामा) दे।

नेशनविव सेन मदि सेस्र स्व मदि।

์ ฐีพ.ปะเพพพพ.ปะเพฐัพพ.พ.พ.พ.ไ

र्त्वीः हिषानुसामये कुमिन्दा

इवःयायावे दे से यावया।

नेश्वानित्रद्वान्यंत्रं नेश्वानित्रं स्वानित्रं स्वानि

না প্রমানা (ক্রুঅ ব্রিমশ ক্রম দ্বা দু মী বেলু নানা) বি

र्वेश थ्व द्र द्र प्राप्त द्र प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्र प्राप्त प्र प्र प्त

#### क्षुर नदे के मान्द न उरु मान्य विकास

सदार् र्चे सामान्दाय्व विदार्के सामान्दाय उत्तर् नि द्वी तामा के स्वर प्राप्त के स्वर के स्वर के स्वर

निन्य (क्र्रं न सम्बर्ध प्रती न प्रहेग् स प्र

नेश्यतिव्यान्यत्यत्यत्यत्यत्य । इवःयःश्रम्यत्यत्यत्यत्यत्या । वर्ष्णत्यस्य प्रत्यत्यत्यत्या ।

मुवःसँ अः र्स्रेग्रायानिवः प्रवादितः पर्से।।

नियान्यत्त्रित्त्रे प्रत्ति । विष्यत्त्रे प्रत्ति । विषय्त्र प्रत्ति । विषय्ति । विषयः । वि

य्राम् (श्रम् स्यानुश्रामित्र प्रमेष मान्य मान्य

क्रॅन्स्स कें स्वास कें स्वास के स्वास

# य्याया अर्डे न श्रुम्य स्थान विष्या विष्या विष्या विषया विषय

नसून मन्द्रा नन्द्र मधी।

५८:सॅ (वक्षुव्यः )दे।

न्व्याक्षेत्रस्त्रेन्यायाक्षेत्रायास्य स्वाप्ताने न्वयायाक्षेत्रायास्य स्वयास्य स्य

ন্ট্র-মা-(নন্দ্র-মা-)ন্মনার্ম্বরা

धिते क्रेन्द्रने नित्र निष्या नित्र निष्या नित्र नित्

५८.स. (ब्रिव:क्रेब:२क) नव: यक्ष्याक्षेत्र व्यामहेत्यः )दी

त्रुः सन्दर्भः द्वीयाश्वः सः स्था । स्राप्तदः संश्वः ह्याः श्वः सह्तः सः नृहः । । स्राप्तदः संश्वः ह्याः श्वः स्वः स्वः सः नृहः । । इतः सः सन्दे । तृत्वीयाश्वः सः स्वः सः स्वः । ।

इत्रयानश्चर्यत्वे वनश्चे स्टानी श्राम्य से प्राप्त से स्टानी स्टान्स स्टान्स

महिरादा (वरमी मेव क्षय निव मी राया हो राया हि

यद्याः क्रुयः अद्याः द्याः । गुवः हः र्षेवायः यदः युवः यविषः यदः द्या । देः द्याः यद्याः वेः यव्यः यदः युवः । देः श्वरः यय्यय्यः विष्णः । देः श्वरः यय्यय्ययः विष्णः । गुयः द्वः द्वः यविषः यविषः यविषः यविषः । गुयः द्वः यविषः यविषः यविषः यविषः यविषः यविषः यविषः ।

न्त्र स्वर्ध्य स्वर्य स्वयः स्वर्य स्व

म्बुस्य (इव्ययम्बिय विद्यक्षेत्र प्रेत्र स्वयः) त्य मिहिश्वा इव्य मिश्चे स्वयः (इव्ययमेश प्रेत्र स्वयः) त्य मिहिश्वा इव्य मिश्चे स्वयः (इव्ययः विद्यक्षेत्र स्वयः) त्य प्रिश्वा

नेयात्रायात्र्याः क्रुयाः हेयाः इत्रायदा।

#### ने लायमन्तरायम् नुस्य

गहिरापा(देल्यसक्सम्बद्धाः स्वाप)दे।

यारक्तं इव याधि दक्षे वशा । यह स्वेश्वेश प्रविद्या प्रविद्या प्रविद्या । रेक्षं भेश प्रविद्या प्रविद्या प्रविद्या । र्शे स्वेश प्रविद्या प्रविद्या ।

श्रें अपित कुषा विस्रयाय श्रें ना कुषा निर्मा निर्मा निर्मा निर्मा कुषा विस्रयाय श्रें ना विस्रयाय श्रें ना कुषा विस्रयाय श्रें ना कुषा विस्रयाय श्रें ना विस्रयाय विस्रया

८८ में (क्ष्यमिक्षयम्ब्रम्य स्वर्थः)याष्ट्रिया क्षें पाशुस्राधीः गुत्र क्षें ८ ८ पा सायायन १ स्वर्थः १ स्वर्थः स्वर्थः वर्षे ।

न्दः से (क्ष्मिश्यक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षः)यः मश्रुम्याः व्यवद्यः । यः स्याः स्

५८.स्. (स्थरमानी गुनः ह्यू दायानहनामा)यापि

५८:सॅ (लुका ग्री: ग्रुप्त के क्रिंद प्राप्त क्रिंद क्र क्रिंद क्र क्रिंद क्रिंद क्रिंद क्रिंद क्र क्रिंद क्र क्रिंद क्र

रे'विगान्तःसँ'यन्दे'यन्दे अध्या। यने'ने'भ्रेंन'नठमानेमान्यानमा। ने'के'नन्गानेमानेन'नेन'नवेन'न्।।

बुदशः श्रुनः धरः वे 'गावशः धरः ह्या ।

दर्शे नि स्थान स्

ग्रह्म स्वाप्य स्वेष्य स्वर्धि ।

ন্ত্রিশ'ন'(য়ৢ'ন'র্মান্ম'ন্দ'রর অ'নর নমুন'রু')অ'নরি।

भेगामिश्रानक्षानवेःगुवःश्चित्रश्चेत्रभ्वामान्दा त्रानवे छे है। क्ष्र-ग्रान-ना मार बमामान्त्र-गुर-गुर्दिरश्रामाय है क्ष्र-ग्राम-ना दय नर्भेभामवे के हे सूर्यु नर्भे

५८:में (भ्रेमानी अप्त्रकृतिः गुतः श्रेन् श्रे रात्रकृतायः) दे।

र्नेन सेन मणेर नर क्षान दी। वयः धरः नद्याः गीयः थेः गुः श्रे।। देशायर सेस्राया स्वार्ति देशा

श्रेमा'ते 'सन'श्रे'नश्र'नर'ग्रा।

र्देव से द स्य र श्रिम् श्राम्योद नियम् नियम् नियम् । वीर्यासी मु: स्रोस्रया दुस्या प्रमान प्रम प्रमान प्रम प्रमान प्रम प्रमान प्रमान प्रमान प्रमान प्रमान प्रमान प्रमान प्रमान प्रम प यारेशायराशेश्रशायशात्राह्मा हुति नक्षानि के महत्वितामारा द्रार् श्रेगान्ते सनः श्रेन्यः नमः हरि।।

गहेरापा(त्यायवेकेंद्राक्ष्राम्

क्ष्मान्यानर्वितः केन्न्ति।।

रेशायगदार्सुगशासुगमस्य ।

ववायः सेवा यहेवा से से विवाय सु यह वह वर होते।

ग्रुअ'रा'(न्राराज्ञनान्त्रन्दुरानु विस्थानात्याहे क्षूराज्ञाना)दे।

त्यादः विया श्रेया श्रयः श्रुम् । यश्रश्य त्रशः दिन्या शः यो या शः विर्या शः विर्या । यशः श्रिया शः यद्देया शः यः यह्या । यशः श्रेया शः यद्देया शः यद्देया शः यद्देया शः यद्देया । यहा स्वर्या श्रयः विर्या शं यद्देया शः यद्देया यद्देया शः यद्द

ने ख्रिस्त्वष्ट्रभास्य त्याय विया भ्रेया यो । या स्त्राह्म स्वाह्म स्वाहम स्वाह्म स्वाहम स्वाहम

नवि'न'(दयानर्भेभानवे के हे क्षूर ग्रुपा) दे।

स्यानर्थे श्वापन्ते : श्वी स्यान्ये स्यान्ये

वर्जेवसायराव दिरा गुः है।।

यररयानर्शेशन्यावर्शे निर्देश्ये निर्देश्चेरयान्यस्यान्यान्या

द्र्यत्र श्री । ल्यू वार्या श्री वार्या वाय

गश्यामः(र्श्वेन्ययान्वव्यास्यस्यः)द्री

देग्रिमःगव्याञ्चनयःश्चन्यमः। दर्गेयाम्येयःवयःश्चन्यमः।

ने १९४८ श्रम्भा चा चा त्राया प्रमा प्रमा विकास का स्था । विकास का स्था विकास का स्था

निन्। (न्य अन्यत्रे न्यु व र श्वे द्राया नहना या) दे।

याव्यायाय्येयायाव्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्याय

गुनःश्वीं न्यायनन्य प्राप्त के त्यायन्य प्राप्त के त्याय के त्याय

यद्भिरायः(अय्याक्षेत्र्यान्त्र्यायः)यःयद्भिरा अयसःद्योः नदेः न्य्येयासः यायान्यासः नद्याः नयोः नः यः हेः यदियाः स्टर्युक्तः से विद्युक्तः सह्याः सर्वे ।

५८:सं (अअसर्गे नदे न्येग्सर्य वार्यक्षा मान्यक्षा )दे।

शेश्वराधित्राह्म । विश्वराधित्राधित

शेयशं ग्री म्नूर के ते या तुर्य विदार्श्वे शं या ते या हे या पु न्य रायशः म्नूर श्राप्त के ते या से या श्री य

पित्रे रा (न्नो न व क हे महिना सर वशुर से वशुर नहना स ) दे।

ठे'त्रशंहिर'यहें त्र'त्रहें त्र'यहें । भूत'ठेवा'याठेवा'याट'श्चे'यहें द्र'त्रदा। वत्रवा'यो'धेत'यदे'याट'श्चें त्र'ठेश। ने'सूट'धेत'य'शें'शें र'वहवा।

नन्गां नी अ कि त अ ग्रामान्नो निते के अ त्या अ प्योम् अ भिन्ने कि मान

সা্ধ্র মান (বার্দরেশাবারী স্ত্রানির শ্লন্মনমান প্রার্

यहेग्र-इन्नियः क्रूंत्र-क्रिंग्र-विया । यायः हे स्रे-इन्ने त्यदे : इक्र-इन्ने । यहे : श्रून-क्रेन्-इन्ने न्यदे : इक्र-इन्ने : इन्ने ।

कुंवाविस्रमानहरार्स्रेस्यमानवनाम्यराम्यार्

र्टानी श्रीना याना हैं द्राये प्रदेश निया में प्रत्ये प्रत्ये

श्रुं ने न

न्दः विना न्यस्य स्ट्रेन्द्रस्य स्ट्रा ।

दे त्यस्य नावदः दुः से न्यस्य स्ट्रे ।

दे त्यस्य नावदः दुः से न्यस्य स्ट्रे ।

दे त्रि तः से त्या ना स्ट्रेन्द्रस्य ।

नावदः दुः नाहिस्य ना स्ट्रेन्द्रस्य ।

ने स्ट्रान्दे त्यस्य स्ट्रेन्द्रस्य ।

दे त्रि तं त्रे त्यस्य स्ट्रेन्द्रस्य ।

दे त्रि तं ते त्यस्य स्ट्रेन्द्रस्य ।

दे त्रि तं ते त्यस्य स्ट्रेन्द्रस्य ।

दे त्रि तं ते त्यस्य स्ट्रेन्द्रस्य ।

में से समारे भाउत् न् स्थितान में स्थान स्थिता में सिया समारे स्थान स्य

निहेश्यः (१३४४। वार्षेश्व

८८.स्.(जिम.ग्री.पश्चयत्रात्रेशमायायश्चरायः)तायाश्चरा

इस्राम्योद्यान्त्रात्त्रः स्वाप्त्रात्त्रः स्वाप्त्रः स्वाप्त्रः

५८:द्रा. (क्षायाष्ट्राची निवर मुंचे विकास के

वे अदि मान्य वे सू र्के माय प्रा

र्दे अळं र सूर् अं त्र अर से ।

गुव'य'दह्या'यर'शुर'य'व।।

ने खं ळग्रासाञ्चर नर ग्रा

गहिराम (द्वायेदायदे श्विदायाद्वाय )दी

र्नेत्र सेन्य में इंग्वर्ड न्द्र । अर्थे अप्येत्र सेन्य स्त्री न्यू राज्य ।

# यदे मिलेग्रायश्चर्याय इत् च राज्या । अगायश्चरे प्ये से प्रिंति या देना ।

न्नोः श्रॅन् श्रेष्ठा व्याप्तः देवा स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्व देशः विद्याः स्वाप्तः स्वापतः स्वापतः

नश्रुवःमः न्दा नश्रुः नर्दे। न्दः में (वश्रुवःमः) वे।

यारः कें तश्चित्रं प्रस्तित् स्वा । श्चानस्तित् प्रस्ति स्वा स्वा प्रस्ति स्वा स्व स्व । स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व । स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व ।

यार यो के खु अ नर्जू दे प्रस्त पर्दे दे प्रस्त यु र हु अ प्रति दे प्रस्त यु र ज्ञार या क्षु प्रस्त प्रस्त यु र प्रस्त यु र ज्ञार या र यु र प्रस्त प्रस्त प्रस्त यु र प्रस्त य

गहेशःसः(वन्नः)यःध्र

र्हेन्स्स्यःश्चे पर्देन्पिते छे हे श्वराद्यान्ता केन्या यावन देवः हे श्वराद्यान होन्या केन्या स्थेवा याची छे हे श्वराद्यान प्राप्त वावन देवः

५८:सं (१६ वर्से दश्कुं पर्दे द प्रवे के हे व्हू र ग्रु र ग्रु र ग्रु र

यारःकें स्टरंभेट्रःकयाश्वास्तर्द्दा । वित्रस्तर्देट्रःसःट्रेःभे के । यश्राश्चाश्चाश्चाश्चा

निर'मनिव'र्'दे'मावय'यर'ग्रा

गहिरामा (क्रिंन्य र्शेन्य री के हे सूर ग्रुन ) दे।

र्मेन्द्रमान्त्रभावस्य ।

यात्राने प्रमुद्रमान्त्रभावस्य ।

यात्राने भूक्ति प्रमुद्रमान्त्रभा ।

यात्राने प्रमुद्रमाने प्रमुद्रमाने प्रमुद्रमाने ।

### गले'नडरू'यहर्गनडरू'शुर्'य।।

ग्रुअ'रा'(हेर्नग्ररश्र्वाशःग्री:कें'हे'सूराग्रनः)दे

केट्रिट्र नगुरः श्रे ग्राम्य व्यव्हेट्र प्रत्या। मध्या प्रतिरः देवः दुः महेरः प्रदेट्र प्रत्या। महमा से स्रयः देवः महिरः महिरः स्राप्ता। दे कें स्रिटः महिरामहरूप स्राप्ताः स्रापताः स्राप्ताः स्राप्ताः स्राप्ताः स्राप्ताः स्राप्ताः स्राप्ताः स्राप्ताः स्राप्ताः स्राप्ताः स्रापताः स्राप्ताः स्राप्ताः स्रापताः स्रापता

र्वे र त्यं श्रें वाश्वायाश्वा । वार्षे वा त्वि र हैं वा त्व त्वि र त्वे र श्रें वाश्वायाश्वायाश्वायाश्वायाश्व

यालवर्ग्नेव प्ययायम् यान्य प्रत्मे प्रत्म प

यः पः (ब्रिंन ५८ तु अपार्श्वेष अप्तेष्ट्रे ५ सदे के हे सूर हु न

ब्रिंन-५८-भूगानस्य सँग्रास्थि नर्वे न्यान्य से ह्या निर्मान स्था से ह्या निर्माण स्था से ह्या से ह्या निर्माण स्था से ह्या हिता है हिता है

गशुस्रामः (द्वन्वस्वनः)दी

ने 'सूर'गुन'न का केंद्र स्थित स्था ।

देन से प्रति से का माने ने 'से 'प्रति से स्था ।

दे 'के 'प्रति से का माने ने 'से 'प्रति से स्था ।

दे 'के 'प्रति से का माने ने 'से स्था ।

दे 'के 'प्रति से का माने ने 'से स्था ।

गहिरामा (अयमा क्षेत्र मा क्ष्रमामा क्ष्रमामा मुद्दाना) ता मा शुस्रा

र्शे स्थित महेत्र से स्थान सुद्रा सुत्र से प्राचित महेत्र से प्राचित सुत्र सुत्र से प्राचित सुत्र सुत्

५८:सॅ (अ अवि नाहे द सं या न सुर न र )दे।

निव मित्र में मित्र मित्र मित्र मित्र में मित्र मित्र

से सम्मान्ति।

सम्मा

सव खुंव शे सम्भू श्राम शे श्री विद्या । वर्दे द स्य सम्भू श्राम स्थि । वर्षे द स्थ सम्भू श्राम स्थि । वर्षे द स्थ सम्भू श्राम स्थ सम्भू स

महिमान्य सव निर्मा अपते हिन स्विम् स

मश्चर्यात्रात्र्या प्रतिक्रिं स्वार्थित्र स्वार्थित् स्वार्ये स्वार्थित् स्वार्थित् स्वार्थित् स्वार्ये स्वार्ये स्वार्ये स्वार्थित् स्वार्ये स्वार्ये स्वार्थित् स्वार्थित् स्वार्थित् स्वार्थित् स्वार्ये स्वा

गहिरामा (मुन स्टानिय महिन स्टा) दे।

मित्रसर्में सेन्द्रस्था

नन्गान्दरस्रेस्रकाउत्तन्ननः गुरुषिता।

श्रुवानामित्र न्या

थेर'दरे'हग'रु'ग्र्डर'नर'ड्य

नडशन्दानी। विद्यास्त्री। विद्

गशुसामा (महेन में नर्से समाया क्षेत्र मंतरे क्ष्या) दे।

रेट विया विवाद विश्व विष्य विश्व विष

र्चनः संप्रदान्यस्य स्था । स्थान्त्रः स्थान्य स्थान्त्रः स्थान्यः स्थान्तः स्थान्तः स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्त्रः

र्ळिंग्राकेत्रः स्थान्त्रः स्ट्राच्याः स्वान्त्रः त्राच्याः स्वान्त्रः स्वान्तः स्वान्तः

५८:म्.(क्षांचित्रमायाश्चाःस्त्राम्यः क्षीं त्यायाक्ष्यमायास्त्रमायाः । ताःस्

सुर्यायात्र मुन्न स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्य

५८:में (सुमायाक्रम्यास्त्री देग्न्यायदे द्वे )दे।

य्य क्ष्य ग्राय क्याय प्राधिय ।

# धेन्। विन्यः स्वानः स्वानः

नियतः कें निर्मेत्र्वा क्ष्यां क्ष्या

### ख्यायदी प्रत्यायी स्या बुद ख्रियायदी । धिद क्षित्र के स्थित स्था ।

ख्रायदी निर्मा मेर निर्मा निरम्म स्थाप क्रिया के स्थाप के स्था में स्था मे

# हिंद्र द्र दिन विश्व है अ के कि विश्व हिंद्र विश्व है अ के कि विश्व है अ कि व

ष्ट्रिन्द्रा नेश्वान्त्रिया से प्राप्ति स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त

 ने'ना

इत्यान्यत्राचित्रं के त्या स्त्राच्या स्त्र

नन्नाः सेन् न्याः स्वत्वाः तुः ह्येन्यः स्वतः धिन् हिन् से वार्षनः न्यः स्वतः तुः स्वतः स

म्बुस्य (बुस्य क्ष्रेन्य सेन्य सेन्य स्वाप्त ) या महित्र प्राप्त क्षेत्र सेन्य सेन्

र्श्वास्त्रम्थाश्चर्तः स्थाप्तः स्थापतः स्यापतः स्थापतः स्थापत

#### नेयारवायर्ह्व राग्नेयागुरारु छे।।

श्री स्वर्धत श्री अप्तादि देश स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वर्य

त्रभास्यस्यस्य या प्रति । विष्याः स्थाः स्याः स्थाः स्याः स्थाः स्याः स्थाः स

तुभामान्त्रभगण्याः कर्ताः करात् वे प्राच्याः भाषाः वि प्राच्याः वि प्

महिरादा (क्षेट्र से न्याया क्रम्या सम्से देग्याया )दे।

ने भूर प्यन्ते ने प्रकृष ग्राम्य ने ना । वित्र ग्री साम्बेद स्वा । वित्र प्रेस स्वेद स्वा । वित्र वे स्वेस प्यने स्वा भारत स्वा । वित्र वे स्वस्था प्रेस स्वर्ग स्वा ।

ब्रिंट्र श्रीश्रासी या विष्टा निवास स्था स्था ।

क्याः यह प्राधितः स्था । क्याः यह प्राधितः स्था ।

सुमाग्रीमार्चित्या है विवा है।

हैशन् सन्दर्शः में न्रिया

वर्षा ग्री देव द्वाद प्रदेश वर्ष दिवा व

खुश्रायाः क्रम्याश्चार्याः श्चे त्रम्याश्चार्याः स्त्रायः श्चे त्रम्यः त्रम्य

 द्रा ग्रुनः इरः बदः ग्रुदः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः व्यान्यः क्षेत्रः व्यान्यः विद्यान्यः विद्या

व्यवार्धिमानमें विष्टु से वहुन विष्टा

र्वेश्वार्थः श्रेष्ट्राय्याः श्रेष्ट्राय्याः व्याप्तः व्यापतः वयापतः व्यापतः व्यापतः वयापतः वय

न्युअःमः(म्रःह्वःक्चेवःवशःवर्देदःर्देवःश्च्वःकःगल्गवःगः)दे।

स्याप्ति त्याप्ते विद्याप्ति । स्व प्राप्ति । स्व

निन्मः (नुदेः र्स्यान्याः भ्रेष्ययाः उदायवरान्याः वीर्त्वः स्वानः नेयायाः )दे।

वर्ते न्दर्वे न्वरे हेत् उं अन्।

सुरुष्यामुःधिःर्ह्वे नव्याः हे।

शेसशाउदाक्सशाद्द्रानश्चरायदेः भ्रीत्रा

लीन्यविवाग्री वे सुका शुर्म हुन्।

शुभावि: न्वों नं वायं विन्न स्थि के नं नु विक्रा स्था के विक्रा स्था स्था के विक्रा स्था के विक्र स्था के विक्रा स्था के विक्र स्था क

गहिरामा(न्ने नान्यून नाया स्वर्भन स्त्राच्या स्वर्भन स्त्राचा नाया स्वर्भन

याश्वास्तिःगुत्रःश्चें दःगुत्रः स्रहे शःसरः ग्रुः तः दर्गा व्याप्तास्तेः गुत्रः श्चें दः त्याप्तास्त्रः स्रहे तः स्रोदः स्राप्तास्त्रः स्रहः तः स्रोदः स्राप्तास्त्रः स्रहः तः स्रोदः स्राप्तास्त्रः स्रहः तः स्रोदः स्राप्तास्त्रः स्

५८:में (बायवानवे गुवार्श्वे प्रावायहे यानरा नुवा)या ज्युया

म्ब्रिन्द्रस्ति। व्यान्ति। व्यान्ति। व्यान्ति। व्यान्ति। व्यान्ति। व्यान्ति। व्यान्ति। व्यान्ति। व्यान्ति। व्यान्ति।

५८:में (मान्वराप्ताः स्वरायि के हे सूरा ग्रायः) दे।

देश्वरः रहार् यहार्ये दार्थे अपे । ह्या हार हैं अप्यादेश्वर विवाद स्था । विष्यादेश स्था अपे हिंग्यादेश स्था । विष्यादेश स्था अपे हिंग्यादेश स्था ।

दे 'क्षेत्र'त्रद्र' में 'खु अ' श्रे अश्वाय 'त्रद्र' च्ये त्राप्ति 'त्रत्र' में अ' हे 'ह्या' हु' यावित 'या 'यह' अ' या 'द्र्र 'या 'द्रे 'या 'या 'द्रे 'या 'द्

गहिरापा (ब्रिन्यायर्देरायेदा होन्या स्वान्या हो हो सूराहाना) दे।

ब्विःवःश्रेष्यश्चार्यः प्रत्यः द्वा । श्वाद्यः प्रवश्चारः स्वाद्यः प्रत्यः विश्वाद्याः ।

विष्यःश्रीम्थायदेःधीः व्यद्यायह्म्यश्रायम् वयः विष्यः तुः श्रुः केदः सैं प्रतः व्यव्यायम् व्यव्यायम् विष्यः व्य

 शुनः न्याः कुत्रः न्याः न्याः । शुनः न्याः न्याः न्याः न्याः । शुनः न्याः न्याः न्याः न्याः । शुनः न्याः न्याः न्याः न्याः ।

त्राक्षित्वा व्याप्त्राचित्र क्ष्या क्ष्या विष्या क्ष्या क्ष्या

गहिरा (ग्वित्र-१८ वर्षे ग्रथः परि ग्वर क्षेत्र वास्त्र स्वर्धः स्वरं स

स्वायमः श्वायायः है 'स्वमात्राया यदेव'यमः श्वायायः है 'स्वमात्राया यदेव'यमः श्वायायः है 'स्वमात्राया यदेव'यमः श्वायायः विद्यायः है 'स्वमात्राया यदेव'यदे 'स्वमार्थे स्वमायं विद्यायायः है 'स्वमायं स्वमायं स्

५८.स्. (सब.सर.श्च.य.त.सं.संर.धे.य.)

गुन्न ग्राम्य स्थानित निर्मा स्थानित स्थानित

#### ह्या हु गुर्व श्री श्री न सर शुर्वा

मान्वराया नेवराय स्वेता प्राप्त नेवराय मान्वराय स्वाप्त प्राप्त स्वाप्त प्राप्त स्वाप्त प्राप्त स्वाप्त स्वाप

गहिरामा (नदेव मराश्चान या हे सूरा ग्रुना) दे।

येग्राय-रङ्ग्रय-प्राययय-उ

न्गे'नर'ग्रुप्रालेश'न्र्नि'गर'ग्रा

यदेवं पदे केंग् श्च पदे लेग्य प्रम् श्च प्रम् व्यव्यक्ष प्रम् विष्ट्र प्रम् विष्ट्र ।

সাধ্যমান (বর্ষপ্রের্মশ্রির্মণ্রের্মণ্রির্মণ্রের্ম)বি

नर्शेन्द्रस्थान्तेन्द्रम्थान्त्रम्था । नर्शेन्द्रम्थान्येन्यस्य सम्बद्धान्यस्य सम्बद्धान्यस्य सम्बद्धान्यस्य सम्बद्धान्यस्य सम्बद्धान्यस्य सम्बद्धान

म्बन्द्रन्त्रीत्यक्षेत्यक्षेत्रः यो स्वर्धेन्य स्वर्येन्य स्वर्धेन्य स्वर्येन्य स्वय्येन्य स्वय्ये

निन्। (ग्वम् ग्रीः व्याप्त म्मान्य के मिन्न मिन्

भूगान प्यंत न्त्र नहें न हा निना।

न्यः (ग्वित्रः न्यायः नरः ग्रुशः सवेः सवः स्वरः ) दे।

 यःर्रेयः ५ व्याः स्वाः तस्यः के।

म्बुस्य (क्ष्म्य व्यवस्थित व्यवस्थ व्यवस्य व्यवस्थ व्यवस्थ व्यवस्थ व्यवस्य व्यवस्य व्यवस्थ व्यवस्य व्

प्रस्थित स्थान स्

निवर्त्ता श्रुत्ता व्याप्ता स्थानिय स

भ्रमानीयायेय्याय्यात्र्यात्र्यः व्यान्त्रः व्यान्तः व्यान्त

ग्रुअ'रा'(न्नो नदे व्यय वनदः विना न्दः वन्ने वा नदः नुः नः) य'रा शुरा

श्चेत्रप्रति विद्या स्वर्ष्ण श्चेत्रप्र श्चेत्र श्चेत्रप्र श्चेत्रप्र श्चेत्रप्र श्चेत्रप्र श्चेत्रप्र श्चेत्रप्र श्चेत्रप्र श्चेत्र श्चेत्र श्चेत्रप्र श्चेत्रप्र श्चेत्रप्र श

५८:द्रीं (श्रुव प्रवे विद्वा प्रमाण्डव प्राश्ची व प्राश्चा व )द्री

ह्याः प्रस्थाः विद्याः विद्या

श्वाप्तश्यानायान्यो केतावश्वाम्।

न्गे'न्द्रम्यायम् कुत्रन्न्ज्यान्त्र । अस्त्रं लेत् क्रिश्च श्राम्य श्रीम्य स्त्र स

गहिरामा (न्ने नदे वसा इससा र म्हूं नसा ग्रीसा ग्राना) दे।

क्ष्र्यान्य स्वयः त्राच्याः व्ययः स्वयः त्राच्याः व्ययः स्वयः त्राच्याः व्ययः स्वयः त्राच्याः व्ययः स्वयः व्ययः व्ययः स्वयः स्ययः स्वयः स्ययः स्वयः स्ययः स्वयः स

ब्रूट र्देर द्रावह्या व्यायायायायाया विट द्यो वाया द्राव द्राव द्राव

र्म्स्य स्वाप्त्र स्वाप्त

ग्रुअ'रा'(न्ने नर्ने त्रमर्ने त्रमर्ने त्रमर्ने त्रम् नित्रम्ने स्त्रम्ने स्त्रम्न स्त्रम्न स्त्रम्न स्त्रम्न

श्चेत्रप्रेत्यः स्याधेत्यः श्चेत्रप्रश्चित्यः श्चेत्रप्रस्येत्रप्रस्येत्रप्रस्येत्रप्रस्येत्रप्

ग्रुअ'रा'(श्रेश्रश्चर'त्व'त्तेन'त्ते'त्वेन'त्ते स्वावेश्वर्यात्रेशेष्वर्यात्रेशेष्वर्यात्रेशेष्वर्यत्रेशेष्वर्यत्रेशेष्वर्यात्रेशेष्वर्यत्रेशेष्वर्यत्रेशेष्वर्यत्रेशेष्वर्यत्रेशेष्वर्यत्रेशेष्वर्यत्रेशेष्वर्यत्रेशेष्वर्यत्रेशेष्वर्यत्रेशेष्वर्यत्रेशेष्वर्यत्रेशेष्वर्यत्रेशेष्वर्यत्रेशेष्वर्यत्रेशेष्वर्यत्रेशेष्वर्यत्यत्रेशेष्वर्यत्रेशेष्वर्यत्रेशेष्वर्यत्रेशेष्वर्यत्रेशेष्वर्यत्रेशेष्वर्यत्रेशेष्वर्यत्रेशेष्वर्यत्रेशेष्वर्यतेष्यत्रेष्वर्यत्रेशेष्वर्यत्यत्रेष्वर्यत्रेशेष्वर्यत्रेशेष्वर्यत्रेष्वर्यत्रेष्वर्यत्रेष्वर्यत्रेष्वर्यत्यत्रेष्वर्यत्रेष्वर्यत्रेष्वर्यत्यत्रेष्वर्यत्रेष्वर्यत्रेष्वर्यत्यत्रेष्वर्यत्रेष्वर्यत्यत्यत्यत्रेष्वर्यत्रेष्वर्यत्रेष्यत्यत्यत्यत्यत्रेष्वर्यत्यत्यत्यत्यत्यत्यत्यत्यत

नितः श्रुं न् प्रान्ता अस्र अस्त्र श्री श्री स्र स्वार स्वा

५८:सॅ (जलकःईकःश्चरः नः)दे।

### ने भूर रेगा गुरा गावव रें व या।

#### ह्या हु न हैं व स्य याव्य स्य हु।

स्राचन्त्रान्त्रः व्याप्तः स्राच्याः स्राचः स्राच्याः स

#### त्रुवाशःहे'स्रदरः चः चेदः वाडेवाशः ध्रश्। चर्यावाः चः इस्रशः ग्रुदः देः व्यः वाद्यदः।।

त्रुवाशः हे सददः नः श्रद्धः क्रुवाशः से द्रावाः क्रियाः व्युव्यः व्यव्यः व्युव्यः व्यव्यः व

चुर्ना । व्याप्त व्यापत व्याप्त व्यापत व्या

महिश्रामः (स्टाक्तेश्वरायम् अत्यस्मावद्यम् स्वतः क्ष्याम् व्याक्तिश्वा व्याक्ति स्वाप्ता स्व

वशर्गिशःश्चेत्रः प्रदाशःश्चेतः प्रदेशः श्चेतः श्वेतः श्चेतः श्वेतः श्चेतः श्वेतः श्चेतः श्चेतः श्चेतः श्चेतः

५८:सं (वशर्मशक्षेत्रप्रदाशक्षेत्रप्रति विद्यार )दे।

र्यमान्यरःश्वरः द्रारासमें व्यान्यरः स्वरः स्वरः

न्व'म'र्डं स'र्'न्ववर'र्गुः हे।

कैं अ में अ मा शुअ अ मा में मा अ भ में हो।

अश्वार्यस्थाः श्री द्रायि के विष्णाय स्थितः स्वार्त्तः द्वार्यः विष्णाय स्थार्थः स्थाः स्थार्थः स्थार्यः स्थार्थः स्थार्थः स्थार्थः स्थार्थः स्थार्थः स्थार्थः स्थार्थः स्थाः स्थार्थः स्थार्थः स्थाः स्थार्यः स्थार्यः स्थार्यः स्थार्यः स्थार्यः स्थार्थः स्थार्यः

महेन्द्रित्यते। प्रत्याक्षेत्र क्षेत्र क्षेत्

गहिरापा (ज्ञानाञ्च केना राष्ट्री केना नुस्ता महिना निष्य महिना निष

नश्रमाशुरातुः हैं ग्रायरादशुरा

गशुरशपः सुरः र्रे ।

ग्रुअ'रा'(लुअ'क्केंद्वायरमहिंदावदे'तुअ'द्दाद्वेंअ'यावल्दाय)दे।

श्रुरःहेदेःनश्रश्रास्य प्रमानम्। श्रुश्रादिःग्वन्दःनस्थः श्रुःश्रे।। श्रुश्रादिःग्वन्दःनस्य व्युक्तः।। देवःळेवःश्रुनःसदेःश्रुरःग्वन्दःदे।।

यहारक्ष्यासेससाद्दासादहार्सात्वसायाः स्वास्तात्वसायाः स्वास्तात्वस्

নাইশ্ন (ৼয়য়ৢয়য়য়য়ৢয়য়)য়য়য়য়

क्रैंशन्त्रिन्द्राधित्त्रम्यात्त्रम्यत्त्यात्त्रम्यत्तित्त्रम्यत्त्रम्यत्तित्त्रम्यत्तत्त्रम्यत्त्रम्यत्त्रम्यत्तत्त्रम्यत्त्रम्यत्तत्त्रम्यत्त्रम्यत्त्रम

श्रुरःनरःश्चेःग्चःनर्दे।

५८:सॅ (कॅशनन्द्राची सुरान्दि सुरामी मुदार्श्वर में दि सुरामी मुदार्श्वर में

अःगुरुष्यः व्यः व्येशः वित्रा । भ्रेष्ठः चित्रः प्रवितः प्रयोगः प्रयोगः प्रयोगः प्रयोगः ।

गर्गश्राम्यायात्राम्यायात्रीत्राम्यायात्राम्या

यर्गे ने निष्मित्र राज्य स्वा

क्रॅशन्दरक्रिंशश्चानायायायायायायायाक्रिंशक्षायान्त्र विद्यास्य विद्यान्त्र विद्यान्य विद्यान्य विद्यान्त्र विद्यान्त्य विद्यान्त विद्यान्त विद्यान्त्य विद्यान्त विद्यान्त्य

गहिरामा (क्रून ग्री नगम मने वित्यम मने वित्यम मने

न्यवःयः व्यन्दः क्रुं क्रें न्दा। श्रुव्यान्यः स्वन्ये न्याः स्वन्ये न्याः स्वन्यः स्वयः स्वयः स्वयः

सर्द्ध्यास्य मुर्गायाया मुत्र मुर्गा

विवान्यः के खुद्दः वी के अप्युः तुः त्यव्यव्यन्यः प्रद्यः या के व्यान्यः व्यान्यः के व्यान्यः व्यान्यः के व्यान्यः व्यान्य

मुं के वर्षे वर्ष

मुलक् में वे के का में भें में त्र प्राप्त के का में के के में वे के में वे के के में वे के के में वे के में के में वे के में के में के में वे के में के में वे के में वे के में के में के म

मुश्रामः (श्रेश्वराद्धः श्रेश्वराद्देशः श्रेश्वराद्धः भ्रेशः वर्षः श्रेशः वर्यः श्रेशः वर्षः श्रेशः वर्यः श्रेशः वर्षः श्रेशः वर्षः श्रेशः वर्षः श्

८८.सू.(क्रिश्यर्ययवेर्यः)ज्ञासुस्र

स्याधिः श्रें न्ययाः हेयान्य न्यान्य स्वाप्त स्वाप्त

५८:सं (लुका ग्रे क्वें न प्यक्ष हेका या न्या यह का प्रेम प्याविक सान्न प्याविक सान्न प्राविक सान्न प्राविक सान्न प्राविक सान्न प्राविक सान्न प्राविक सामित स

तित्वश्चित्रेश्चेत्रः विद्या न्यात्रः विद्या विद्या न्यात्रः विद्या विद्

मिर्ग्यानम् राष्ट्रे शेष्ट्रमा छेरा।
यमा स्यान स्वान स्वान

विष्यः श्रेष्वा श्राम्यः यह विष्यः विषयः विष्यः विषयः विष्यः विष

गहिरामा (यस या सँग्रामा सूर्व सदे के हे सूर ग्रामा) दे।

शॅर-शॅशन्द्वे शे गुः हो ।

गुशन्दा वह शास्त्र मायश्या प्राया ।

यया प्रान्त वि गुव ग्री शाम श्री ।

यया प्रान्त वि गुव ग्री शाम श्री वि श्री प्राप्त हो ।

यया प्राप्त शाम श्री द श्री द श्री द श्री द श्री ।

श्री वि प्राया श्री व् श्री व श्री व श्री व श्री ।

यव द द श्री द श्री व श्री व श्री व श्री व श्री व श्री व श्री ।

यव द द श्री द श्री व श्री व

न्त्राच्याः न्याः स्त्राच्याः स्त्राः स्त्राः

म्शुंश्रायः(११याविशुंतिः १५८१ व्याविश्वायः) वै। सर्वे विश्वायः ११या विश्वय

नेशनविवाधुरानुः श्रदाशेश्रशाया।

ख्यायाक्षेत्रात्रेत्रात्र्यम् सुम्। १यायदे क्रायवि से सुम्य या या या या सुम्य सुम्य स्था स्था स्था सुम्य स्था सुम्य स्था सुम्य स्था सुम्य सुम्य सु

यान्य स्थानिक स्थानिक

मानेश्वास्त्र (द्वास्त्र स्वास्त्र )दे। इट छ्वासेस्य प्रदेश क्षेट्र प्रदेश स्वास्त्र । इट छ्वासेस्य प्रदेश क्षेट्र प्रदेश प्रदेश । सेस्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र ।

क्षानरः जुर्वे।

#### देश'यर'दे'श्चेद'श्चूद'यर'ग्चा

सर्ने द्रान्त्र वित्र प्रत्येष ये स्त्र स्त्र वित्र स्त्र स्त्र वित्र स्त्र स

नवि'न'(नक्ष्रन'म'सुद्दासुद्दासुद्दास्त्रमार्क्षेत्रमार्मानेन्यदेष्ट्रम्मदेष्ट्रम्मदेष्ट्रम्मदेष्ट्रम्मदेष्ट्रम्

मुश्रायम् त्वत् प्राप्तम् अह्या तशुः नर्दे । न्यायम् अह्या तशुः नर्दे ।

नक्ष्मन'म'न्या'ग्रेन'ग्रे'कु'न्न'। नक्षम'मदे'यावि'न्न'। केन्नुग्र'न' न्ना यान्य'र्स्स'नस्रस'ग्रेन्यदे'याविदे।।

५८:सॅ (वश्चवःयः५वाःग्रे५ःग्रेःकुः)दे।

याव्यात्रात्रात्यत्र्यात्रक्ष्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्य

हेन'न्र'याशुस्र'यान्त्र'याशुस्र'न्।।

## सुर-नदेः सुनाः संने सः विः ज्ञा।

স্ট্রিশ্ব (ব্রুব্র্র্র্র্ব্র্র্র্র্র্র্

रहाह्मा विवासी प्रत्य प्रत्य

रट्ट्याविक् श्री दिन् श्री दिन्द्र भ्री दिन्द्र भ्री विक् श्री विक श्री

कुषःश्रमः इसमः ग्रेमः भेषः नश्चनः म। । देवे ग्वादः ष्यदः ष्येदः भेषः ।

# ने स्ट्रिन मान्या मान्य

कृषःश्रभःभेस्रभः द्वाराष्ट्रस्यशः श्री शः स्वी न्याः स

म्बुस्यः (क्षेत्र्यः )यः मृद्धेश द्योः नः सेस्रसः उत्वस्यसः उत्योः देतः दुः नर्द्यः नः द्रा वेयाः पः केतः रिदेः नलेसः गृहेत् द्राः नक्षुनः पः तस्यः प्यदः सेः वर्दे नः नर्दा ।

55:री (न्नो न श्रेस्र एड्न प्रस्य एड्न ग्री र्न्न न् नर्से न )री

नर्देशःश्रमः प्यतः त्वान्तः त

न्द्रभःभभःष्यः व न्त्रम् न्त्रम् भेभभः उत् न्त्रीः द्वा । भेभभः उत् न्त्रीः द्वा त्यभः न्त्रा न्त्रा व्यव स्थः श्रुष्टः व सेभभः उत् न्तिः द्वाः द्वाः स्वा न्त्रः स्वा न्त्रः स्व न्तः स्व न्त्रः स्व न्त्रः स्व न्त्रः स्व न्त्रः स्व गहिरामा (विवाना केवारे विवाना केवारे विवान केवारे विवान केवारे विवान केवारे केवारे विवान केवारे केवारे केवारे विवान केवारे केवार केवारे केवारे केवारे केवारे केवारे केवारे केवार केवारे केवारे केवारे केवार केवार केवार केवारे केवार केवार केवार केवार केवार केव

ह्यायर प्यो प्रदेश्य ने श्रायाहेत दी।

वेगाकेतर्देवर्यास्याम्यास्या

न्द्र-कुन से समाद्रमदे न हुय लुग्रम सर्केग।

श्रॅग'गे' धेर' षर शे नहर दे।

सर्ने से पानहेत्र पान्ता नसूत नहें राषानहेत्र त्रानसून पर्वे।

५८:सें (यर् कें या नहेन या) दे।

न्ययायगुरानाधीः इसाम्रायम्।

न्नः यान्येत्रः पदेः व्हंत्यः सूरः नक्ष्रन। ।

ब्रेन्स्रिन्त्र्न्। हितुर्न्ययादेतुर्न्यदेश्वर्यः वर्षः वर्

यर्रे र्दर अर्थ क्रुं यात्र सुर्या यात्र ।

यावव । याद्र स्वाप्त । याद्र स्वाप्त । याद्र याद्र । याद्र याद्र याद्र याद्र । याद्र याद्र याद्र याद्र याद्र याद्र । याद्र याद्र याद्र याद्र याद्र याद्र याद्र याद्र याद्र । याद्र या

गहिरामा (नक्ष्र्वानर्स्याया महेदाव्यानश्चरामा)दे।

याराष्ट्रीराह्याः हुः श्रुद्दाराष्ट्री । देः यथः क्रुः केरः रतः श्रृदः यथा । वश्रुद्दाराण्यादः यथः वहुशः राष्ट्रा ।

देशःसरः यदः दूरः यदः तृ तक्षा

 वश कु:केर:रन:हःश्रृंद:पशःनश्लुन:पःगुदःषशःनहशःपःपरदेशःपरः धरःदरःषर:दृशःनरःवुर्दे।

यहिकारे विवासि र प्रश्न प्र प्रश्न प

गहेशमः(सहगानशुना)दे।

यद्गाःहेदःश्रेश्वरः व्याप्तायाः । देशितः श्रुदः यदः व्याप्तायाः । यद्गाःहेदः श्रेश्वरः व्याप्तायाः ।

नक्ष्रन'रासर्वेद'त्रा'षद'द्वा'शुद्रा।

अर्दे : न्दर्न श्रुव : वर्षे अ : वादर्ग या वादर्ग वादर्ग वे : श्रुव : वर्षे अ : वादर्ग वादर्ग वे : श्रुव : वर्षे वादर्ग वे : वर्षे : वर्षे वादर्ग वे : वर्षे : वर्ष

नश्रुदःविदःसःद्वःपःश्रुदःचरःग्रुःचवेःश्रेरःहःश्रेससःद्ववेःपश्रुवःपःसर्वेदः वश्राःषदःद्वाःसरःश्रुद्दःवेदःनश्रुवःसरःग्रुवे।

महिरापा (क्षेत्राच्याय धेरापर देव १३ यथा श्राह्म प्रति । विषय प्रति प्रति । विषय । विषय प्रति ।

सुरान्द्राक्षेत्रयाग्री पात्रयाभूनयाया ।

यर-दर-यर-दु-नह्ना-ग्र-न।

ने छेन मिं व अर्ने र व वे।।

नेश'नवेद'नशुर'नदे'सळद'हेर'र्रे।

सुमार्याद्र से सम्भानिक सम्मान्य स्वाद्य स्वा

বান্ত্ৰ শ'ব'(ব্ৰহ্মান্ত্ৰ হ্ৰা)বী

ख्यार्थ्याय्ये प्रत्ये प्रत्ये प्रत्ये याः स्थ्या । स्थ्यार्थ्याया स्थ्या ।

#### श्चन न्यान्य वारा राज्य मीरा दी।

#### वर्पार्यायायवायग्रम्भ

प्रत्यक्रियाया श्रीत्राची ।

प्रत्यक्रियाया श्रीव्राची ।

प्रत्यक्रियाया श्रीत्राची ।

प्रत्यक्रीय श्रीत्राची ।

प्रत्यक्रियाया श्रीव्यक्रिया ।

प्रत्यक्रिया ।

प्रत्यक्रिया ।

प्रत्यक्रिया ।

प्रत्यक्रिया ।

प्रत्यक्रिया ।

प्रत्यक्रिय ।

प्रत्यक्रिय ।

प्रत्यक्रिय ।

प्रत्यक्रिय ।

प्रत्यक्रिय ।

प्रत्यक्रिय ।

प्रत

र्शें चर्छे श्रें स्वर्धि श्रें स्वर्धि स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्

भ्रुभःतुःगश्रुमःश्रुःस्यःश्रुःस्यःश्रुःस्यः। ।

तश्रुवःयःश्रुदःस्यःश्रुदःस्यःश्रुदःस्यःस्य। ।

इतःददःश्रेभःवित्रःश्रुदःस्यःस्याःस्यःस्य। ।

देःधःद्धंयःयःह्याःहःस्यस्यःस्यः। ।

वश्रुःविदेःश्रेद्धंयासःशुःविद्यःस्यः। हे।

याद्गेशःयः(विद्येःसस्यः)हे।

नियानिव नियानियः श्रीत्रायः विद्यान्यः यथा

### ये दु: ज्याः या वर्षे दः यः व सूदः या

मशुस्रायासम्भित्रभूमास्यानिः त्रित्रायास्य स्त्रीत्र स्वायास्य स्वायास्य स्वायास्य स्वायास्य स्वायास्य स्वायास्य स्वयास्य स्य

महेत्रस्म्यान्द्रम्यत्रम्यत्रम्यत्रम्यत्रम्यत्रम्यः म्यान्यः स्वत्रम्यः स्वत्यः स्वत्यस्यः स्वत्रम्यः स्वत्यस्यः स्वत्यस्यः स्वत्यस्यः स्वत्यस्यः स्वत्यस्यः स्वत्यस

८८.स्.(प्रत्विषः क्षेत्रत्य्येचेत्रः)त्यः वाश्वा

अअर्थेट्र निर्देश निर्मेष्ट्र निर्मेष्ट्र । अर्थेट्र निर्मेष्ट्र निरमेष्ट्र निर्मेष्ट्र न

८८म् (यास्त्रम् प्रत्येत्रेश्वर्यायाः)यात्रेश

विंद्राविंश्वर्गाः स्वादेश्वर्थाः विंद्राविंद्र्याः विंद्राविंद्र्याः विंद्र्याः विंद्र्याः विंद्र्याः विंद्र्य विंद्र्याः विंद्र्य ५८:मू.(प्रटाव्याने अपन्ये अपन्यः)

नञ्जयः सः श्रृंदः दुः नश्चन्याश्वः सः प्ये। ।
श्रे न दिः विद्या ने वाश्वः सः स्थाः ।
श्रे न वाशः श्रुंदः प्रदेश वाशः ।
श्रे न विद्या ने वाशः स्थाः स्थाः ।
स्विदः विद्या ने वाशः स्थाः स्थाः ।
स्विदः विद्या ने वाशः स्थाः स्थाः स्थाः ।
स्विदः विद्या ने वाशः स्थाः स्थाः स्थाः ।

मर्निम्हिं भेत्रम्भनेदे हे अन्त्रीम्भानस्यस्य त्राने वर्षेम् माया वर्षेत् धराग्रुः भ्रे वञ्गवायावमु प्रार्थित्र प्राय्यायायायाया भ्रेष्ट्रे वार्यया ग्रुटा विश यन्ता नर्झेस्यापन्तर्ख्याविस्रयायसात्तृत्यवेषेषासासुन्याराधेदाया ने गुर्व गुर गुर सुर से समार्य प्राय प्राय में से मिर हिंग है या भी मा <del>इ.</del>च.र्यशत्र्र्ध्ययात्रम् ग्रेट्र्न्। ।ट्रेम्या वट्ययया वट्येट्र्य्यूट्रे क्रेयया वर्देव मवे खुर नक्ष्रन न हुरा शु इत्राम खरा द्यो क्षें र यो शरे न वेव ग्नेग्रयाये:न्तुः भु:न्दाः शेवः शेवे: शकेंन् हेवःयः शेश्रयः न्न्यायायाः <u> चुर्रासदे खुर्रा ग्रेरा हे उं अर्दे द सदे ग्रोरे म् ग्रेर् ग्रेर वे स्थेर या श्रुपा सदे पर</u> ग्री:ह्याग्री:ग्रद्याद्याद्दे स्ट्रेन् व्याद्याद्वाद्याद्वाद्यात्र स्ट्रीन्य स्ट्रिन्य स्ट्रीन्य यदे'न्गे'न'ने'र्क्रम्भ'यासर्द्धन्भ'यम्'र्सेन्'यासः तुरानभावहेस्रभायमः गश्रम्यार्थे । विराधियानभ्रयामानकुर्मार्थेन्त्राचयायायरेन्नो स महिन्यते वित्र वि

बे.र्स्ट्रास्ट्रेस्ट्रेस्यास्यस्य । न्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्य । न्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्य । स्रस्ट्रेस्यस्यस्यस्यस्य ।

यसः भ्रे निवानिका ने निवानिका निवानिका

गहिरामा (स्वार्यके हेर्यम् सेन्य )या गहिरा र्विट विश्वास्थ्य सेस्या यदे प्रति भूत्र सेन्य सेन्य होन्य न्या सहय या ने स्वार्थ से स्वार्थ स्वार ५८:में (विस्विभाषुभाभेसभानने नदे भूनभासेन नर होना मा)

ले खूर बुगा हु ते शेस्र श्रायक र जा । धीर दे ले न हु स्र श्राय श्री हु हि । पार द र न हे न स्व र से द स्व न स्था । पार द र से र से हि र से हु न से र स्कू र ।

स्वाप्तस्याद्वापि नक्षेत्रप्तस्य विष्ट्रम् । विष्यप्तस्य विष्ट्रम् विष्ट्रम

गहिरामा (अहत्यक्षेशक्षण्यावह्र्यस्यम् नेत्रमा)दे।

यारः त्यां वे रः त्रः त्यां रः श्रेष्णे था।

देवः श्रेवः ते व्यां यहेवः श्रुवः यदे।।

देः प्रेवः ते व्यां या व्यां व्याः व्याः व्याः ।

देः प्रेवः ते व्यां या व्यां व्याः व्याः व्याः ।।

देः प्रेवः ते व्यां या व्याः व्याः व्याः व्याः ।।

श्रेवः प्रवाः वा व्याः व्याः व्याः व्याः व्याः ।।

श्रेवः प्रवाः वा व्याः वा व्याः व्याः व्याः व्याः ।।

श्रेवः प्रवाः वा व्याः वा व्याः वा व्याः व्याः व्याः ।।

श्रेवः प्रवाः वा व्याः वा व्याः वा व्याः व्याः व्याः ।।

श्रेवः प्रवाः वा व्याः वा व्याः वा व्याः व्याः व्याः ।।

श्रेवः प्रवाः वा व्याः वा व्याः वा व्याः व्याः ।।

श्रेवः प्रवाः वा व्याः व्याः वा व्याः वा व्याः व्

विन्द्रिं उत्राचान्त्वार्वे स्त्राच्यात्र कृष्णे अद्भेत् चित्र विन्द्रित्त विन्द्र वि

ग्रुअ'रा'(हेशर्वेग्यश्यम् याहे नमून्यः)दे।

सर्न्र-वि: नः त्रेरः न्यान्यः या । ने वे : त्रावः प्यानः प्यानः प्यानः प्यानः या । स्रावः न्याः प्यानः प्यानः या ।

स्यानस्य न्याने छेन पर द्युरा।

यर्न् न्त्रां न्त्रां

বাইশ্ন (বর্জি বর্জির বন্ধর মান )ই।

यादःवियाः मञ्जीस्राः ने विष्ट्रिस्य स्था ।

मुदेर्ने के अप्तर्भग्या विष्ट्र विष्ट

५८:स्. (क्वेड्ट्स्.स.हेशन्ध्रेयाश्वर्ट्यक्रमःत.)द्री

विंद्राविंशः श्रुवा नश्र्या नश्रेद्राचि रहेत् या दे विंद्राच विंद

यविष्ठः व्याप्ते स्था विष्ट्रा विष्या विषया विष्या विषया विष

गहिरामा (विद्वां विवाय वित्वत्र वित्वत् वित्वत्र वित्वत्य तित्र वित्वत्य तित्वत्र वित्वत्य तित्वत्य तित्वत्यत्य तित्वत्यत्य तित्वत्य तित्वत्यत्य तित्वत्यत्य तित्वत्यत्य तित्यत्य तित्यत्य तित्यत्य तित्यत्य तित्यत्य तित्यत्य तित्यत्य तित्य

ने 'कृष' निमानी का न्या में निमानी का निमानी का न्या में निमानी का निमानी

दे 'श्रु' नक्ष' व 'न्य्वा' में 'न्या' में 'ले 'क्ष्ट्र' दे दे 'च्या' में 'न्या' में 'ले 'क्ष्ट्र' न्या' में 'ले 'क्ष्ट्र' न्या' में 'ले 'क्ष्ट्र' में में 'ले 'क्ष्ट्र' में में 'ले 'च्या' में 'ले 'क्ष्ट्र' में में 'ले 'च्या' में 'ले 'क्ष्ट्र' में 'ले 'च्या' में 'च्या'

# श्चीत्रम्य व्याप्त व्याप्त विश्वास्त्र विश्वास्त्य विष्य विश्वास्त विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र

श्रुवा नश्र्य न्द्र न्त्र स्वर्य स्वर्ये द्वा स्वर्ये द्वा स्वर्ये स्वये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर

गहिरामा (देवे कु अळव )दी

यात्राने प्रस्थान्य स्थान्य स

यादायाधीदाक्षे स्वते स्क्री स्वते स्वत्यायाधीत् । विष्यायायाधीत् स्वते स्वते

नित्र (ब्राह्म क्षेत्र क्षेत्र क्ष्म क्ष्

५८.स्. (प्रटाम् मु.नवे.लीवामी.रमी.नमी.रमी.रमी

यद्याः यात्राः यात्राः विश्वाः स्त्राः स्त्रा

गहेशमः(अव्दूर्यन्तेर्यकार्ष्यन्त्वन्यकार्यः)याग्रुया

यन्वायाकेश्वर्याचित्रयाचित्रयायाचित्रयाचित्रयाचित्रयायाचित्रयाचित्रयायाचित्रयाच

५८में (वन्नाकक्ष्यमञ्चेन्यकार्वेन्यकार्वेन्यम्यार्वेन्य

स्वानस्य नक्षेत्रयाय निर्मा नक्ष्य प्रस्ति । नक्ष्य प्रस्ति ।

५८:म्.(भ्वातक्षत्वक्षेत्रत्वत्वक्ष्यत्वक्षेत्रत्वत्वः न्यम् व्या

श्वानश्यादरात्रायेषात्राचित्राचित्राचित्राचित्राच्या केषायादेशः यम् श्रेष्याचर्याचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्र

५८.स्. (श्वा.वर्षत.२८.२.ख्रुच.यद्ग.वर्श्चर.य.चर्श्चराय.)ता.सी

वणानरुषाःश्रेताः नश्र्याः च्याः नश्र्याः व्याः नश्र्याः नश्र्याः नश्र्याः नश्र्याः नश्र्याः नश्र्याः नश्र्याः व्याः नश्र्यः व्याः नश्र्यः व्याः नश्र्यः व्याः व्याः नश्र्यः व्याः व

५८:स्.(वयानक्षाःस्यानस्याःश्चीःस्टाब्वेदायमासायन्मासायमसायाः)द्री

### नरे नदे कु दे रेश स्वाद द्वुर ।

स्यानस्य कुर्वे भेव फुरारा।

तर्विरः नः वः निरं निर्दे कुं वे से अप्यादः र्यं अप्युद्धः अप्याद्यं अप्युद्धः अप्याद्यं अप्याद

महिश्यः (श्वानश्यः श्वानश्यः व्यवः व्यवः न्यवः न्यवः विद्वानश्यः विद्वानश्यः

यूर्वर न सूना न सूना न सूना ने हिंदीना सून है। न स्र न स्वा का स्व हिंदा न स्व न स्व का स्व हिंदा न स्व न स्व का स्व का

ग्रुअपः (व्यायक्ष्यः न्यायः न्याय

मुश्यम्यम्यत्र्यम्य द्वा द्वा व्या

५८सॅ (क्रुअन्यर नक्र न्य )य नवि

५८:में (र्वेषश्वानम्बेष्ठाः अन्नर्व्युनः रा)दे।

में स्थाने श्वान्य स्थान स्था

नर्चेत् सर्गेस्य स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वापत

श्रुव्यः दृदः भुः श्रुदः दृगः दृदः दे।।

नग्रेशःश्लेषायःश्लेष्यश्लेष्ट्रान्दा।

বালব:মান্ত্রম্মার্থার প্রমান্তর্পার্থা

र्नेत्र सेन् सूना नस्य छ सासा सर्वे दा।

श्रुयःश्रीः वर्षेत्रप्तर्दः भृश्वरः द्याप्तरः वर्षे वर्षे अर्थः वर्षे वर्षे अर्थः वर्षे व

ग्रुअपा (न्राम्य निर्मा निर्मा

ळ'ग्रान्ट्र स्त्राम्य स्त्राम्य स्त्राम्य स्त्राम्य स्त्राम्य

वर्द्धराद्यक्षराद्या स्था । यद्यायी श्राय श्रेत्रे श्रेत्र श्

ने अ'त्र'ळ' ग्राम्य हित्र क्ष्य हैत्र क्षेत्र क्षेत्र

निन्म (र्में समान निर्मा प्रति में निमान न

यायाम्बद्धाः विमास्त्रेत्याः स्ट्राम्याम्बद्धाः स्ट्राम्याः स्ट्र

यश्ची । यश्ची वित्राम्य सूचा नस्य प्राप्त के क्षित्र प्राप्त के स्वर्ष वित्र के स्वर्ष के स्वर्ण के स्वर्ष के स्वर्ण के स्वर्

ने न भारत्ये अस्य नहत्व स्वराधिकात्य स्वराध

निन्। (हॅब्स्सॅर्सर्स्ट्रिन्नायायन्यन्यवे सव्यक्ति)

र्द्धेव्याः व्यव्याः व्यव्याः व्याप्तः व्यापतः व्याप्तः व्यापतः व्यापतः

### ख्याः अर्गायाः प्रदेश । ने प्रमाक्ताः के प्रमान क्ष्याः के प्रमान क्ष्या के प्रमान क्ष्याः क्ष्याः के प्रमान क्ष्याः के प्रमान क्ष्याः क्ष्याः क्ष्याः के प्रमान क्ष्याः क्ष्याः

त्र.स.(र्वेया-वर्षताःश्र्र्थात्रापुरत्तयःलूयःभ्रेशत्र-यन्तरःता)त्री

न्वर लिय क्षेत्र स्वाप्त स्वाप

त्र स्थ्री न्य स्था के स्था निष्य स्था निष्

मुरुप्तरा (क्ष्यायार येय्य प्रति । द्वा प्रति । द्वा प्रति ।

५८म्.(क्रिश्यर्यस्त्वभ्रम्त्रा)याम्युया

ब्रिंग-न्द्रां न्द्र-व्यक्त क्षेत्र क

न्यां में क्षेत्र स्टार्ट क्षेत्र क्ष्म क्षेत्र क्षेत्र

५८.स्. (ब्रि.च.२८.ब्रि.च.६४.ब्री.वा८.ववा.४८.८५४८.६४.ल्.च.च.५४८)

र्वेद्र-श्रॅट्या क्रिन्ने क्रिंग्या क्रिंग्य क्

५८.स्.(१४४.४८४१३) श्री स.स्याह्म वर्ष्य स्वाध्य स्वाध

> ने निया गुन्य गुन्य गुन्य गुन्य गुन्य । नियम अप्ति नियम प्रम्य । नियम विवास पर्य गुन्य गुन्य । नियम विवास पर्य गुन्य गुन्य । नियम प्रम्य गुन्य गुन्य गुन्य । नियम प्रम्य गुन्य गुन्य गुन्य ।

क्रेंब्रऑन्स्राह्य क्षेंच्यान्त्र व्याप्ते व्याप्ते क्षेंब्र क्षेंच्या व्याप्ते क्षेंब्र क्षेंच्या व्याप्ते क्षेंब्र क्षेंव्य क्षेंब्र क्षेंव्य क्षेंब्र क्षेंव्य क्षेंब्र क्षेंब्र क्षेंब्र क्षेंब्र क्षेंव्य क्षेंव्य क्षेंव्य क्षेंव्य क्षेंव्य क्

निवेत्र-५: प्यतः क्रेत्र-छ्टा-प्रश्नात् । विष्ट्र-प्रश्नात् । विष्ट्र-प्रात् । विष्ट्र-प्रश्नात् । विष्ट्र-प्रत् । विष्ट्र-प्

महिराया (क्षित्र वर्षे प्राप्त केष्ठ केष्ठ

विंग्यः कुं द्वस्य श्री स्वर्णः विष्णः य स्वर्णः विंग्यः कुं त्र स्वर्णः विंग्यः कुं त्र स्वर्णः विंग्यः विंग

म्रुअ'रा'(हेशपास्त्रवत्त्वाःक्रेवायश्चितःवश्चरात्रवरासेन्या)दे।

हेसामाहे से दानमा

भैगाना इसामा श्रु केंग्रामा । ने गुन के ने की श्रू न या या या हु ना । न न न न न स्थान स्यान स्थान स्य

क्रॅब्रॉट्यायिक्ष्याचा है स्ट्रेन्या ह्या स्थाया है स्ट्रेन्या है स्ट्रेन्य ह

गहिरा (दे द्वाकी कु क्रेंब स्टर्वर उदाय धेवर रा)दे।

क्रेन्द्रस्थाः क्षेत्रस्थाः निष्णाः । नक्षेत्रस्य स्थाः निष्याः स्थाः स्थाः । निष्याः निष्याः स्थाः स्थाः स्थाः । स्थाः स्थाः स्थाः स्थाः स्थाः स्थाः । स्थाः स्थ

বাই শ'ম'(মন্বনভের শ্রী ক্রু র্ অর্মান্নানামা) বা ধ্রুমা

यदशः उत्रः प्रदे । प्

यार्डं र्वेश्वर्स्य त्युर स्ट प्रत्य प्रत्य क्षेत्र प्रत्याया पर्वे। विश्वर्

५८:स्. (बाइ.स्यावकीयःस्टार्थरार्थः)स्री

याईं सें बिश्वास्त्रम्याम् वर्षेत्रम्या । न्वा केश्वास्त्रम्याम् व्यक्तिया । ने किन्नियम् वे त्यक्ति व्यक्तिया । केन्नियस्य स्विम् व्यक्तिया । साञ्चेश्वासम्बिम् वर्षेत्रम्या । साञ्चेश्वासम्बिम् वर्षेत्रम्या । ने किं भ्रेष्ट्रम्य स्विम् वर्षेत्रम्याम् । ने किं भ्रेष्ट्रम्य स्विम् वर्षेत्रम्याम् ।

हुया खुदा ख्रेटा ख्रें न का ना खु का का अह का ना से किया खुदा खें हिंदा से किया खुदा खें ने से स्वार खुदा खें का ना से किया चित्र के स्वार खुदा खें का ना से किया खें ना के से का ना ना से किया खें ना के से किया खें ना के से किया खें ना के से किया खें ने से किया खें ना क

गहिरा पा (विशक्तानी भ्रेश तु खुवावा पर द्वार दु विद्या श्रेष्ट्र पा द्वावा पा दे।

#### ध्ययायाह्या हु या धेरावशुराया

#### दमामा'सर'दशुर'नदर'स'धेव'र्वे।

यहिरामः (देन्यान्य स्वत्य स्य

 देश'गर्वेद'स'र्शेगश'मश्चेद'सर'यर्देद'र्दे।। डे'श्चे'मद्गादे'ह्या'व'दे।।

यानयःनविवः होन्यां सेन्यमः सर्देव।।

महिश्यः (क्वित्यक्ष्यः विवायक्ष्यः विवायक्ष्यः विवायक्ष्यः विवायक्ष्यः विवायक्ष्यः विवायक्ष्यः विवायक्ष्यः विवायक्ष्यः विवायक्षः विवायकः विवायकः

ग्रेन्यमाने त्या है विया ग्रमा

र्भ।

ग्रुअ'म'(क्वेत्र'दर'वर्त्रेव्यमस्येद्रमः)दे

ने भी में ने सामने भी निकार में मार्थ

वर्त्रेयासम्बर्ग्मम् नामः विवार्थिन्।

यद्याः देवः त्व्य्यः यद्यः यद्वः यद

ग्रुअ'रा'(वर्त्ते'न'गुत्रःश्चुव्यःनःकृत्रःक्षेश्यनःन्तुश्वत्राह्मंननःसन्निश्यः)ते।

ने स्वरंश्वययः उत्याववरः श्वीः त्वरः । ने स्वरंशेयावरः यो यादे । त्वरंशेयाः स्वरंशे । ने स्वरंशेयावर्थः विश्वयः स्वरंशे । ने स्वरंशेयावर्थः विश्वयः स्वरंशे ।

ने त्थून त्व्यून त्युन त्युन

ने स्मान्य विकास के त्राह्म । विकास के त्राह्म के त्राहम के त्राह्म के त्राह्म के त्राह्म के त्राह्म के त्राहम के

म्रुअपः (ब्रिंन व्यून प्रते न्ने रूपः )दे।

यादःयोश्वादःवियाःचर्ञ्चयाः इश्वा चर्ज्ञियाः यवदः देयाश्वाद्यः देशशा देःवाः यहेदाद्वशः श्वृयाः वश्ववः देशशा यादःयोश्वादः वियाः वश्ववः देशशा

कुत्रक्ष्यस्य स्वित्रं स्वार्थः सेना

गहिराम (र्द्व न्यू न ) दी

ने नशन्मत्रायस्य सहत्य पर सुर।

श्चेत्रश्चित्रः श्चेत्रः श्चे

> शुःशयदः सूना नस्य प्रमुद्धः तस्य । स्रमाय प्रमाय स्याप्त स्या

म्यानिक्ति ।

ब्रियान्यस्थि ।

ब्रियान्यस्थि ।

ब्रियान्यस्थानिक्ति ।

ब्दिक्ति ।

ब्रियान्यस्थानिक्ति ।

ब्रियान्यस्थानिक्तिक्ति ।

ब्रियान्यस्थानिक्ति ।

ब्रियान्यस्थानिक्ति ।

ब्रियान्यस्थानिक्ति ।

ब्द

पश्चिम्य विद्वान के स्थान के स्था के स्थान के स

५८.स्. (श्रुटाइवि वनमाधीन वा नेन्या) या पास्या

श्रेश्रश्च विषय श्रेष्ट्रिया श्रेष्ट्रिय प्रियं प्रत्य प्

५८.स्. (अञ्चरावःक्ष्माः अनेयःस्वः न्यरः मीयःस्टः याम् न्यः मीर्यः ।

यालवरण्यावर्षेत्र होत्यो यात्र व्याप्ते रत्या के त्या स्वेत्र स्वर्धेत्र के स्वेर त्यत्य व्याप्ते स्वर्धेत्य स्वर्धेत्र स्वर्धेत्य स्वर्येत्य स्वर्धेत्य स्वर्येत्य स्वयः स्वर्येत्य स्वयः स्वर्येत्य स्वयः स्वयः स्वर्येत्य स्वयः स्व

मिर्डमारममार्डिमम्पर्श्वराधर्किम्।

#### र्गान्दः से प्यस्ति। नर्सिन्यस्य स्थान्यः स्थितः स्थितः । नर्सिन्यः स्थान्यः स्थान्यः । नर्मिन्यः स्थान्यः स्थान्यः ।

पाविकार्श्व स्थान स्थान

गहिरामा (भ्रेष्वेशम्यस्य स्टायम्य विद्वान्य वि

यादाळे हें त्र श्रें द्र श्रें द्र

न्युअपा (देशवादे त्याक्षेदाहे त्यावर देवायाया) दे।

বাইশ্বংক্তুদ্বাবাদা প্রা

श्री स्वास्त्र में स्वास्त्र निष्ठ स्वास्त्र स्वास्त्र

५८:१. (ब्रेशन्यन्यत्मे न्यान्यत्मे व्याप्ते व्याप्ते न्यामे न्यान्यः)

यायाने याववरायायके हो नाया । हो या प्राप्त स्वया हो । या विवादी । । हे त्या विवादी या या या विवादी । ।

#### श्रेया'सदे'स्ट'मिव्रक्षे'मर्गेद'द्र।।

ग्याने ग्वाब्दायायळे न्याने न्याने स्वाद्याने स्वाद्या

गहिरामा (वर्षे द्राया के द्राय के द्राया के द्

र्देन हे क्रिन हे क्रिन स्था।

शेस्रशाउदायदानिवादेशायावत्या।

र्दें ददर हिं न से ने मार्थ है।

यानयःयः रुपः यश्यः पर्गेवः यः प्रविद्या

याशुस्राया (न्द्रभास्रसाम्बून्यिते कुःत्यामहत्त्रभाव्या विष्या विषया विषया

न्व्यायायार्थेयायार्देशम्यानियाते।।

## ने प्यतः वे स्ट्रामी शःस्त्र प्रशा

न्द्रभःशुः नर्द्वन् । वेन्यार्वेन् । वेन्यार्वेन्याय्वेन् । वेन्यार्वेन्याय्वेन् । वेन्यार्वेन्याय्वेन्यावेन्याय्वेन्यावेन्याय्वेन्यय्व

ग्रुसप्(क्षेप्ट्रिंप्युह्य स्ट्रिंग्क्ष्य स्ट्रिंग्य विकास स्ट्रिंग्य क्षेप्ट्रिंग्य क्षेप्ट्रिंग्य विकास स्ट्रिंग्य क्षेप्ट्रिंग्य क्षेप्ट्रिंग्य विकास स्ट्रिंग्य क्षेप्ट्रिंग्य क्षेप्

न्रसं (न्रम्

यालव क्री अः स्टाया वर्षे द्राया क्री द्राया स्वाया वर्षे व

५८:में (मान्वम्मे अपस्यामार्वे न्याने न्याने न्यान्य मार्थे ।

नन्यायीयार्श्वाळन्यो ।

यद्गांगी अः श्वॅं तं क्षद्राक्षे श्वां आया अया अव्याप्त व्याप्त विद्वार विद्व

স্ট্রিস'ম'(ধূলানধূঅ'শ্রি:শ্রু'ঝ্রানর্রনের দ্রিমান্রীল্মান্রির্মান

नेश्वास्त्रक्ष्यः न्यान्त्राः स्वा । याद्येशः याः स्वा न्यस्यः क्षुः ध्येदः हो । नेश्वास्त्रक्ष्यः न्यन्याः वीः स्वश्वा ।

मार विमान्य दे विंगर हा।

मुः सळ्त् त्रि शः ग्राटार्शि न्यः से त्रि शः से त्रि शः दे त्रि सळ्त् त्रि स्तर्भा नि स

शु'न'शे'भी तुग्रायद्गन।।

# रेगाः हु से प्राचित्र स्थाः वर्षाः व

না প্রমানা (ৠৢ নামূ মন্মূনা নমূল গ্রী ক্রু লা শ্রান্য ব্রমানর দ্বি মান্রী নামানী নামানী

चीलवायायम्यायम्यायम्यायम् । स्वायस्याकुःयायम्यायम् । स्वायस्याकुःयायम्यायम् । स्वायस्यायम् ।

विषाणित् स्टामा विषय । विषय ।

न्मेरवन्ध्यानवेश्चर्यान्ता।

यार विया त्या है 'हिं यर हो। यार विया त्या है 'हिं यर हो।

नितं नि (रदाने व्यथा ग्री भागावत सुगा नस्वा ग्री मु व्यक्ष र र व्यक्ष र व्य

नन्नानित्यश्चीश्वत्रभूवः चुश्वत्रभ्। । नन्नानित्यश्चीश्वत्रभूवः चुश्वत्रभू। । नन्नानीश्वर्ते : न्याः श्वर्त्वाः स्थाः । नन्नानीश्वर्ते : न्याः श्वर्त्वाः न्याः ।

र्या (क्ष्य के न्युव के क्ष्य के न्यूव के न्यूव

ग्वित् प्यत् ग्वितः वित् प्रत् । त्वा वित् प्यत् । वित् वा व्यत् वित् वित् व्यत् । वित् वा व्यत् वित् व्यत् वित् व्यत् । वित् वा व्यत् व्यत् वित् व्यत् वित् व्यत् । वित् वा व्यत् व्यत्यत् व्यत्यत् व्यत्यत् व्यत्यत् व्यत्यत् व्यत्यत् व्यत्यत् व्यत्यत् व्यत्यत्यत् व्यत्यत्य

गहेशःसः(हिन्यक्षर्य)याग्रुम

द्युर्र्स् ले'न्।

यायाने नियम्यायाय स्था । यायाने स्था । यायान

न्याके न्यं न्यां व्याप्ते स्वाप्त्र विष्यं स्वर्धः विष्यं स्वर्धः विष्यं विषयं विषयं

गहिरा (रदामान्य वार्मे दाने दाने दाने प्रमान के वार्मे के

यः र्रेयः र्ये निया मी श्रेया मिते प्रत्ये मान्यः वित्र वित्रं वित्र वित्र प्रत्ये मान्यः वित्र प्रत्ये मान्यः वित्र प्रत्ये प

नाय हे नद्या मे अ नद्या नशुद्य द्या ।

ने नगायायने राष्ठे विगा हुरा।

न्यायाने निष्याने सामार्थे निष्ठी नाया निष्ठी स्थान स्थान निष्

श्चिताः त्याः व श्चिताः त्याः त्याः

गशुस्राम् (सदायर्गम्यान्त्रेन्यार्थम्यस्यम् न्यान्यम्यः)द्री

वर्षित्रपाञ्चेत्रपायव्यव्यविष्यायाः वर्षेत्रपायः वर्षेत्

र्वतः हे 'त्यत् 'तु 'यार्वित् 'श्रुष्ठा या । ने 'त्या' नश्चात्र प्रमान स्था या । न्या यो श्चित् 'त्र प्रमान 'त्र यु मा ।

नेशक्षात्रम्यावः श्रुवः विवाधिकः विश्वास्य

र्ये के मार्चे न त्या के न त्या के

স্ট্রিম্মান (বিষ্কৃষারার্মান ব্রুবারা আনর্র ব্যান্ত্রাইল্মারা) আমন্ত্রি

५५:सं (नक्षाःश्चिन्स्मामान्त्रभारत्ने भारत्मे प्राचित्रभाषात्री पार्वे प्राची

महें ना स्था है निर्मा है

नक्ष्यान्द्रात्वेषाः द्वान्तः श्वान्द्रातः । श्वयायाः वर्षे न्याः श्वयाः ने प्ययाः । श्वयायाः वर्षे न्याः श्वयाः न्याः । श्वयायाः वर्षे न्याः श्वयाः न्याः । श्वयायाः वर्षे न्याः श्वयाः न्याः ।

म्बर्गेश्वर्ग्याम्बर्ग्याम्बर्ग्याम्बर्ग्याम्बर्गे। वित्रं स्वर्ग्याम्बर्गे स्वर्णे स

निकेशमः(क्विनन्दरवर्षेयामदेनादान्यास्यम्भक्विनस्क्वेन्त्रम्भःभिन्यामः)द्री

माल्वः प्रमान्यः स्थाः स्थाः

ग्रुअपा (क्रुप्यदे न्यर क्ष्य् क्षेत्र स्था क्षित्य स्था देवा या सा

५८:में (क्रेट्राय:ब्रुट्राय:हेवाश्रायशादेवे:वराळट्रायाःक्रिंवराक्षे:देवाश्रायः)दे

क्रेन्परेन्य कन् होन्परे होन्।

माया हे । यदी । यदी प्राप्त ।

नक्षाः क्रूर् क्रिंग्या या ग्रीया यह भी क्रिन्य प्रति नय क्रिन् ग्रीत प्रति भी य

यायाने नक्षायास्यामास्यास्य वित्राची वित्रामास्य वित्राम्य वित्राम वित्राम्य वित्राम्य वित्राम्य वित्राम्य वित्राम्य

नन्यायो हे न प्रायने स यर्ने स खी।

श्रेगायप्रगाने महन्यस्या

यारायो र्नेत्र पुर्वि पार्श्वे स्वापि प्रति प्र

महिरामा (क्ष्मामिक क्षेत्रमान क्षुन मान्यामामा)दे।

नन्गाने ने ने निष्ठे निष्य स्त्रिये।

वेंना पर्के राध्यन मेर नार्शन की मुरा

नन्गः कृ खुनः सेरः ग्रान्यः ग्रुसः ग्रामः।

दक्के नदे सूगा नस्य ने हे न भी वा

वन्याः वे : क्रेन् : स्याः वे न्याः वे न्याः वे न्याः वे : क्रेन् : स्याः वे न्याः वे : क्रेन् : स्याः वे न्याः वे : क्रेन् : स्याः वे स्याः वे वि स्याः वे स्याः वि स्याः वे स्याः वे

ग्रुअ'रा'(ह्रेन्यायाओन्याओन्स्याभ्यान्येभावञ्चन्या)ते।

ही यस में नकुर निर्धित द्या

क्रेन्यः स्टार्गः र्वेनः शुरः ने । धुनः रेनः नुभः शुः नने : शुनः शुनः । क्रें सः र्वे सः र्वे सः स्टार्गः निवे नः नु। ।

#### श्चेत्र संग्या मार्श्वेद सम्पर्ते।

क्रेन्यायन्याः वित्रायन्य श्रुत्रात्ते । नेयाः ख्रुत्रात्ते नियाः ख्रुत्रात्ते । क्रिन्यायन्य ख्रुत्रात्ते । वित्रात्ते ।

न्यः (क्रिन्यः क्षुनः देवायः यः नवावाः यः) दे।

यायाने के नाम स्वास्त्र मार्थे नाम स्वास मार्थे नाम स्वास्त्र मार्थे मार्थे नाम स्वास्त्र मार

मायाने हे नामाध्य ने निर्मा मार्थे नामाध्य ना

 नर्शेन्द्रस्थाः व्यवस्थितः प्राप्तेन्द्रस्थाः स्थाः विद्याः स्थाः स्य

निने न (निव्य र्र वास्त्र स्त्र स्त्र स्त्र सेन्य सेन्

#### ग्याने सेस्या उद्दाहस्या होता मा

#### श्रेम् श्रुवःश्रुष्यः विः विः व।

#### याववःयां अः श्रुवः यहें दाययदः हिंद्या देः यववः के श्रेष्टें हिं से होद्या

मान्व भी निष्य अभा हो नाया विषय मान्य विषय अभा हो नाया विषय अभा हो नाया विषय के स्था मान्य विषय अभा हो नाया है नाया हो नाया है नाया हो नाया है नाया है

#### यदे'दगे'न'१४४४४४४५२३दे'पदे'धेर्द्र्

স্ঠিশ্য (ব্যব্দ্র অস্ত্র প্রত্যান বর্ষি ক্রি ক্রি ক্রি ক্রি ক্রিক ক্র

शन्त्रम्यावद्यास्यायश्यश्यश्य इत्यास्य स्थायः स्थायश्यश्यश्य स्वायः स्थायः स्थायश्यश्यश्यश्य स्वायः स्थायः स्थायश्यश्यश्यश्य

यायाने से सम्भानित या सान्ना मान्न स्थाने हिन्दा मान्न स्थाने स्थान स्य

महिरापा (वन्या वी विश्व विष्य विश्व विष्व विश्व विष्य विष्य

५८:में (क्रॅंशन्य देशन्य संस्थाने संस्थान मिनाना )य'गहिरा

अळव्यात्रा ने प्रविवाद्यात्रायां वित्या प्राचित्या हिं से प्रिया स्वाया स्वाया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स

५८:सॅ (भ्रुःना बुना अः र्शेना अप्यानार्वे ५ प्या हो दि । त्या विकार स्वाया प्रति । त्या विकार स्वाया । विकार स्वाया । र्रिन्थाम्बर्निन्यानेन्यायाद्विन्यस्थित्रिक्ष यान्त्रेन्या होन्यायाहिका ग्राम् हेका सामेन में लेखा

> शुम्बार्यायायाळेट्र हेत्र द्याळेट्र त्या वष्ट्रिया विदायहेगा सर होता संवदर। नन्गामी याले स्ट्रासी से ग्राया है।।

यह्यामुयार्थेग्यायायार्वेदास्या

यरयामुयाग्रीः भ्राना त्रनाया प्रान्दा सुदा स्वेता से दे । से द र्शेम् अर्दर द्या सदे रे से अर्थ द्या मी अर्द्ध्य विदः श्रुव न हे द्रास द्रा खुर्या ग्रीर्या यहिषा यम् ग्रीन् या त्यवरा यन्या यी या ने सूरा ग्रायम सी मेया या है। <u> अदशः क्रु शःश्रेवाशः दुर्गेदः अर्क्षेवाः वाशुर्यः यार्वेदः यार्थेदः अदयः विदः वार्वेदः</u> हो न दे श्वेर हे वे या वर्ष प्येव प्यंथ य हे या हा य र रे या था थीं। पर में व सर्के या गशुर्यायाधिन् से निर्मेशसेस्याम् विन्नित्र स्त्रीत स्त्रीत स्त्रीत निर्मेश नें।

गहिरामा (दे निविदान निवास मित्रामा न

न्नु अया हेत् या श्रीयाश्वापा ५५ । ननेशयमोर्देन्या होन्द्रस्यश्यवद्या श्रुः अदे रहुं या ग्री या मुन द्वाप्यया।

#### वशुरःनरःसर्वेदःदशःविं नःनर्ह्वेग

मित्रेश्वास्य (वर्तित्त्वा होत्त्वा व्याहे से स्कृत्य वर्षे वर्ते त्य स्वत्वा व्याप्त विष्ट्रा व्याप्त विष्ट्र सेस्र स्वाप्त विष्ट्राच्या विष्ट्राच्या हो विष्ट्राच्या विष्ट्

स्वाक्षान्त्र मुं अळव प्रत्य प्रत्ये हे अप्यम् वर्ष्य प्रत्य वर्षेत्र प्रत्य वर्षेत्र वर्य वर्षेत्र वर्येत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्षेत्र वर्येत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर

५८:में (श्रेस्रशः विद्यादः विवाला विद्यात्रः सेवाश्यः )दे।

खुर्यान्डव्यम्बर्यायाः सेस्रसार्थेन्द्रम् । सेस्रसारोद्देन्यात्रस्यात्रात्रम् वित्रस्यात्रम् । सेस्रसार्थेन् निर्मात्रम् निर्मात्रम् । ने नसार्योद्देन्यान् निर्मात्रम् निर्मात्रम् ।

र्ट्या प्रित्य अर्थे वा अर्थे

या गुरुष्य प्रस्ति । वित्र वि

गहिरामा (क्षिनम् से मैग्रामि मे सक्ते )दे।

यायार्से ह्याप्य अत्य स्वेता । यायार्से ह्या हे सिया सुरावा । वे त्यार्से ह्या हे सिया सुरावा । के त्राह्म स्वेता स्वेता स्वेता स्वेता । के त्राह्म स्वेता स्वेता स्वेता ।

यार बया याय याय याय या से द्राय या से द्र

ग्रुअपा (रदावी हेश सर रवश्र सन )दे।

यार मी श्राव्यव्य प्राप्त मित्र हो न प्राप्त मित्र मि

#### नन्यायी अप्तने त्या हे हे नर्गे द्या

यश्याद्यां श्राम्बद्धाः स्ट्रां या विद्याः स्ट्रां स्ट्रा

ने व्याप्त स्थान स्थान

गर्वेन्द्रप्तान्त्रभूग्त्रभूगान्त्रभूग्त्रभूगान्त्रभूग्त्रभूगान्त्रभूग्त्रभूगान्त्रभूग्त्रभूगान्त्रभूग्त्रभूगान्त्रभूग्त्रभूगान्त्रभूग्त्रभूगान्त्रभूग्त्रभूगान्त्रभूग्त्रभूगान्त्रभूगान्त्रभूगान्त्रभूग्त्रभूगान्त्यभूगान्त्रभूगान

निन्द्रिः (निर्देन् निवेश्यद्र व्यवस्य निवास्त्र निवास्त निवास्त्र निवास्त्र निवास्त्र निवास्त्र निवास्त्र

यन्तानी निया स्था क्ष्य स्था निया स

५८:में (नन्यायी न्यो न्या अध्यय मदि न्य न्यन्य ) दे।

न्येन्द्राह्मिश्केन्यास्य क्षेत्राह्मिश्केन्द्र्याह्मिश्केन्याह्मिश्केन्द्र्य

पार्देशपा (श्वाप्तर्थया कुटा द्वाप्तर्व श्वाप्त्र विष्णा प्राप्त विष्णा विष

प्राचित्र प्राच

यश्चित्रप्रदेश्याचित्रश्चित्राच्याः च्याच्याः च्याः च्याच्याः च्याः च्याः च्याच्याः च्याच्याः च्याच्याः च्याच्याः च्याच्याः च्याच्याः च्याच्याः च्याच्याः च्याच्याः च

यहिश्यः (र्द्धः)दी स्याः पश्यः पदिः उद्यः सेः पर्वेदः दिः वे स्वा

> न्यान्येयान्यस्यादन्यस्यान्।। विषयः प्रमान्यस्यान्यस्यान्।। विषयः प्रमानस्यानस्यानस्यान्।।

### विं न हे से न विंग से हो ।

नग्रेशःश्र्म्भाग्नर्यः अर्देन् स्वाप्त्रः स

**८८.स्. (**र्बर.धे.भ.हं..क्ष.क्ष.क्रेट.ह्र्य.क्षट.ह्र्य.क्ष.र.ह्र्य.चे.ट.त्व.वे.ट्र.चाववय.ह्र्य.चाट.लट.का.चीच.त्व.व.च्य.व.क्ष.ट.क्ष.

यहें त्र प्रदेशें त्र प्रचार्था क्षेत्र प्रचार्था । न्रायां क्षेत्र प्रचार्थें त्र प्रचार्था । न्रायां क्षेत्र प्रचार्थें त्र प्रचार्थे । न्रायां क्षेत्र प्रचार्थें व्याप्त प्रचार्थें । न्रायां क्षेत्र प्रचार्थें व्याप्त प्रचार्थें ।

म्बद्धः म्बद्धः क्ष्यः स्वत्त्रः स्वतः स्

मित्रे अप्ताः (नः द्वृते न् गादः श्वृत् न वर्षे नः यत्र अप्तर्थः न यत्र वर्षः न यत्र वर्षः न व

বার্মান (বদ্দানী দ্রাক্রকাশ দার্ দ্রাক্র ক্রেন্দ্রান্ত্র বা

५८:सं (स्टानने नदे कु खेदानमा वर्देन सेवामाना)दे।

ग्वन् श्रीशः वितः ह्न स्वः न हें न त्या।

माला में निया स्वास्त्र स

महिश्रासः(म्वद्गन्ने निवः क्रुः भेद्गन्य से वर्षे प्रमासे सेन्य स्था । याव्यक्षेत्र प्रमासे सेन्य से सेन्य से सेन्य से सेन्य से सेन्य से सेन्य सेन्य

५८:द्रीं (मान्त् निर्मा निर्मा

यायाने याववायाने स्वाप्त स्वा

गहिरामा (देशक्षाम्बद्धानदेन निष्क्षामा)दी

ग्वत् भी अर्रा में भित्र प्रत्य में प्राप्ति के म्वत् में प्राप्ति

ययदः भेदः नदे नः यदे दः स्व न्यः न्यः स्व न्यः

गहिरामा (निर्नानम्भूनामान्याभ्याभावर्भन्तम् ।)दे

शेश्रश्राहात्रीयात्र विद्या । इतः कुनः तुः वे : शेश्रश्राम् श्री न्वश्रा । शेश्रश्राहात्र वे शेश्राहात्र निवा । देशः गाँ के श्रेश्राहात्र निवा ।

सेसमारुद्दान्तम् संस्थान्तम् । त्रात्मान्य । स्थान्तम् । स्थान्तम्तम् । स्थान्तम्तम् । स्थान्तम् । स्थान्तम् । स्थान्तम् । स्थान्तम् । स्

নাধ্যমান (৽ বিষ্ণানশ্বনাধান শ্বনাধান শ

न्दः में (रदः में १० वेद्द्रः म्यूनः मरः नम्यः मः )त्यः माशुस्रा स्रेस्र १८ उत्तर में स्रेष्ट्रः म्यूनः मरः नम्यः मरः भ्याः माशुस्रा प्राचित्रं विद्यान्त्रं विद्यान्तं विद्यान्य

गहेशपा(५३)है।

मक्रेन् श्रेक्य प्रत्वेष प्रति । वित्र क्षेत्र श्रेक्य प्रति । वित्र क्षेत्र वित्र क्षेत्र वित्र वित्

न्गर्भे त्युर्न्न स्त्रूर विवस्

हेन्'ग्रेश'वर्ळे'न'हेन्'पर'शुर'व्यव्यायपर'यर'श्चे'वश्चर्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्य न्याव'नर'रेयाथ'र्शे।।

म्राह्म स्थान स्य

गहेशपा(क्षेप्यर्द्द्रपासेन्परप्रस्यस्य )याग्रुस्

याववरग्री:हेर-संस्थान्यार्च्याः देवाशः सेवाशः स्वाशः स्वा

५८.स.(यावय.मी.क्रेट.स.स.सया.स्या.स्याम.स्याम.स्या.म.

यायाने ने साने प्यसा है नान्या । श्री नान्या हिसाना यान सा श्री ना पान निया है नाम से सा । श्री नाम से साम से सा । श्री नाम से सा ।

गहिरापा (रदावी विवाहन दिरानर के रेग्राया )दे।

नर्शन्त्रस्य प्रमानित्तं विष्य । विष्य प्रमानित्तं विषय । विष्य प्रमानित्तं विषय । वि

ण्वतः शे 'के दायाया विदा विदायदा है दाया पर्दे दाया के दाया प्रत्य के दाया प्रत्य के दाया के

ध्रैरपर्देन हेर्पार्चिनपरप्तग्रुरपरिकुः भेषिष वित्रपरपर्देसम्पर्द हेर्पायाकुः सळ्दाप्ताराची सार्वि प्राचित्रपर्दे स्थानित्र वित्रपर्दे स्थानित्र स्यानित्र स्थानित्र स्थानित्र

म् अस्यः (रदःनीः भ्रेनाः सः व्यास्यः स्वान्त्रः त्वान्यः रीनान्यः मीन्त्रः त्वीः प्रान्यः स्वार्त्नाः सेन्यः सः )दे।

## নমার্ম'বাইশানা

माशुस्रामः (व्ह्नायक्षेत्रम्यक्ष्वित्रम्यक्ष्वित्रम्यक्षित्रम्यवित्रम्यक्षित्रम्यवित्रम्यक्षित्रम्यक्षित्रम्यक्षित्रम्यक्षित्रम्यक्षित्रम्यवित्रम

५८:में (न्यायापार्वेन्याय्युन्यायेयोग्याय्येन्यायायेयायेन्यायायेयायेयायायायेयाये

र्म्याक्षे: प्रमादः प्रमादः प्रमादे । प्रमादः प्रमादे । प्रमादे । प्रमादः प्रमादे । प्रमादः प्रमादे । प्रमादः प्रमादे । प्रमादे । प्रमादः प्रमादे । प्रमादः प्रमादे । प्रमादः ।

मायाने न्यायाम् निर्मा श्रीत्रायाम् वित्राचीयायाम् । वे ना

गाय हे न्या विया से न्याय वयह ।

ने त्यार्श्चिन नगर है विगार्थिन।

गहिरापा(मालामार्वेद्राक्षेत्रकानम्भेद्राचकाने वाक्षेत्रका)दे

हिंद्रिंगु भेद्र श्रेंब रहें या ग्री या दी।

ने त्यामार्वे न प्रते क्रुम् ।

न्यायान्त्रिमा व्याप्त्राव्यान्त्रम्यान्त्यम्यान्त्रम्यान्यम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्

नरःन बुरःनःरहेरःयः श्रुनाःनश्रयः क्रेनःसंदेशः क्रुरः तशुरः सर्दे। । रहःसे (५मःयः नर्वेरः मः बुहः नःयः नगवः नरः से देगसः मः) ने।

शुन्न व्यास्त्र व्यास्त्र विवासित्।

र्वाः अर्द्रश्यः य्यः श्रुत्रः हेवाः श्रु अः यदेः हिंद् श्रिः व्यद्धः यः श्रुत्वाः व्यव्यः देः श्रुत्रः व्यदः श्रुद्धः व्यदः हिंदः त्र्वयः यद्धः व्यदः श्रुदः श्

महिरापा (दे वादवादावराव बुदाव रदा है दावा सूवा वस्वा केव विदे क्रू रावशूराया) दे।

मायाने प्रकेट्र सम्मान्य स्थान ।

देश्य स्थान स्थान स्थान स्थान ।

देश स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान ।

देश स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान ।

देश स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान ।

देश स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान ।

देश स्थान स्थ

क्ष्म त्राहि । विष्या प्रति । विषया प्रति । विषया प्रति । विष्या प्रति । विषया । विषया

यहिश्यः (रहरहरहर वे क्षिण्यः यह प्रदेशे नाम यह प्र

८८.सू. (व्ह्रेबाहेब संदेश्क्र शक्ती वीया श्वर्य संव्यक्ति स्वर्य स्वयं स्

५८: में (रद्दान क्षूर्य प्रद्वा मान्य प्रत्य में मान्य प्रत्य मान्य क्ष्य प्रत्य क्ष्य क्ष्य

नर्भेन्द्रन्ययायायायाये से स्थाने स्थाने ।

यद्याः श्रें त्रश्रायः श्रें त्र स्वद्याः से द्या स्वद्याः से प्रायः से प्र

न्द्रभःश्चः नर्श्वनः नर्श्वनः व्याप्तः न्याप्तः न्यापतः न्याप

गहिरा (भेर्प्वायम्य क्यायर् र र्वे प्राप्त के स्वायम् र रेवा स्वायम्

## 

गशुस्रायः ( देः इस प्यत्ते प्रत्ये प

न्वायन भ्रिमामन्य स्वायन

५८:में (वर्क्ष्र्न्यम्भाउद्यायान्वेष्यायायोन्या)दे।

न्येर्न्त्र हो स्रवेश्वर हो न्यायर हुर्न्त् हो सामा क्रस्य स्वीत्र वा कर

र् प्रमानित्र प्रमानि

निन्धः (धेन्डेःस्माधेन्यिः क्वुःसळ्नः) त्यानिहेश।

निन्धः निस्ति के स्माधेन्यिः क्वुःसळ्नः) त्यानिहेश।

निन्धः निक्षः निक्षः निष्ठितः क्वित्यायः क्वित्रः स्माधः सम्माधः समाधः समाधः

५८:सें (वन्नायानकून्नोन्न्नायाकनायाकनायाकनायाकन्याया)दे।

मान्न प्रायः मन्मा यः हे निमा सन्।।

नगयमनेनेनेनेनेनेनिने

नन्गामी अपने प्यायान्य साथी पर्वे ना

रटायानकूँ नामान्वायानाधी स्वायानाधी नाकूँ नामाने हुँ नामाने विषया विषया

सदिः श्रेश्रश्च श्राचितः श्रे द्वा स्थाने स्थाने

महिश्याप्त (देन्त्रवेद्यान्त्रवाय व्यवस्त्र देव्या प्रत्या के स्वाय व्यवस्त्र के के स्वाय व्यवस्त्र के स्वाय के स्वय के स्वाय के स्वाय के स्वाय के स्वाय के स्वय के स्वाय के स

दे:यदे:यां व्यव्याः यदे वा । गुदः यव्यव्यः दे । यवेदः युः द्यां यः या । वेदेः युः दे । यवेदः यः द्यावः यः यो या ।

नरे'नर'शुर'त'नर्ग'भे'नरे।।

नर्हेन् होन्दे न्यां भाषा भाषा व्याप्त स्था मन्यां मयं मन्यां मन्यां मन्यां मन्यां मन

महिरामा (स्टानकूँ न्यायान्यावया दी शायते क्वें न्यस्वन्या) दे।

दे न्ययान्यान्ते न्यक्ष्ट्राद्दे लेया। द्राची प्रवादाना क्षे प्रकृताना। दे प्यप्तादे क्षेत्राक्षे प्रकृताना। दे यापादे क्षेत्राक्षे प्रकृताना। दे यापादे क्षेत्राक्षे प्रकृताना।

दे नश्च न्यावन श्री श्वाप्त न्यावन श्री श्वाप्त न्यावन स्थित स्थि

गहिरामा (यदायद्ग्रायामा प्रायम् प्रायमा । या प्रायम्

नक्ष्रॅन्'म्यम्यं'ग्री'मेय्या होन्'स्य प्रमें प्रम

५८:द्रीं (नक्ष्र्न् म्यामार्थः योगमार्थः यो नामार्थः पर्वो पर्वो ना यो नामार्थः पर्वे स्थाने स्थाने

नर्हेन्यम्भात्यः बेवःस्थाः हेश्यः ग्युवः न्रह्मेन्यः प्रति । द्वः दर्शे दर्शे मा होन् धेवः पर्दे ।

#### देशकी श्री निवर विद्यास्य श्री । विद्या श्री अपने विद्या श्री । स्व श्री अपने विद्या श्री । स्व श्री अपने विद्या श्री ।

नर्भूत् प्रान्द्र श्राण्य श्राण्य प्रान्द्र हुत् प्राय्य श्राण्य प्राण्य प्रा

महिरामा (दे त्वर्मना चेदान्वर्मा त्वर्मना चेदान्ये वर्मना चित्रे वर्मना चेदान्ये वर्मना चेदान्ये वर्मना चेदान्ये वर्मना चित्रे वर्मना चर्मना चित्रे वर्मना चित्रे वर्मना चर्मना चर्मना चर्ये वर्मना चर्मना चर्ममा चर्मना चर्मना चर्ममा चर्मना चर्ममा चर्म

ने श्री सः स्वत्यायो स्वर्धितः श्री या श्राची स्वया श्री स्वया स्

नेते भ्री र जन्मामी नर्भे न र जन्म श्री र ज्ञानिय श्री र ज्ञानिय । ज्ञी र ज्ञानिय । जञ्ज्ञानिय । ज्ञानिय । जञ्ज्ञानिय । जञ्ज्ञानिय । जञ्ज्ञानिय । जञ्ञानिय । जञ्ज्ञानिय । जञ्ज्ञानिय । जञ्ञानिय । जञ

 नर्भः रेग्राश्याप्ता भूगानस्याग्तीः श्लीं गर्डेत् ग्रेत् प्रेत्राश्यार्थे । रेग्राश्यार्थे ।

55. में (वर्ष्ट्र-स्वायायानीवायाने न्यासे नामासे नामासे वासामें वासामें वासामें वासामें वासामें वासाम के विष्

यद्याः ते : श्रीयः यः देत्याके रः या । के दः द्याः यद्याः र श्रीयः वे दः या । यदः द्याः यद्याः य वे द्याः श्रीयः वे दः या । दे : यः यद्याः ते : हे : श्रू र : श्रिं ।

ग्वितः प्यान्त्वा विः श्रेतः प्राय्य श्रेतः प्राय्य श्रेतः प्राय्य श्रेतः प्राय्य प्रायः प्राय्य प्राय्य प्रायः प्राय्य प्रायः प्रा

निहेशान्य (भूना नम्या क्री क्षें निहेन क्षेत्र नमार्के नम्यो के नमार्थ के निमान

यद्याः वे सूयाः यस्याः यह्याः यहे दःया । अप्रशः क्रुयाः यस्याः वे दे दे युः यक्ष्याः यिवा । वे त्यां वे दे त्यां वे दे त्यां वे त्यां वे ते त्यां वे ते त्यां वे ते त्यां वे ते त्यां वे त्यां वे ते त्यां वे त्य

नन्यान्ते सूया नस्यानी । यद्या यह्या वर्षे द्या या सहस्य मुरा

य्यान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त

महिरापा (वर्षित्वयस्य के नेवास्य व्यवस्य विषय स्था नेवास्य प्रमाण विषय स्था नेवास्य के नेवास्य के

न्दः में (५णवः म्वनः के व्यान्य व्याप्य व्याप

यदी 'वे 'वर्श्वन्य व्यव्यायां मात्रा हो न 'हे व्या । वर्षे न 'व्यव्यन हिं 'वर्ष्य न में व्यव्यन हिं । वर्षे न 'वर्षे न 'वर्ष्य क्षे क्षे न 'वर्षे न 'वर्षे

ने वा निष्यान्य निष्यात्य निष्यान्य निष्यात्य निष्यात्य

न्यायदे ते श्रुवायाद्वा हिष्या विषया विषय

र्थित् प्राधित क्षेत्र प्रत्या के प्रति प्राधित क्षेत्र प्राधित क्षेत्र प्रति प्राधित क्षेत्र क्षेत्र प्रति प्राधित क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र प्रति क्षेत्र क्ष

गहिरापा(दे वानेन्यानेन्यादेदादाद्वादादेव्याव्यादेव्याव्यादेव्याव्यादेव्याव्यादेव्याव्यादेव्याव्यादेव्याव्यादेव

यात्राने प्रद्याने प्रदासी क्षेत्र स्वास्त्र स्वास्त्र

वर्दे वायानीय या हो दायर बद्या

স্ঠিশস (নর্ম দ্বেমম শ্রী দ্বীদাম মে দ্বীর্মা স্থানী বিশ্ব

श्चिर्यम्भवस्य प्रति। दे प्रसेश्वस्य भित्र । द्वार्थः (श्चिर्यम्भवस्य )दे।

यार विया यार से र से प्रस्त हुर या। यार विया प्रिंद संपित सुर या। ने 'हे द 'हे ' प्रेस सुर प्रस्ता।

### हे सूर हे या योग या लेया हा।

বাইশ্বামা(देप्तवेशवङ्गुवावा)दे।

त्रुगः शुः द्वीत्रायाः श्रुवः स्थः या । श्रुवः प्रदेश्चीत्रायाः श्रुवः स्थः प्रदा

रनः हः वडी दः यरः डी दः शुरः य।

रमजुरमोग्रायलेशजुराधीरुम।

महिश्रामः (ग्रममः ग्रामदे ख्यानः म्यम् । या महिश्रामः या देवा । व्यानाम् व्यानाम् । या महिश्रामः या प्रमानाम् व्यानाम् । या स्वानाम् व्यानामः व्या

५८:म्.(ल्ब.२४.३१८३८.ल्ब.२४.४.४४.१४.२८३.४)ता श्रम

रदःषः संदः वर्षेव वर्य

**८८.स्. (**४८.क.सब्र वर्ष्याश्रकः व.)ता.याश्रसा

विराष्ट्रिर्ध्यर्ठ्यर्ग्वर्भ्यात्र्य हे विष्यात्वाद्ययर्भेष्य्य प्राप्ति हे व्यायव्यव्य विष्या विष्या विष्या वि

५८:सं (बिटाइड्-सर्ड्व-न्मॅब्स)

यहेगाःहेव व वे श्वें र न श्वें । यहें न श्वें । यहें न श्वें न श्वें

श्चेत्र प्रति । यहिमाहेत्र त्र ते श्चेत्र प्रति । विद्याहेत्य विद्याहेत्य । विद्याहेत्य । विद्याहेत्य विद्याहेत

गहिरामा(देल्यान्वायावस्तरेवायाया)दे।

दे नश्चानश्चर्यात्रश्चर्या । विश्वानु नाहे नाहे नाहिना निश्वरा ।

## वटःक्रनःश्चेंद्रान्यते म्याया स्वारायया ।

#### नद्याःमीश्राद्याःषाद्यादानसः ह्या

ग्रुअ'रा'(दे'यायद्गयदे'नश्रयम्म नुन्नरःदेवाश्रामः)दे।

दर्ने 'तृर'न्द्रन्या'योश्चान्यश्चा । देने 'ख'र्स्च्या'य्यर'न्द्रन्यत्वे 'तृत्वे प्यत्वे प्रत्वे प्रत्

त्रायदे र्रायद्यायी अय्वेद्रायदे र्यायदे रायदे रायदे

নাই শ'ব'(নমম'নবি'নব্'নইন্ম'ক্ট'ন')থ'না ধ্রুমা

यत्र परि प्रस्था प्रस्ते प्रस्था सर्के प्रस्था स्रोत् प्रस्त प्रस्ते प्रस्त प्रस्ते प

व्यक्तित्रायि प्रति व्यक्ति विषक्ति व

यायाने निर्मे न

न्यामदे के याग्रम हे से सकें ना

वाया हे निर्वा वी क्रुट्राया निर्वा के निर्व के निर्व के निर्वा के निर्वा के निर्वा के निर्वा के निर्व के

गहिरामा (वर्षेत्रम्य स्वरं नम्य सम्पर्म सम्बर्धः सम्वरः सम्बर्धः सम्बर्धः सम्बर्धः सम्बर्धः सम्बर्धः सम्बर्धः सम्बर्दः सम्बर्धः सम्बर्यः सम्बर्यः सम्बर्यः सम्बर्यः सम्बर्यः सम्बर्यः स

यायाने न्यायने यार्वे न्यायने । यायाने न्यायने यायाने न्यायने यार्थे न्यायमे यार्थे न्यायने यार्थे न्यायमे याय्ये याय

दे 'श्रे' सक्द्र स्था हे 'प्याय हे 'द्या 'प्येदे 'प्यद्या 'प्याय हिंद 'प्याय 'प्याय हे 'प्याय 'प्याय हे 'प्याय 'प्याय हिंद 'प्याय 'प्याय हे 'प्याय '

नर्हेन्द्रन्त्रन्त्रेन्द्रस्थायायायीत्रःहे। नन्त्रान्त्रेन्द्रम्यः विद्यान्त्रेन्द्रम्यः विद्यान्त्रेन्द्रम्यः विद्यान्त्रेन्द्रम्यः विद्यान्त्रेन्द्रम्यः विद्यान्त्रेन्द्रम्यः विद्यान्त्रम्यः विद्यान्तः विद्यानः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यानः विद्यान्तः विद्यानः विद्यानः विद्यानः विद्यान्तः विद्यानः विद्यानः

ग्रुअपः (देशदान्द्रिन्द्रीयशाक्तित्त्रीत्रायश्चित्राच्यायळेट्रायम्द्रियायः)दे

ने'नम'रन'हुःश्रूद्राभेसमाया

नहेव'व्यानर्वेद'य'श्चे'न्यावा

न्यायदे के यानित्य के न्या ।

यदः से सम्भागित्वेद्दे व्याप्त विद्या स्वाप्त स्वाप्त

ग्रुस'रा'( क्रूंन'रा'त्रा'त्रा'तर'त्रक्ष'ता)य'ग्रेश

मुश्यम्यत्रत्र्त्रा देव्यस्य

८८.सू.(क्रिश्यस्य विष्ट्राः)ल.याश्रुश

स्रेयमास्रद्यान्य म्हारान्य क्ष्या स्रोत्त्य स्राप्त स्रोत्त स्रोत्त स्राप्त स्रोत्त स्राप्त स्रोत्त स्रोत्त

५८:द्रीं (अंअअञ्बत्दर्भरमञ्जूषानर्भेद्वअभाग्नी:बिदःदुः अर्द्धरभाग्यराखुदः अभाग्रह्मरभागः)द्री

ने भिरसेसमारुव विराद्य दे।।

#### मुयानवे विदावेग मुनामगण गुरमा।

येश्वर्यः स्वार्यः विद्यान्त्रः विद्यान्त्रः विद्यान्तः विद्यानः विद्यानः विद्यानः विद्यान्तः विद्यानः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यानः विद्यानः

गहिरामा (देन्द्रवायाययाय मुनामा)या गहिरा

यद्याः मुर्याः विष्यः । यद्याः विष्यः याः व्याः व्याः यद्यः यः यद्यः यः व्याः व्य यवः स्रोः स्वायः वर्षे ।

वरी निया अगु जुरु अर अर में विया।

### यर्ने सूर सुव शुराय रें या धेवा।

स्याम् स्याम स्य

महिरामा (महिरामा वाप्ता प्रायम स्वास्त्रा स्वास स्वास

श्रेश्रश्च त्राचीयात्र व्या । श्रेश्रश्च श्रेश्व त्या विष्ट्र विष्ट्र

मुः अळ्वः देशः वः शेश्रश्राध्याः उदः इस्यशः द्रः मुः यः वाहेशः ग्रीः विदः यशः व यः गुः यद्रः मुः यः मुः यः विदः दुः शेस्रयः अग्यः युवः यदः यः युवः यदः विदः यः शेवः विशः यः यद्रः यः युवः यदः विदः यः शेवः विशः विदः यः यो शः यदः यदः यो शः यदः यदः यो शः यदः यदः यो शः यो शः यदः यो शः यो शः यदः यो शः य

বার্রম'ন'(ईদ্রশ্বন্র-)ম'বার্রমা

वर्ष्यस्थात्रः स्वितः प्रवास्य स्वितः स्वास्य ।

# शेस्रश्च स्वराययद्य पित्र न्त्र पित्। ।

सेसस्य उत्र नर्से द्वस्य ग्री विदः पित्र पित्र पित्र पित्र से से स्मान्य सम्मान्य सम्मान्य

गहिरापा (गहिरामा वार्त्याचे के नायर्था क्रिया में महिरायक्र वाया प्रमान क्रिया मित्र वाया मित्र वाया प्रमान क्रिया मित्र वाया मि

 वस्रभागान्यान्द्राध्याः स्वाप्ताः स्वापताः स

স্থান্ত বিষয়ে বিষয় ক্রিমান্ট্রা প্রের দের ক্রেমান্তর ক্রের মের মের মের ক্রেমানর ক্রিমানর ক্রিমানর ক্রিমানর ক্রিমান্ট্র বিষয়ে করে ক্রেমানর ক্রিমানর ক্রেমানর ক্রিমানর ক্রেমানর ক্রিমানর ক্রমানর ক্রিমানর ক্রেমানর ক্রিমানর ক্রিমানর ক্রিমানর ক্রিমানর ক্রিমানর ক্রিমানর ক্রিমানর ক্রিমানর ক্রিমান

र्थेन 'न्न मुं अर्के 'अवत' प्यश्च प्रति ।

श्वा प्रति 'न्न 'मे श्वा के प्रति 'मे श्वा प्रति ।

श्वा प्रति 'न्न 'मे श्वा के प्रति 'मे श्वा ।

श्वा प्रति 'न्न 'मे श्वा के प्रति 'मे श्वा ।

श्वा प्रति 'मे श्वा के प्रति 'मे श्वा ।

श्वा प्रति 'मे श्वा के प्रति 'मे श्वा ।

श्वा प्रति 'मे श्वा के प्रति 'मे श्वा ।

श्वा प्रति 'मे श्वा के प्रति 'मे श्वा ।

श्वा प्रति 'मे श्वा के प्रति 'मे श्वा के प्रति 'मे श्वा ।

श्वा प्रति 'मे श्वा के प्रति 'मे श्वा के प्रति 'मे श्वा ।

श्वा प्रति 'मे श्वा के प्रति 'मे श्वा के प्रति 'मे श्वा ।

श्वा प्रति 'मे श्वा के प्रति 'मे श्वा के प्रति 'मे श्वा ।

श्वा प्रति 'मे श्वा के प्रति 'मे श्वा के प्रति 'मे श्वा ।

श्वा प्रति 'मे श्वा के प्रति 'मे श्वा के प्रति 'मे श्वा ।

श्व प्रति 'मे श्वा के प्रति 'मे श्वा के प्रति 'मे श्वा ।

श्वा प्रति 'मे श्वा के प्रति 'मे श्वा के प्रति 'मे श्वा ।

श्वा प्रति 'मे श्वा के प्रति 'मे श्वा के प्रति 'मे श्वा के प्रति 'मे श्वा ।

श्वा प्रति 'मे श्वा के प्रति 'मे श्व के प्रति 'मे श्वा के प्रति 'मे श्व के प्रति 'मे श्वा के प्रति 'मे श्वा के प्रति 'मे श्वा के प्रति 'मे श्वा के प्रति 'मे श्व के प्रति 'मे श्व के प्रति 'मे स्व के प्रति 'मे स्व के प्रति 'मे स्व के प्रति 'मे स्व 'मे स्व के प्रति 'मे स्व 'मे

पिस्रकाम्बुसास्याप्यम् कुमानम् ।

न्ययायदेख्यं प्रवित्व क्री द्र्याव या व्यव स्था क्षेत्र हो क्रिक्त क्षेत्र क्

गहेशमा(र्वाम्यः १दी

यरयामुयार्केयायर्केयाः भुः नदेः नेया।

शेस्रशास्त्र इस्रशायाधिन प्रशास्त्र ।

वर्दे रहं सारमा मी या का न सूत न या।

शेसशाउदासकेंद्राग्रूरा विश्वासा

यद्याः मुर्याः प्राप्त । यह न्याः यह न

বাইশ্বাম (য়ৄর্বামান্দ্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমা

शेश्रश्चात्र स्वतः द्वाः तुः याष्ठियाः यः श्वरः यद्वाः वीरः सहदः यशः गुश्चार्यः तुः यद्दा देश्वादः शेश्रश्चार्यः श्वरः यद्वाः यद्वाः यद्वाः यद्वाः यद्वाः यद्वाः यद्वाः यद्वाः यद्वा यश्चवः पर्दि।

न्तः में (अयमण्डम् सम्वर्द्द्वान्त्वान्ते वादेवान्यः भूरः वद्वान्ते वादेवान्यः भूरः वद्वान्ते वादेवान्यः भूरः वद्वान्ते वादेवान्यः भूरः वद्वान्ते वादेवान्यः भूरः वद्वान्यः व्यवस्त्रः व्यवस्त्

#### न बुदः न द्वा दे छिदः न श्रुनः मर्दे।

५८:में (सरसम्बासायान्यस्वेसन्देत्प्त्वंत्रस्यस्यान्तेम्वेष्ट्रस्यस्य निर्मा

सेस्र उत्यान् स्वान्त्र स

স্ট্রিশ্ব'(देक्दिनक्षुन'न')य'স্থ্র

श्रेश्रश्चात्र्वात्र्वेत्। यहित्यः स्थात्र्वेत्। यहितः स्थात्र्वेत्। यहितः स्थात्र्वेत्। यहितः स्थात्रः स्थात्रः स्थातः स्थात्रः स्थातः स्यातः स्थातः स्यातः स्थातः स्थात

नाराधिराञ्चापिरायवरायेवायक्षापाया ।

## 

गहिरामा (अंअअम्बद्धान्यम्अम्यदेनिद्यम्म्यूद्यः )दे।

याववः प्यरः ने भी या प्रत्या में हितः श्रुतः या स्वरः स्वरः

शेशश्राह्म निर्मानि निर्मानि निर्मानि स्थानि स्थान

महिरामा (दे त्यामार्के द्राया मुका का मुका का दिर्म का स्वीत प्रमान स्वीत स

देन्यः शुर्यायागुर्यात्वर्याः स्थाः य्याप्ताः । यो प्रति । यो प्र

## व्यायाहे के इसयान्येयायदे वनया सेन्द्री।

कुःसळ्दःदेशदःहेःश्वरःख्यायात्रुद्धःस्यःस्यःयात्रःवशः यःश्वायःपदेःपदेदःपदेःखेदःहदःगुदःश्वेयःखेदःपदेःपदःशःदशुदःपः देःपविदःदःशेस्रयःउदःयःपविदःपःग्वयःयःपदःश्वायःहेःळेदःदेःद्वययः दश्चेयःपदेःश्वर्यःसेदःदि।

गहिरापा (श्रामहेरामम्म मुग्यन्त्रामा)दे।

दे 'नश'नद्या'योश'दर्शे 'यापार्वे प्रायाप्ते प्रायाप्ता ।
श्रम् श'हे 'के 'गुव' शे 'द्रशे श'शुर' प्रायापा ।
श्रेमा'दे 'दे 'दे द' शे 'शे र 'च श्रम् श'च शे 'थे श ।
श्रेमा'दे 'दे 'दे द' शे 'शे र 'च श्रम् श'च शे 'थे श ।
श्रेमा'दे 'दे 'दे द' शे 'शे र 'च श्रम् श'च शे 'थे श ।
श्रेमा'दे 'दे 'दे द' शे 'शे र 'च श्रम् श'च शे 'थे श ।

शेशश्राह्म वार्षित्र प्राच्या श्राह्म श्राह्म

শৃপ্তমান্ত্র (ব্রিশাবরুদার্শ্বর্মানা)বী

ने प्रतिवासी ने मान्य सम्बादिया होता स्वाद्य सम्बादिया होता स्वाद्य सम्बादिया होता स्वाद्य सम्बाद्य सम्य सम्बाद्य सम्बाद्य सम्बाद्य सम्बाद्य सम्बाद्य सम्बाद्य सम्बाद सम्बाद्य सम्बाद्य सम्बाद्य सम्बाद्य सम्बाद्य सम्बाद्य सम्बाद्य सम्बाद सम्बाद्य सम्बाद्य सम्बाद सम्बाद्य सम्बाद स

## दर्शे अर र्हेग प्रश्न प्रमानी श्चेर दर्के गाम्या। दर्ग् अश्र ग्रह्म अर्थे दहिना हेत अर्गेत द्रो श्र अर्हे द्रा।

गहिरादा (देशदासेस्रा उदायायदानुस्य द्वातात्रम्य हे तसूदारा)दे।

दर्शे न दर्भ गुन श्रुमार हे दे न न म उन ने या।

नन्ग मुःसहन्य प्रति त्या ने कें सामेन।

शेसशाउदार्दे निया स्त्री निया हिन्।

यर्गेविने निम्मा हिन् हे ही मान्य से होता

त्र्यां नः त्रिः गुंबः श्रुवाशः हे ते नित्राः श्रेष्टः रुवः ग्रुः श्रेष्टः श्रुः ग्रुः श्रेष्टः ग्रुः ग्रुः श्रेष्टः ग्रुः ग्रुः श्रेष्टः ग्रुः ग्रुः

বারী শাসা (বর্ষ ব্যাস্থ্র শাস্ত্র শাস্

५८:सॅ (अ६ॅर नश्रुव न )दे।

महिशासः(वनःस्वर्भन्त्रेशःम्बर्भःमिश्रेशः स्वःस्वर्भन्तेः न्तरः नुः जुर्शः स्वर्भः न्त्रेः न्त्रेः स्वर्भः स्वरं स्वर्भः स्वर्भः स्वरं स्वर्भः स्वरं स्वर्भः स्वरं स न्दः में (व्यवः व्यवः श्रीः न्वदः तुः श्रवः न्वे न्वतः) त्यः याहि श्रा न्ये न्दा नेवाने।

प्रस्तिः स्वाधित्रः स्वाधित्रः विष्णाः विष्णा

> यहिश्यः (र्त्तः) दे। दे 'चलेद'योर्दे द 'ग्रेट्र' हे स 'कुट' च। । दयाद'प्यट' हिट्र' द्याश्यट' से 'ग्री।

# वर्ते स्ट्रम् न् स्ट्रम् स्ट्रम् स्ट्रम् ।

न्ये ने नविद्यन्त पार्वे ने ने ने न्य्यम्य प्रस्ति ने ने न्या स्थान प्रस्ति ने ने ने न्या स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्थान

मुलर्सि क्षु विना सन्। व

# 

मुयार्से स्वाविषाः सर्गु त्राप्य स्वाधाः स्वधाः स्वाधाः स्वधाः स्वाधाः स्वाधाः स्वाधाः स्वाधाः स्वाधाः स्वाधा

বর্ষার্বানপ্রাধি। বর্ষার্বানপ্রাধি। বর্ষার্বানপ্রাধি। বর্ষার্বানপ্রাধি।

५८:सॅ (व्ययम्बदेश्वर्हे क्रें)दे

शेस्रशास्त्र सम्। विष्य सम्बद्धाः निष्य

अर्देरअरअरअर्गु अरव्युवरक्ष्रं र्वेग

বার্ট্র শ'শ'(মর্ছনটে শাট্র দের শান্ত) বি

क्रें त्रिन् त्यान्यया केत्र न्ता। म्याया प्रतास्त्री न्त्या क्रिया स्वर्धिता।

नर्जेन्यां यश्चां स्ट्रिंग्यं स्ट्रिंग्यं

ग्रुअ'म'(इसक्षेत्रके

यर्विन:कें'नर्वेन्'यथासहेशःश्रीवाशःन्नः।।

वन् सेन् प्रान्त्यम् स्यापिका ।

वर्षिर विश्व कुर नवे न ने कुश र्षेन।

दर्षिरः नरः दिवः के नर्वे के नर्वे न्या मात्र मात्र के न्या न्या के न्या न्या के न्या न्या के के न्या के न्य

श्री म्याप्त स्वते स्वत

श्चित्रः श्वीत्राच्याः व्याप्तः व्यापतः व्य

गहिरामा (वेतुवे सळ्त्) दे।

त्रह्मार्थस्य विष्ण त्राप्त स्वाप्त विष्ण विष्ण

#### ये दुः नर् वः या नर्हे वः वशुर्या नरूवः या

महिश्रामा र्सेन प्रमुश्याम स्वाप्त स्

न्दः स्वाकानह्यान्विभाग्यस्यक्ष्यानः) त्यः पाद्विभा

 न्द्रभः न्द्रः प्रश्रुषः प्रति प्रत्यः प्रति प्रत्यः प्रति प्रत्यः प्रत्यः प्रति प्रत्यः प्रत्यः प्रत्यः प्रत्यः

ने भूर नर्शेन स्थान हें त्र त्यु श्रायह्या।
वि भूर नर्शेन स्थान हें त्र त्यु श्रायह्या।
कुर से न स्थान से त्र स्यु श्रायह्या।
वर्शेन स्थान से त्र स्यु श्रायह्या।

श्र-निश्न-न

वस्त्राञ्चें स्वास्त्राञ्च निर्मात्र स्वास्त्र स्वस्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र

नर्हेन्यार न्यो थ हैं। नर्दे।

गिर्हेश्यः (वर्ड्स्व्युश्यः हेश्वर्ड्स्यः विष्यः)यः गिर्हेश्यः विद्युश्यः विद्युश्ये विद्युश्यः विद्युश्यः विद्युश्यः विद्युश्ये विद्युश्ये विद्युश्ये विद्युश्ये विद्युश्ये वि

८८.सू. (वर्ड्डव्यायाक्षेत्रायाक्षेत्रा) स्थान स्यान स्थान स

#### श्ची प्राथिया यद्या हित्र यह राजिया

नर्हेन्द्रमुश्चानेत्रेश्चा स्त्रमुन्द्रम् । वादानेत्र । वाद्य । वादानेत्र । वाद्य । वाद्य

गहेशःमः(देहंक्रःक्ष्रःक्ष्यं)यःगशुर्या

स्र्रें स्थायमायार्ने स्थारानियायाः स्थारानियाः स्थाः स्थारानियाः स्थारानियाः स्थारानियाः स्थारानियाः स्थारानियाः स्यापियाः स्थारानियाः स

५८.स्. (श्रृंश्रायश्रायार्म् श्रीटायपुरायाः श्रीटायाः भ्रीटायाः भ्

ये वित्रु नहम्म अवश्वराया निष्ट्र हैं दिन वित्रु वि

५८.सू. (ज.ज्रु.म्.चन्यायाययास्त्राचा)

ये वे के नियं नियं के नियं के

र्श्रुबायमानने निते रे सुराद्रा।

गहेर्यानहेन्यते शेर्पा धिया।

वर्षिरः नवे सूना नस्य से भें विष्

ये से है नर हु नर विद्या

व्यायाः से प्राप्तायाः व्याप्तायाः व्याप्तायः व्यापत्त्यः व्यापत्त्रः व्यापत्त्यः व्यापत्त्रः व्यापत्त्रः व्यापत्त्रः व्यापत्त्रः व्यापत्त्यः व्यापत्त्रः व्यापत्त्त्रः व्यापत्त्रः व्यापत्त्यः व्यापत्त्यः व्यापत्त्रः व्यापत्त्रः व्यापत्त्रः व्यापत्त्रः व्यापत्तः व्यापत्त्यः व्यापत्तः व्यापत्तः व्यापत्त्यः व्यापत्तः व्यापत्यः व्यापत्तः व्यापत्तः

गहेशमः(हेल्स्म्ब्र्म्ब्र्यः)यगहेश

कें विदेशके अन्येन अस्य स्थान स्यान स्थान स्थान

নৰ্ক্য

५८:में (वक्के नमावहँसमानासद्दास्यान् सर्वेदाना)

हेन्स्रिन्स्य क्षान्त्र वित्र वित्र

दे: द्वाशक्त स्कुत्वः विद्यात्रकः वायश्यः श्रेष्ट्र स्वादः स्कुत्वः विद्याः स्वादः विद्याः स्वादः विद्याः स्वादः विद्याः स्वादः स्वतः स्वादः स्वदः स्वादः स

गहिरामा(देन्द्रेश्यन्त्र्न्यः)दे।

स्राक्षेत्रे स्राक्षेत्रा याक्षेत्र स्राक्ष्या । वित्र क्षेत्र स्राक्षेत्र स्राक्ष्य स्राक्य स्राक्ष्य स्राक्य स्रा

मित्रेश्वास्य (स्त्रिन्यात्रवक्के स्वये माव्य न्यतः नृष्णु स्यश्यास्य स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः । स्वयः स्वय

नर्वि। वर्षेत्रप्रति। वर्षेत्रप्रवेष्यम् स्वाप्ति। वर्ष्वेष्यम् वर्षे व

५८:में (रदक्षेत्रवक्के नन्नानी न्नदर्गुः श्रुर मश्यो में के से सुन्त )दे।

यस ते 'गुत्र त्रा नगाग त्रा ह्या । वित नगाग त्रा नित नगाग त्रा हित हित ।

हे क्ष्र हिंद ने व नगर विदा।

वर्ने सूर गहेर वेंगा हे सूर रगय।

गहिरामा(शुरानरावक्षेत्रशाद्वोत्तावावनद्वा)दे।

५.५८.७८.वर.जूर.जूर.जूर.जूर

धुराना है नात्र विकास के ना वि

हे श्रेन पुरे के किया मारा मारा ।

बुर्नान हेर्ने प्रकेष्ट्र प्रकेष्ट्र प्रकेष्ट्र प्रकेष्ट्र विकास क्षेत्र वितास क्षेत्र विकास का क्षेत्र विकास क्षेत्र विकास क्षेत्र विकास क्षेत्र विकास क्षेत्र विकास क्

ने के ले लें श्रम्य ग्रम्

रुषायाधिवायराडे विगान्।।

निन्दा (वर्द्दानिक त्यामा से निमान में निमान के निमान के

वर्ने वे साग्रमान इसमान राष्ट्र

वर्ते भ्रेत् गुरुष्य सम्मानुष्य भाषा ।

र्में न्यून प्रकेष्म निष्टिया निष्टिया

ग्री-नुन्-नर्देयालेयायेययायम्प्रम्।

शुर्-रु:पक्के नमायमायदे दे साग्रमाय रूप हरा न र न समाय

त्रा चुर्वा चुर्वा । चुर्वा व्याप्त स्थान स्थान

५८:सॅ (५क्के नदे के सुन्द्व क्रीशन्त्र मार्

यानिवःहेतेःद्वः प्रते निवायः यानिवःहेते द्वः प्रते निवायः यानिवः विवायः यानिवः यानिवः विवायः यानिवः यानिवः

महिरापा (नःकृष्टिन्द्रभान्नो नःवान्त्र्रेत्यम् सानुस्य न्त्रे सामासी विद्यानाया) दे।

र्ट्स्याः इवः प्रश्नाः प्रश्नाः । न्ध्रयः प्रश्नाः विश्वः विश्व

श्रूनः स्टाविशः श्रेवाः सः श्रुवाः सः स्वाद्यः स्वादः स्वतः स्वादः स्वा

चेत्रम् अग्वर्त्तम् स्वर्त्तम् स्वर्तम् स्वर्त्तम् स्वर्त्तम् स्वर्त्तम् स्वर्त्तम् स्वर्त्तम् स्वरत्तम् स्वरत्तम् स्वर्त्तम् स्वर्त्तम् स्वर्त्तम् स्वर्त्तम् स्वर्तम् स्वरत्तम् स्वर्त्तम् स्वरत्तम् स्वर्त्तम् स्वर्त्तम् स्वर्त्तम् स्वर्त्तम् स्वरत्तम् स्वर्त्तम् स्वरत्तम् स्वर्त्तम् स्वर्ति

गहेशमा (क्रें द्वे अदे सूना नस्या नसस्य नसस्य से से वे वे सून न वे

८८.सू.(म्बानम्बावनुहरदेशना)दी

हिंद्र-वि-१९-पार्श्व-प्रयो-प्र-१८ । के-प्रदेग-प्रदेग शन्द्र-प्रयो । के-प्रदेग-प्रकाश-प्रयो । के-प्रवाध-प्रयोग-प्रयो ।

स्यापस्यात्रस्य विः श्री राष्ट्री राष्ट्री राष्ट्र

गहिरापारम्।(देःम्ब्राप्यम्)द्ये। र्क्षेत्रःभ्रेगापानुःसःगुरुःभिरानुःसःभिरान्यःमः)दे। रु: या हो दु: पाराया नहमा या न्यायो विष्ठु: न्याया से प्राया हो।

कुःळवःश्रीशःवे स्याप्तावा । यार्वेवः ११ उवः ११ स्याप्तावा । प्राथाः प्राथाः वे ११ स्थाः श्री स्थाः स्थ

न्ध्रयान्य विष्ठा विषय निष्ठ छ छ । विषय निष्ठ । विषय । व

म्रुअपः (वर्ने वर्षे द्रायः द्राप्त वर्षे वर्षे

यक्ष्मित्रं स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स

नन् निर्मे के निर्मे निर्मे प्रक्रिया के निर्मे के निर्

चै-दिन्द्रम्भ्यान्यस्य प्राप्ति स्वर्ध्य स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वयः स्वर्य स्वयः स्वयः

न्ते न (श्वानश्यायश्वर प्रते व्यवस्य व्यवस्य व्यवस्य व्यवस्य स्वत्य व्यवस्य स्वत्य व्यवस्य स्वत्य व्यवस्य व्य

श्चान्य्याकुर्ने के त्य्याङ्ग्या। श्वान्दे श्चे त्याकुर्ने के त्य्याङ्ग्या। श्वान्दे श्चे त्याकुर्ने के त्याव्या। श्वान्दे श्चे त्याकुर्ने याद्या ।

गहिराम (बुनम्बन्धन्य लेब्स्य से से से स्थर नि

न्यायः नदे कुं ने समय प्रभागि ।

न्याः के यान्यायः निवायः निवा

यर्गः श्रीः श्रम्भारु द्वातः यदे श्रीः । वर्ष्णः श्रीः श्रीः वर्षणः वर्षः वरः वर्षः वरः वर्षः व

মাঝুঅ'ম'(বল্'ন'য়ৣ ব'য়ৢয়ায়য়'য়'য়য়'য়য়'য়য়'য়য়

५८:सें (श्चे ८ ख्वा नदे नहें न सं वादन न सर न सम् मार्य स्था ) दे।

श्चित्रास्त्रत्त्र स्थ्यास्त्र स्थ्यास्त्र स्थ्यास्त्र स्थ्यास्त्र स्थ्यास्त्र स्थ्यास्त्र स्थ्यास्त्र स्थ्यास्त्र स्थ्यास्त्र स्थित्र स्थ्यास्त्र स्थित् स्थ्यास्त्र स्थ्यास्त्र स्थ्यास्त्र स्थ्यास्त्र स्थ्यास्त्र स्थित् स्थ्यास्त्र स्यास्त्र स्थ्यास्त्र स्थित् स्थ्यास्त्र स्थ्यास्त्र स्थ्यास्त्र स्थ्यास्त्र स्थित् स्थ्यास्त्र स्थित् स्थ्यास्त्र स्थित् स्थित् स्य स्थिति स्यास्त्र स्थिति स्यास्ति स्थिति स्यास्ति स्थिति स्यासि स्थिति स्थिति

मुयार्सि कें यानिते से न्यान्यायया मुयान्य से निराय सुराग्नर

गहिरामा (महेदार्से हे क्षराहमा स्वापेदार्य के वा )दे।

> यद्याःयोश्चाद्यः क्ष्यःयाः विश्वा श्चीद्वः स्थ्यः यद्वे स्थाः यद्

यद्यान्ते ते भूत्र अध्येत स्थान्य यद्या मी श्रा ह्या स्थान स्थान है या स्थान स्थान

न्त्रीत् सक्त्री ह्वित त्यस्य स्त्रीत् स्त्रीत्

गशुस्य (सुर स्यम म्युरम मः) य पति।

५८:सं (वर्ड्स्व मंदे र्ब्स्व अपन्त्रे न्य वर्ष्ट्य क्रिय क्रिय क्रिय म्य प्रत्य अस्य प्राप्त )दे।

ग्रद्धतः र्वितः द्यायः त्यायः त्यायः व्यायः व्यायः

स्राम्य प्रमान्य स्रम् स्रम्य प्रमान्य स्रम्य स्रम

महिराप्ता (व्याक्त सुनामे प्राप्ता प्रमुन् पाद्य पर्वे दे सूना नस्य मी कार्य प्राप्ता से दास समित विद्या से प्राप्ता से प्राप्

मटायमाःश्रेमश्रामहिटानवेः द्यादाश्चर्णश्चर्यात्रः श्चर्मश्चर्यात्रः श्चर्यात्रः श्वर्यात्रः श्चर्यात्रः श्चर्यात्रः श्चर्यात्रः श्चर्यात्रः श्वर्यात्रः श्वर्यात्रः श्वर्यात्

५८:में (म्हायन सेन्य महिंदान के प्रायम् महिंदान के प्रायम् महिंदान के प्रायम् महिंदान के प्रायम के प्रायम

देवि हे मिट खया खार्से या राषा

देव हे न कें व स्था श्रुव वु श्राण्य मिर श्र्या हि स्था है व स्था नि हि स्था है व स्था नि हि स्था है न स्था नि हि स्था है न स्था न है है न स्था ह

गहिरापा (न्वावर्षितः भूगानभूवाका इसायमा श्रीमासी मितामा) दे।

यद्मामी श्राच्या रहेत स्त्रुवा प्रश्ना । स्वा स्वा में प्रति स्वा पार्वे प्रति । स्वा स्वा में प्रति स्वा पार्वे प्रति । स्वा स्वा में प्रति स्वा पार्वे प्रति । स्वा स्वा में प्रति स्वा प्रति ।

त्वः तर्वेदिः श्वृताः नश्वः त्यः वस्यः यः वस्यः वस्यः

न्य अभामः (त्र केत्र में निर्वे अपने केत्र प्रते केत्र प्रमानम्य क्रियः क्रियः प्रते प्रमानि ।

श्चन्यात्र यह स्थान्य स्थान्य

ने भूर श्रुव प्राणुव ग्रुट श्रे प्राचे प्राच प्राचे प्राच प्राचे प्राचे प्राचे प्राच प्राचे प्राचे प्राचे प्राचे प्राचे प्राचे प्राचे प्राचे प्राचे

तुःकुरः नः ने 'नश्चात्रें स्वात्रें स्वा 'नश्वा 'नश्वा अदः से 'न्या 'या विस्ता प्रे से स्वात्रें स्वात्रें स्वात्रें स्वात्रें स्वात्रें से से स्वात्रें से स्वात्रें से स्वात्रें से से स्वात्रें से से स्वात्रें से से स्वात्रे

ग्रुअ'रा'(श्वर पते कुल र्ये अर्के ग्वरहरार्ये अव्वत्केव र्ये ग्वर्स सहत् प्रश्राच र सहत् प्रश्राच र प्रश्राच र प्रश्राच

क्ष्रिवः सभागि के 'न्युन् 'ग्री 'श्रुवा 'नश्रूव 'र्ड स' प्यत् हीं हैं 'से 'न्ये के 'सर' व्याप्त हीं हैं 'से सम स्था हैं हैं 'से सम सम हैं हैं 'से सम सम हैं हैं 'से सम हैं हैं हैं 'से सम हैं हैं सम हैं हैं 'से सम हैं हैं 'से सम हैं हैं सम हैं सम हैं हैं सम हैं हैं सम हैं सम हैं है सम हैं हैं हैं सम हैं सम हैं हैं सम है सम हैं सम है सम हैं सम हैं सम हैं सम हैं सम हैं सम

५८:५ (क्रॅब्रन्थनाक्रॅन्इन्चेन्क्रुनानस्यान्ध्यान्ध्याप्टसायान्ध्रान्त्रेयान्यस्य न्त्रेन्त्रेयान्यस्य न्त्रेयान्यस्य निष्ठात्रेयान्यस्य निष्ठात्रेयस्य निष्ठात्रेयस्य निष्ठात्रेयस्य निष्ठात्रेयस्य निष्ठात्रेयस्य निष्ठात्रम्यस्य निष्ठात्रेयस्य निष्ठात्रस्य स्वतिष्यस्य निष्ठात्रस्य स्वतिष्यस्य स्वतिष्यस्य स्वतिष्ठात्रस्य स्वतिष्यस्य स्वतिष्यस्यस्य स्वतिष्यस्य स्वतिष्यस्य स्वतिष्यस्य स्वतिष्यस्य स्वतिष्यस्यस्य स्वतिष्यस्यस्यस्य

च्याः स्त्राः स्त्रुवः स्त्रुवः स्तरे रहेन्। ययः स्त्रीः प्राप्तः स्त्रुवः स्त्रे र्याः स्त्रे रात्रे रात्रे

यह्रेट्रायंश्वर्यादःश्चेट्रायःवह्रियाश्वर्यस्याःवःस्याश्वर्

महिरा (शुक्ष महिर न य न्याद मद न दे हैं व्ये न सदे हे महिर न न या न पा न र ) दे ।

र्कें दायायार्थे मायार्थी वार्यायवदा।

वर्तेत्रमशर्चिमासरःश्चेत्रमरःसहि।।

ने व्यामें अभावभाष्ठी व्याभी

रेअ ग्रीशर्म प्राप्त में निष्य प्राप्त में निष्य

यादाळे स्टायी खुश्याया दी। ळॅट्टा श्रें याश्रास्त्र या श्रें या श

ने भूर में अअ प्रश्नाति के रूट में श्रुश्य या ने रिया के मार्थ के स्वाय प्रश्नाति के स्वाय के स्वाय

न्गायः नः के 'बिना'र्धेन्' कुर' बन्' ग्यार'क्षेन्' प्रकान्गायः क्षुन्' त्यायहिना व्याप्तर क्षेर नेना व्याव्या विना'र्धेन् कुर' बन्' ग्यार'क्षेन् प्रकान गायः क्षुन्' त्यायहिना व्याप्तर क्षेर

नविःमः(देन्यःभूनानस्यासेद्वेदःवदेन्वक्तस्यास्यादन्ववःवदःदेन्स्यासः)यःनवि

५६६ (वसः श्रुवःववेःदेसःवावाशेः स्रावसःववेः नादः वनायः सुसःसे स्रसःसे वने वः व्यविसः वावसः वावसः वावसः श्रुवः वस्वासे दः वा

श्रेवायश्रद्धिरःश्रुवायश्रयः सेत्। । स्री श्रुरः सेवायरः हेवायः सेत्। । स्री श्रुरः सेवायरः हेवायः प्रतः । श्रेवायश्रस्थे स्राप्तरः हेवायः स्राप्तः स्री।

ययिर्दिन्याधित्री सेसस्प्रिया केत्रिं इसस्य प्यापित्र की विष्

निक्रां (देशवासे समान्यवासे देशवासे प्रतिमान मान्यवासे स्वर्था विक्रां विक्रां

शेश्वर्यात्त्र स्थारं हुँ त्र श्रें व्यायां वर्षे त्र श्रें व्यायां वर्षे त्र स्थारं हुँ त्र श्रें व्यायां वर्षे त्र श्रें त्र त्र स्थारं त्य स्थारं त्र स्थारं त्यार स्थारं त्यार स्थारं त्यारं त्यार स्थारं त्यार स्थारं त्यारं त्यार स्थारं त्यार स्थारं

यदे वे जिट कुन से सम्ब्रह्म स्था श्री । स्व श्री स्वापा व न जिट हिन । न स्व श्री स्वापा व न जिट हो न जिट । स्व स्व स्व स्व सम्बर्ध स्व न जिट हो न । स्व स्व सम्बर्ध स्व सम्बर्ध स्व स्व सम्बर्ध स्व सम्बर्ध स्व सम्बर्ध स्व सम्बर्ध स

श्रुंदाहें उत्पदि दे जुद्द क्वा ग्री से समाग्री स्विन सामित

यः बद्धः प्रसः ब्रेद्दः व्या वर्षेद्वययः द्वयः प्रसः स्रोदः व्या व्या व्या वर्षेदः व्या वर्षेदः व्या वर्षेदः व

नवि'न'(देशक् सेसस्दिस्ट्वेंद्वित्यायाः ह्वित्रस्त्राच्याः हेत्रम्यायाः हि

ने न्या श्री प्रयागुन श्री या निया श्री प्रयागी व स्था प्रया श्री प्रयागी व स्था प्रयागी व स्यागी व स्था प्रयागी व स्था प्रया

नर्हेन'त्युर्याची'स्रम्नेन'र्हेन्याश्चेय'न्द्रा इन्याद्रात्राचेय' निव्याचीयार्श्वेद्रायात्रस्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्

५८:में (वर्ड्ड व वशुकाशी सम्भव मीव क्षेत्रका श्वेतान ) वा वाहिका

५८:में (क्रूनमानविःर्समान बुदानवेः क्रूनमाम्बदाना) दे।

श्रेश्वराष्ट्रवात्र व्याप्त व्यापत व्याप्त व्यापत व

श्रेश्वर्णात्रम् श्रेष्वर्णात्रम् श्रेष्वर्ण्यात्रम् स्थित्रम् स्थित्यम् स्

रे स्ट्रिंस अश्वर श्रुं नाय श्रूर या है।।

### युरायेत्र'न्नर'नश्चर'र्ध्रनश्चर्यायेश'ते। । नर्डेत'त्युर्थ'श्चेत्र'र्ध्वर'र्ध्वर'र्ध्वर'र्ध्वर'र्ध्वर

ने स्वराद्यो निर्वे के सञ्जून मुका स्वराधिय निर्मा निर्मा

স্ট্রিশ্ব (ক্রুশ্বর স্বর্ণ স্থান বি

र्श्वराये क्रियं अप्तर्भ विस्तर विस्तर स्थित अप्तर विस्तर स्थित अप्तर स्थित अप्तर स्थित अप्तर स्थित अप्तर स्थित अप

८८.सू.(श्रूषायातुःश्रूष्ययाः)यायातु।

यत्। व्यान्त्राप्तायान्ता वयमायुःन्ता स्यान्त्रे

८८.स्.(श्रूबानवुःलीवा)ता.याश्रीश

प्राचित्रं (१०००० विष्णः विष्

याश्वामः (व्यायान्द्रायात्र्यात्र्रम्यात्र्रम्यायात्रम्यायाः)ह्य

यन्यायीश्वात्र्यस्य स्वात्र्यस्य स्वात्रस्य स्वात्यस्य स्वात्रस्य स्वात्यस्य स्वात्रस्य स्वात्रस्य स्वात्यस्य स्वात्रस्य स्वात्रस्य स्वात्यस्य स्वा

र्श्व क्रव नित्व विश्व क्ष्य नित्व क्ष्य नित्व क्ष्य क्ष्य

प्रात्में प्रम्याप्त्रवादे विष्णा प्रभेष्ट्रे प्रम्य विष्णा विष्

यद्याने श्रें व द्रा द्रा श्रें र प्या । के अप्या के अप्या के अप्या व के अप्या के अप्य के अप्य के अप्या के अप्य के अप

यद्यान्ते स्ट्रेंन प्रत्न स्थान स्य

বাইশ্বাম (ব্ৰী ক্রু মার্চার) বি

न्मो नदे सुँग्या वे स्ययं उन् ग्री।

इन्तर्धेश्यम् मुन्यश्यागुर्या

न्यो निर्देश्यामाने वस्त्र स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्य स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वा

र्श्वेत्रसेदेःसर्दे त्यसःग्रस्ट्रसःस्।

নাধ্যমান (য়য়৸য়য়৸য়ৢ৽)৽য়৸য়৾ঢ়ৢয়

नमून'म'र्ना नन्न्'मर्दे ।

५८:स्.(वक्षेव.स.)स्री

ने धिः इन्नःहमः हुन्।

इसःश्चेत्रव्ययातुःनश्चेंस्रयाययार्था ।

क्रिंश्या स्वार्थित स्वार्येत स्वार्थित स्वार्थित स्वार्येत स्वार्येत स्वार्येत स्वार्थित स्वार्येत स्वार्येत स्वार

गहेशमः(वन्ननःवः)यःगशुर्या

यत्रेश्वास्त्रियः यत्र्यास्य स्वर्धः यात्र्यः यात्रियाः तृत्याः स्वर्धः यात्रः यात्रः यात्रः यात्रः यात्रः यात्र यत्र स्वर्धः स्वर्धः यात्र्याः स्वर्धः यात्रः य

५८:सु.(वर्ड्स.सदु.तस्तर्धत्वस.चस्तर्भः)र्द्धा

स्वायस्य भेर्या स्वयं स्

## 

तर्वे नं इसमा मुं सुर्या न्यूय प्राप्त के सम्म के नाम के

स्वायस्य सर्वे प्रस्ति स्वा ।

वार प्रत्य प्रस्ति प्रस्ति प्रस्ति स्वा ।

वार प्रत्य प्रस्ति प्रस्ति प्रस्ति प्रस्ति प्रस्ति ।

वार प्रत्य प्रस्ति प्रस्ति प्रस्ति प्रस्ति प्रस्ति ।

वार प्रत्य प्रस्ति प्रस्ति प्रस्ति प्रस्ति ।

वार प्रत्य प्रस्ति प्रस्ति ।

वार प्रस्ति प्रस्ति प्रस्ति प्रस्ति ।

वार प्रस्ति प्रस्ति प्रस्ति प्रस्ति ।

वार प्रस्ति प्रस्ति प्रस्ति प्रस्ति प्रस्ति ।

वार प्रस्ति प्रस्ति प्रस्ति प्रस्ति ।

वार प्रस्ति प्रस्ति प्रस्ति प्रस्ति ।

वार प्रस्ति प्रस्ति प्रस्ति प्रस्ति प्रस्ति ।

वार प्रस्ति प्रस्ति प्रस्ति प्रस्ति प्रस्ति ।

वार प्रस्ति प्रस्ति प्रस्ति प्रस्ति प्रस्ति प्रस्ति ।

वार प्रस्ति प्रस्ति

यद्यः तर्श्वर्यः त्रव्यः त्रव्य स्वयः त्रव्यः त्यः त्रव्यः त

স্ট্রিশ্সামা (বাইবা-দু-দুন্ন্ম-বরি-অমাবর্মাবর্মাব্মার্মার্ম)বী

न्ने नदे के साथ में समाय न्या समाय क्षा समाय क्

मु के 'दे 'न बद 'न से या न ते 'या है दे 'से दे 'न से 'न से दे 'न से 'न से दे 'न से 'न से दे 'न से 'न

मुयानवे अनुवानव्यानदे नानेत अया शुन्नो नया वसूना

श्चे नावशः क्चे : लेट प्यद्यायः दे : न वह द : प्यदः द : त्यः न दे : न वह द : न वह : न

याङ्गाः हुः त्यार्थः यथः विद्रायरः विद्रायरः विद्रायः वि

ग्निवःहेदेः श्रे अः तुअः ध्यायायः प्रायायः तुअः प्रश्वेवः तुः हु अः श्रयाः वेदः ।

र्ना हुन्दे ने दे से भी भारत हु भारत दे उत्तर भारत हुन हुन भारत हुन भारत हुन भारत हुन भारत हुन भारत हु

दनर नदे रया में अर्ट सुर में अर्म सुन्न भाषे र् अर्म माम्या अर्थित।

निव हित्यम् निव श्वामा ग्री सामित्र श्वामा से प्रति स्व स्व मानि स्व स्व स्व मानि स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व

भूक्षेत्राम्बर्धित्राम्बर्धित्रम्भः मिन्द्रम् न्याः भूक्ष्यः मिन्द्रम् मिन्द्रम् भूक्षेत्रः मिन्द्रम् स्वितः मिन्द्रम् स्वितः स्वतः स्वितः स्वतः स्वितः स्वतः स्वितः स्वतः स्वतः स्वितः स्वतः स

यक्षत्रत्रात्री क्ष्यः क्षेत्रः व्यास्त्रीय व्यास्त्रात्रे । व्यास्त्रीय व्यास्त्रे व्य

नवे'म'(सह्यानशुना)दे।

ने नमान्यो या में मान्य निमा

गुरुपारित्र निर्मेश्वर मार्च

ने न्य प्रत्य प

नर्हें न्यानहन्यान्या नहस्रश्वर्थात्या वहस्रश्वर्थात्या वहस्यान्य वहस्य विष्या विषय विषय विषय विषय विषय विषय व

८८मू (वर्ष्ट्रव्यावह्रव्या)यायहिया

र्वेग्रायम्यम्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्व

५८:सु. (ज्याकासम्यम्याकास्य अ.स्यामः)सु

र्रे हे कुषायळंत्र कें पाधिया।

न इस्रमात्रार कुषान भूमा पर्

यथा द्यं स्वाकृते त्यं वार्षा स्वाकृत स्वाकृत

यःश्र्याश्रायःश्र्याश्रायःश्र्याश्रायः श्रेत्रः । विश्वायश्रितः विश्वायः व

प्रस्थान स्थान स्

त्रायायद्वाप्यदे प्रत्ये स्तर्भ में त्रि प्रति स्तर्भ में त्रि प्रति स्तर्भ म्या त्रि प्रति स्तर्भ में स्तर्भ स्तर्भ में स्तर्भ स्तर्भ

श्चेग'न्द्रश्चा'नश्चय'द्येय'न्द्रश्चा । श्चेग'न्द्रश्चा'नश्चय'द्येय'न्द्रश्चा ।

# गान्त्र-१८न्यू अः सुदे रु अः ग्राट दि।

न्यन वश्रुम ने प्यम श्रुम श्रीम श्रीम ।

য়्यानेति छोन्। यश्याविष्टे प्राण्य प्रश्ची या प्राण्य प्राण्य

गहिरामा (नहस्रमान्यान्त्रमानहत्त्रमानहत्त्रमाने

नसूर्याने नसूर्याम्या र्रे स्ट्रिंग

५८.स्.(यर्भगःधेःयर्भयःगः)द्री

यशन्दर्हेन्सेंद्रशन्त्र स्राम्

नश्रमःर्भःद्रनाःयःदःकुयःश्र।

त्रुत्राः कृषाः त्रुत्रा । त्रुत्राः स्रेत्राः कृषाः त्रुत्राः स्रेत्राः स्

गहेशमः(अर्क्नन्नन्न)याग्रुम

यश्रामुद्धा । रामुयामुद्धा । ८८.स्.(पश्चित्रःक्चितः)त्रःयश्चित्रा

यश्राभी राक्त्र व्यक्ष विष्ठ व्यक्ष व

५८:सॅ (वशक्तेरक्षवर्ष्यवर्ष्यवर्ष्य)दे

नन्गान्तेन्याचेयाः तुरुः नुरु।

दर्ने हे त्यया ग्री प्रमुख हेर्।

चित्रं क्षेत्रभा चुः तर्रा देशः यदे विष्य अधि । चुक्रं क्षेत्र क्षेत्

गहिरामा (दे स्मानीदामित सक्ता)दी

शेश्रश्राह्म नियानियायात्री देश्रियायम् मानियायस्य

हैंव सेंद्र स्वत्ये द्व स्वा हिव स्वत्या ।

ररःर्देवःश्चरायरःश्चेःतुरुष्यश्च

वर्शे नयान्या सूर से नुया है।

ने नमान्यायी सार्वे मुर्वे ।

हें व स्थान स्थान

मीशमाब्दर्भेद्रमी:ग्रुग्यप्देशमाय्द्रम्मा

মাপ্তমান (বাৰ্ষ ক্রীন্মর্মের থকা অমাত্মতা দ্বিম্বেইর মরি দেক্ত্র বার্ত্ত বার্ত্ত

यालवः प्रयाप्त्रस्य स्थितः स्थाः चे प्रयाप्तः स्थाः स्याः स्थाः स्याः स्थाः स्याः स्थाः स

ग्वतः प्रदेश्विदः यश्चार्श्वा । ज्वतः प्रदेश्वाद्यां प्रदेश्वाद्यां प्रदेश्वाद्यां प्रदेश्वाद्यां प्रदेश्वाद्याः विद्यात् प्रदेश्वाद्यात् प्रदेश्वाद्

বাট্টপ্রমে (ব্রুশন অন্ন ক্রুল ক্রুন) অ শ্রো

तुश्रासायाम् कृषासे माने स्वित्त स्वत्त स्वित्त स्वत्त स्वित्त स्वत्त स्वित्त स्वत्त स्व

५८:में (तुरुपायायाम् कुषासेन् प्रवे हेराया)दे।

नी निते श्रुवान्दर श्रुवा ।

वियानयान्त्रः स्ट्रीत्रः स्ट्रीत् । वियानयान्त्रः स्ट्रीत्रः स्ट्रीत् । स्ट्रीत्रः स्ट्रीत्रः स्ट्रीत् । वियानयमः स्ट्रीत्रः स्ट्रीत् । वियानयमः स्ट्रीत्रः स्ट्रीत् । स्ट्रीत्रः स्ट्रीत्रः स्ट्रीत् । स्ट्रीत्रः स्ट्रीत्रः स्ट्रीत् ।

हें त्र स्थान है स्थान स्थान

गहिरामा (रक्षिया श्रमायदे स्वता व्यव ) दे।

हान्यः हियानानश्चित्रः न्याद्या । केन्द्रास्त्रं स्थेश्वराम्यान्यः ह्याद्याः स्थिशः । केन्द्रास्त्रं स्थेश्वराम्यान्यः । स्वराम्यान्यः स्थिशः न्यान्यः स्थिशः । स्वराम्यान्यः स्थिशः न्यान्यः स्थिशः ।

# नन्गाने सुरान्यास्या गुरान्।

### विश्वश्वाश्वराक्तियादर्देन् चवन्यान् वक्त्या

यहित्रस्तिःश्रॅन्यानश्चेत्रात्तिः त्रात्तिः त्र्यात्ताः श्चेत्रात्ताः स्त्रात्ताः स्त्रात

মার্ম'ম'(নান্ত্র'র্রিহ'র্রির'র ক্রুঅ'অ'নার্ম'ন্র-র্র্রার')বি

नन्नानीशःगुद्राथशःकुषःगुःश्रे।।

नन्गायमासुःष्परःकुषःसेःग्रा

कुषाना से दावोदे : सुरा नद्या वी सा

## ८.केषातरी.जायोषशासर.वी।

मिन्स्य प्रत्य प्रत्य

८८:म्.(११४:श्रूरश्रायद्गारम् वातास्त्रीताताः

दर्शे मार र कुष की श्राप्त के अप ते के अप ते की श्राप्त के अप ते

तर्शे न मान् से सस् वित्सासि र मुला मुला मुला में सान हैं सि न मान् से सस् वित्स स्वित न न न न स्वित स्वित न न न न स्वित स्वित स्वित न न न न स्वित स्

गहिरामा (देवे के राप्येग्रामा) दे।

क्रॅब्रॉड्याट्याट्यायाची याचिट्याची प्राचिट्याची याचिट्याची याचिट

# 

ग्रुअपा (देश्यानस्येन्याना)दे।

८.किय.क्रीश्राप्तरश्चरायादःश्चरावदा। ट्रे.लट.ट.क्रियावदायाद्वेयाश्चरा। ट्रेशवर्याक्षेत्रःसःश्चर्या।

हें ब्राइट्यायित्य क्षेत्र म्यायित्य क्षेत्र म्यायेत्य स्यायेत्य स्याये

स्य (पाहेद संदे र कुष की सद प्रवंद ) दे।

चार-विवादक्षण्य उत्राधित विवाहित हें त्र क्षेत्र स्वाहित स्वा

५८:में (१४ व. स्ट्रांट अ. मी वेष स्त्रें व अ. व श्चे ट्रांच र मी वार्ष

र्वि: नः स्वां मा अंति स्वां

गहिरामा (देवे द्वर दुर इर बद र इस प्यर से व्यू र वर वु न )दे।

१८८ के स्वर्धे १५ वर्षे १५ वर

### ब्रॅटशरपंदेर्ननररनु से विश्वर नरनु दें।

गशुस्त्राचा (महेन सं नहन सं ते नस्य सं महिन सं र न्य स् न से नु सं र न्य से न्य से र न्य

বার্ম'ম'(ব্লাব্দের ইন্ন্র্ন্মা) আবার্মা

५८:में (इसक्षेत्रायासी क्षेत्रायम प्राची नायायन प्रमान्याना) दे।

हेर्-ब्रिविन्दे प्रव्यक्ष प्रदेर्न् प्राक्ष्म । प्रवादे प्रवाद प

त्रेश्वातित्वे । त्रित्त्वे । त्रित्त्वे । त्रित्त्वे । त्रित्त्व । त्रित्व । त्रित्त्व । त्रित्व । त्रित्त्व । त्रित्त्व । त्रित्त्व । त्रित्त्व । त्रित्त्व । त

गहेशःमः(वन्यन्यः स्वायः न्यः न्यान्यः न्योः नः वश्चन्यः । दे

यहेगांहेत्राम्ह्रस्रांश्वरांश्वरांश्वरांत्रेत्रांत्रेत्र्त्र्वरायाः स्वायाः विद्यायाः स्वायाः विद्यायाः स्वायाः विद्यायाः स्वायाः विद्यायाः स्वायाः स्वयाः स्वायाः स्वयाः स्वयः स्वय

हिर्। नरे नर्षेन्यते देशन्यते न्या से न्या से न्या से स्था से

शुःशितेःशॅनःकगशःश्वनःहेःश्वे।।
वर्तेनःमःह्मश्राण्याःशःहें स्वेनःव।।
ह्यःश्वेनःचनेःवःवेःनःवे।।
नर्शेनःन्वश्राण्येशःश्वेःश्वेःहें स्वर्था।

याश्वारा (न्यवनवे क्ष्र्वश्वा क्ष्र्य) वे ।
वे त्या के त्या क

### यशने यापर यह्या धर ह्या

यशरे १ द्वा य १ द्वा य १ दे वा य १

निवे म (इम्बदे क्रूबका)य महिका

रे:विमार्देर:न:५८। महन्देर:नर्दे।

५८:सॅ (रे:विवार्दरःवः)दे।

क्रूनमानुसमान्दरहेमात्रेयात्।

### श्चरः इवे देव दुः देव प्राप्त वा ।

गहिरामा(नहनर्नेसन)दी

येग्रायम्'वेद्यन्तुं'य्यन्ता

धे अपर्दे द्रायम दे ख्रा छ।

येग्रयम्वेत्रप्रभाद्येष्य प्रम्य वित्रप्रभावेत् ।

गहिरापा (इवायाद्याने वाववेदा श्री वाववेदा श्

चनाः वित्रम्भूम् स्वराधितः । इत्रम्भूम् स्वराधः प्रम्याः वित्रम्भूम् स्वराधः प्रम्याः वित्रम् स्वराधः प्रम्यम् स्वराधः स्वराध

५८:सॅ (वना:सॅ५ खुर ब्रूट वर)दे।

त्वनःक्रेटःद्यःद्रः ख्रुवः ठेवाः ह्या । विष्यः देरः स्यावः ख्रुवाशः या विद्या । हेवः श्रेट्रशः सर्वेदः यशः या वुरः चः विद्या । हेवः श्रेट्रशः द्याः क्ष्र्यशः यह चर्शः यदः चह्याशा।

यवन सं निहित्या स्वास स

गहिरामा (इक्स म्हर्ने सम्बद्ध सञ्चर स्ट्रम्यः) दे।

यदियायाययाद्यी सुराचुराया ।

# ने प्रवित प्रवेषिय अर्के व भी मात्र प्रवेष प्रवेष

न्या में निर्देश के स्वार्थ के स

বাহ্যুম'ম'(হর প্রশ্রী শার্ট শার্ম শ্রী শার্ম শ্রী শ্রী শার্ম শার্ম শ্রী শার্ম শ

हेश्याव्यात्यात्रम्त्रम् । र्यादे सुराव्यात्यात्रम् हेर्याद्यास्य । रेयादे सुराव्यात्याद्यास्य । हेश्याद्यात्यात्याद्यास्य ।

हैंगान्य-बेट्री हि.क्ष्र-श्चित्राच्यात्र विचान्य-विक्यात्र विचान्य-विचान्य-विक्यात्र विचान्य-विचान्य-विचान्य-विक्यात्र विचान्य-विचान-विचान्य-विचान-वि

धुरमासरानगरानदे र्सूरानगुराया ।

# रयः शे 'र्श्वे वा श्राध्य श्राध्य । विष्यं श्री वा श्राध्य । विषयं श्री वा श्राध्य । विषयं श्री वा श्

ख्रियायर ग्रीयायाय विष्ट्र विष्ट्र प्राच्याय विष्ट्र प्राच्या विष्य विष्ट्र प्राच्या विष्य

निन्म (हेशन व्याप्त सम्बन्धिन सम्बन सम्बन्धिन सम्बन सम्बन्धिन समिति सम्बन्धिन समिति समिति

दे न्यान्य स्थान स्थान

हें न्या स्थानिक विश्व के स्थानिक के स्थानि

हेश्यान्य द्वारान्य से प्राप्त स

स्मा (देवायायदे त्ययायायन द्यार म्या भेटी

है 'क्षेत्र'यावश्र श्रम्भवश्र 'वर्चे 'द्रम्य 'या । इव 'या में श्रम्य श्रम्य श्रम्य प्रम्य । इव 'या में श्रम्य श्रम्य श्रम्य । इव 'या में श्रम्य श्रम्य श्रम्य । इव 'या में श्रम्य श्रम्य श्रम्य श्रम्य । इव 'या में श्रम्य श्रम्य श्रम्य श्रम्य श्रम्य ।

हे स्ट्र-रहेश्यायक्षेत्र विद्यान्त्र न्या हेत् प्राप्त विद्या हे स्ट्र-रहेश्यायक्षेत्र विद्यान्त्र विद्यान्त्य विद्यान्त्र विद्यान्त्र विद्यान्त्य विद्यान्त्य विद्यान्त्य विद्यान्त्य विद्यान्त्य वि

गशुस्रासः(र्श्वेन्यम् मुन्यस्य प्रमाक्षेत्र न्वर त्र्याम् केस्य प्रमाने स्वाप्त स्वाप

क्षेत्र्याच्यान्यत्वे विषय्याः विषयः विषय

गहिरामा(नमेर्न्नभूरमा)दे।

दे:श्रम्भः तुर्दे वर्षे वर्षे

### ने भूर व वे प्रयुक्त सर प्रयुक्त ।

है 'क्ष्र- चु 'बे 'हे 'ह्य हु पर्वे 'वर्चे 'च प्राया के प्राया के

 स्वायस्य प्रस्ति । स्वायस्य । स्व

महिश्रामहेत्रस्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य महित्य प्याने स्थान्य स्थान स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य

मुख्यान्ति महिन्दि राष्ट्र रा

इसर्ग्रेलर्देवरगहेररन्युनरमञ्चरलेवरण। दरसें र रह्मा दर ल्या य र सम् सम् स वनद्रायश्चित्रव्युशःहित्रायः स्वायश्चरा । क्रिन्यानिकंटानिकेन्द्रिन्यम्यायानिकेट्रान्य नश्रु नदे केंग्। शु ग्वर पर्दे ।

गहिरामा (लेड्दे सळंदा) दे।

नुरः कुनः शेस्रशः दूर्वः भेरे दुन्यः यः यहा नर्डेन द्युयान सून पाने या गुरा से पे तुरन तुन परि।

त्रुट:कुत:शेसश:८्यदे:श्रुट:पायायह्या:प्रदे:₹स:प्रन्ट:श्रुय:श्रूय: बे दुः नर् द्रायदे द्रोवाय पर्दे॥॥

# येतु नकु न्या नश्रय मान्व नश्रव या

म्बार्यात्र्व सेंद्र द्वार्येद्व सेंद्र साधिव संदे वि माव्य में स्वार्य स्वार स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य

### इस्रायम्याधेम्या स्वाप्त्रम्य

स्राचनित्याने स्राचनित्या स्रित्य के स्राचनित्र स्राचन

गहिरा (बि मान्या में से सम्बद्धा में मान्य सम्मान्य समान्य समान्

# दे 'नश'वहेग'हेद'श्चर'गु'वेर'।। इस'सर'हेंग'स'र्धेरश'शु'रेंर।।

ते न सं त स्य प्रति वित्र प्र

यहिमान्हेन ग्री प्रदी प्रदी स्थान क्षा के स्थान क्षा क्षा के स्थान के स्थान के स्थान क्षा के स्थान क्षा के स्थान के स्थान क्षा क्षा के स्थान क्षा के स्था के स्थान क्षा के स्थान क्षा के स्थान के स्थान के स्थान के स्था के स्थान क

८८.सू.(वह्नाहेब.मू.वर्.वह.सून्याम्बर्या)प्याविश्व। यहेवा.हेव.प्य.कवाश्वायदे.मू.ह्र्याच्यायद्यायद्यायद्यायदे। व्ह्रंप्य.क्या

५८.स.(यहेबाहेबाकवाशमंदेक् र्रेशमबुराम)दे

क्रवाश्वायदेग्रीम्द्रम् क्षेत्रः श्री

गहिराम्य (दे हे स्ट्रम्य स्वरं विष्यं )य पति।

यहित है अन्त्रीय अन्तर निवास यहित स्थित स्

५८.स्.(बहेब.स.स्यावबरावः)यापिकेया

ळग्रथाश्वरायम्यान्ययायान्य क्यायायाश्वराधीत् । इयायाच्या ५८:सं (क्याश्वर्यक्षराचरायानुस्रश्वराया)दे।

ने नमायने नमायम्मा

स्राम्याययायदी सुरान्धनायरा ।

यास्रावसायसार्वमान्यसायकन्यायन्ति। स्वायम् स्वायस्य स्वयस्य स्य स्वयस्य स्वयस्य स्वयस्य स्वयस्य स्वयस्य स्वयस्य स्वयस्य स्वयस्

गहिरामा (क्रम्यामा क्षेत्र चेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षान बुदाना) दे।

वि'यावर्गः रचः तुः थ्वा रचिः थ्वा अर्थेटः यो या ।

वहिना हेत कना राज्य से दाया सिंद निन्दा ना राज्य ना ।

 वर्षीयः है। ट्रें त्याः क्यायः ययः श्रीटः सूर्यः त्याः यद्यः त्याः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः व

বার্ট্ট শ'শ'(বার্ট্টর র্ন্ট বর্ষ্ট্র প্রবিষ্ট্রবর্ষ) অ'বার্ট্ট শা

यः कवार्यायः श्रुदः वर्षि । यः कवार्यायः श्रुदः वर्षि ।

८८: में (बर से सम्बन्ध क्ष्य क्ष्य

८८.सू.(क्यामानायुःक्षेत्रान्ध्यामा)ता.जी

त्र्रेन्'स्त्रेन्द्रम्'स्य प्रम्पा त्र्रेन्'र्ध्व ग्री श्राण्य श्री प्रम्पा व्याप्त श्री प्रम्पत व्याप्त व्

श्चीक्षुःविमाश्चःहमान्य।

षर:द्या:ळग्राःसर:होद:स:षेँद्या

नेशकें कें स्वर्शकें मध्या है।

श्रुमा'रा'अर्बेट'तर'र्थेट'से'त्युर्ग

विया याहेत प्राप्त हे राज्येया राज्य प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प

र्षित् श्रुवा प्राप्त कवा श्राप्त ने श्राचे । इस श्रुवा के प्रत्य । स्वि प्राप्त । स्वि स्व । स्व प्राप्त । स्व स्व । स

स्रास्त्रित्वं ते 'न्यान्से 'वशुन्।

षीत्रग्रह्मा स्वाप्त स्व स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप

धीट्र-तुःर्वेद्र-व्याः अर्थेद्र-व्याः वेद्र-विद्याः वेद्र-वेद्र-वेद्याः अर्थेद्र-विद्याः विद्याः विद्याः विद्य वद्याः विद्याः विद्याः

না প্রমানা (য়না শুনা ক্রিনা য়৾৽ঀয়ায়) বি

सर्वेट.लट.र्ट्सश्चर.सर.शु.च्यीर.चश्री

स्र-निव से न निव मार्य निव निव से निव

श्वापित निर्मा से स्वापित से में प्राप्त में प्राप्त में प्राप्त से प्राप्त

नविःमः(वर्षायामेग्राचे्र्यः)दे।

स्रम्भ १३८ व्या मा १३८ व्या १४८ व्या १४

# श्चिं नदे से सम्याग्य नदिया पर होता।

#### श्यर्धुःद्वःग्रुदःनदःद्युद्या

कुःसळ्तःदेशन् सेस्रान्त्रस्य स्थान्य स्थान्य

संस् (न्यावर्ड्ड मार्क्न मार्ग्व मार्ग्

# ने त्या शेस्र शायन प्रत्य ति मा मी शा

### कें पर्दे 'र्देव' से दायदाय पर्या ।

यर्नेन्'मदे'णुयाने'याओससासेससायनविष्विषाचीसाळे'विने'र्नेन् सेन्'सर'वन्वनर'वशुर'नस'न्य'वर्शेर्स्स्य कुन्'र्नेस'सर'वशुर'र्ने॥

निष्ठेशपः (क्ष्यप्रधेन्यत्वेशव्यश्वरः नः)यः निष्ठेश केशप्रधेन्यत्वेशव्यश्वरः निः क्षेत्रः निष्ठेश

८८.स्. (ध्यार्ध्यायायम्यात्रात्राच्यात्रेश

क्रुश्रास्त्रात्रभूत्रात्रा देवानशुप्तर्थे।

५८.स्.(क्ष्याचर्य्यभ्रम्भ)त्य.याश्रुस्रा

र्नेत्रकेत्रसंप्रदेगाउटाद्वारम्प्रत्वेत्रप्रदेश चित्रप्रदेश चित्रप

यायाञ्चेत्राविद्यान्त्रम् ।

प्राचित्रं विष्यं विषयं विष्यं विष्यं विषयं विषयं

त्री चीकानाका के स्वानाका के

अन् कियायिक्यायीयास्त्र त्या ।

प्युन्दं अः श्री अः तेः न्यून् प्यनः त्युन्।
नियान्यते यात्र अयाः विः त्यनः न्यायः।
अर्थः श्री विः अयाः विः त्यनः न्यायः।
वित्याः यतः यत्र य्यायः विः त्यनः श्री ।
नियाः प्यतः यत्र य्यायः विः त्यनः श्री ।
नियाः प्यतः यत्र य्यायः विः त्यनः श्री ।
नियाः प्याः विः ययः यत्र विः यनः श्री ।
नियाः प्याः विः ययः यत्र विः यनः विश्वाः ।
नियाः प्याः विः ययः यत्र विः यनः विश्वाः ।
नियाः प्याः विः ययः यत्र विः यनः विश्वाः ।
नियाः प्याः विः ययः यत्र विः यनः विश्वाः ।
नियाः प्याः विः ययः यत्र विः यनः विश्वाः ।
नियाः प्याः विः ययः यत्र विः यनः विश्वाः ।
नियाः प्याः विः ययः यत्र विः यनः विश्वाः ।
नियाः प्याः विः ययः यत्र विः यनः विश्वाः ।
नियाः प्याः विः ययः यत्र विः यनः विश्वाः ।
नियाः प्याः विः ययः यत्र विः यत्र विः यसः विश्वाः ।
नियाः यत्र विः य

ने शः कुं नः श्रेः नहत् । यश्ये न् विष्णा व

মাঝুম'ম'(दे'অশপর্শমায়ীর্সনাউদামার্কিদ্যামার্স্কুমানা)বী

यह्न त्या स्वा द्वा । इसदाया द्वा यह स्वा । इसदाया द्वा । स्रेश्व नहें न्द्रावित विश्वे॥ व्यावित्रा श्रेश व्याव्य व्यावित व्याव्य व्यावित व्याव्य याव्य

म्बद्धान्य स्त्री स्वाप्त स्व

गहेशःमः(क्ष्यःमः)दी ने स्वरंभन्तमःन्यान्यः महेवःम। ने शंके सुरंभरः वशुरः चरः वन्।।

गहिरामा (देश्वर नदेश्वर )दे।

नेश्वायान्त्रमार्चेत्रसम्बद्धाः निष्णायान्ते विष्णात्रस्याः नेश्वायान्ते विष्णात्रस्याः नेश्वायान्ते विष्णात्रस्याः

त्रिमामास्य स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य

स्त्रिं त्याद्रायात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात

भूनशःदग्रास्त्र त्राद्यादः नशः सग् । नरः ग्रुशः हे । ५ । उदः वद्देशः कः

महिश्वास्य (क्षेत्रेन्व्य क्षेत्रेन्व्य क्षेत्रेन्वय क्षेत्रेन्य क्षेत्रेन्वय क्षेत्रेन्य क्षेत्रेन्वय क्षेत्रेन्वय क्षेत्रेन्य क्षेत्रेन्वय क्षेत्रेन्वय क्षेत्रेन्वय क्षेत्रेन्य क्षेत्रेन्वय क्षेत्रेन्य क्षेत्रेन्य क्षेत्रेन्वय क्षेत्रेन्वय क्षेत्रेन्वय क्षेत्रेन्वय क्षेत्रेन्वय क्षेत्य क्षेत्रेन्वय क्षेत्रेन्य क्षेत्रेन्य क्षेत्रेन्वय क्षेत्रेन्य क्षेत्य क्षेत्रेन्य क्षेत्रेन्य क्षेत्रेन्य क्षेत

नन्नानि हेन्यर नग्र हे। नर्यानि हेन्यर से न्यानि हेन्यर से न्यानि हेन्यर से हिया । न्यानि हेन्यर हेन्य से हिया है। न्यानि हेन्यर है। न्यानि हेन्यर है। न्यानि हेन्यर है। न्यानि हेन्यर है। न्यानि है। न्या

यद्याः ते १ के द्रायः यदः दे १ वद्ये १ के अभ्यत्य यद्यां प्रायः भी । यदः विष्ण व्याप्तः भी । यद्ये १ के अभ्यत्य विष्ण व्याप्तः भी । यद्ये १ के अभ्यत्य विष्ण व्याप्तः भी । यद्ये १ के अभ्यत्य विष्ण व

वहेग्रयायाः भुति ।

याहेश्यः (क्ष्म्ययंदेह्यम्य) है।

दे 'नश्य ह्या प्रत्य क्ष्म्य क्ष्म्य

ने न्यान स्वर्धि त्या स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य

বাইশ্বান (খ্ৰান্ত দ্বান ) প্ৰান্ত ক্ৰ

वर्देन् प्रवेष्ण्यायाधीन् नर्हेन् नुः श्रेन् न्यान्ता नर्हेन् श्रून् श्रून् यामनः

५८:में (वर्द्द्र संदे खुवावाधेद नहेंद्र दुः से दुर नः)दे

यदी: द्वाः स्टाः चित्रः वितः दित्रः दिश्वः स्टाः चित्रः । ।

केतः स्वाः चेत्रः चेत्रः चेतः चितः । ।

केतः प्रतः क्षेत्रः स्वाः चेतः चितः । ।

केतः प्रतः स्वां वितः स्वाः चेतः चितः । ।

केतः प्रतः स्वां वितः स्वां वितः । ।

वावां वितः स्वां वितः स्वां वितः स्वां वितः । ।

वावां वितः स्वां वितः स्

ळ्याश्रासंदेः खुत्यादे न्या चुर्रा खर्रा खेर् नहें त्ये ने निर्मा की स्टान की कार्य ने निर्मा की श्रास्त की स्टान की कार्य निर्मा की श्रास्त की स्टान की स्

गहिरापा(नक्ष्रिं श्चर व्यायव निर्देश स्था निर्देश

यद्याः यः श्रूद्रः याव्यव्यः व्यद्धः व्याः य्यद्धः व्याः य्यद्याः प्रयाद्यव्यः व्यव्याः व्यव्याः व्यव्याः व्यव

### श्चन्यम् स्थान्यम् स्थान्यम् ।

नक्ष्र्निः श्चन्यः क्ष्माश्चरः श्चेः त्रेष्माश्चरः श्चेः न्याः व्याव्यः श्चेः न्याः व्याव्यः विवाः वि

ग्रुअपा (५५,५६६७,६४८५३११४) या ग्रेश

त्रुश्राप्तान्द्रवर्षेत्र्यात्राप्तान्त्राप्तेत्रात्त्रा देवे विद्राप्त क्षाक्षायम् स्री विद्रापति विद्राप

५८.स. (ब्रिश्मान्दरत्वर्शेषाश्चान्दर्भवाश्चान्द्रभावानशादेवे व्यतुःवहे व्याक्ववाश्चान्द्रश्चान्तरा )दे।

सेसस्य उत्र सेस्य प्र कें वास्य । कुत्य प्रस्य कुत्र से स्था स्था है। विषय प्रस्य कुत्र से स्था कुत्र से स्था कुत्र प्रस्य कुत्र से स्था है। विषय प्रस्य कुत्र से स्था कुत्र से स्था से स्

शेश्रश्रह्ण न्या श्री न्या स्थी न्य

महिरामा (दे स्व के राष्ट्रे द द में द रामा) दे।

यद्धिरः श्रेश्वरः र्यादः यद्धाः विश्वाः । श्रेशः राय्यादः यद्धाः यश्चरः यश्चाः । श्रेशः राय्यादः यद्धाः यश्चेशः श्रेशः विश्वाः । देः यविवः याने याश्चरः स्थ्वशः श्रेशः याश्चरशाः ।

श्री श्रा व्यक्षित्र विष्ठा व

येना व्रिंग:नरः ध्रव:मदे:क्षेता:नताः ध्रुय:व:प्परा व्रिन: से:केय:विर:वे: स्राह्मितान्य । सर्वेतायर स्विताय पर्ने विश्वाय विश्वाप्त विश्वाप्त विश्वापत विश्वापत विश्वापत विश्वापत विश्वापत यन्त्रान्ते धुन्देर येग्राया मह्न्य ग्राम् । दे न्या भ्री र विर से सहय यग्रय वर्गुर-वेश । ग्रीयायदे-दे-ते-हिन्गी-क्यायेश । यावयायाग्रीयाया न्नान्दरमहेव से होत्। हिसामसुदसर्से ।

निन्मः (न्नेवःमःनक्षेवःमदेःमवः व्यवः)यः य

मैंग्रायान्या वार्यान्या वर्षे वर्षान्या वर्षान्या वर्षान्या वर्षान्या वर्षान्या वर्षान्या वर्षान्या वर्षान्या हिन्यर न्दा के मधिर धदे हिन्यर र्से। ५८:सी (स्वयः) दी

यर.री.ब्रुजारा.रेर.र्जेय.राष्ट्रायाया.रा.रेया.ब्रुजारा.रेर.पब्रुयायाया श्रम्यात्रयात्रायात्र्यान्यम् । श्रु

> वयायावादी:द्याया ग्राह्मस्ययाद्रा । निरम्बय्यायी सूत हैं दायी होता। वर्शेम् अवः वर्ने निर्मान्तः।।

वसःवियाः भ्रवः ठेयाः यन्याः यावसः वयुन्।।

वनायावी से द्वायाद्वा मुस्ययाद्वा विदान्त्रस्य से सूत्र वहेंद्वा सर शे हो न पा प्रस्ति वा साम प्रमान न प्रमान न प्रमान न साम सम्मान स्थान न साम सम्मान समान सम्मान सम्मा धरावशुराश्रुवात् श्रुवाधराश्रुवे ।

महिश्रास (महरू) दे।

स्वानायाः श्वानितः श्वेतः प्रवया।
श्वानायाः श्वानितः श्वेतः प्रवान्य स्वान्य स्वान्य

यावसः त्रयाः निर्मान्य स्त्रयाः यावसः स्त्रयः स्त्य स्त्रयः स्त्यः स्त्रयः स्त्रयः स्त्यः स्त्रयः स्त्रयः स्त्रयः स्त्रयः स्त्रयः स्त्रयः स्त्रयः स्त

ग्रुअ'रा'(वळ्ळाववे हिन्यर)री

दहेग्रासंसेन्यात्राम्यात्राम्यात्राम् ।

यदी'य'(ऑऑरहेंग्यंवे'हिन्यंर)यादिया सुर्यायाः क्रयायायदेः यादेव स्थित्यं के स्

५८:में (खुरुष्यः क्रवारुष्यः वित्ववित्रं व्यः से से से हिंवा यः) दे।

### वसावियासर्वे र्श्वेस्य राजे दायरायग्राम्।

स्टानी खुश्रासी ह्ना स्वराधित प्या चुर न ने रहित हित्त स्वराम निवत स्वराधित स्वराधि

नद्रमानी खुरु वे तदि हे द्रायह । ।

महानी दे प्येर स्थान मा यह । ।

इत द्रा हे र त्यों से त्या र ना ।

दे स्थान र वे त्या र न र वे त्या र न र वे त्या ।

श्रे मार्ड दं निर्मे न

गिहेशमः(सहस्यवेशस्यक्षणस्य महेन्यं स्थान्ते स्थाने स्

55-र्सि (अहंदानिकायाकन्यास्य से निकाया) दे।

स्यायने माठिया स्याप्त स्याप्त स्याप्त । । स्याप्त स्य स्याप्त स्याप्

स्वानिक्षात्र्यं स्वानिक्षात्र्यं स्वानिक्षात्र्यं स्वानिक्ष्यं स्वानिक्षयं स्वानिक्ष्यं स्वानिक्ष्यं स्वानिक्ष्यं स्वानिक्ष्यं स्वानिक्यं स्वानिक्ष्यं स्वानिक्ष्यं स्वानिक्ष्यं स्वानिक्ष्यं स्वानिक्ष्यं स्वानिक्षयं स्वानिक्ष्यं स्वानिक्ष्यं स्वानिक्ष्यं स्वानिक्ष्यं स्वानिक्ष्यं स्वानिक्ष्यं स्वानिक्ष्यं स्वानिक्ष्यं स्वानिक्यं स्वानिक्ष्यं स्वानिक्ष्यं स्वानिक्षयं स्वानिक्ययं स्वानिक्षयं स्वानिक्षयं स्वानिक्षयं स्वानिक्षयं स्वानिक्षयं स्वानिक्ययं स्वानिक्

इट:बट्'क्षेत्र'ठेग्'ग्वत्र्यः विट'दक्के'त्रदर'देर्ग्रेशः योठेग्'र्र्युः विट'दक्के'त्रदर'देर्ग्रेशः विट'विट'दके'त्रे

মাপ্তমানে (বাৰ্থান্তিবানি বিবানি বিবানি বের্ল্র্র্র্নির্নি বিবানি প্রত্তিবানি বিবানি বিবানি

ययः न्याः तुः वे : लु या यः यः इयय। । हे : सु रः या व यः वे : यहे व : छे नः सु रा । हे : यहे व : यहे व : यहे व : छे नः सु रा । से : यहे : यहे : यहे व : यहे व : यहे व । ।

स्य प्राचित्र प

५८:सं (अविशासशाद्वेदायात्रभूदायरासेवाशाया)दे।

वहिया हेत गुत त्र या या पुर या वित पु।

दे:श्रेन्श्चेशन्त्रः विष्येशन्ति। ने:श्रेश्चेन्द्रं वे:श्रानियाः वा। ने:श्रेन्द्रं वे:व्याश्चर्श्वराश्चरः।।

श्चेश्वादित्यवित्वर्धः नःयश्वाद्याद्वर्धः नःयश्वाद्याद्वर्धः नःयश्वाद्याद्वर्धः नःयश्वाद्याद्वर्धः नःयश्वाद्याद्वर्धः नःयश्वाद्याद्वर्धः नःयश्वाद्याद्वर्धः नःयश्चित्रः नः वित्वः नः द्वितः नः वित्वः नः वित्

गहिरामा (इनेव्यानक्षेव्याने सव्यव्यव्यान) या गुरा

श्चान्त्रः श्री श्वान्त्रः या स्वान्त्रः स्वान्तः स्वानः

८८.सू. (ब्राट्य-ब्रीश-वार्ट्य-स्थान स्थान स्थान

निष्यः सेन्। विषयः सेन्। विषय

क्रवाश्रास्ट्रास्त्री निर्धासे निर्धासे निर्धासे निर्धासे निर्धासे निर्धासे निर्धासे निर्धासे निर्धासे निर्धास

मयर से द्रायम मुक्षान्य स्वर्थ में स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स

गहिराद्येयाना हिष्म स्थान स्था

त्रुन्त्रवित्त्रास्य न्याः स्याः । स्रुन्त्राचित्रास्य स्याः स्याः स्याः । स्रुन्त्राचित्रास्य स्याः स्याः स्याः स्याः स्याः । स्याः स्याः स्याः स्याः स्याः स्याः स्याः स्याः स्याः ।

माशुक्रामः (देशवानन्याक्षेत्रान्येक्षेत्रायम्भेवायमः रेवाश्याः)हे।

ने'न्यभ्वेन'तु'यद्ग्यद्ग्याद्ग्यद्ग्याद्ग्यद्ग्याः व्यायाः कंयाः कंयायाः कुर्न्यने 'श्चेत्र'हिर्म् । यायोद्गयः व्यययाः कर्न्वे श्चेत्र'यद्ग्याः ।

#### नद्याः हेदःयाडेयाः सःयद्या ।

महिश्यः (धेदां के व्यवानी द्वा हे ना ध्वरः का भाषा महिश्या का किया महिला के का प्रति प्राप्त के का प्रति प्रति प्राप्त के का प्रति प्राप्त के का प्रति प्राप्त के का प्रति प्राप्त के का प्रति के का प्रति के का प्रति के का प्रति क

यर्देन्'म'णश्चुन्'नवे'यत्र्य्यात्र्यं विष्यायः प्रम्यायः विषयः विष्यायः विषयः विषयः

८८:मूर्या व्यवस्था व्यवस्यवस्था व्यवस्था व्यवस्

५८:द्रीं (५मे न म न हें क मरमान्यकाम )दी

नम्यायायावन्ते गान्यम् मह्म ।

# रोसरादी'सहसामर'ग्विग्'धेर'र्र'।। रुष'नर'ग्रु'धेर'नर्हेंद'हे'ग्रु।।

मानेश्वासा (वर्त्तास्वरेनेश्वास्वर्यस्या) वै।
यहिमानेवायते प्रतास्यास्या (वर्त्तास्वर्यते प्रतास्यास्य क्षेत्रा ।
यदिना स्वर्यते प्रतास्य स्वर्यत् स्वर्या स्वर्यत् प्रतास्य स्वर्या स्वर्यत् प्रतास्य स्वर्या स्वर्यत् स्वर्या स

यर्देन् संस्था श्रेन् स्व संस्था हेन् यदी न्य संस्था हित्य स्वेन् संस्था हित्य स्वेन् संस्था हेन् संस्था हिन् संस्था हिन् संस्था हिन् संस्था हिन् संस्था हिन् संस्था हिन संस्था

गहिसामा (अस्यासँग्यायदेश्वीम् व्याप्त्रायम् )या महिस्य रूपः विष्यामा स्वयास्य स्वयापा स्वयः स ग्रस्थितः स्वयः के सामा स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः ।

५८:सं (१८ वित्रक्षित्रक्षेत्राच्यानस्याने हेशन्सेन्यानस्यानं)य ५५ ।

र्रे श्रुट्र न्यर श्रु न्यदे प्यत्र श्रु र प्राप्त हो । अत्र र त्र श्रु र प्राप्त हो । स्र प्र प्राप्त हो । स्र प्र प्राप्त हो । स्र प्र प्राप्त हो । स्र प्र प्र हो । स्र हो । स्

५८:स्.(इ.श्रट्स्चरःचीत्रक्ष्यं विश्वत्रक्ष्यं विश्वत्रक्षयं विश्वत्यवे विश्वते विश्वत्यवे विश्वते विश्वते विश्वते विश्वते विश्वते विश्वते विश्वते

र्षेत्रः सं त्रः सं त्र स् त्रः सं त्र स् त्रः सं त्र

## यारः यो 'र्ने त्र' र स्था प्रदेश श्राम्य । यह या श्राम्य प्या प्या प्या प्रदेश श्राम्य । इश्राम्य स्था प्रदेश श्राम्य हो ।

र्सं क्षत्र न्यां कुर्या क्षेत्र व्यां कुर्या क्षेत्र व्यां कुर्या कुर्

यारायार्थेर्यास्त्रायिष्ट्राय्यात्वा । सर्वे माः तुः त्यादायुः सर्वे देनाः ते त्या । यो स्त्रात्वे त्यादायुः सर्वे त्या । स्त्रात्वे त्याद्यात्यात्वे स्था । स्यात्वे त्याद्यात्यात्वे स्था । स्यात्वे त्याद्यात्यात्यात्याः स्था । स्यात्वे त्यात्वे त्यात्यात्याः स्था । स्यात्वे त्यात्वे त्यात्याः स्था ।

त्रदासेदाग्री खुर्यानादाय विद्या स्थान स्

यः प्रति त्यस्य विष्य । श्रुट्य विष्य । श्रुट्य विषय । श्रुट्य वि

गहेशन (अवर तुर विंत् तुर वेंद्र व व अ अ अ व द अ व ) दे।

गरःवेगः न्दः संस्वन्दे न्वनेग।

इत्यः ग्रहः संस्वयः संस्वाः हुः स्वाः।

र्व्याः से संस्वयः संस्वाः हुः स्वाः।

र्व्याः से संस्वयः संस्वयः स्वाः।

र्व्याः से संस्वयः संस्वयः स्वाः।

र्व्याः से संस्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः।।

र्व्याः से संस्वयः स्वयः स्वयः

त्र से द्राप्त विवाद द्रा विवाद से विवाद से कि त्र से त्र से द्रा से

हे भीत हि नामाय निराह्म स्थान स्थान

माल्व स्थ्य अभागी या ने श्वा पात्र विमाणे र या ने या

सेरःश्रु उत्राहित् देशसे नश्रुरा।

हिंद्रिः श्रीः तुद्रं सेद्रायः भ्री स्थान्य वित्रः स्थान्य स्

नवि'म'(क्व्यान्यायायम्बर्धःदेवायायः)दे।

न्याः स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्वर

मावव प्यतः तुर्रार्वितः तुर्विः सुर्दे स्वर्ते संवितः व्या ग्राः के ति प्रति स्वर

याःश्वाम्याः मान्वदाणपाः चार्याः चित्रः चार्याः श्वाम्याः मान्वदाः चीत्रः चार्याः स्वाम्याः स्वाम्यः स्वामः स्वाम्यः स्वाम्यः स्वामः स्व

स्मा (विद्यानुष्यक्ष्यक्षाम्यम्भेष्यम्)द्री

रुषानि । वित्र स्थानि । वित्र स्थान

त्रार्वित् तु ग्वाव्य प्रति रहे त्र शर्मित है तु त्र श्रित् रहे त्र श्रित् श्र

५५ में भारतीय मार्थिय साम्यास्य स्वास स्वास स्वास स्वास के स्वास स

### मार्थिम् अप्यायाने के से स्वायान

गहेशपा(गर्व नवे के सम्बन्ध र हे नवसमान) या ग्रुस

भ्रे मार्डट न्यर अर्देव शुभानु मुद्र राम्य क्याय प्रस्थ से मेयाय प्रस्थ हिम्य प्रस्थ स्थाय स्था

५८:सं (क्षे.वाड्टरचर:अर्देव:शुक्ष:५:क्यूर:चक्षःक्याकाःचर:क्षे:देवाकाःचः)त्यः श्रा

रेगा गुःशः ळग्राशः सर्भः रेग्याशः संदा ग्राह्मः याद्यः याद्यः स्त्राध्यः स्त्राधः स्त्रा

५८.सॅ.(३माञ्चणक्षमभागराभेदी। वश्वे पाठेपाः सुःहेरायश्वे।। प्यश्चित्राः सुःह्याः सुःह्याः स्वा। देःयश्चित्राः सुःह्याः सुःह्याः स्व।।

### विक्वार्वित् के से सन्वाय।

त्र से न्यो। विष्ठुः व्याप्त विष्ठः विष्यः विष्ठः विष्ठः

निर्म्म सेर्मा वे प्रह्म संभिष्ट्य स्था प्राप्त प्रम्म प्रमान के विष्ठ प्रमान

तर्ने न स्वाप्त स्वाप

तर्देन् भूत श्री श्री चिं त्व पा श्री म्या स्वाप स्वा

महिरामा (वहरानराहें वासान्ववासा) दे।

न्यायीयावयावयात्रम्।

गवन भेंन है सम्मान स्वाप्त

> विन्छिन् से यार्डन सम्बिन्या। ने छेन त्याविन यात्रवा ब्रेन्छिन स्था।

भ्रे.चाड्रट.क्रियासामाववः द्याखदर। ।

श्रेषाउँ र प्रमुख प्रश्नेत् प्रमु हो ।

नाववःष्पराहित् केत् ग्री खुर्या से नार्डर ना सर में प्रेत् पारे केत् वा

না প্রবাস (এম ঐমম র্ম র্ম হক্ষেন্ম বরি নার্ম মার্ম রে রি

यन्यानिः भारतिः त्यान्यातः विश्वा ।
सेयान्तः यक्षः यन्यः तर्ने नः विश्वा ।
सेयाः यक्षः यन्यः तर्ने नः विश्वः विश्वः ।
भारतिः विश्वः विश्वः विश्वः विश्वः विश्वः ।
भारतिः विश्वः विश्वः विश्वः विश्वः ।

तर्दिन्द्रिक्षेत्रस्थान्य स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्य

ग्वत्मी से समाय क्या मार्से वे दार्हिन पर्ने न परि से समाया

ण्यान्त्रे स्वान्त्र स्वा

निन्म (हेशन्ने निन्म स्टाया श्रु स्वर्गन्यस्य मा)री

भ्रेम्बर्ट्स्ट्रिन्स्य क्ष्या । भ्रेम्बर्ट्स्य क्ष्या । भ्रेम्बर्ट्स्य क्ष्या । भ्रेम्बर्ट्स्य क्ष्या । भ्रेम्बर्ट्स्य क्ष्या व्यव्यक्ष्य । भ्रेम्बर्ट्स्य क्ष्या । भ्रेम्बर्ट्स्य क्ष्य क्ष्य । ।

म्बद्धान्त्र महित्र मह

य्राप्त (न्त्रीनमाळनामानदेनानमायाधेनमा)दे।

श्चेत्रव्यक्षिः वेत्रः श्चेत्रः स्वेत्रः स्वेत्

श्चेत्र'न्द्र'न्न्यायात्रे हिं ने स्वी अ। श्वे प्रति स्व प्राणि वित् तु । या दे दे । या दे

गहिरामा (हन्यायायय देयायय क्वायाय से मेन्याया)या पदि।

५८:सी (क्षे मार्डट नवे प्रश्नुदासुदर्भ प्येत नर्भ क्षे मार्डट नर नर्भ सामा )दे।

यावव प्यतः अः श्रें या अः शें या रुं तः तः त्व ः श्रुं या अः श्रें या अः त्याः यो अः विका प्यतः श्रें या अः श्रें या अः तें विका प्यतः श्रें या अः श्रें या अः तें विका या विका प्यतः श्रें या विका या या विक

गहिराद्य (देवे व्यव राष्ट्र वे प्रवास के मार्क प्रवास राष्ट्र राष्ट्र प्रवास राष्ट्र राष्ट्र

नायाने से पाउँ मार्क मार्थ से मार्थ मार्थ

भ्रेषार्थर:बिरःश्वराग्रुर:ग्रुर:केरः।। नेःश्वेर्यार्थर:नेश्वरम्भःनभ्रेत्रः।। मालवःग्रित्रके:ग्रेरःश्वरःग्रुर्याः।

ग्रायाके श्री ग्रायाके प्रायाक ग्रीया स्थान स्य

म्रुअपः (स्यामे न्या द्रान्येयानमूत्)दे।

से ना उद्दर्श स्त्र न्य स

ग्वन प्पराहिं न से ग्वंदर न प्रमा सुर न दे से ग्वंदर न दे से न स्

निने मं (रद्भी खुका की मार्डद नर नक्षक्ष मारे भारे नि

ख्राक्षायाद्धः प्रमायाद्धा । व्यवदःक्ष्मायाद्धः प्रमायाद्धा ।

५८:में (लुकाक्षे नाइट नर नमसामा)दे।

या-श्वरःशःश्रीयाश्राधीनःवित्तः प्रत्यः स्त्राधी ।
यत्रशः कतः त्र्याः श्वीनः श्वीनः स्त्राधीनः स्त्

याः त्रराथः श्रॅम्थाराः श्रुवः धिरः द्रिरः द्र्याः याः त्र्याः श्रेष्टः याः याः व्याः श्रेष्टः याः याः व्याः श्रेष्टः याः याः व्याः व

यहिरापा (दे वाळग्यादाद्रमहिंदाश्ची खुयायवराळग्यायस्येग्याया)दे।

यायाने से यार्ड मार्ड मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ यर्देव'शुयाशुर्राग्रह'त्रे'केंबाद्या रूप्तिन्द्रमाः हुर्ने स्वदेः खुर्या।

भे मार्डरमाव्र प्यरम्भ नरम् भे भा

वायाने प्राष्ट्रमान्नी खुर्यासी वार्डमाना विदेश वर्षा वार्षी विदेश वर्षा वार्षी वार्षी विदेश वर्षा वार्षी वार्षी ग्रम्पार्यम्प्रसम्बद्धाः वे के के सम्बद्धाः विद्यम्पार् विद्यान्त्र विद्यान्त्र विद्यान्त्र विद्यान्त्र विद्यान गर्डरानाव्य परानक्षानराम्री अप्तरा

> यार व्यवायायाया यदे । या से अ वहेग्रायाळेत्रचें भ्रीवित्रायम्। नेशग्रहाहे सूराने हेराया। धिरःविरःदगवः अः वरःवश्चर।।

खुर्यान् । त्यर्यायायायदे । ता से । ता हे नायाया के तार्ये भी । नर वशुरावरःवेशाग्रदाहे सूरारदाद्दातु सेदाग्री सुरादे हेदाया भ्रीरावेदा षर:८५:षर:५:५गवःवःश्चे वर:वश्चरःवःश्चे देवाशःयश ५र:बि८:ग्रे:रे 

५८:सॅ (खुकाक्षे मार्डट न उद्दान्दा केंग्नाका क्षेत्र मार्डट न र क्षेत्र का का कि

खुर्यासी पार्ड र प्रमः शुर्या एड त प्रमः श्री पार्या परि दि । विसार्ये । प्रमुखाप्यसाय दे प्रमः देवासार्थे । विद्या

> सुर्यायात्र सुर्यायात्र दे दे ने प्या । उद्गत स्थायात्र सुर्यायात्र स्थायात्र स्थाया । यात्र सुर्या स्थायात्र स्थायात्र स्थाया । यात्र सुर्या स्थायात्र स्थायात्र स्थाया । यात्र स्थायात्र स्थाय स्

या गव्रत्यात्रभुरुष्याये दे दे प्यत्या स्तर्मा स्तर्मा स्तर्म स्तर्भ मार्था स्वर्

यः कुष्यः दुष्यः कुष्यः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः यात्रः यात्यः यात्रः यात्रः यात्रः यात्रः यात्रः यात्रः यात्रः यात्रः यात्रः

गहिरा (वर्त्तेवासेन्ग्री देश्वाबदावाक्यास्य वेश्कु सक्दान् से स्ट्रान्य)दे।

यहेगाहेव दें वा से दा से या पा पा है । से पा हेव पे विसा सुता।
देव हो ने विसा के हव हो।
या वा वा से पा है । विसा के हव हो।
या वा वा से पा है । विसा के विसा सुता।
के पी हो से वा सा वा वा सा सा हो हो।

यायाने भ्राभेता से स्टार्य प्राप्त स्था ।

या से साम साम स्था साम से साम साम से साम स

श्चा के त्र से दान प्रदार के श्चा के दान प्रतास के त्र प्रतास के त्र के

म्थुस्य (धेन्य्यून्यक्ष्य्यस्य )हे।

म्याया सेन्या प्रदेश्य प्रत्य प्रयापा सेन्या प्रदेश प्रत्य प्रयापा सेन्या प्रदेश प्रत्य प्

गशुस्रामः (क्षेत्वर्त्त्वर्त्त्वर्वः व्यवस्थानः) यः गहिस्य नसूत्रः मः प्रमान्यस्य ।

८८:स्.(यक्षेत्सः)स्।

ने स्वराधित व्यास्त्र स्वराधित स्वराधि

न्ध्रयायार्सेनायायदेगार्वेन्यम् ।

ने १९४८ से १ वर्ष्ट निर्म्य स्वाप्त स

यहिशासः(वन्त्रः)यःयहिश। यहें न्यते हें त्र क्षे हिंदासन्ता क्षे यहें न्यान् क्षेत्रः हैं त्र न्य क्षेत्रः विकास सर्वे।

५८.स.(वर्र्न्यवेर्न्न्सेर्स्न्स)यानि

यर्ने न्यानक्षेत्र प्रति भून्य यो न्यानि । प्रत्य प्रति । प्रति ।

५८:स. (प्टूर्यानक्षेत्रम्य अस्तर्भन्य सेर्यः)

त्रिम् स्ट्रिय से जुम्म स्ट्रा । इस्य प्रमान क्षेत्र स्ट्री स्ट्रिय स्ट्री । इस्य प्रमान क्षेत्र स्ट्रिय स्ट्री । इस्य प्रमान क्षेत्र स्ट्रिय स्ट्रिय स्ट्रिय स्ट्री ।

म्यान्यायर्ट्रेट्राययाचे विया ह्या

त्र भर्म मित्र तृते पुर्म शु त्र मे से प्र हे प्र मित्र में से प्र शेष शेष शेष त्र भर्म मित्र मित्र में से प्र में प्र मित्र में से प्र मित्र में मित्र में मित्र में से प्र मित्र में मित्र में मित्र में मित्र में मित्र में से प्र मित्र में मित्र मित्र में मित्र में मित्र में मित्र में मित्र मित्र में मित्र मित्र में मित्र में मित्र मित्र में मित्र में मित्र में मित्र में मित्र में मित्र मित्र में मित्र में मित्र में मित्र मित्र मित्र में मित्र में मित्र मित्र मित्र मित्र मित्र मित्र में मित्र मित्र में मित्र मि

गहिरामा (दवानवे सूनानस्वानी सावर् दानानस्वानी सावर्

वर्रेनःश्वःदवःयापः देगादे।।

हेद'र्र्ययाययाग्रीयाधेर्यार्त्राह्मा विसार् दिस्यावया कर पदे खुया। र्रेन्द्रःवद्रःवदःकृषःवदःहेत्।।

*৽*ই৾৾৾৴ॱড়ৢ৾৾৾য়ৢ৾য়ৢয়৾৽য়৾৽য়ৼয়৽য়য়৽ৠৢয়৽ ૡૢ૱ૡૻઽ૱ૹૢ੶ૢ૱૱૾ૢ૽ૹૹૼ૱૱૽ૼૢ૽ૺ૱ૢ૽૽ૼઽ૱૱૱૱૱ૢૡ૽૽ૡૢ૱૽૽ૼૢઽ वर्गनरक्षानरनेर्गम्या वर्षेत्रप्रक्षेत्रकेरनेष्ट्रेत्रकेष्

मिं डेगा हो अ'नर्शे ५'हें द'र्शे ६ अ' ५६'। रेटर्र्सेटर्निः स्वाप्तस्याउत्। नुः श्चनः पर्नेनः निवनः नुः श्चनः म्हारा

हिर्द्धरायुर्ध्यायारास्त्रेरासे प्रमा

रेट-तु-शॅट-नवे-सूग्-नस्य-उद-दग्-तुन्-सेन-नद्यन्-सर-वर्देन-नविद-त् तुन् सेन इससं धुन नेन सें विदुन विर्मन कें साग्रन सर्वेन नम् से विदुन वा वर्ने नः च से वः यः सः के र से या

निने नि (निव्दाक्ती निवर मुन्यम निम्य से प्योग्निम सम्मिन सः ) दे।

नन्गात्यास्रवादर्नेन्द्रस्यार्सेन्यास्या।

# यादार्देव'हेट'र्'यर्डेट'य'यदा। ने'अ'र्वेच'यर'र्देव'येट्'यदे।। यावव'र्यो'यथ्य'ग्री'र्युट'योथ'यट्या।

यन्यायायव्यवस्य स्वर्तेन्यं ह्रस्य स्वर्ते विष्ट्र या स्वर्या स्वर्ते विष्ट्र या स्वर्या स्वर्ते विष्ट्र स्वर्ते स्वर्ते स्वर्ण स्वर्त्ते स्वर्ते स्व

गहेशःमः(क्षेत्रद्र्यः नुःस्तेः क्रिंतः न्दः वक्षेत्रः नः )यः ख्रा

५८:में (रहाइनहासेदारेहरासूरादुः र्स्वापदेर्गानः)दे।

ख'य'र्द्रमी'ख्य'वर्डंद्र'ब्दि। द्रवर'येद्रमाव्य'ग्रीय'व्युद्र'हे।। कुर'य'द्रवा'ग्रह'तु:बुर'व्।।

### निरः इरः दर्गे वः धरः ववः ववः ववः द्वुरः।।

वर्देन्द्रम्य म्यूष्य स्वतः स

वर्देन्यस्य सुर्ध्वस्य स्थित्त स्थित्त स्थित स्

गहिरा (ग्रव्यक्ति प्रत्यः प्रत्यः प्रत्यः क्ष्यः क्ष्यः क्ष्यः क्ष्यः क्ष्यः क्ष्यः क्ष्यः व्यव्यः व्यव्यः व्य

प्रदेश स्वास्त्र स्वास्त्

### विष्ठेवा नश्चेवाश्वार प्रवाण्य स्थ्र । । वश्चवाश्वार नश्चित्र स्थ्र विष्ठेवा नश्चेवाश्वार स्थ्र स्थ्

यर्देन्। प्रति क्षेत्र क्षेत्

ग्रुअपः (बर्मायानोनामान्तेन् हिन्द्रायान्त्र्र्मात्र्र्म् न्त्र्र्मायानोनामान्तेन् हिन्द्र्यायान्त्र्मा

र्वेर्यः क्रम्याय्याय्यं स्थाय्याय्यं स्थाय्यः स्था ।

श्रीत्रायते स्थाय्याय्यं स्थाय्यं स्थाय्यं स्थायः स्यायः स्थायः स्यायः स्थायः स

इस्रश्यायश्ची निवर्ण स्थाय स्

स्वार्थः श्रेर्यार भितः ने दिनः द्वा ।

सर्वे पाः स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः

कें प्रदेश्व अग्रे देव द्वा निया निया प्रदेश विद्वा कें प्रदेश के

निविद्धाः (केयन्येन्यययययययवयः क्रम्यान्वन्यके क्रिन्यः) विद्धाः स्ट्रिस्य स्थान्यस्य स्थान्य स्थान्य

कृषः श्रेन् छै न छ न न न स्व न न स्व न स्

स्प्राच्यां क्ष्यां क्ष्यां क्ष्यां क्ष्यां व्याप्त व्याप्त क्ष्यां व्याप्त व्यापत व्यापत

५८:में (वर्द्द्र प्रवेष्ट्रेश द्रिया मानम्य प्राप्त)

यर्देन्'यरे'र्देन्'र्श्वा'यःश्वा प्रत्य । प्राप्त । स्वा प्राप्त । स्वा प्राप्त । स्व प्र । स्व प्राप्त । स्व प्र । स्व प्राप्त । स्व प्र । स्व

नश्रुवःमः ५८। नश्रुदः मर्दे।

५८:सॅ (वङ्ग्रवःमः)द्री

ने स्ट्रिंग्य के स्ट्रिंग्य के

न्नेव यायावे न्यायान मुन्।

ब्र-निव्याने क्र-पर्ने न्याया हुँ निर्मा है निवेदायाया है।

५८.स्. (म्ब्याः स्व्यायः स्वायः स्वयः स्वयः

स्रायाध्य होत्र रहेष्य श्री स्रायाध्य स्रायाध्

मान्व त्यास्व देव से समान्वित प्रक्रमा सम् होता।

त्वेद्रस्ते क्षु रावदे कुष्ये द्वाव्यक्ष क्षु नाय विद्वा क्षेत्र क्षे

सश्वास्तिः श्री । यह स्वाहितः विष्यति । यह स्वाहितः विषय । स्

गहिराम (रदाद्वर में वासवे खें बाह्य ) दे।

ग्रुस्यः (क्रॅन्न्नेस्यवे प्यॅन्न्नः) वै।
स्टः न्वरः श्रुरिः केटः क्रम्यायः सेटः या ।
ग्राटः न्दः प्यटः वे स्वोत्यः सेटः या ।

# कॅमानेशमाने श्री नमान भी नमान ।

यात्र शन्द श्रित्र श्रित्य श्

याशुस्रासः (वियानश्चित्रः क्ष्यास्य क्ष्यः)यः याष्ट्रिश्चा यद्याः याव्यस्य स्थानस्य स्थानस्य क्षयः यद्याः यद्याः याव्यः यहेः यदेः क्षयः व्या

न्दः से (वद्यायावद्यक्यायदः क्ष्यायावदे क्ष्याः) त्याया हे शा सर्वे स्पाद्या क्ष्याय स्वय्या क्ष्याय स्वयं हि । न्दः से (वर्षे स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं । ने व्याये स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं । ने व्याये स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं । न्याये स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं । न्याये स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं । न्याये स्वयं स्ययं स्वयं स्व

स्र-निन्दाने विकार्ते कारादे हुआ राष्ट्रिक वर्षे विकार विकार

स्थान्त्रेत्र प्रते प्रत्ये प्रत्य स्थान्त्र प्रते । स्थान्त्र प्रते प्

यद्याः द्राव्य व्याद्य स्था । यद्याः द्राप्त व्याद्य स्था । यद्याः द्राप्त व्याद्य स्था । यद्याः व्याद्य स्था । यद्याः व्याद्य स्था । यद्याः व्याद्य स्थाः स्थाः व्याद्य स्थाः स्थाः स्थाः स्थाः स्थाः स्थाः स्थाः स्थाः स्याद्य स्थाः स्याद्य स्थाः स्यादः स्थाः स्थाः स्थाः स्थाः स्थाः स्थाः स्थाः स्थाः स्थाः स्थाः

वनसः निः क्षें न्यां ने क्षें स्यां ने क्षें स्यां ने क्षें स्यां ने स्यां ने स्यां ने स्यां ने स्यां के स्यां

স্ট্রশ্ন (ক্রুশ্নন্ত্রপ্রন্ত্র) অ'স্ট্র

यद्याःचाल्वस्यक्रयःयरः भ्रें यः यदे देवः चन्त्रः यद्याःचाल्वसः यद्याःचाल्यसः यद्याःचाःचाल्यसः यद्याःचाल्यसः यद्याःचात्यसः यद्याःचात्यसः यद्याः यद्याःचात्यसः यद्याःचात्यसः यद्याःचात्यसः यद्याःचात्यसः यद्याःचात्यसः यद्याःचात्यसः यद्याःचात्यसः यद्याःचात्यसः यद्याःचात्यसः यद्या

५८:स्. (यरवाःवालवः अक्ष्यःसरःश्च्रियः सत्तेः र्ट्वः यन् परः )द्री

ययान्यत्यः श्रीम्यान्त्रे न्यान्यः स्थान्यः स्थानः स्थान्यः स्थान्यः स्थाः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः

महिश्रामात्वर्भक्ष्यस्क्ष्यः)यापिश्रा निस्तानिवर्भक्षयस्क्ष्यः।यापिश्रा निस्तानिवर्भक्षयस्क्ष्यः।यापिश्रा निस्तानिवर्भक्षयस्क्ष्यः।यापिश्रा निस्तानिवर्भक्षयस्क्ष्यः।यापिश्रा ५८:में (नरे सूनानी वर्रे र वो द सहद स स से सेना स स स र न ) दे।

म्वान्य भी सूना नस्य भी स्वान्य से नार्ते न से नार्ते

नायाने त्रामाने सुना नस्या भी भा ।
नावन भी खुरा या से पार्त प्राप्त ।
ने त्रामान के त्राप्त स्या से पार्त ।
ने त्रामान के त्रामान स्या नि ।
ने त्रामान स्या नि

त्र्यान्यायात्रवन्त्रस्थाः विष्ण्याः ने द्रिष्ण्याः विष्णः विष्णः विष्णः विष्णः विष्णः विष्णः विष्णः विष्णः विषणः विष्णः विषणः विषण

महिश्याय प्रम्य प्रम्य

ह्नार्नेर्पर्पर्पा छ्रायानश्चरायान्त्र। वद्यायाव्यस्यस्य वर्श्वरायाः वर्षे । वर्षायाव्यस्य वर्षे ।

५८:सॅ (ह्यान्स्निन्य) दे।

यद्याःयोश्रायाव्यः श्रीतः यद्याः स्याः यव्याः । स्याः यस्यः प्यवः श्रीतः यद्याः स्याः यव्याः । यद्याः योश्रायाव्यः प्यवः यदः यदः श्री । श्री स्थाः यव्यः प्यवः यदः यदः श्री ।

स्रेस्र उत्पान्त भी स्वाप्त स

सुरायानदे नाम्युनामानविदार्दे।।

यिष्ठश्रात्र (वित्रायम्ब्युत्रायः)यः यिष्ठिश्रा वित्रः श्रुतः नृदेश्योग्रायः नश्रयः नर्दे।

८८:इ. (ध्यःश्चितःस्थः)धी

चेत्रामाव्रसी प्रति स्वाप्य प्रति व्याप्य प्रति व्याप्य प्रति । व्याप्य व्याप्य व्याप्य व्याप्य व्याप्य व्याप्य विद्याय व्याप्य व्याप्य

> यारकें यद्याद्याद्याय्याक्षेत्रया । श्रुया प्रश्रूया श्री । स्युया प्रश्रूया प्रश्रूया श्री । यद्या प्रश्री ।

### ग्राम्धिरःग्राव्याः भ्रेतः चेत्।

गहिरामा (देव नेन्य यस्य न )दे।

> तर्गामी शरे वे श्रितः श्रुशं श्रिशं । इस स्मारे कि पान श्रि । वरे अ स्मारे के पान के कि स्था । श्रे के स्था कि स्था ।

कें त्रेते नित्वामिश्चे अते नुश्च श्रुण निश्च नित्वामिश्च स्ते स्थान स्त्रे स्थान स्थान स्त्रे स्थान स्थान स्त्रे स्थान स्थान स्त्रे स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्त्रे स्थान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स

म्यान्त्र स्वान्त्र स्वान्य स्वान्त्र । ने दे ने के ने स्वान्य स्वान्त्र स्वान्त्र । म्यान्य स्वान्य स्वान्त्र ।

### के भी माने का ने माने के कि माने के कि माने के माने के माने कि माने के माने के माने कि माने के माने के माने कि माने के माने कि माने के माने के माने कि माने माने के माने के माने के माने के मा

म्बद्धान्त्री के कि मान्या में के कि मान्या में मान्या मान्या में मिन्या मिन्या में मिन्या मिन्या में मिन्या में मिन्या में मिन्या में मिन्या में मिन्या मिन्या में मिन्या मिन्या में मिन्या मिन्या में मिन्या में मिन्या मिन्या में मिन्या में मिन्या में मिन्या में मिन्या में मिन्या में मिन्या मिन्या मिन्या मिन्या मिन्या

यात्याने देयात्यात्यात्रेत्या । यद्याः तृत्वहेत् द्रात्यत्य त्रह्याः हे त्या । यद्याः यात्वत्रः से स्थान्य यादः धितः हो । हे त्र सः स्वरं के स्थान् होत्।

न्याक्षेत्रस्य स्वेत्रस्य स्वाधित्र स्वाधित्य स्वाधित्र स्वाधित्य स्वाधित्य स्वाधित्य स्वाधित्य स्वाधित्य स्वाधित्य स्वाधित्य स्वाधित्य स्वाधित्य

व्याः या देवाः यो मितः ययाः व्याः यो देवाः यो द देवा द्याः यो देवाः यो यो देवाः यो

कुन्द्रः र्वेषाया विया चारा विया च च

## श्रवानश्रयः वद्याः सं से दः सम् दे। ।

गहिराम (ईवनक्षान) दे।

নাপ্তমান (য়ৄ৴য়য়৸য়)য়য়য়

सर्ज्या देशर्र्धेराहेये। देशर्र्वा केंद्र प्राप्त केंद्र केंद्र प्राप्त केंद्र प्राप्त केंद्र प्राप्त केंद्र केंद्र प्राप्त केंद्र केंद्र

महिस्यः (श्वाप्यश्वाप्यस्यः विद्याः व

यात्रान्त्रस्य प्रस्तान्त्रस्य स्त्रान्त्रस्य स्त्रम्य स

क्षेत्रपार्श्वत्यते कृष्णस्ति पार्वेत्रपार्थे अग्यात् वेत्रपार्थे वित्रपार्थे वित

ग्रुअ'रा'(दे सूरक्षिय प्रते स्व र्षेव )य यू ।

म्बार्ने न्याया विष्या क्षाया विष्या स्थाय स्थाय के त्र से स्थित स्थाय स्थाय के त्र से स्थित स्थाय स्थाय के त्र से स्थाय स्थाय के त्र से स्थाय स्थाय के त्र स्थाय स्थाय

५८:द्री (वालव र्ने व त्यावाडिवा कु वालियायाया सूवा वस्या क्रेव र्से से दाया) दे।

ने भूतः सुर्दे ने ने स्थाः सुर्दे । यात्रवः सुर्दे ने ने स्थाः सुर्दे । यहादे सिर्दे सुर्दे ने स्थाः सुर्दे ।

स्तर्भेर्पाणरावह्यापरावश्रम्।

श्चर्यत्वत्यः ने श्वर्यः स्ट्राची क्रुत्ते व्यत्यां याव्यः सङ्ग्रायः वर्ष्यः स्ट्राची स्वर्यः स्वरं स

मान्वर र्नेव त्यायह्या याया धेर ग्री सूचा नस्य से र र्ने।

गहिरापा (देवे नदे न्यायळेंग हि.श्वर मानवद देव त्यायह नामा)दे।

श्रेश्वराह्म स्थान स्थित स्था । न्याद निर्मेश स्थित स्था । ने किन ग्री श्रेश स्था स्थित स्था । स्राध्य स्था स्थित स्था । स्राध्य स्था स्थित स्था ।

शेश्वश्च स्थानि श्री । श्री ।

ग्रुअ'रा'(रद्योद्याश्यावीयर्वितर्व्या

दे अयाविव शे देव श्रम्या । इस्मानिव शे देव स्थानिव शे देव स्थाने ।

म्बन्धः र्नेन्यः भ्रमः प्रम्यः प्रम्य

निन्म (यदान्दरम् अञ्चेताया वेद्र भारा सेन्या) दे।

# याडेया. ह. याववर देव. या द्यायः प्रया । व्या क्षेत्र व्यवस्था व्या क्षेत्र व्यवस्था ।

यत्रमाठेगाः तुः माव्यः र्देवः ग्रुवः यः विः वः यः द्वायः वयः स्वयः श्रेवः श्रे

य्या (क्रुमळं दारे अदायर या यावदा अव्यायर यञ्जे अदिया अपारा) दे

रे.यूथ.हे.क्षेर.क्टर.टे.यो । शुक्राध्यक्ष.क्षट.यर्या.यश्चर.या ।

दे निव्याविवायानश्रू दाशेस्र अप्तरा

श्रीटाहेते सेसमाने ने भूटा हा।

त्रवां माल्व सहस्राध्य प्रस्ति । त्रिम् विष्य प्रस्ति । स्रिम् विषय प्रस्ति । स्रिम विषय । स्रि

निन्। (नन्नान्नव्यक्ष्यम्नर्ग्यस्य वर्षेष्यस्य निष्ट्रम्म अक्षेत्रस्य भेति।

ग्री में भी त्या प्राप्त के स्था के स

८८.वर्च्स

महिश्वामा (यद्यामा वद्या स्वेष्ट्या) त्या हिश्वा सर्चे राष्ट्र स्वेष्ट्या प्राप्त क्ष्या प्राप्त क्ष्या क

> प्रस्ति। (न्याम्बर्ग्ने प्रतिः हुन्यः) है। यद्याः केट्रा क्रिंद्रा च्या प्रति प्रस्ति। व्याप्ति। । व्यव प्रति क्रिंद्रा क्रिंद्रा च्या प्रस्ति। ।

यविष्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः । यविष्यः स्थान्यः स्थान्यः ।

हे हिरायमारायार्थम्यारायार्थन्तर् स्रुयाग्रीयम्यमाय्येन्यर्द्द्द्श्या हे स्रोत्रे स्रुयाय्ये स्रुयाः हे स्रुयायमाय्येन्य स्रुयाः हे स्रुयायमाय्येन्य स्रुयाः हे स्रुयायमाय्येन्य स्रुयाः

মান্ত্রমান্তর বিশ্ব বিশ্

त्रवाःयविष्यः नहेः सदेः खुंयः नश्रः हुं सः सुः शुः शुं न्याः नहे सः स्याः स्य

८८म् (वर्षाः वाववः वहे विदेश्यः वर्षरः । या विद्या

क्रुश्रास्त्रात्वभूत्रात्रा देवानशुःनवि ।

८८.स्.(क्रिश्सर्यक्रसः)लामश्रुम्

ग्वित्यारेशप्रदेवार्गेस्रश्यम् गुःगप्रा प्रमागरेशप्रदेवा

दनद्रम्भःश्रूद्रन्यः न्याः नद्याः नद्याः नद्याः वद्याः वद्

यद्याःयावदःयहे व अःश्वेदःह्याःयावदःयहःयःयश्वः यद्याःयावदःह्याः व अःश्वेदः व

है 'क्षुर 'न्य न्या से द खुर 'न्या ।

वी स्था 'न्य से स्था 'न्य न्या मी 'र्से 'र्सु है र 'र्या ।

वी स्था 'न्य से स्था 'र्स्य मान्य 'र्से 'र्सु से 'र्सु है ।

वी स्था 'र्म्य 'र्स्य 'र्म्य न्या 'र्से 'र्स्य से 'र्मु ।

वी स्था 'र्म्य 'र्म्य 'र्म्य मान्य 'र्मु है स्था से 'र्मु है ।

वि स्था ग्राम है 'र्म्य स्था 'र्मु है से 'र्मु

गवर ग्री देव ग्रुय ग्रुट दें सक्द दिन हैं से से सम से प्रुट दें। पहिरापा (इसक्षेत्रायाक्षा देवा सम्मान्य समान्य समा नन्गिक्षेत्रःग्रीसःदेः वसःवस्या यत्यारे ना भे रत्युर निव्वा ने नशहे सूर कुर नु न।

भ्रे सूत्र यथा ग्राम्य प्राप्त म्यून या

ने निव्दायमें यान्यून से समान्ता।

श्वेट हेदे से समादे में समाय माना

दमेर्द्रायद्याक्षेद्राग्रेश्वर्षाद्रार्थाः वसावसावस्यादेश्वर्थाः वज्रूरानानिवार्ते। । यवार्षेवासमयायसार्येनामाने नसावाही सूराकुरा 5, व. कें गा. भे. श्रुव. या यथा ग्राटा यह गा. यश्चरा या है पा. या है गा. नर्यायमानसुरासेसमान्दासूराहेते सेसमाने में समानरा हुदे।

या शुक्ष रा (देशक्ष मालक र्देव के दाके दाक राजा मा ) दे।

ने नश्राश्रमीत से श्रुत रश्या विवासा। त्रुग्राश् हे कित्र र्शेश दर्शे प्राय्ये। विद्रामी वहिषायायाययाय विद्राम्।

#### ररानी सळवा परा ही वा ही या न क्षा व

स्वान्त्र स्वान

नवि न (र्ग्ययात्र न क्रीन त्रयान )दे।

यव र्षेव रु सार्थे द ग्राट निषा पावव नहें य र्षे समाम द गाय वे

বা

न्गादायश्चित्रःध्वाःश्चे । विदेश्वरःभी स्थाःयद्वाः स्थाः स्

र्मे स्थान्य निष्य निष्य स्थित स्थित स्थान स्था

न्यः (नन्यानाबदः स्वानस्य यस्य स्वानस्य प्रमानस्य प्रमान

त्रुगः श्राह्म ने श्राह्म नि । विष्य स्वाह्म ने श्री ने श्री

यहिरामाडेसप्ट्रिंबप्यम्यस्य स्ट्रिंबप्यम्य स्ट्रिंबप्य स्ट्रिंबप्यम्य स्ट्रिंबप्यम्य स्ट्रिंबप्यम्य स्ट्रिंबप्यम्य स्ट्रिंबप्यम्य स्ट्रिंबप्यम्य स्ट्रिंबप्य स्ट्रिंवप्य स्ट्रिंवप्य स्ट्रिंबप्य स्ट्रिंबप्य स्ट्रिंबप्य स्ट्रिंबप्य स्ट्रिंवप्य स्ट्रिंबप्य स्ट्रिंबप्य स्ट्रिंब्य स्ट्रिंवप्य स्ट्रिंवप्य स्ट्रिंबप्य स्ट्रिंवप्य स्

५८:र्से (वन्नानाडेशवहेन्वरहेन्यरास्यवदन्नानी कुः धेवारा) दे

गहिरामा (हेश हुँ न समयन्याय हुँ र ने न धिरामानससाय )दे।

खुश्यान्यत्रेश्चर्याश्चर्या । यश्चर्याः केत्याः केत्यः क्ष्याः याः वियाः वित्रः केत्यः याः क्ष्याः क्ष्याः क्ष्याः वित्रः । याः वियाः वित्रः केत्यः व्यव्यः क्ष्याः वित्रः । याः वियाः वित्रः त्रेशः वित्रः केत्यः व्यव्यः क्ष्याः वित्रः । याः वियाः वित्रः त्रेशः वित्रः वित्रः

त्रवायावेश्वर्यः व्याव्यः व्यावः व्याव्यः व्यः व्याव्यः व्याव्यः व्याव्यः व्याव्यः व्याव्यः व्याव्यः व्याव्यः

न्गेंव्यळ्यायाश्याश्चीःन्गेंन्यम्याव्या

देशके अवर से दार्श्व वा त्युर का । स्ट्रिंग्डेर न्यूर द्रा स्ट्रिंग्डेर स्था । स्ट्रिंग्डेर न्यूर द्रा स्था । स्ट्रिंग्डेर न्यूर द्रा स्था । स्ट्रिंग्डेर न्यूर द्रा स्था ।

न्मॅ व्रायं के व्याप्त व्यापत व्यापत

माशुस्रामा (नन्नान्तान्वस्माई सँ मान्नेन्यते क्रिंस्न न्त्रस्थ्य प्रमाने स्थाप्त प्रमाने स्थाप्त स्थाप्त स्थाप स्

क्रथःग्रद्या देशव निवाना वेश यह व दे र देवाश पर्वे ।

५८:में (यन्वायाव्ययावेशयम्या बुद्ययेष्ठेशप्त्रीयाशप्त्यय्वयः वित्राची स्थाय्ययः )यः यहिरा

कुश्यम् मन्द्राम्य दिव मन्द्रामि

८८.स्.(क्श्यर्यर्यक्ट्र्यः)ज्ञास्

श्चेत्रम्यते प्रत्यतः त्रुर्यस्य प्रत्यः वर्षेत्रम्यतः त्र्यस्य । वर्षेत्रम्यतः त्रस्यस्य । वर्षेत्रस्यस्य । वर्षेत्रस्य । वर्यस्य । वर्षेत्रस्य । वर्यस्य ।

न्मा सन्निनेते न्नम्नु ।

५८.स्. (श्चेत्रायद्गान्यरान्त्रान्यरान्)द्गी

यायाने हिताना है । है ना विकास के स्था ।

यायाने श्रुपान के श्रुवाने या

ग्वितः र्नेत्र सेस्र साम् प्रे पि रहें सा

गहिरामा (वर्देन्यदेन्यन्तुः वुर्यामः)दी

यद्याः श्रेम् स्याव्याः यार्वे दः श्रुम् । याव्याः श्रेम् स्यायाः यार्वे दः श्रुम् । याव्याः श्रेम् स्यायाः यार्वे दः श्रुम् । स्याः श्रुम् स्याव्याः यार्वे दः श्रुम् । स्याः श्रुम् स्याव्याः यार्वे दः श्रुम् ।

नन्यानने नदे से स्प्रम्यावन त्या श्रीया या हेन् स्थाय से न्या स्थाय

केन्न्यक्ष्याः व्याप्ताः भ्राम्य स्थान्य स्था

সাধ্যমান (বর্ষুদ্রন্দ্রন্মান্ট্রান্নদ্রন্ত্র্মানা)বী

नन्गःहेन्'अर्थे'नर्यन्ति। न्व'वर्थे'न्व'न्न्य्ये न्यर'वर्थे । ने'हेन्'ग्विव'त्य'र्थे'च्य्यं न्या। नने'वर्थे'र्थ्यं व्यक्ष्यं प्रस्तित्यर'वर्थे ।।

यन्ताः हेन् नर्झेन् न्यः व्यान्यः स्थान्यः श्रीः व्यान्यः वर्नेन् स्थान्तः वर्षः वर

नवे.स.(लश्राकाःश्चें रायपुर्वरान्यरान् विश्वायाः)द्री

यन्यामी देव द्रामान्य स्वर्गाया । यव्यामी स्वर्गाया स्वर्याया स्वर्गाया स्वर्याया स्वर्गाया स्वर्याया स्वर्गाया स्वर्याया स्वर्याया स्व

### हे दस्व हे द स्वाय अधित न स व स्वाय ।

त्रवा गो 'र्ने व 'र् 'पालव 'र् प्रत्य से प्रत्य से प्रत्य से प्रत्य के प्रत

स्राम् (सद्ग्यनेविन्नम् न्याः विष्यामः)दी

यहेगाःहेवः यदेः यदेः श्रेष्ठः यहा । देशाःहेवः श्रुयाः यश्यः श्रेष्ठः यहा । देशाःहेवः श्रुयाः यश्यः हेः श्रेष्ठः यहा । देशावः यद्याः यस्यः हेः श्रेष्ठः यहा ।

गहेशमः(र्वान्यूनः)दी

अट:र्'न्य १८ दें । विया दें में भा । विश्वास स्टम्में दें दें विया दें में भा ।

# वित्रायावित् श्री दित् सहित् या ।

यदः तुः क्रु अः यदः त्र अति । विवादि क्रि अः यः यदः विवादि विवाद

अःअर्बेटः निवे हे अः नुश्चेन अर्वेटः निवे हे अर्वे हे अर्वेटः निवे हे अर्वे हे अर्वेटः निवे हे अर्वे हे अर्वेटः निवे हे अर्वेटः

५८.स्. (स.सब्र. नवंत हे स.र क्षेत्र मान्य )दी

यद्यायदे यावद श्री श्रूया यश्य प्रमा । यद्यायदे यावद श्री श्रूया यश्य प्रमा । यद्याय श्री प्रमा विकास श्री प्रम विकास विकास श्री प्रम विकास श्री प्रम विकास विकास विकास विकास विकास

यर्थात्यर्भ्यास्त्रेयास्त्रेयास्त्राच्यात्यः स्वात्यात्यः स्वात्यः स्वात्यः स्वात्यः स्वात्यः स्वात्यः स्वात्य स्वात्यः स्व

गहिरामा (अर्बेट निवे हे अ निवेग्या) दे।

वहिनाहेत्यः र्स्यायमः विनानी। ञ्चार्यार्थनात्यम् स्रोत्यायम् । हे प्रस्ति स्वायायम् स्रोत्यायम् । के प्रदेशे र्द्रेन प्याप्त स्रायाम् ।

यद्यायां के अप्यद्वित दिं र हे गाव्य गां के अप्यद्वित र्यो अअप्य र अप्य स्वा में के प्य दिवा में के प्य दिवा

म्बुस्य (३ अ ५ से म्यू स १ प्रमुद्ध स १ प्रमुद्ध स १ स्व १ सुमा म्यू स १ स्व १ स्व

म्बिन्द्र्यं क्षेत्रक्षेत्रः अप्यान्यः स्वान्त्रः स्वान्तः स्व

त्रहेगाहेत न्यान्य अप्तर्भात्र अप्यान्य अप्तर्भात्र वर्षे न्यान्य अप्तर्भात्र वर्षे न्यान्य अप्तर्भात्र वर्षे न्यान्य अप्तर्भात्र वर्षे न्यान्य अप्तर्भात्र वर्षे न्या वर्ये न्या वर्षे न्या वर्ये न्या वर्षे न्या वर्षे न्

यन्याकृतः ध्रान्य स्थाः स्यान्य स्थाः स्याः स्थाः स्था

## है 'क्ष्रम्' से 'दे 'स्यानहम्'द्या । से मा 'स 'र्स्ट्रम्' न मा से 'द्रम् 'न देवा ।

नन्नानिन्नाने अप्यम्पद्दिन् पार्णेम्यान्य न्त्राम्य प्रमानिक्षः स्राम्य प्रमानिक्षः स्राम्य प्रमानिक्षः स्रमानिक्षः स्रमानिक्

गहिस्रामः (द्वाम्स्यः )यः गहिस्राम्यः विष्यः विषयः वि

५८:स्. (यर्गाःयावयःयहःसदःक्षः)

ने 'श्रेर' निया मार्चे र'ले 'न' र र । ।

याल्व 'री 'श्रेर 'याल्व 'र्थ' या हर 'री हो र । ।

याल्व 'री 'श्रेर 'याल्व 'र्थ' याहर 'री हो र । ।

याल्व 'री श्रेर 'याल्व 'र्थ' याहर 'री हो र । ।

याल्व 'री श्रेर 'याल्व 'र्थ' याहर 'री हो र । ।

याल्व 'री श्रेर 'याल्व 'र्थ' याहर 'री हो र । ।

याल्व 'री श्रेर 'याल्व 'र्थ' याहर 'री हो र । ।

ग्वरं प्रयोग्ने स्ट्रिं स्वर्थः विश्वरं प्रयोग्ने स्वरं स्वरं

८८। ग्राविव इसस्य निवानिव निवानिक सम्मानु र नम् नुर्दे।

यद्यादी यात्वव भी प्रत्य प्रत

र्ने हिंद्र ग्रेयान्त्र से नयस्य

र्टिन्द्रं प्राविष्ठ श्री प्राविष्ठ

याद्वेश्वात्र (वह्रमात्रमाय्य म्यान्य क्ष्याय प्रमायाय )दे।

याववः द्वदः श्रेवाः यः श्रेवाशः यः धेश। दः देवः श्रेवाः यः श्रेवाशः यः धेश। देः देवः श्रेवाः यः श्रेवाशः यः धेश। देः यः व्यवः यः द्वः श्रेः देवाश।

रदःहेद्-श्रेश्रश्चात्रः उत्वात् । यह्य श्रेष्ठ्यः व्यात् । यहः ।

ন্যুম'ন'(খ্রির ই মার্মিন্মেন মুর মা)রি

নাই শান্ত বিশ্ব বিশ্ব

८८:सॅ.(वक्ष्रवःवः)दे।

न्यवःश्रेनायम्बन्नाः ज्ञुश्रान्दा। नवनः १५८ द्वान्यन्त्राज्ञुश्रान्दा। स्यः हेनाः येदः पदेः श्रेयशः ग्रेशः श्रा। स्याः देनाः येदः पदेः श्रेयशः ग्रेशः श्रा। स्याः देनाः पद्यवः पदः च्याः न्यः वर्श्वयाः

गहेशमः(वन्यः)यःनि

५८:मू. (श्रुंश्यानवे क्ष्या)

यदीः वि'नगुरः ग्रुष्ठाः न्यद्यां वे' क्षेत्रा ।
यदीः वि'नगुरः ग्रुष्ठाः न्यां वे 'क्षेत्रा ।
यदीः वि'नश्रृदः ग्रुष्ठाः न्यां वे' क्ष्याः न्याः वि' व्यव्याः वि ।
यदीः वि'नये 'यद्यां वि' क्ष्याः न्याः वि' क्ष्याः वि' व्यव्याः वि ।
यदीः वि'नये 'यद्यां विषयाः विषयाः वि' व्यव्याः वि ।
यदीः वि'नये 'यद्यां विषयाः विषयाः वि ।
यदीः वि'नये 'यद्यां विषयाः विषयः वि

वर्नान्यम् व्यवस्थान्त्रम् । वर्षान्यम् । वर्षान्यम् वर्षाम् वर्षान्यम् ।

र्थित 'हत्र से न् 'स्या 'से 'बिया' ह्या । यन या 'या न स्था 'या न स्था 'से न स्था न स्था 'से न स्था

त्रम्भेस्रभाक्ष्में द्वाल्यमा हेत्या होस्य स्वालं व्यालं स्वर्णा होस्य स्वर्णा होस्य

कुँवाधिययाधायाधायाध्यास्य । विद्याधिययाध्यास्य ।

कुषा विस्नान्दाकु ना कुस्नान्दा पर्के प्रमान्दा पर्के प्रमान्दा पर्के प्रमान पर्के प्रमान पर्के प्रमान पर्के प

प्रति त्याक्षेत्रस्य स्वर्धात् स्वर्यात् स्वर्यात् स्वर्यत् स्वर्धात् स्वर्धात् स्वर्धात् स्वर्धात् स्वर्धात् स्वर्यात् स्वर्धात् स्वर्यात् स्वर्

के तु अप्तर्मा ने पार्थी प्रमें अपि । मार्ने र् प्रयम् प्रमानी अप्तर्म ने स्वाप्त । स्व के प्रमान प्रमान के प्रमानी अप्तर्म ने स्वाप्त । के मिर्मा प्रमान के प्रमान के प्रमान ने प्रमान के प्रमा

गहिरामा (नर्भे समाद्रमाहे क्ष्रमास्नुनामवे द्वंता)दे।

च्रान्त्रेस्रस्य स्थान्त्र स्थान्त्

रवःदर्शेःबार्बाःबद्धःवरःबावर्यःव।।

मान्न प्यत्र हुं या विस्तर प्रमान स्थान स

गहेशपा(सहस्रायायम्बर्स्स्स्याम्ब्र्स्स्याम्बर्स्स्याम्बर्स्स्याम्बर्स्स्याम्बर्स्स्याम्बर्स्स्याम्बर्स्स्याम्बर्

५८:सॅ (क्र्र-चगुर-चग्वन-च)

यद्याद्यास्य अध्यायः यद्याः व्यव्याः व्याः व्यव्याः व्यव्यः व्यव्याः व्यव्यः व्यव्याः व्यव्यः व्यव्यः व्यव्याः व्यव्यवः व्यव्याः व्यव्यवः व्यव्यः व्यव्यव्यः व्यव्यः व्यव्यव्यः व्यव्यः व्यव्यः

नन्ना उना से सम उत्तर्द निर्मे न स्था से सम अस सम अस

डे दश्यन्यामी प्यॅन न्त्र दी।

वहिमाहेत्ग्युत्यान्ययान्द्रा ।

गावव यार परे पी पीं व नव गार ।

য়ৢয়৽য়ৢৼ৽য়য়য়য়য়য়য়য়য়ৢয়৽য়ৢ

नन्गामी र्भुनिष्ण सञ्चा चा विता।

शेशश्राच्यानी भ्रीतं प्यान्य विद्यान विद्या विद्या से स्थान स्थान

निन्यः (निर्देन्यः व्यक्षुरः चःव्यन्नव्यनः वक्षुन्यः)दे।

সাধ্যমান (নার্বিদ্রান্তা শ্রু ক্রান্তা ব্রাক্তর বর্ষ্ণু ক্রান্তা সরি।

द्या के अपने अपने अपने अपने विष्य के अपने विषय के अपने व

८८.स्. (८.कि.ज.स्यायहास्यायः)धी

याबुदःक्ष्राः क्षेत्रः याक्ष्यः याक्ष्यः व्याः क्ष्यः व्याः व्याः व्याः व्याः व्याः व्याः व्याः व्याः व्याः व्य याबुदः क्ष्यः दक्ष्यः वर्ष्क्षेत्रः याक्षः व्यवः व्याः व

हें वर्धेन्यायने प्यत्यन्यान्तरन्।

ञ्चन हेमा हु ने त्यान हे या या ।

दर्ने द्या विश्व दर्भ श्रास्त्र निश्व

ग्राज्यायान्यात्रात्र्यायान्यात्र्यायान्यात्र्यायान्यात्र्या

विराश्चेश्वराष्ट्र श्रुवर्षे व से व से स्वर्धित स्वर्येष्य स्वर्येष्य स्वर्येष्य स्वर्य स्वर्येष्य स्वर्य स्वर्येष्य स्वर्य स्वर

ने सूर गुन्य य सूर्याय राधी।

भ्रायत्रम्भः निर्मः त्राप्त्रम् । स्वाप्तः स्वापतः स्व

ग्रुअ'रा'(नर्स्र्य्यभार्य्यभार्युः राजभार्युः सुराजवेः द्वापार्वा)दे।

के के ति ति ते के प्रति त्या के प्रति व्यक्त विष्ण विष्ण के प्रति विष्ण विष्ण के प्रति विष्ण विष्ण के प्रति विष्ण विष्ण

निन्द्रिः स्त्रिः त्रिः स्त्रुते र क्षुयान्दर न्त्रयान्यते हे यान्ये वायान्ययामा )दे।

वर्ने ने ने व्ययः द्रययः ग्रुः विदः।।

#### नन्गामी मर्वेन निम्हण श्रुर छ।

त्र क्षेत्रक्ष विष्ट क्षेत्र क्षेत्र

नवि'म'(नक्ष्म्यम्बर्धःव्यक्षःतुः)त्यःनवि।

यद्गायाडेश्रायम्या बुद्दायदे हेश्राद्श्येष्यश्याय्या याव्यक्ष्य व्याप्य व्याप

५८:स्. (यर्याःचाङ्काःसरःचा ब्राट्यादेःहेकार्ये वाकायकायः)द्री

ब्रिं-ग्रीशःस्यानस्यादनदःवियानस्यशा

नतः क्षें नन्ता त्यान्य स्थान्य स्थान

ने त्यून्त्र मान्य मान्

म्बिस्यान्त्रिस्य मिन्न्यान्त्रिस्य मिन्न्यः) है। म्बिस्य स्प्रम्थन्त्रे स्थान्त्रे स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान

यायाने हिंदा ग्रीया स्पर्या ।

বা

# यावयाः भीत्राः स्वान्तः स्वानः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः

यायाने हिंद्रा ये अर्था द्वा क्ष्या यायाने हिंद्रा ये अर्था क्ष्या ये विष्ठ क्ष्या यायाने हिंद्रा ये अर्था क्ष्या ये विष्ठ विषठ विष्ठ विष

हि'नश्य'यदे'श्वर'मानन'द्या'मी।

ब्रिन् ग्रीयादमायद्देव ग्रीयायायेमा।

ने निवेद मावद यदर में सम मर में भा

म्बिन्द्रिन्यः स्वर्णेन्द्रे १ क्ष्यः प्रिन्द्रे १ स्वर्णेन्द्रे १ क्ष्यः प्रत्याः मित्रे १ क्ष्यः स्वर्णेन्द्र १ क्षयः स्वर्णेन्द्र १ क्ष्यः स्वर्णेन्द्

ध्रेत्रः यसः वशुक्रः र्से ।

गशुस्रामः(श्वीत्त्रभाश्चेश्वास्त्रभाश्चीत्रभाष्ट्य

८८.मू.(८६४८)ज.याश्रुमा

रटानी येग्रा र्क्षेन् स्वर्थ स्वर्य स्वर्य

「「大学、(大学、)中国 (大学、) (大

मानवःश्वीः हिमाः केवः श्वरः वर्षः वि । मनमः मोः शुर्वाः के श्वरः मा । ने 'ननः ने 'हेनः श्वरां मार्था शुर्वा । श्विरः श्वरः मानव्याः स्वरं मः श्वित् ।

ने भूर प्रस्था स्था हु र अवस्थ हुँ र प्रस्थ से स्था उद्या विद्या हुँ र प्रस्थ से स्था उद्या विद्या हुँ र प्रस्थ से स्था उद्या विद्या हुँ र प्रस्थ हुँ र प्रस्थ से स्था उद्या विद्या स्था हु र प्रस्थ हुँ र प्रस्थ हु

महिश्वास्य (स्त्र व्यक्ष महिन्य स्वर्ग हिन्य स्वर्य स्वर्ग हिन्य स्वर्ग हिन्य स्वर्ग हिन्य स्वर्य स्वर्ग हिन्य स्वर्य स्व

त्रवाः श्चेत्रेत्रसेस्रश्च व्याविष्ठः वे स्यः श्चेतः यः वित्यः श्चेतः यः व्याविष्ठः वे द्रायः व्याविष्ठः वे द्रायः यः व्याविष्ठः वे द्रायः यः विष्ठः विष्ठः

महिशास (स्टिक्षेत्रमानवर्ते वात्त्रमावयाचे मावयाचे स्वार्थित । स्टिमी क्रिंत महिमास प्टरा श्रेश्वराय हेश्वराय हिशास मिल्याश सप्टरा त्यव संदेशम्बराधुर सुट मोर्सि। ५८:सॅ (रद्यो क्वेंब्य वह्याय )दे।

नन्गामी र्भेन्या नह्या यर भी या

पहिरामा (अयमारुदायाहेमामानुमामामा)दी

याववरश्चेश्वर्भः याश्चर्याश्चर्याः श्चर्याः श्चर्यः श्चर्याः श्चर्याः श्चर्याः श्चर्याः श्चर्याः श्चर्याः श्चर्याः श्चर्याः श्चर्यः श्वर्यः श्चर्यः श्चर्यः श्चर्यः श्चर्यः श्चर्यः श्चर्यः श

ग्वित् ग्री अर्दायार्वे द्राया गुर्वे द्राया ग्रु स्तु ते हे अर्धा गुर्वे अर्था ग्रु अर्था प्राय्य प्राय्य प्र

स्वान्त्र न्त्र न्त्य न्त्र न

चित्राचे च्रत्यो न्दर्य भाग्य । स्वर्या भार्य । स्वर्या न्या न्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या न्या स्वर्या स्वर्य स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्य स्वयं स्वर्य स्वर्य स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं

ग्रुअ'रा'(र्भ्वेर'नमानुसमानुसमेत्राचेत्र'स्वेर स्वानसूमाने नसून्या)दे।

सर्नरन्ययायोः र्नेन्छः छेर। छेन् छेरायावन यायानेन्छ स्यापा । यार्नेन्ने सेस्र स्वत्रेन्न छेर।। यन्याकेन्याने यन्यन्य स्वर्था।

यर्ने राव विष्यां या यो द्वा विष्यां यो विषयां यो

र्रेक वहिम्या निष्य म्या निष्य मार्थे स्था निष्य ।

याववरश्ची सूचा नस्य प्राप्त राज्य रा

द्योयाक्रेत्रची त्या स्वाप्त स्वाप्त

महिरामा (वन्वाव्यव्यव्यव्यक्षेत्राच्याक्ष्यका स्वाव्यव्यव्यक्षात्रे स्वायक्ष्यका स्वायका स्वायका स्वायका स्वायक्ष्यका स्वायका स्वायका

र्मेन्यम् प्रमान्य अप्यास्य स्थान्य स

५८:स्. (सूर्यानिकाराक्रमायक्रामायक्रामाय

ने विश्वासन्यान्य स्वास्त्र मार्थन हो।

याल्वन देव छो न्यस्य प्राप्ते छा लेट ह्ये स्वाप्त प्राप्त हेत्य प्राप्त प्राप्त हेत्य हेत्य हेत्य प्राप्त हेत्य ह

विन्निः ने 'क्ष्र-'यान्स्रस्य ग्रान्ते। । स्रेस्रस्य हिन्दे 'क्ष्र-'स्रेस्य हिन्द्र्य हिन्द्र्य स्रिक्य ग्राह्म स्रेस्य । हिन्द्रिन्द्र्य स्रिक्य या स्रेस्य स्रिक्य स्रिक्य ।

५८.सू. (१४८-११वायायययययययययः १८.६५८ १८०८ १९वाययः १५८.४)

### व्यून श्रुवा श्रेवा शामा ने में मारे किया।

यद्याः या के अप्यक्षेत्र हिंद् ग्री अपि विं तें या स्प्यक्ष या या विं के अप्याप्त हों के अपि विं तें या स्प्र के या विं तें या विं ते या

श्रेश्वरात्रात्र्यात्रात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र वित्तित्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र श्रेष्ट्रात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र

म्बुस्यः (वश्च्यः हे वश्चः विद्याः) है।
दे स्ट्रिंग् क्ष्यः से स्थाः स्थाः विद्याः स्थाः विद्याः स्थाः स्था

ने भूर हिंद श्रेश क्षेत्र प्यर ने भू लेगा मिं में प्र हु या सुरश्चर स्था या हित स्था प्र स्था सुरश्चर हु या स्था हु द या दे ते स्था हु द या हु द श्रेश स्था सुरश्चर हु या सुरश्चर हु या

ने स्थे निवा के निवाद पर्दे निवा । र स्था निवा की श्राप्त वा र स्थे निवा । ने स्थे निवा के निश्च स्थित पर्दे निवा । वा व व निवा हमा हम्म स्था ।

ने क्षे नन्ग ने सुन रेट सेंदे नर न्गय ने सुन सुन रहें गरा न

यद्भित्रस्य यद्याः विश्वास्य विश्वास्य या विष्ट्रा । दे स्ट्रे त्र त्र त्र त्र स्वास्य या विश्वास्य या विष्ट्र त्र त्र से स्यास्य विष्ट्र त्या विष्ट्र त्या विष्ट्र या वे स्वरूप या विष्ट्र त्र स्वास्य विष्ट्र त्य स्वास्य या विष्ट्र त्या विष्ट्र त्या विष्ट्र त्या विष्ट्र त्या

বার্ঝানা (এমাট্রাজ্বমানানার্মা

र्क्ष्याची । विश्वास्त्र विश्वास्त विश्वास्त्र विश्वास्त विश्वास्त विश्वास्त विश्वास्त विष्य विश्वास विश्वास्त वि

न्दःर्थः (अयत्ययेदःयवे क्षेयद्येव्ययः) है।

याववः देवः छेदः व्यदेदः प्रयायेदः वेषाः

हे स्थादे स्थादे स्थाः ।

विकार्या क्षेत्रः स्थाः स्

नवे ने उन्यू म है न न है न

दशुरःर्भ। वश्यरःभूगानस्याः केत्रां तशुरः निरःस्याः नितः क्ष्याः क्ष्रां त्रां यात्रः नितः व्याः वितः क्ष्याः व्याः वितः व वशुरःर्भ।

> देन्द्रमञ्जूद्रप्तादेग्धिण्यद्र। दर्देन्द्रप्रश्चर्यद्रम्बस्यस्य उत् श्रेया। देश्वर्यस्य जुर्यस्य प्यत् स्थित् स्थित्। देश्वर्यस्य जुर्यस्य प्यत् स्थित् स्थित्।

## तुषासेन्'यर्नेन्'यर्हेन्'सेन्स'न्ना।

### नस्रायाक्षस्रायदरः हो निरायगुर्मा

यर्देन्'मः ह्रिंग्मां स्वाराध्याः विद्याः स्वाराध्याः स्वराध्याः स्वराध्याः स्वराष्ट्यः स्वराष्ट्यः स्वराष्ट्यः स्वराष्ट्यः स्वराष्ट्यः स्वराष्ट्यः स्वराष्ट्यः स्वराष्ट्यः स्वराष्ट्यः स्वराध्याः स्वराष्ट्यः स्वरायः स्वराय

वशुरःर्रे।

यार विया गुरु त्य हैं श्रा को द्रा ।

देश हैं स्व के या श्रा को त्य हैं स्व को ।

यार विया खेर के या श्रा को को है ।

यार विया खेर के स्व के स्व हैं के स्व ।

देश देश के स्व के स्व हैं के स्व ।

देश देश के स्व हैं के स्व ।

देश देश के स्व हैं के स्व ।

यदः विद्यानित्वित्त स्थाने स्

স্ট্রিশ্বাস্থাবিশ্বারীদ্বারী দ্বিশ্বাস্থা

वःसरःवयःचदेःसवरःगातुग्रासःविदः।।

योश्रम्भः (क्ष्र्य्यविक्ष्यः )यः प्रति । योग्रमः हेर्यायः क्ष्रितः क्ष्र्यः यः क्ष्रितः क्ष्रितः यः क्ष्रितः क्ष्रितः व्यः क्ष्रितः व्यः क्ष्रितः व्यः र्मित्र्युम्त्र्यः भ्रीत्रायः भ्रीत्रायः भ्रीत्रायः भ्रीत्रायः भ्रीत्रायः भ्रीत्रायः भ्रीत्रायः भ्रीतः स्वित्रायः भ्रीतः स्वित्रायः भ्रीतः स्वित्रायः भ्रीतः स्वित्रायः भ्रीतः स्वतः स्वित्रायः स्वित्रायः स्वतः स्वतः

स्याधित्वत्यात्र । वियाधि । द्वायाद्वायात्र प्राप्त । वियाधित्य ।

त्र्वायोश्यादि स्ट्रिं स्ट्रिं त्र स्ट्रिं स्ट्रिं त्र स्ट्र स्ट्रिं त्र स्ट्र स्ट्रिं त्र स्ट्रिं त्र स्ट्रिं त्र स्ट्र स्ट्रिं त्र स्ट्रिं त्र स्ट्रिं त्र स्ट्रिं त्र स्ट्रिं त्र स्ट्रिं त्र स्ट्र स्ट्र स्ट्रिं त्र स्ट्र स्ट्र स्ट्र स्ट्र स्ट्र स्ट्र स्ट्र स्ट्र स्ट्

र्स्यायाः श्रीयाः स्वायाः स्वायाः स्वयायाः स्वयायायाः स्वयायाः स्वयायायः स्वयायायायः स्वयायायः स्वयायायः स्वयायायः स्वयायः स्वयायः स्वयायः स्वयायः स्वयायः स्वयायः स्वयः स्य

गहेशमः(वर्द्धनःश्चनःवार्द्धन्यःवा)दे।

न्युअपः (देलाईद्यार्श्वरायः)दी

यार विया ख्र अप्तर्ने प्यर्ने प्रयुक्त या। ने प्रत्य प्रया प्रय प्रया प सुमान्य में सुमाने माने सुमाने मान्य मान्

निं नि (स्याया स्रेन्या हेया मानु स्यादे प्रमुद्दा मान्यायो माया प्रमुद्दा स्वाय स्थित । स्वाय स्थित । स्वाय स्थित । स्वाय स्व

खुश्यायः कवाश्यायः स्थाः देवाश्यायः व्याविश्वाः व्याविश्वः विश्वः वि

नवे.स.(अअअन्नर-२.व.च.)त्य.माशुस्रा

५८:११ (५१) नवंश नवर क्ष्मा नवर क्ष्मा नवर क्ष्मा नवर क्ष्मा नव क्षमा नव क्

पहिरापा (पादेव संप्या न हें दा पादे सून या न से प्राप्त के विराम

मृत्यःश्वरः श्वरः विद्याः श्वरः श्वरः । देवायः यदः श्वरः विद्याः यद्यदः वि । विद्याः यदः श्वरः यद्यदः वि । मृत्यः यवः श्वरः यद्यदः वि । मृत्यः यवः श्वरः यद्यदः वि ।

ग्रुअ'रा'(न्ने नदे न्रेन्यम्य राषा हे न्रेन् मुहेना हु सहस्य राम न्वना सर हुन )दे

ने'नशःश्चेन'म'नश्रयःनदेःश्चेम्।

वें वा प्रदे त्यस त्यस से सम सुन है।

यदःद्याद्रभेग्रायःह्याः धरःयदः।।

नन्यायीयासहस्राधन्यावयाः सर्ग्या

सर्ने स्वाविष्ण हित्र स्वाविष्ण हित्र स्वाविष्ण हित्र स्वाविष्ण स्वाविष्ण हित्र स्वाविष्ण हित्य स्वाविष्ण हित

স্ট্রিশ্ব (য়য়ৢঀ৾য়য়য়ৢঢ়)ব

च्या क्षेत्र क्षेत्र

यथ। यथ्यायाह्य स्थ्रेन प्रात्ते श्रीत्राय ह्या प्राये स्थ्राय क्ष्याय स्थ्रे । ।।

यथा यथ्य याह्य स्थ्रेन प्रात्ते श्रीत्राय ह्या प्राये स्थ्राय क्ष्य स्थाय स्थ्रे ।।।

## ये दुः द्वाः या ने यः र र र सूदः या

यवित्रास्त्रम् सर्वेद्रान्ति स्त्रिं स्त्रिं स्त्र स्त

५८.स्.(ज्रुद्धःगर्बरःयन्द्रः)त्यःयाशुस्रा

वरः यः वित्राधरः वर्षेत् । यः यः ते । वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र । वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र । वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र । वित्र वित

५८:में (बर्स क्रिंग सर क्रेंन स्थाने क्रिंग केर हेंग अस्ति के अस्त न हुन न के अस्त न हुन स्थाने क्रिया

श्चितिः देव द्वा प्यव व्यवा मी देव हैं।

५८:सॅ (क्वेंके देवा) दे।

यद्र-तृह्म्वर्थान्यः विद्र-त्यः विद्र-तिक्षः विद्र-तिक्य

ग्रालुर वर्देश १९ द र र व्यः के श्रा शुः वद्या से द हिंग् श्रायः से द स्यर नश्रुवासायदेवि इसाम्पर् होरासार् समायकरासावी माल्रामी देवा होता के खेंना धेव सर नर्भय नर हैंना राहे विकर सर दशूर हैं। । यद सम वरी द्या के या पा खे तु न क्कु द पा व या न विदाय विदाय व या व यह द पा यमा येतुःस्'द्वै'पिहेम'र्स्याची'रिवेय'रा'सुर्त्त्रस्'स'सप्टर्स्र्राच्या वर्देराष्ट्रीः अप्टूराचन्द्राचेषायार्थे। श्चित्रायार्थेषायायारे प्यत्यायाः नियास्या ग्री दिवात् पाशुस्या वियायाया दिवायाया दिवायाय है। हि वि दिन्देन देश नर्यसा श्री सिन्दिया साया श्री दार्सिया सार्थी दार्सी प्रती सामा सा धेव है। श्रेर श्रेर हैन हैं नाय या खार्के नाय नयन न ने या प्राप्त के प्राप्त यावराववे ग्रुटा कुवा शेस्र या द्वादे श्रुट्टा स्थ्रेत द्वाद से से दिवीं या हे श्रुवा न्मॅं त्र ले 'वर्ळे अ'र्सूट'हेन्'र्डे अ'न्यस्य ग्री 'गान्त्'य 'वनेन्य 'क्य'गहे अ' न-१५ मं निवर्ते।

क्ष्र्नः क्षेत्रः त्या प्रेत्तः त्या विष्ठः त्या क्ष्रा विष्या विष्ठः व

देशनः हेंद्रः हेद्रः हेत्रः हेव्ययान्य स्वित्रः स्वित्रः स्वित्रः स्वित्रः स्वित्रः स्वित्रः स्वत्रः स्वतः स्वत

स्वाक्षित्राचार्यः वश्चर्या वश्यय्या वश्चर्या वश्यय्यय वश्यय्यय वश्यय्यय वश्चर्या वश्यय्यय वश्यय्यय वश्चर्या व

महिरामा (धवायमामी र्देवा) दे।

ल्यायम्पर्तः न्याः श्रम्यः उत्ते । श्रमः प्रमायम् स्याः न्याः । त्रिमः प्रमायम् स्याः न्या । ले स्यमः पर्ते नः स्याः स्याः स्याः न्या ।

र्याव्याव्याः वित्राचित्रः वित्र श्रुणाः वश्यः प्राप्तः वित्र वित

यः मुश्रायरः चल्दः सर्दे।

न्रिंस्य (विदेश विश्व वि

यदेव गिरुषा भ्रम्भ । अर्द्धव कि प्रमानिक भ्रम्भ । विस्ता विस्ता

८८:मूर्स (यहेब्याहेश्यः ग्रीन् ग्रीः न ग्रीः

# गुनः ईन निन्द्र ने निन्द्र में निन्द्र में

नश्चनः नहुमः शुः ध्यानः श्वमः श्वमः श्वः श्वः द्वः द्वः द्वः विद्वः विदे विद्वः विद्वः विद्वः विद्वः विद्वः विद्वः विद्वः विद्वः विद्व

ने अ'त'र्ने त'त्र्य'मदे'नने त'म'ले अ' जु' अ' धेत'म'त्र' क्रें मार'मे अ'

ग्रम्साहेनास्य संस्थित पहुनानी प्रमेनिस सम्प्रस्य स्वर्धन संस्थित सम्प्रस्य यर्वे । ग्रावः हेन ग्री मनेव मान्य नेव न्य मनेव मनेव मन्य मिल वर्चेन्यने न्रें निर्देश्यों । श्रें निर्देश्वाय प्याय से वर्षा निर्वा वर्वाः ग्रमः वर्षे महिषाना वर्षे में वर्षे मार्था में वर्षे मार्था में वर्षे मार्थ मार्थ में वर्षे मार्थ मार्थ ग्राम्प्रासेत्रामासे सेत्रापि सेत्रापि सेत्राप्त सेत्राप्त सेत्राप्त सेत्राप्त सेत्राप्त सेत्राप्त सेत्राप्त स यदे मोर्दे न यर दशुर न या श्रया थे हमा सुर दें में मोर्ड मा या से मा या प्राप्त न र्ने। १२ अन्तः ने अप्यम् ग्रामायमे ने प्रते पानि प्रते न मने न प्रामा है अप्राप्य प केर देर मुरुष रेष पर पर पर्दे द दे। । दुने प्रवे में में में मासूद परि स्वद स्वर क्रेन्पिये देव ग्वा के कि या निवास निवास के निवा र्देव-देव-द्यायवे-चरेव-यः श्ले-पाहेश-श्ली।

गहेशपा(यळवं हेर्)दी

## र्नेन'न्य र्हें प्रेश हीं न'याय सेना। हें ने गुन हें न'येन' मन्म नहेंना।

ग्वन् श्री श्रुंग्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त स्वाप्त प्राप्त स्वाप्त स

म्बर्धरादेवामरावेगासदेवासुसात् हेम्सार्थान्य । क्रुशन्दरश्रेश्रश्राह्म व्यादायदान्य विषाः हुः सेदायदे म्याद्या विषाः हुःवशुराया विश्वायेवावर्देवाद्यायदेवायाध्ययादरादे हेंग्रशायदे हेंशि वर्देन्यावनायाग्वाह्म्याधेवार्वे। देवान्याये वहवानयान्वाह्मायाया वा र्नेवन्याननेवन्यास्य हेन् ग्रीयास्य हेन् प्रह्यान से सेन्यायह्या होत्रसेत्रपवे होत्रपाह्र सेत्र त्या त्र सेत्र प्राप्त हो सेत्र प्राप्त है स्था हो से सेत्र से से से से से से स न् हो न हु अपाय प्राप्ति अपार हे विया प्रिन्। यावव प्यतः गुव हे न न ने व प्राप्त क्रॅ्रिंट यं धीव व निर्देश क्रेंट हिंद देंब द्या निर्देश स्टाप्य क्रुंट्य या व विद् य दुर वर् ग्राम केर व्याने क्षेत्र त्र ग्राम हैं य यरेत सुय ह व्याम हैं। । हैं र ब्रैंगायमा स्टानवेव से दार हेट ब्रेंग वा । स्टानवेव हेट दास्य गुन वर्म्म विश्वाम्बर्धरश्चार्था

यदे हे यह वायायया स्वादेवायह धेया सुनि विश्व विश्व यदे । विश्व वि

₹अअ'य'णप:ष्ठिन'रादे'न्नर'न्।तुअ'रादें। प'ठेग'न्नु'अ'य'यह्ग'रादे' इयान्नि भी देव निया हु या है या या सम्यास्य सुया भी या ने या दे हिन यः स्टाक्षेत् सूटः वरः वर्देत् या वे सेवा वा या प्रान्त विवायः है। सूटः खुवा वाहे वा यश्रायद्शाम्यात्रान्त्र, वृत्रां सूरावायाः स्वात्रां सुरान्ते सामूरा पुरायाः विष्याया से से नाम स्मान्य के नाम से यः कुः नवना नी : कुं यः न् : श्रूनः न ने : हेन : नें न : न न ने न : न न न यः न : वें ना : हुः बेर-र्रे। । यदयः क्रुयः ग्री-धेः नेयः स्टः हेर-वयः व्यानः वादर-प्रवे स्ट-र्टः युनः भे दे ते विवारा अवत्र द्या ता सूर द्र राहें या राषा विवार हें या रा यर हिंग्या नार्दे। । श्रे.श्रेटि:श्रे.चेंटि:श्रे.पहें व संदेत श्रेश कंट्र साक्ष नुः येता से न वःस्टारेगाः प्रदेश्यरेवः शुयाये श्चेदः प्रयास्टायः स्टावेदः ये श्चूदः प्यदः। स्टा ८८ व्ययः मे रे रे वे वा रे वे रक वा वव रूट या सूट व या है वा या या राव ववा बे देवायायदे भ्रेत्र क्षेत्र से दहेया शुक्तिया याया है या प्रेत्र प्राया है या या है या या है या या से या या व से प्राया या से प्राया से स्वाया से स्वाय वनवःविनाःधेतःयःने वर्षःन्त्रानवेःन्नामःहिनामः सरमः क्रुमःयः से शेन्यवेः र्देव-५:१० यायर ग्रुटें।।

म्राह्म प्राह्म प्राप्त के न्या स्थान स्थ

# ने पायहिया हेव इसायाहेश सर्वेदा।

इयादर्रे राधाद्याधाद्ये ।

यदेवं गिरुश्यान्व त्याय्ययश्यादे । यदि त्याद्या वि ते त्यायदे वा स्वया वि ते त्या वि त्या वि

বাইশামা (র্রামর্জান্মরাট্রান্ত্র্বামন্বন্দ্রা)ই।

ने'य'यहेगाहेन'यय'य'ते।।

क्य'यश्चित्र'यहेगाहेन'श्चेश्वानित्र'हेत।।

क्य'यश्चित्र'य'य्यतः क्षित्रश्चेश्वा।

व्य'यश्चित्र'य'य्यतः क्षित्रश्चेश्वा।

व्य'यश्चित्र'य'य्यतः क्षित्रश्चेश्वा।

<del>ढ़</del>ॕॻऻॺॱय़ढ़॓ॱॻऻॸॱॿॻॱॸ॓ॺॱॸॸॕॣॺॱय़ॕॸॱॾॣॗॱॸॱॼॖॖॸॱॺॿढ़ॱढ़ॕॻऻॱॺॱॾॣॺॺॱॺॱ गर्वेन रेन वि भ्रूग तुन वर्षेया ही त्रया वर्षेत्र या प्यन वींन या वींन या त्रया नदेवःसरः वर्देदः सः रेग्यासः रेग्यास्या वेग्याया देयः अर्दे श्रेःसः ह्यः <u> स्वरक्तः भेरावश्येव स्रिम्य स्वाधायशायेषा अस्ति । स्विर्वे स्वाधायि । स्विर् स्वाधायि । स्विर् स्वाधायि । स्विष् स्वाधायि । स्विष् स्विष् स्वाधायि । स्विष् स्विष् स्वाधायि । स्विष् स्वाधायि । स्विष् स्विष् स्विष् स्वाधायि । स्विष् स्विष् स्विष् स्वाधायि । स्विष् स्विष् स्विष् स्विष् स्वाधायि । स्विष् स्विष् स्विष् स्विष् स</u> *इयः वर्चे रः यः वरः यवः द्धं वः वाडे वाः वी शः वाडे वाः यः श्रेः वार्वे रः रुश्रः श्रुश्रः वः* क्रॅर-१९८-१६वाय-प्रते द्वापादर्हेर-प्राध्यतः क्वेदि-हिट्-प्रर-क्वेय-याक्रेयपा यःश्रेष्यश्चार्याद्यात्रात्रात्यायात्रयात्रस्ययःश्चेयायः नश्रादेवाः अष्यावात्रश्रास्य स्थायायार्वे द्राया स्रे ने या मी श्रापार्वे द्राया धे दर्शे। कुर्गाडेगामवेर्नार्म्य व्याप्त कुर्मा क्षेत्र विद्या विद्य क्षेत्राञ्चरयाग्रीः यार्वेदायागर्वेदायीः त्यायायायाग्यायायानेदायार्थेगया ग्रर-देव-ग्रीय-प्यरय-य-प्रेय-प्र-ग्रीदे ।

म्बुद्दार्द्दी द्वाप्तर्गेद्दार्य देश माने स्वाप्त स्

ग्वत्यपराम्यायर्भेरायपराम्बित्रित्यरम्भेराधेर्ययायम्बर्यः

क्रेश्-ह्या-द्रिश्-विश्वाहर्षा । व्यान्यान्य विश्वाहर्षा । यथन्त्र स्थान्य स्

# वश्रान्य वित्र वित

र्ट्ट्रिया श्रुप्त वित्र स्त्रीय स्त्

यर ग्रुव पदे भ्रिम् रह विव से ह व स्त्रुव स्त्री व स व से ह त से ह ह वर्गुर-न-अधीत्। यर्था अर्था कुष्याः श्रीवाषाः पदे वर्ष्य श्री वर्षे देवर्र्भेवर्श्वायायदेवरमरायाच्चायायारायाच्चायायायाच्चायाया राञ्चाराष्ट्रातुराहेनारायदेःनेरारताग्रीरावेदाद्यायदेशिय। ररा नविवासेन हिंग्या शी भी यान्य शीया विवास सम्मानिया निवास विवास कर स्वास सम्मानिया स्वास सम्मानिया स्वास सम्मानिया એન ફેંગ્ર માટી જે અમ્વર છે અમાં કે વાર સમાસી વાસ માટી અમામ મ हिर-र्-नर्वेर-दर्वे अन्यदे हिर-र्ने । नर्डे श्रेम-य श्रेमशन्यदे देव हेर-त्यः यदे से त्या से वासाय से दिन सुसा ही साह्य ना पदि । हिन् ग्रामा प्रस्ता विताय । विताय से वासाय से वासाय से वासाय र्ने रुगायरे या नरेत्र सर शुराया वेया बेराना धेता स्था सु सु स्वा के राहेता है न बेद्रायायदी।प्रकासीयोदादासदिदासुसाद्दरायायादासँग्रकाग्रीयार्वेद्रायाद्दर सरप्रमुर्से लेव। यरे प्राचित्र स्रिंग्स स्रिंग्स प्राचीत स्रिक्ष से प्राचीत स्रिक्ष से प्राचीत स्रिक्ष से प्राचीत स्रिक्ष से प्राचीत स्रिक्ष स न् वशुर विर खेन व रराविव श्री अ खेन न वे अ श्रु अ य न ने व गिष्ठ अ विषायान्य वहीं तामिते हिंदा मिति।

> यहेगाःहेत्याः भेताः देताः वेताः । भूताः भूतिः सेताः सेताः वेताः । भूताः भूतिः सेताः सेताः सेताः हेतः हेता । स्यायवेत्राः सेताः स्वादेताः हेतः हेता ।

त्तुः सः न्द्रः द्र्रें सः स्वानिः द्र्यः द्र्यः द्र्यः स्वानिः स

गहेशमा(देलमार्वेद्सम्बर्म)यागुरा

यर्ने से प्राया से वास्ता प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्रम् से प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्

८८: में (यह के मान्य क्ष्म मान्य है स्त्रमाना का मान्नि मान्य क्ष्म मान्य के मान्य

५८:में (अर्देव शुअ श्री श नार्वे द र र द्याना र )दे।

म्ब्रम्थायाः श्रीम्थायाः अर्दे स्थायाः स्वर्ण्याः स्वर्ण्यः स्वर्ण्याः स्वर्णः स्वर्णः

नेनेश्वान्दरयःश्वान्यया

गड्र सेंग्राम्यायायायायायाविवः रु. मह्न्या

रे'ते'तुन्'सेन्'ग्रे'स्य्याह्न न'य'र्सेग्यायाह्न न'र्स्यास्य वित्र'त्र'स्य्याह्म स्ययाह्म स्ययाहम स्ययाहम

गहेशमः(स्रम्भेशमर्देन्यन्यम्यः)यागुर्या

यन् अः ग्रुअः अः ह्वाः चः अवाशः शुः श्रृं वः चवेः खुरः इरः र्ने वः नुः नश्रृवः चः नरः। रेअः र्ने वः धोवः चः नवावाः चः नरः। नेः वः ववावः चः श्रुरः चर्वे।।

५८:में (वनुभाग्नुभाभे ह्मामार्भेषाभाश्चार्भेदामवे खुराइरार्नेदानु मध्यामा)दे।

मञ्जारायार्थेन्य स्टान्यायार्थे क्षेत्र साम्यायार्थे साम्यायार्थे क्षेत्र साम्यायार्थे क्षेत्र साम्यायार्थे साम्यायाय्ये साम्याया

## व्हिमा हेन मालुमा सदि देन दु दी।

## सर्वेत् से सन्देश न सूत्र ....।

भे त्यायां हे त्यहे मा हे ब ने । विं बं हे न त्या ने अं श्री अ मालु मा न्य ने ने विं चं हो । विं व ने स्थान के स्था के स्थान के

गहिरामा(देशक्त्रं विष्येत्रं प्राप्तानामा)दे।

## 

## ने नगः भून छेगा अ छेन सेवा।

ने मिं वं छेन् ने ने स्थान नि स्थान के ने स्थान के ने

गशुस्य (देखारवायान श्वरः नः) या शु

गुनः हें नः तुः प्यदः साञ्चनः साञ्चनः नः स्वतः साञ्चनः नः स्वतः साञ्चनः साञ्चनः

५८:मू.(ग्रेंस्चारीलाराश्चराया)स्री

# गुनःहिन:हाधरायायावावावावा

इयादर्जिनःगुनः हैनिन्ने शासेन्ते।

गुदार्हेन मुभ्यत्व अञ्चर्या अभिन्या स्वाया विषय मि स्वा मेन

यहेगाःहेवःयःव्हेंशःनेःवेनःसर्वेनः।।
याववःनुःचन्योनःसेनःसेन्याःहेवःस्थेशःयार्वेनःत्रस्याः।
नेशःहेंगाःवहेगाःहेवःस्थेशःयार्वेनःवस्याः।

त्रिमाहेत्रसम्मर्डरम् । वित्रसम्बद्धसम्यद्धसम्बद्य

पहिराप (क्षिन्य मर्ग्य मर्ग्य स्वर्प्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्प्य स्वर्य स्वरत्य स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वयः स्वर्

> शुःयद्वे मुयायमानर्भे दाव्यमावे।। हे सुराद्दे मध्यायमान्याहे नवेव।।

ग्रुअ'रा'(भेर्'सळस्यार्स्ट्रेर'न'से'त्वर्'म्थर'न')दे।

नियशहे से सम्भाति ।

यायाने से सम्भानित स्थाने स्थ

हे श्रेन क्रेन हम्म पर्वे वाका शुराया। हे श्रेन क्रेन स्वा क्रिया क्रेन स्वा विकास स्व वि त्रेश्व ह्व सायाप्य स्टि श्रे न क्रे व ह्व स्थ्र स्थ्

नवि न (नने क्षेनानी इसन्हे से वहन म क्षर्न न )दे।

र्दः विविदः सेर्पः श्रुः सः द्वायः विद्वा स्थायः विद्वा स्थायः स्यायः स्थायः स्यायः स्थायः स

श्चुः स्रदेः श्चे सः तः श्चे याः सः द्वा । श्चुः स्रदेः श्चे सः स्रदे याः स्रदे । । श्चुः स्रदेः श्चे सः स्रदे याः स्रदे । । स्रुव्याः स्रव्याः स्रव्याः स्रव्याः । ।

श्रु अते श्रु अप्तान्य प्राचित्र विष्य । अप्तान्य विषय विषय । अप्तान्य विषय । अप्तान्य विषय । अप्तान्य विषय । अप्तान्य विषय विषय विषय । अप्तान्य विषय विषय । अप्तान्य विषय विषय । अप्तान्य विषय विषय विषय । अप्तान्य विषय विषय विषय विषय । अप्ता

स्वाशःश्वाशः इस्रशः व्युक्तः से द्वित्।

स्वाशः श्वेस्य स्वाशः स

यू'प'(वर्षरव्यमण्णे क्यान्ते क्रांस्य रेश्यम् से व्यन्त्य स्वर्यः क्रिंस्य प्रम्य क्रिंस्य क्रिं

क्री-त्यः स्टः चित्रेत्त्री स्ट्रान्य्य स्थान्यः स्ट्रान्यः स्ट्र

याय हे र्ने त्या श्रु त्वा प्राप्त के त्वा श्रु त्या श

न्याः हे देवः द्र्याः मद्रयः स्टान्य विवः श्री शः श्रुः द्र्यः यश्यः व्यवः यश्यः विवः विवः श्री शः श्रूः द्र्यः यश्यः यद्र्यः यः यद्र्यः यद्यः यद्र्यः यद्र्यः यद्र्यः यद्र्यः यद्र्यः यद्र्यः यद्र्यः यद्र्य

स्टान्वित् श्री । व्याप्त स्वाप्त स्व

महिशासा (श्रेश्वास्त्र स्वास्त्र स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्व

नारकें विष्यासदर विष्रं सेवावा

श्चु अयादानी अद्येग्यायात्र त्युद्रा

निव्यक्ति अधित्त्वी अश्वास्त्रे स्ट्रिंग्यवी ।

मित्रे अप्तः (ते प्रमाणकाः) त्यः मित्रे अ।

स्ट्रिंग्यं अद्धर्द्ध प्रस्ति ।

स्ट्रिंग्यं अद्धर्द्ध प्रस्ति ।

स्ट्रिंग्यं अद्धर्द्ध प्रस्ति ।

स्ट्रिंग्यं अद्धर्द्ध प्रस्ति ।

यार के वित्र या श्रुष्य के त्रा । श्रेष्य विवादि से वाका ।

गहिराम (देवे व्यव प्रमान प्रामित रा

यर्देन्'स'न्द्र्न्' दे'न्याया'सर्वे । न्दःसें (व्ह्न्यव्ह्न्य)दे।

यायाने ने किना मानव स्थित। ।

र्वित्व रेगागाय हे छे रेव रेव र्नु अर न अर न अर न छे रेव रे हे र र

सेट्रग्रह्रे त्यस्याव्यत्र प्रिंट्र हे या त्यास्य स्वास्य ग्री ह्रस्य प्राहे ते से सस्य स्वास्य केट्र श्री ह्रस्य प्राहे ते से सस्य स्वास्य स्वास्य

यहिषाना । यहिषा

५८.स.(यांध्रेश्रात्रोट्राज्ञीःलेश्रात्रात्रात्राच्यात्रात्रात्रात्रात्र्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्र्

# न्तिं यादावियायाद्यीयायाद्यीयायाद्यी

महिरापा(रद्देवाद्वावाया)व्य

श्रीयाश्वास्त्रीत्वापात्ति मात्री मा

न्यास्त्राची अपन्यायाप्याप्ता । यह या अपन्यायाप्याप्ता प्रमायाप्याप्ता । यह या अपन्यायाप्याप्ता यह या यह या अपन्यायाप्याप्ता यह या अपन्यायाप्याप्ता । यह या अपन्यायाप्याप्ता । यह या अपन्यायाप्तायापत्त्रापत्त्रायापत्त्र्यापत्त्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्यापत्त्यापत्त्र्यापत्त्र्यापत्त्यापत्त्यापत्त्र्यापत्त्यापत्त्यापत्त्या

५८:सॅ (ख्ट्यी श्राप्तावाया)दे।

नेशप्ताने हिन् ग्रीशप्ते हिन् गहिशस्त्र त्वाप्ता है या ग्रीश हिन् विन् स्वाप्ता स्वाप्ता है या ग्रीश हिन् विन्

यहेगाःहेवःग्रीःवे स्याँवःस्याःग्राः। स्रेस्राःग्रेस्राःसेस्राःसेस्राःवेस्राग्राह्य।। स्याग्रीःसंवे स्टायास्य।।

हे सूर शे मार्डे द दे न विव भी दा

महिश्यः (क्ष्याय्यः प्राचित्रं ।

प्राचित्रं प्राच्यायः । वित्रं प्राच्यायः ।

प्राचित्रं प्राच्यायः । या स्रक्षेत्रं प्राच्यायः विश्व ।

हे स्रक्षः स्रक्षः स्रक्षे स्रक्षे ।

स्रक्षः स्रक्षः स्रक्षे स्रक्षे ।

स्रक्षः स्रक्षः स्रक्षे स्रक्षे ।

स्रक्षं प्राच्यायस्य स्रक्षे स्रक्षे ।

स्रक्षे प्राच्यायस्य स्रक्षे स्रक्षे हे । ।

स्रक्षे स्रक्षे स्रक्षे स्रक्षे स्रक्षे स्रक्षे स्रक्षे स्रक्षे ।

नेयानवेदार्श्वार्थिः हेन्या।

न्ये र द ने या विदार के वियान मान के मान के कि स्वार मी का क्षेत्र के स्वार के स्वर

गहिरामा (ईवर्गणणमा)दी

सरः से माययः नरः हो दः दें विया। ने यः प्रयः ने यः हें दें हो दें दें।। र्हें दें माययः नः हे दः धे दः ने या।

### गरमेशनेशनशरे अरगहें

स्राधित्र स्राधित स्राधित्र स्राधित्र स्राधित्र स्राधित्र स्राधित्र स्राधित

ग्रान्ते के स्वान्ते न्यान्ते न्यान्ते प्रान्ते स्वान्ते स्वान्ते

गशुस्रासः(रहारेनाव्यद्ग्यवेःश्चुनः ब्रेट्ट्नानायः)त्यः गश्चित्रः।
स्टारेनाः स्रेट्रायदः र्युः निर्देश्चित्रः। स्टारेनाः स्रेट्रायोजनः स्वायोजन्यः स्वयोजन्यः स्वायोजन्यः स्वायोजन्यः स्वायोजन्यः स्वायोजन्यः स्वायोजन्यः स्वयोजन्यः स्वायोजन्यः स्वयोजन्यः स्वय

५८:सॅ (रदःरेग सेन् ग्रूट इत्य क्षे निवे निवे)

# मायाके स्टार्समार्थे दाश्वे स्वा ।

# याववरश्चित्रः चीः यदे याः यविवर्शे ।

यदे ने स्टारेगा से दार स्वास्त्र स्

क्रेव मानव नग न मान्य स्वाप

# युवायर्थे स्टारे द्वा स्टारे द्वा स्टारे स्

यद्वात्व स्थान्य विद्या विषय विद्या व

यहिरान्य (रहारेगा सेन्य मानवर रेगा से प्ययन मानवर रेगा से प्रायम स्थान स्

५८:सॅ (५६४) दे।

रे भ्रे र्रा रेगा से दाव प्रा त्या से दाया स्थाप से दाया से द

देन्द्रस्याच्यान्यस्य क्रियान्य । यदेन्द्रस्यान्यस्य क्रियान्य । यदेन्द्रस्य क्रियान्यस्य क्रियान्य । यदेन्द्रस्य क्रियान्यस्य क्रियान्य स्थान्य ।

महिरामा (अध्ययायया श्रुप्या दे छिन्द्रा मान्य दुः नहिन्द्र सेन्द्र सेन्द्र मान्य प्राप्त मान्य )दे।

याववःश्रेवःसरः प्यतःश्रेः ह्याःव।

> न्देश्वास्थितः है 'क्ष्रमाने 'याववा भेवा । याववा भेवा वे 'व 'न्देश भेना । है 'क्ष्रमाञ्चु' सामने व 'भेवा भाषा । मक्षा च 'ने 'मेविवा के का भाषा ।

निन्यः (वहनाशः विन्त्रम्यः वहेशः वहेश

यायाने प्यस्ति स्वाद्य स्वाद्

ग्याके प्रतिस्तान श्री म्राह्म स्वाप्त प्रतिस्तान स्वाप्त स्य

यर-दर्शन्तिः स्वीत्र-त्रम् विश्वान्तिः स्वीत्र-त्रम् विश्वान्तिः स्वीतः स्वीतः

# विष्ठित्रश्चे अध्यक्ष ते विषय अप्तर्भ ।

याद्रात्ते स्वात्त्र स्वा

यादःकें सेस्रस्ते या बुदः त्रयः या । दे कें प्रस्रस्य उदः दे प्रतिदः या नेया सा । दे 'क्षे' द' प्यदः सेस्रस्य उसः द्या ।

#### नह्यायायार्थेव न्द्रा हे वियार्थेन।

ग्रुअपा (क्विंद्वेद्वेद्वेष्ट्वेय्ययद्वेष्ययद्वेष्ययद्वेष्ययद्वेष्यय्वेद्वेष्ययेद्वेष्यय्वेद्वेष्ययेद्वेष्यय्वेद्वेष्ययेद्वेष्यय्वेद्वेष्ययेद्वेष्ययेद्वेष्ययेद्वेष्ययेद्वेष्ययेद्वेष्येष्ये

८८:सॅ (क्रिंग)दी

है स्ट्रेन हें न स्ट्रेन स्ट्

ने ग्रेन केन यह कम्बर हो प्रयुम्।

स्त्र-स्त्र-पर्देन्द्व-स्वर-हे-स्क्र-ने अर्द्ध्व-स्त्र-स्वर-स्वर्ध्व-स्त्र-स्वर्ध-स्त्र-स्वर्ध-स्त्र-

#### गहेशमः(यनः)यमशुर्या

श्रुः अः अपितः यः क्रवाशः पः श्रुः निर्वे । श्रूरः श्रेतः श्रितः श्रूरः श्रेतः श्रूरः विषयः प्रते । श्रूरः विषयः विषयः विषयः विषयः । श्रूरः विषयः विष

५८:में (श्रुः सामान्यायाः कना सामाः श्रुः नवे स्तुः सकन्) दे।

ने चेन मने भेग च ना

हें त्र सें र राज्या कवा राज्य सुर राजा।

नेशक्ते अर्बेट नक्ते।

र्श्नेट हेट नगा कग्र एवं एक हिंदा

श्चुं संस्थानम् ने छेट्रायार्थे ने स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थानम् स्थान्य स्थानम् स्थानम्यम् स्थानम् स्थानम् स्थानम् स्थानम्

देन श्चे राविष्याचाया हैं ना से दाविष्याचार स्वास्त्र श्चे स्वास्त्र स्वास्

क्रूट हिट नगा कग्र ग्री स्था नश्चित । इस्मारे दिया कग्र श्चित प्रमा क्ष्मा स्था निव्या । के प्या से निव्या कग्र श्चित प्रमा निव्या ।

### ने प्यराष्ट्री त्रशार्श्वेरानर त्यूरा।

क्रॅन्डिन्नवाक्ष्मभार्यास्थान्यक्ष्मभार्यान्यक्ष्मभार्थः स्ट्रिन्नवाक्ष्मभार्थः स्ट्रिन्नवाक्षमभार्थः स्ट्रिन्नवाक्षमभार्थः स्ट्रिन्नवाक्षमभार्थः स्ट्रिन्नवाक्षमभार्थः स्ट्रिन्नवाक्षमभार्थः स्ट्रिन्नवाक्षमभार्थः स्ट्रिन्नवाक्षम् स्ट्रिन्नवाक्षम्

স্ট্রশ্ন (রু:রুল্ড্রেন্স্ন্র্ন্

ग्रान्ते के प्रदेश में ग्रान्ते व्याप्त के प्रत्य के प्

र्द्धः भूराम्यम् अर्डे के अरुद्दर्द्दाय्यायदे के अरुद्दाययायय विद्वार्थः विद्वार्यः विद्वार्यः विद्वार्थः विद्वार्थः विद्वार्थः विद्वार्यः विद

मारकें दिर्देशद्दर्दिश्येद्द्द्द्र्या । र्ज्ञे स्थायात्व्यात्र्या । देश्चे स्थायात्व्यायात्व्यायाः । द्रियायायात्व्यायात्व्यायाः । द्रियायायात्व्यायात्व्यायाः ।

देशक्षान्य के क्षेत्र के निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्मा के निर्मा के निर्मा के निर्मा के निर्म के निर्

भूत्रास्त्रम् न्यान्य स्वान्य स्वान्य

मालव्य मुः सेन् प्रति र्क्षन् स्यास निमानी लेखा नेन निमानि स्त्र केन प्रति स्त्र केन स्त्र केन

गशुस्रासः(श्वर्यायदेश्वर्ययाः स्वर्यायाः विद्यायाः विद्यायः व

५८:सं (क्याह्नेया सेन् गुरायानुत्या नुते से प्रक्रींदान प्रमन्त्रे प्रत्य क्रमाया )दे।

> धीन् निविवार्ते स्यान्यमान्यस्य भीता । दे स्वरासे ना प्यान्य स्थानी । दे निविवार्ग नुष्य स्थानी । द्रम्य भीता स्थानि स्थानी । द्रम्य भीता स्थानि स्थानी ।

क्वित्यत्र्यं स्थान्य स्थान्य

द्येर्यन्वयायायस्थिरः वीः वी ।

सर्वेद्राय्युव्ययायायस्थिरः वीः वी ।

द्यायाय्युव्ययायायस्थिरः वीः वी ।

द्यायाय्युव्ययायायस्थिरः वीः वी ।

द्यायाय्युव्ययाय्युव्ययाः विः वी ।

द्यायाय्युव्यय्ययाः वीः वी न्याय्यव्ययाः विः वी ।

व्यय्यविः सर्वेदः स्थ्याय्ययाः विः वी ।

व्यय्यविः सर्वेदः स्थ्याय्ययाः विः वी ।

व्यय्यविः सर्वेदः स्थ्याय्ययाः विः स्थ्याः ।

व्यय्यविः सर्वेदः स्थ्याय्ययाः विः सर्वे । ।

व्यय्यविः सर्वेदः स्थ्याय्ययाः स्थ्याः ।

व्यय्यविः सर्वेदः स्थ्याय्ययाः स्थ्याः ।

व्यव्ययः सर्वेदः स्थ्याय्ययः स्थ्याः स्थ्याः ।

व्यव्ययः सर्वेदः स्थ्याः स्थ्याः स्थ्याः ।

व्यव्यवः सर्वेदः स्थ्याः स्थ्याः स्थ्याः ।

व्यवः सर्वेदः । ।

भूँ व्याप्त स्त्रीय क्षेत्र व्याप्त क्षेत्र व्याप्त स्त्र स्त्र व्याप्त स्त्र स्त

देराल्य स्वराहित स्व

गाँदेशमः (देखाईद्याश्वरायः)दे।

शेस्रशसेन्यायासर्हेन्नुश्रास्य।

व्रवः व्याप्तः विष्यः व्याप्तः व्यापतः वयापतः व

# यादः भ्री र प्रत्याक्षः यद्या श्री र स्त्रा । यद्धं र या प्रत्या श्री र प्रत्या ।

स्तिः श्चेत्रः र्ह्मा । सर्केट्र हेत्र नङ्गेत्रः नतिः स्वरः र्षेत्रः यथः ग्राह्मा । यहः विवाः नति वारः विवाः व स्त्र स्

सद्याः क्रुयाः या सर्वेद्रायः स्वायः गुतः ह्रितः तुः ग्रुवः वयः विद्रायः स्वायः स्वयः स्

महिरापा (बरावाडं अवेगायर पर्दे न्याया प्राप्ते हिन्दे न्याया प्राप्ते का प्राप्त विकास का वि

#### ५८:सॅं (क्रिंग्य)दे।

# ननेव भार्योद्दर्भ में वाद्युम भी।

### र्श्रेट्र अर्थेट्र नश्चित्र ।

त्रवार्श्वरायां विवादारे निवादायां विवेद्यायां के त्राव्यक्षण्यां विवादायां विवादायं विवादायां विवादायं विवाद्यां विवादायं विवाद्यायं विवादायं विवादायं विवादायं विवाद्यायं विवादायं विवाद्यायं विवाद्यायं विवादायं व

#### বাইশ্বন (অব-) অ'বাহ্যুমা

क्रॅन्डिन्हेंग्रथायदेः विश्वास्त्र देवायदेः विश्वास्त्र देवायदेः विश्वास्त्र विश्वास्त्र

५८:में (क्रूट:क्रेट्क्न्वायायवे:वेयारवादे:क्रेट्क्र्यूटायाययाक्यायायवेवायवेवाययाद्वायायाक्यायायाक्यायायाक्यायाय

# यार श्री र खुर ख्रा ख्रा ख्रा ख्री । यार श्री र ख्रा ख्रा ख्रा ख्री र ख्रा ख्री र ख्रा ख्री र ख्री ।

३व:रर:र्ग्यानर्डेअ:यदे:दन्यशन्तःईत:यःयःयःयर्द्धरःहेर्हेन्हेग्यःयः देशःधरःद्वेषिःधरःष्रया कुःश्रळ्वःग्राटःग्रीःधेरःवःवेशःरवःग्रीःधःर्रयः हु भ्रेत प्रदे अर्दे श्रेते खुद यश श्रेंद हे द हैं ग्राय प्रदे याय पदि है में यय पर बेट्रपर गुर कुन ग्रासुस ग्रा वेंच पा सेट्रपर ग्रासुर स पते से रही । क्वेंट्र दह्मायमेयाकेदायमाधुमामी सर्दे यमाद्रिमार्सेदी दर्भेमा उदाया बरा यः बेदःयः द्रा र्याशुक्षः यदिः षदः द्याः यदः ह्या वः यदेः वद्यः क्रुवः <u> ५८: क्रुव:ब्राम्भ:वस्थ:स्ट:क्रुय:क्री:वर:इस्थःनेर:ध्रीर:वर्दे:हेर:य:वहेव:</u> कुर्याया होर्या प्रवृत्यो दिवा सेवावे । पाववा प्यरास दे हिंग स्व स्व स्व र्रायार्क्षराग्री निर्मा सेराहें मुर्यायार्थे दासराहें दासदे खुरासवरायसा रार्धिन पात्रसम्भासा । पात्न मिन्य पाहिसारी पदि । इत विसार्थे । यायग्यायां विमानी हिं दिरानेमाया के दार्थी नामरा न ह्यूना न विदान साहुना हो दा वरी नर्गेर माधिव दे।

वेगायः केत्रायिः खुरः क्षर् असः अः वर्षे द्रात्रे वा श्रुवः क्षेत्रः व्यात्रे वा स्वात्रः व्यात्रः व्यात्यः व्यात्रः व्यात्यः व्यात्रः व्यात्यः व्यात्रः व्यात्यः व्यात्यः व्यात्यः व्यात्यः व्यात्रः व्

दर्गेश्वायायदित्राध्याः श्रुत्राचेत्रायदेवे । ह्यायायेषाः वश्वायायः स्वायाय्यायः स्वायायः स्वायायः स्वायायः स

र्श्व न्यान्य के त्र क्षेत्र क्षेत्र

महिरापा अविश्वान विश्वान विश्

५८:में (अर्वे अर्ड्ड अपी अप्तश्चुन या) दे।

याराष्ट्रीरायाहेशायात्यावरीया

यी से से प्रिंत प्रति स्थाय प्राप्त प्रति प्रति

न्दःसं हिंदः यः यदि स्याम्या । क्रेवः यादः यो यः वे दे दः यो दः के या । दे वे 'त्रे या के व' या प्यदः सक्दं द्या ।

> यान्वर्गित्रेश्रायर्दित्यश्यान्तेत्वः विद्याः । देयाः ग्रेत्रःश्रेयाश्रायाद्यान्यते वः यदः व्युद्याः । वेयाः केवः क्टिंत् यदश्यः श्रेत्रः वेः वाः ।

ने क्षायाधीत सम्यार वारावात्वत यार प्यार मुद्दान याहिय पर्दे द स्या

क्रिं स्वर् विद्वानित्ति । से विद्वानित । से विद्वानित्ति । से विद्वानित । से विद्व

सुरायासु स्रेग्रायाम् स्रयाप्टा

सुर-मान्द्र-त्याधर-स्र-मान्द्र-द्या।

र्हेन्'नडश'णेव्'द्वेर'र्न्र-गुर्व्या

স্ট্রিশ্বাম (র্বামরি ইল্শান্ম ন্মুনানা) মাস্ট্রি

#### ग्रम्भूमाने नियाने विकास स्थित ।

५८.५. (क्रूंटक्षेट्रक्र्यामान्यक्षेत्राचान्यक्षेत्राचान्यक्षेत्राचान्यक्षेत्राचान्यक्षेत्राचान्यक्षेत्राचा भेरी

### नश्रवः इः निषे श्रिनः छेनः धिवः व। । निषे श्रिनः छेनः ग्रानः निष्या ।

# श्रेस्रश्चित्रम्थः न्द्रम्थः स्थ्यः स्यः स्थ्यः स्थयः स्यः स्थयः स्थयः स्थयः स्थयः स्थयः स्थयः स्थयः

हिंद्राण्ची अस्त्राचित्र विद्वास्त्र विद्वास्त विद्वास्त्र विद्वा

# हें त्र सें र र श्रम्य स्थान स्थान

न्यानर्डस्य प्रस्ति । स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति

हें वर्से न्या से निया में निया से निया में निया

यश्यी:तुश्राश्यर्वेदायाधीत्।

ने पर्देन के नुष्य पाने केंन केंद्र सामहिन शुर रे भी मा से न ग्यार

यर्देव गुरु र दं या श्रुर्य पदि ग्वार वा ने न्वा या पर श्रेन श्रेन श्रेन स् सळ्यशःश्चेॅ्र-नदेःषशःग्रेःत्यायःसर्वेदःनःधेतःसदेःभ्वेरःरी ।हेत्सेदशः <u> श्रूरमायमार्ग्रेयात्र विमायात्रे श्रिम्यास्य स्रोते ख्रम्या महिताया देते ।</u> देवाते प्राप्तेतारासर्वेदानसार्वेषात्र सुरात्री । विसान विदारासी ह्याःश्रेयाशान्य दुः नुयाः यो व्ययः नश्चेयशान्यः हित् सेंद्रशः श्वद्रशः हे वेंवानः वर्षेत्रात्रावेशात्रभूत्र धेत्राते भूत्रशादित्र शे ह्या श्रेयाशाय दुः त्या यी। यसर्स्या ग्रीसर्हेद्र सेंद्रसायस में या नाय में नासे विताय हिंदा परि में ना <u>५८१ नदेव प्राथर्वेट नया वेया सैयाया ग्रेडें ५ प्राथय वेद हु यायया नदे ।</u> धिरःरी । देशक्षे ह्याः स्वायाय इ.इयाः वीः यसः ग्रीसः हैवः सेंद्रशः वदः परः बेशप्रकर्भाने परिवेर्धेन पान्न भेन में। ।रेवेर्धेरप्रभारेशक्र मेंश से पानिक्रान्त मुन से ताने के निक्र से पानिक से पानिक से साम स राष्ट्ररः श्रीःयसः कुर्यायाय भ्रीतास्य रेशीया सर्देव श्रुरः रुः कुः यसे र्यायः कें। हैं वर्शेर्या वर्षि वें वर्षिया वर्षे वर्षिया वर्षे वर्शे वर् वर्शे द्यारं निवाः श्रूट्यायया देवे दे या त्रवा हु ववा या त्रस्य या उदा वदा यवे वे व नः विनः सरः विनु रः रे विभाववीया यः द्वीर भाषा धीवः वि । दे विर् द्वारा स्था वुश्यान वे कें व से द्रारा हो न्या प्राप्त के के कि ना के कि ना कि का ना कि का ना कि कि कि कि कि कि कि कि कि क वेशकेंत्रसेंद्रशसेंद्रमुस्रेर्भेगासेट्रग्रूट्रयश्रीः न्वद्यीयायदासेट्र धु अप्रयेव भे व्यापा अर्घेट प्रया स्ति । विसायस सूव है। ।

ण्वा निर्देश्व स्था निर्देश स्थ

ग्रुअ'रा'(देवे त्यव द्वावाय )दे।

# से निया हेर ये व से प्राप्त हो ।

### श्रेन्देर्हेन्स्य प्रवासित्य । गुन्देर्हेन्स्य प्रवित्र प्रवेश्वेष्टा

स्त्रीत्। प्रत्याः वर्षे साम् स्त्रीत्। स्ति। स्त्रीत्। स्ति। स्त्रीत्। स्ति। स्त्रीत्। स्ति। स्त्रीत्। स्ति। स्ति। स्ति। स्ति। स्ति। स्ति। स्ति। स्ति। स्त

ने अन्यान् विचान्य स्त्र मुन्या स्वर्धित स्वर्या स्वर्य स्वर्धित स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य

र्क्षम् अप्याप्त स्थाप्त विश्व विष्य विषय

#### दयादःवियाःयःवे यात्र या स्यादः दशुरा

য়ूँ दःहेद् अर्हेन् अर्हेन् अर्हेन् ।

য়ादेन् यहेद् न् यहेद् व्याप्त स्थान स्यान स्थान स्य

नेशवः क्रेंदः हेदः नक्षें अः धरः छ।।

ह्या यादा अर्थे स्था के स्था

#### यर्ने निरायकुरमायर्ने नियो वास्त्री।

यदाष्ट्रम्पदार्देव् वे द्यायादा क्षेत्र स्था क्षेत्र स्य

न्यायार दिन श्रुम्य छेत से त्या

## 

र्दि-श्रुद्दशक्तेत्र-संग्थ-स्वाधान्य प्रतिन्त्र प्रतिन्ति । विषयः प्रतिन्ति । विषयः प्रतिन्ति ।

गहिरामा (क्षेत्रम्य रावे सुन्द्र त्यम प्यत्र सामवे त्यस नु न सून पा )दे।

स्त्रान्यसम्बद्धाः व्यान्त्रम् । । वर्षेत्रः वर्षेत्रः केत्रः वर्षेत्रः वर्

यह स्वानस्य श्री स्वानस्य स्व

सवर्ष्ट्रित्तर्वर्षः व्यक्तः विद्रः विद्रः

न्युअःभः(देशवःम्बायःनःद्वःमहेरःग्रीशःहूदःहेन्नर्म्यःन्नाश्वरःमन्यश्वरः।)दे।

देशक्ष्यान्यत्वित्रः हेर्न्यः हेर्न्यः हेर्न्यः हेर्न्यः हेर्न्यः श्रुवः विवेदः विवेद

हें न स्थाने अन्तर हो न स्थान हो है है है स्थान हो न स्थान हो न स्थान हो है है स्थान हो न स्थान हो है है स्थान हो न स्थान हो न स्थान हो है है स्थान हो है स्थान है

कृतिः स्ट्रान्यते श्चितः याद्याद्यात् स्त्रीतः याद्यात् स्त्रीत् स्त्रीतः याद्यात् स्त्रीत् स्त्रीतः स्त्रीत् स्त्रीतः स्त्रीतः स्त्रीत् स्त्रीतः स्त्रीतः

र्नेत्रन्यु नदी र्वेट्स्पिन्नेत्र्यः भूगायश्रेत्र्वेष्यः स्ट्रास्त्रे हिंद्

र्ट्याय्य स्वाय्य स्वाय्य स्वाय्य स्वाय्य स्वाय्य स्वाय्य स्वाय स्वयः स्वाय्य स्वयः स्ययः स्वयः स्वयः

ननेव तहिव की नेहें शारी वाद विक्रानिय नेवे सूचा नसूच न से निय

याईं तें हो न्याने त्या वहे या अपनि स्त्रुया पा क्षेत्र त्या के त्र त्या के त्या वि स्त्र त्या के त्या वि स्तर हो न्या वि स्त्र त्या के त्या वि स्तर हो न्या वि स्तर हो न्या

यात्राने त्रम्यात्यात् व्याप्त्रम्या । इ.लट्ट्रम्यात् त्याद्यात् त्याद्यात् त्या । यद्याक्षेत् त्याद्याद त्याद्यात् त्या । यह्याक्षात्रम्य त्याद्यात् त्यात् व्याप्त्या ।

नायाने निर्मातम्य स्ट्रां निर्मा क्षेत्र म्या क्षेत्र म्

५८:र्से (न्यास्त्रम्यो न्यम्यासे न्रस्त्रम्यासे स्त्रम्यास्त्रम्यास्त्रम्यास्त्रम्यास्त्रम्यास्त्रम्यास्त्रम्य

भ्रम्भुरुष्यः भ्रम्यायः स्ट्रिन् स्त्रीः विषयः प्रायाः स्ट्रिन् स्त्रायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्व

५८:द्री. (व्यवःश्चेशःग्चे:वर्गायहेवःग्चे:वेवःश्वयःर्गानाःयः)द्री

ने त्यानने वायहें वा गुवानह ना या न्या खुवा क्षेत्र यो छिना या स्वी ना रा वन-दर्सरस्राम्याद्याद्रभेग्राम्याम्याम्याम्याम्याम्याम्याम्यान्या अःश्चर्त्रागुद्रावार्षेद्रापदे रदानिद्रागुर्वे अःगुर्वारापद्रापदार्वे अंस्वरंदेर् ग्रेशं गुरायर प्रदेश रावे क्वें रेग्याय प्रेर प्रमुत्र प्राव्याय थे व्हें या यर रस रस श्वाया थी भ्रे न रे दी यहे त स्व भ्रे या वेया ग्राया ननेव वहेव भेव भर देगा या परे न हा न या वृज्ञ या या वे व्याय परे व धरायुवाधावबदाश्रुयाधाददा वदेवाधायुवाश्रुयाधावे वदेवावहेवाग्व नहवाराधिताया वाराववाची निर्वायहें तथा सरामु व्यवस्थ हरा व्यव्य वहें व सवे ख़ूव क्षेत्र में व स्व व <u> ५८१वियः सॅ निवेद ५ वहें दारां दे ग्रादानहर्गा अप्ययय विगा पुः वे अप्ययः ह्यों र्</u> ने निवित्र न् स्याध्यत्र का से न न् निर्माण स्थान के ना का से न न् विद्या साधान क्रॅंश ग्री निर्मा पहें त्र गुत्र नह्मारा प्रवद विमार्गे। सर्ने र त्युव सम्वे न्धन्यायायार्थेस्यायम्यस्याम्यान्यायायायायायायायाया वे खूव क्रे अधिव यः ने यश ग्विव संदे न्वन्या यह व ते ग्वा नह्या शर्शे। <u> स्यये वेत पुराप्ताना मुदे पार्चे में प्राप्त प्राप्त वेत पुराद में नाम स्य</u>

स्य त्यां व्याप्त त्या विष्ठ व्याप्त त्या विष्ठ व्याप्त विष्ठ व्यापत विष्ठ विष्ठ व्यापत विष्ठ विष्ठ विष्ठ विष्ठ व्यापत विष्ठ विष्र विष्ठ व

नन्नाःतेःश्चेः सःग्वितः सःभित्। निन्दः सम्बार्थः सः नन्नाः सेतः हो। र्नुः निन्द्वुः स्पदः नन्नाः सःभित्। र्नुः नन्नाः सेतः क्ष्यः गुतः ह।। क्षयः भिरुषः कृष्णदः नन्नाः सःभित्।।

सुद्र-विवि: प्यान्त्र वानी सक्त नानी स्थित स्यानी ना सानी ने किं द्र स्थान नि स्थान स्थान

यद्भान्यस्त्रभ्दान्यस्त्रीत्वाद्भान्यस्त्रम् स्वाद्भान्यस्त्रम् । विः वाः स्वाद्भान्यस्त्रम् । विः वाः स्वाद्भान्यस्त्रम् । विः वाः स्वाद्भान्यस्त्रम् । विः वाः स्वाद्भान्यस्त्रम् स्वाद्भान्यस्त्रम् स्वाद्भान्यस्त्रम् । विः वाः वाः स्वाद्भान्यस्त्रम् स्वाद्भान्यस्त्रम् स्वाद्भान्यस्त्रम् स्वाद्भान्यस्त्रम् । विः वाः वाः स्वाद्भान्यस्त्रम् स्वाद्भान्यस्त्रम्त्रम् स्वाद्भान्यस्त्रम् स्वाद्भान्यस्त्रम् स्वाद्भान्यस्त्रम् स्वाद्भान्यस्त्रम् स्वाद्भान्यस्त्रम् स्वाद्भान्यस्त्रम् स्वाद्भान्यस्त्रम् स्वाद्भान्यस्त्रम् स्वाद्भान्यस्त्रम् स्वाद्भान्यस्त्यस्त्रम् स्वाद्भान्यस्त्रम् स्वाद्भान्यस्त्रम्यस्त्रम् स्वाद्भान्यस्यस्त्रम्यस्त्रम् स

বার্ট্র শ্বং (শুর বদ্ধাশ শ্রী বদ্ধান্দ্রান্দ্র ) শে বার্ট্র শা

म्राच्याः विश्वान्त्र । म्राच्याः विश्ववाः विश्ववः विश्व

ध्रैनःर्रेषः प्रदे त्वानाः इश्वान्य । व्यान्य । व्याय्य । व्याय्य

# प्रस्थः (ब्रह्मः व्यवस्य विश्वस्य विष्य विश्यस्य विश्वस्य विश्यस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्

यद्याक्षत्रः वियान् विश्वान्तः विश्वान्यः विश्वान्तः व

> यायाने श्चापी भेगाने यायाने श्चापी । स्रम्भारत्याने स्मापी । स्रम्भारत्याने ।

### गरमेर्यासेरामानेराहिराग्री

वाया हे श्वाप्त स्था याया वे याया हे त्या से त्या हे त्या से त्या से

यायाने भी शासी ने शास

म्विश्वास्त्राच्याः भ्रेत्वादाः ने स्वाद्याः स्वाद्याः

ने हेन ग्रेम के मा बुमाय के या वा

श्चान्द्रस्य स्थान्य स्थान्य

या बुवा शाय है वा प्रति के स्त्रीत स्त्रा स्त्रीत स्त

# यने स्ट्रम् स्ट्रेम्स्रम् स्ट्रम् स्ट्रम्

यदे त्यं प्रश्ने स्थ्रे प्रश्ने प्रश्

ने'ने'श्रु'यहें न'न्'श्रुन'यथे।।

रा'याविन'श्रु'नुर'रुं य'याविन'श्रु'रु।

ने'ने'रुं याविन'श्रु'नुर'रुं य'याविन'श्रु'याविन'श्रुयाविन'श्रु'याविन'श्रुयाविन'श्रियाविन'श्रियाविन'श्रुयाविन'श्रियाविन'श्रुयाविन'श्रियाविन'श्

यालक् प्यान्य व्यान्य यालक् यालक्यक्य यालक्य या

### 

स्वात्र में विष्य के विषय के व

यायाने खुयायावन यने वा श्री वा । ने प्यी र प्राप्त विवासी ।

> नेशक्षेत्रचेत्रचा । भ्रेश्वान्यक्ष्याः प्रच्याः चरात्युर्गा भेश्वाराः शेश्वराः शेष्ट्रचा ।

गठिगायगुरागराष्ट्रीराधेराहेरासळ्रा

### यादः कें 'चे 'चया' द्येत 'कें 'कें या । वे 'कें 'यद 'चये हेत 'याद 'धेता ।

ण्याने द्वाप्त स्वाप्त स्वाप्

महिरामा (ब्रेज्यामा निष्या में सामें सामें मानमा निष्या में मानमा में मानमा में मानमा मानमा में मानमा में मा

देनायाराज्य अराज्य विवादान्य विवादा

के स्ट्रे निया या प्रमुक्त स्थेत् । से स्रमानिया या प्रमुक्त स्था । ते स्ट्रिक्त से स्था निया निया । ते स्ट्रिक्त से स्था निया निया ।

व्यायावयः वर्गः तृ चुयः यरः दशुरा

देश्वीर्यम्या यद्यात्यक्ष्यः य द्वार्यः य द

र्देन्द्रम् । विश्व स्थानिक स

বাধ্যমান (বন্দান না স্থান না

र्हेन्यन्त्य व्यवःर्वे।

८८:सॅ (क्रिंग)दी

मायाने मन्याने पिंदा श्रेवाना।

य्यायम्य स्त्राच्यायः स्वापायः स्वापाय

म्याने निर्देश में विष्णु में की मिलिस कुर मिले निर्देश में निर्द

गहेशमा(यदः)यदी

कुःषश हो दःसदे हा नदे द्रश्र द्रा द्रश्य द्रश्य स्था से द्रश्य स्था से द्रश्य स्था से द्रश्य स्था से द्रश्य से स्था से द्रश्य से स्था से द्रश्य से स्था से स्थ

न्नियार्थं स्थान्य स्

#### त्रुन्याडेयात्यः वे सहेव वयः श्रा । त्रुन्यः श्रुन्यः वेयः त्रुन्यः श्रुवा ।

त्र्वाहिन्न्द्र्यो। श्वाब्याद्य्यात्र्याह्यः स्वर्ष्यः स्वर्यः स्वर्य

तन्याः सेवः ने वि से स्याः प्राचीः से स्याः । यन्याः सेवः ने वि से से स्याः प्राचीः से स्याः । र्वतः ने से स्याः से स्याः प्रिवः स्याः प्राचीः से स्याः । ने नियान प्यत्यन्य से निया । नियान प्रमान से नियान से निया से नियान से नि

महिरामा (भ्रुट हे न क्षें स्वया स्य

#### र्रेट्यामयान्यम्यायान्यम् ।

ग्राया हे से समा उत्र रहा निव नी मानुन मा वग्र वादा पहार्थे हा से वा तःशुःषःश्वेदःहेःनर्झेसःमरःग्रःश्वेःश्वेदःहेवेःदक्षेन्।साध्यःसेदःमवेःग्वेरःरेः वेना सेससरहतर्मनविदाग्रीसःगुनामसोन्दास्त्रीमहितान्सेमासाधाया भ्री त्वर् प्रति क्रिन् भेर् प्रमान्य व्यक्षातु वस्य क्रिन् प्रति देता प्रति । <u> त्</u>वरुष:प्रते:र्ह्सेरुष:प्रज्ञान,याक्षान्य,याद्याचे स्रोधिक । यह । स्रोधिक । स्रोधिक । स्रोधिक । स्रोधिक । स् ल्रिन्यने श्वेदाहे देन्त्रीया याध्यान् त्वन्यते श्वेत्र हित्या यया यह याया यःग्रादः वर्गाः ददः के अःग्रीः यद्गाः यद्दे वः यः ग्रु अःवः दे अः श्रे अअः उवः यदे वः धरः वहवाराः धोदः धरारे यः वहवाराः धृरः तुः बुवः धः वगवाः धराः सेस्रराउदारी विवास हे दे नगवा प्रसासेस्र रहत वहवास पेंद्र सेट सुद नन्ग्रायारामुरायदे येयया उत्र श्रेराहेदे न्य्ये ग्रायाया पुरात् पेर्ट येया নৰ্বী |

शेश्रश्चार्यात्रास्त्रीत्राहे में स्थान्ये प्रवासी स्वासी स्वासी

वग्रुदेर्चित्रचुः भेदरहेरहेर वर्षे स्थान यादव्यानु से द्रायन द्र्यू स्टेर् वा कुःवन्नराने नवानने वासरा से नामने वाने वें वास माने वास का सुनान के या सा र्हेरसप्यस्थितः हेर्गेससप्यस्यम्भः स्वायप्यस्यदेत्ते । सिसस ठवाग्री सूना नस्या है नर वि नदे र्ने व र र हिन ग्री सादन्य र तु सरसा ब्रैंगाः धरः भ्रेः नुः भ्रेः रेः भेगाः यः ब्रैंगाः भः व्रैंगाः ग्राटः वस्र सं उदः सिन् र यः विवायवे विवयः श्री प्यवायवा विवयः व वःननेवःधरःर्हेन्यःधःश्वेषनेवःयेनःग्रेष्ठिनःधरःतुःयःग्रुयःधरःयेययः उत्रार्थं अप्यान् भेषा यात्र या स्वेदा हे 'क्कें अप्यादे 'ये अय्या उत्राया न्येषा या पा प्रा ळॅं अ'ल'न्श्रेग्र अप्ते श्रेट हे अट्य कु य'ग्रे कु र'व्यु र'पर नश्र्व प यदर शुर्र रुर सेंद्र दे त्यम ग्वन रुरे हेर हैं गमा समित परे से सम र्दं अप्यान् भेषा अप्यान्य र्शेषा अप्यादे गाुन हें ना मा इस अप्ट्रेषा गुः भेन प्रादे र्नेनर्जे।

 त्तैर-ते-स्यान्यस्य क्रिन् क्षेत्र-त्ये स्वान्यस्य क्षेत्र-स्य स्वान्यस्य स्

বাইশ্বাম (ইমাট্রামব্বামব্যক্তর ব্যামব্যক্তর বিশ্বামব্যক্তর

इवःयःहेरःमावगः चविदेः श्चें दशः र्हेशः ग्रीः चन्याः सेनः चन्नः प्रान्तः। चनेवः यहिश्वः सेः प्रवनः प्रदेः ग्रावः याः श्वनः चन्नः सेनः श्चेनः ग्रीनः ग्रीः चन्याः सेनः श्चेनः ग्रीः चन्याः सेनः स्थितः स्याः स्थितः स्यतः स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः स्थित

५८:में (इक् माहेरामालमा निविधः क्षें क्षाक्षेत्र माहेरामा क्षेत्र माहेरामा काहेरामा क्षेत्र माहेरामा का क्षेत्र माहेरामा क्षे

युष्णः इत्राप्ते । व्याप्ता विवापायः वर्षे स्वाप्ता विवापायः वर्षे स्वाप्ता विवापायः वर्षे स्वाप्ता विवापायः वर्षे स्वाप्ता वर्षे स्वाप्ता विवापायः वर्षे स्वाप्ता वर्या स्वाप्ता वर्षे स्वाप्ता वर्या स्वाप्ता वर्या स्वाप्ता वर्या स्वाप्ता वर्या स्वाप्ता वर स्वाप्ता वर्या स्वाप्ता वर्या स्वाप्ता वर्या स्वाप्ता वर्या स्वा

५८:सॅ (स्काइक् माने निमान के सामा निमान के साम निमान के सामा निमा निमान के साम निमान के सामा निमान के सामा निमान के सामा निमान क

कः उत्रः शुक्षः स्टः निवेतः सेट् स्यसः मान्तः सः द्वनः सः द्दा कः विकः स्यसः स्याः स्वयः सः स्टः विवः सेट् स्यसः मान्तः सः स्यसः स्टः देवः सेटः स्यसः सुः सुः सः स्यसः सुः सुः सः स्यसः स्रः से स्यसः सः स्यसः सुः सुः सः स्यसः सुः स्यसः स्यसः सिवः स्यसः स्यसः

५८:द्रीं (क्राइदासुकारमानिदास्यानिदासार्गित्रामानिद्यार्गित्रामानिदासार्गिति

> सुर्याने मित्रास्त्रीत् स्थाने । नक्षान्त्र मेत्र स्थान स्थाने स

हेन स्वाभायमा सदर खु अ से नि । अर्के नि स्था स्था सदर खु अ से नि । अर्के नि स्था स्था सदर खु अ से नि । अर्के नि स्था स्था सदर खु अ से नि । स्री स्था खु अ ने स्था नि स्था से नि ।

देशन् स्वराविश्वा

म्यायाने स्थयायने स्थया स्था ।

कः इस्रश्रक्तायाम् अस्त्रः स्ति । ने 'स्ट 'हेट' वे 'याट 'या याव शा । या 'श्रेयाश हिट' गुव 'श्रेट 'या । यया 'श्रेयाश हेट' या व्या श्रेप शा ने स्था या या व्या श्रेयाश हेट 'या हे 'श्रेट 'या । ने 'श्रेट' ग्रे' वे 'स्रश्र 'श्रेप शा ।

नायाने प्यतायना इस्रायसार्दे तानावता प्रतीर मनासाया प्रतायना उदाग्री खुरायदी प्यदायमा बस्या उदाया द्विम्या रे प्ये यादी स्रे प्यमा या ययर क्र गाँउ गा भ्री व र पायदर क्र गाँउ गा श्री गांश ग्री श गांव श पर प्रमुर रमा देवाने कारे रे पापर काउवाने सकराय से रामर मस्या उर् भी मा वावर्या न्द्रास्ट्रस्य क उवादेश व्यवास स्वायाय । हिन्स वे विस्टर्यो ळॱ<sub>इसस्र</sub>भव्यवाःसःस्वासःग्रीःळःयःयात्रसःसरःत्शुरःस्ति। ळःयवाःसःस्रःतुः दे रहा है दावे का नाहाया नाव राधा है। श्रुवा से दाद्वा है। यहार है। यवा साक्षाता है। षरः रदः नी : कः श्रॅरः श्रॅ नी श्राया नी त्रश्या श्रॅरः श्रॅ नी श्राया र रदः नी : कः यान्य रायदे भ्रम् नायाने प्यवायना उदाक्त से न प्यवास्य कर्मे से प्यवा यगः र्रे र्रे या ग्रम् राया या यो वा ग्री ह्या या श्री या सूरा य द्या हिता गृवा ग्री रा खुराप्यत्यम् उत्रहें म्यारायम् र्यम् राक्ष्यक्तरे से स्वर्धिया व्याप्य <u>ढ़ॱढ़ऀॱख़ॴॱऄॕॴॺॱॸ॓ॱॸॖॴॱहेॱॺॢ॓ॸॱऄॕॸॱय़ढ़ऀॱख़॒ॸॺॱॸ॓ॱॺॖॆॸॱॶॆॱढ़ऀॱख़ॖॺॱॶॱ</u>

यश्चरावश्व स्वापाया से दायि देव स्वापाय विवा प्राप्त स्वापाय स

धुः प्रत्याः श्रम्भः स्वरायाः स्वरायाः

दे श्वर्त्ते वायाः ययाः वायाः यायाः यायायः यायाः यायायः यायाः यायायः या

देशवास्त्रभासेन्यास्त्रम्। हेन्स्रभासाधिसादे सुर्धाह्मन्यम्। न्वेनसासु नर्गेन्यते हिन्यम् ग्रीस्। हें प्रमान के से हें निद्या। सुर्धान निद्या है स्वेन्स्य स्वेन्स्य है है ने साद सुर्धान है निव्यक्ति। विश्वास्त्रियस्त्रियस्तित्तिः

दे:श्रेन्क्रेन्ट्यम् श्रेन्त्।।

स्यान्त्रेन्द्रेन्द्रेन्यम् श्रेन्त्।।

ने'यिवन्द्रेन्द्रेन्यम् श्रेन्यम् श्रेन्यम्।।

ने'यिन्द्रेन्द्रेन्द्रेन्द्रिम्यम् श्रेन्यम्।।

ने'यिन्द्रेन्द्रेन्द्रेन्द्रिम्यम् श्रेन्यम्।।

हे श्रेन् र्चे र्षे र न्द्र श्रू र न श्रू र न श्री म्यू र श्रू र श्रू र न श्रू र श्रू र न श्रू र श्

गहिरामा (क्रम्बर्ध्यम्बर्ध्यम्बर्ध्यम्बर्ध्यम्बर्धेन्धन्यम्बर्धः निवर्धः)दी

ने'यिवत'र्शेन्'र्शेति'र्क्षेष्वार्थापेत्'रिन्।। यगा'ययन'यान'विया'पेत'यन'यशुन्।। ने'प्यन'र्क्षयार्था'रेक्षेयार्था'पेत्'रिन्।।

### क्षयायाप्याप्याप्याप्याचे विश्वास्य विश्वास्य

# ह्यानेयम्ब्रियाश्चात्रः स्वीत्रः स्वीत्रः स्वीत्रः स्वात्रः स्वीत्रः स्वात्रः स्वात्रः स्वात्रः स्वीत्रः । स्वात्रः स्वीत्रः स्वात्रः स्वीत्रः स्वात्रः स्वात्रः स्वीत्रः । स्वात्रः स्वीत्रः स्वात्रः स्वात्रः स्वीत्रः ।

त्वाने तर न्या स्वान्य स्वान्

ग्रुअ'र्'(देशद्रास्त्वविद्येद्रास्ते खुश्यः स्वायाक्ष्य व्याक्ष्य स्वायाक्ष्य स्वायाः विद्या

#### ने भूर हो त्यस सुन्तु त्यो ।

#### ग्राञ्चम्यायान्ध्रित्व्यत्युःविमाःकम्या।

निन्य (देशमार विषाण्य र र र निविद्यो र पर न्यून पर) दे।

#### ग्रान्द्रे ने सूर सुरासे राया

#### ने के के अपार तुन के न पार ।

म्ब्रिट्ट न्यते स्थान्य स्थान

ह्र्याश्चर्यत्याश्चर्यत्याश्चर्यत्याश्चर्यत्याश्चर्यत्यस्यस्यर्यस्यर्यत्यस्यर्यस्यर्यस्यर्यस्यस्यर

गहिरापा(र्ट्सरायाद्वापाने क्षेत्राया)यापि

र्वेत्रः त्रः त्रः त्रः त्रिः त्रः त्रित्रः त्रति त्रित्रः त्रति त्रत्रः त्रित्रः त्रति त्रत्रः त्रत्रत्रः त्रत्रः त्रत्रः त्रत्रः त्र

र्ट्स्यान्यस्यान्यस्यान्यः विवाधीस्यान्यः विवाधीस्यानः विवाधीस्यानः विवाधीस्यान्यः विवाधीस्यान्यः विवाधीस्यान्यः विवाधीस्यान्यः विवाधीस्यान्यः विवाधीस्यानः विवाधिसः विवाधीस्यानः विवाधीस्यानः विवाधीस्यानः विवाधीसः विवाधीसः विवाधीसः विवाधीसः विवाधीसः विवाधीसः विवाधीसः विवाधीसः विवाधिसः विवाधीसः विवाधीसः विवाधीसः विवाधीसः विवाधिसः विवाधिसः विवाधिसः विवाधिसः विवाधिसः विवाधि

न्दःसः (ॐरायःध्याप्यस्याप्यः विवाधीयायः मुनायः )दे। सुरुषः निवेदः नुःकें राजायदायः निवेदः सेन्यायः निवेदः सेन्यः निवेदः सेन्यः निवेदः सेन्यः निवेदः सेन्यः निवेदः

इयानस्याने हिन्द् विन्ता

श्चित्र श्वाप्त्र श्वाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्यापत स्थापत स्थापत

यार विया क्रयम श्रीत यत्या केत् स्थित ।

स्वानस्यास्य सं ते नित्त स्वान स्वा

मद्दिनाक्ष्रस्थास्य स्वानित्त्रस्थाः स्वानित्त्रस्थाः स्वानित्तः स्वानितः स्

यायाने त्याया के ता के अभिया प्राया के ता के ता विषया के ता के ता के ता विषया के ता के ता विषया विषया के ता विषया विषया

#### धितः विशः ग्रुः नरः ग्रुनः भेतः तथा।

ग्रुअ'रा'(देशदार्क्केराचरराविदासेदायरार्क्केसप्तरेक्ष्यपदेक्त्रपत्तिक्षपत्तिक्षपत्ता)दे

 हैंग्रश्नित्राचित्र्याचित्राः त्र्याचित्राः त्र्याचित्रः त्र्याः त्रित्रः त्र्याः त्र्यः त्र्याः त्र्याः त्र्याः त्र्याः त्र्याः त्र्याः त्र्याः त्र्

বাইশান (য়ৄ ক্রে বর্ষ শ্রী শান্ত্র বালা বা প্রা

न्तरः र्ने तः स्वर् तः स्वरः प्रः स्वरः प्रः स्वरः वितः श्री श्राः स्वरः स्वर

५८.स्. (२४८.६्४.स.२४.४८.४७) श्रामीयात्राचीयाः १९०

### वावाने नियम् देव स्थान विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व व

यर:बेन'यर'यडिम'हेर'दे।।

### म्यास्रवःम्यास्रवःयःयम्यासेन।।

यालुग्रायायायदे से दार्चे या ।
यायदे यायायायदे से दार्य से दार्थ से दार्य से दार्थ से दार्थ से दार्थ से दार्थ से दार्थ से दार्थ से दार्थ

वियायार्षित् दे स्वायवि सर्व स्वेत स्वाय स्वित स्वित् स्वाय स्वित स्वाय स्वित स्वाय स्वित स्वाय स्वित स्वाय स्व या स्वेत् स्वेत स्वाय स्वित स्वाय स्वित स्वाय स्वित स्वाय स्वित स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय 
> इसन्निश्चर्यास्य स्थान्ति। इत्य स्थान्य स्थान्य स्थान्ति। इत्य स्थान्य स्थान्ति स्थान्ति। इत्य स्थान्य स्थान्य स्थान्ति।

ग्रुअ'रा'(देशक्'रे'ग्रुअ'स्ट्'रा'यशः त्रुट'र्निते रेग्'रा'र्ट्रितिक्'रीशासासुन'रा')दे।

ने त्युन्न ने वा न्यून स्थान स्थान

#### ग्रान्येशयाद्यायार्वेन्यम्

र्थर निन्दारा क्षेर खुवा द्वर इसारादे ने या गुरु सा स्टर निवरग्री असे न साने सूर करने वा सार मानविवरग्री अग्रावास पेंदि सासे वर वःर्केरःवःवनेवःवरःगुवःवः कुःग्रारः यथः वर्त्वुरः वरः वशुरः हे कुः ह्वः वः यायन्यान् नित्त्वानान्त्रीत्रायित्यामान्येत्रायित्रीत् केरानान्तर र् भिरिं में में राम्या में विस्तान में या निर्मा निर्मा में या निर्मा म यःश्वरःनवेःर्देवःतुःरयःनाधेवःर्वे वे व श्वे वश्वरःने खुयःगरायशःगरः वनामारायामोर्देरायायगुराहे केंद्रायासूना नस्या रहान विदाग्री साम्या माओन् मिते भी वहिना हेन वहिन हेन वहिन सुना नस्य भी मारी मिति न डसाविषाः पेरिः श्रीः सूषाः नस्याः सरास्रस्याः सेरासाः सेरामाः सूरानरे नार्याः सस्य मंत्रे सेन्द्री । नेवरान्ये रात्र मारा नश्च रात्रे सामा नश्च रात्रे से मारा नदे सूना नस्य इट वर भुनाय छुट र सेंट नदे नात्य सूनय देर से य यरश्चिर्यं विरश्चिर्यं देश्चिर्यं के स्वाप्त कर्षेत्र श्चित्र विरश्चित्र विष्ण वि हेत्रपदे सूगा नस्य पेर् ने सूगा नस्य ने बन सामा पर साकन नु कं नदे सूना नस्य मी अर्वी न इसस दिंद नदे मिन देश द नदे नर दिंगा स यदे वाबिर स्वा नस्य वे राय स्वा नस्य की हैं हैं जिर वाबिर नरे न से न्वीं अः धर्यः श्री । न्ये रः वः श्रें वः से रन्नः से नः श्रुनः चिव वे वि

#### ग्राटळें केंद्र में त्याद सेट् हेट।

## र्केर नवर जिंद स्या भी वा भी विकास में कि स्था में कि

कॅर-व-र्द्दाविद्वा श्रेश्च्रा व्याप्त विद्वा श्रेर्या श्रेर्य विद्वा श्रेर्या श्रेर्या विद्वा विद्वा श्रेर्या विद्वा विद्वा श्रेर्या विद्वा विद्वा श्रेर्या विद्वा व

সা্ধ্রমান্ত্র (ব্রুল্মান্ত্র মান্ত্র মান্ত মান্ত মান্ত মান্ত্র মান্ত মান্ত মান্ত মান্ত মান্ত মান্ত মান্ত মান্ত মান্ত্র মান্ত্র মান্ত্র মান্ত্র মান্ত মান্ত মান্ত মান্ত মান্ত মান্ত মা

### श्रवित्यस्यात्वे स्वाप्तायाः वर्षे

ही यस हु यह दे निया है द से या

श्रेवाक्ष्यां श्रेवाक्ष्यां स्वाध्यां त्रियां क्षेत्राचित्रा स्वाध्यां स्वाध्यां

निन्मः (ॐरः नदेः धुवः उदः रदः निव्दः श्रीशः श्रुवः यः द्वावाः यः )दे।

शेसश्चरक्ष्रव हेगा भ्रेश भारते भ्रेरा

र्क्षरान्द्राध्यात्र व्याप्त व्याप्त

र्ट्स्या अस्य प्रत्येष्ठ क्षेत्र क्षे

रदःयोश्यान्याक्षेत्रःश्चितःश्चेत्रःय।। यान्वतःद्यायोश्यानःश्चित्रःश्चेत्राः। र्वेत्रःत्राव्यावःष्यदःष्येत्रःश्चेत्रःश्चेत्।।

र्ट्स नायम् विषयम् विषयम्यम् विषयम् विषयम्य

नेशवःर्केरायाने केना श्री

### ने स्वर निवासे दिस्त में स्वर निवास निवास

নার্কান:(अञ्चर्यक्रिम्यविष्यक्रियःयः)यः गहिरा

स्य स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स

५८:में (धेर्क्ने ने माना महत्त्र विष्क्री माने प्रमान महत्त्र माने महत्त्र महत्त्र माने महत्त्र म

#### ने ने खुर बर भेन ने वे से म

#### शेशशास्त्र रहानिता शुःहता प्रहा

धीन्दीः स्टानिव भी श्राचानाः सेन्दे । प्राचानाः सेन्द्रे । प्राचान्य स्त्रे स्त्रे स्त्रे स्त्रे स्त्रे स्त्रे स्त्रे । प्राचान्य स्त्रे स्त्रे

सुः स्रेन्य स्यान्य स्ट्रिन् स्ति सुं स्वान्य सुं स्वान्य स्ति स्ति स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्ति स्वान्य स्वान्य

गहिरामा (इस्किन्धान्य स्टानिव क्षेत्र स्वानिव स्वानिव

नेशक्षात्र्यम्भन्न । विश्व केष्ट्रात्रात्र्यम्भन्न ।

नेश्वर्ध्वराध्यात्रात्र्वराध्यात्रा । देवरिक्ष्यात्र्वराध्यात्रात्र्वराध्यात्रा । देवरिक्ष्यात्रात्रात्रात्र्वराध्यात्रा । देवरिक्ष्यात्रात्रात्रात्र्वराध्याः

नेयानुःध्ययाययासूराद्यरानेयाधेर्वाताने ने ने ने निष्याद्यीयायात्या भ्रे भ्रे निर्माय मेन र्ये वर्षे वर्ता सार्य निरम्पे साम्य निरम्भे साम्य निरम्पे साम्य निरमे साम्य निरम्पे साम्य निरमे साम्य निरम्पे साम्य निरम्पे साम्य निरमे ठेगा'त'न्नर'लेश'ने'ते'ठे'य'न्येग्राय'त्रामुं'से'न्नर'लेश'यासुरात' द्रधेग्रथः क्रेंद्रः अञ्चेशः प्रथा द्रधेग्रथः क्रेंद्रः क्रेंश्रेयः द्रथेग्रथः क्रेंद्रः क्रेंश्रेयः द्रथेया यदर क्रेअ वेद प्रथा क्रेन होन न्या विषय के प्रथा के नाम के प्रथा होना है । दिव हे नाम व *৾ঀয়৽ঀয়*ৢয়ৣয়৽ড়ৢ৾৾ৼৢয়ৼ৾ঢ়য়ৼৢয়য়ৼয়য়ৢয়৸য়ৼয় र्नेत्र<sup>क्षे</sup>ग्राप्यशस्युःग्रुशेन्तराद्युरानाद्यास्य अस्तिग्राप्यशस्योःत्र त्याम्वतः श्रीयानरः त्र केंद्राया केंद्रामित्रया यथान्द्र से प्रूरादा दिया शुः धेवन्दर्भयाविवार्रियदेशयर्यस्य क्रिंत्यकेंद्राक्षयां केंद्राक्षक्षयांद्रिशयेंद्राव नदेव'सर'ग्रुन'स'कृसस'सस'नदेव'सेट्'तुन'र्ने।

निन्। (क्रिंश इत्य हेर मान्य निक्र स्या )ते।

ने भूर कें या इसया वसया उन् ग्री।

#### श्चे नार्हेग्यास्य प्रमुत्रास्य भेता।

বাই শ'ব'(বইর বাই শারী বেছন বেই ক্রিন্ বাস্থ্র না

५७८८ व्याप्त श्रुट्य प्राप्त श्रुव्य श्री श्री । व्याप्त श्रीय श्री । व्याप्त श्रीय श्री

## नायानेन स्मान्यायायायाया

यायाने स्रम् खुर्याख्या ख्या उत्र स्राधि त्या यात्र प्रमाणि स्राध्य स्रम् स्र

#### ने प्यट गुन हैं न मान्न भी अन्।

#### शेशशास्त्र शुः हत्यायायायहाय।

ते स्व हिंद शे ग्राव हिंद ने प्यत् ह्या प्र क्षेत्र क

द्वाः साम्याः स्वान्यः स्वान्यः त्वाव्यः त्वव्यः त्वाव्यः त्वाव्यः त्वव्यः त्

> हेनान्द्रन्त्रम्यास्य । मान्ने स्थान्य स्थान

गहिराम(ध्यासेन्न्यम्यम्स्यः)दे।

यार के 'क्या यर 'त्या र 'या प्रेम '

#### इस्रान्धिन् धेन्य स्वाप्य सेन्।

मारमी कें कें भा त्रमाय ने त्या प्राचित से प्राचत से प्राचित से प्राचित से प्राचित से प्राचित से प्राचित से प्राचत से प्राचित से प्राचित से प्राचित से प्राचित से प्राचित से प्राचत से प्राचित से प्राच से प्राचित से प्राचित से प्राचित से प्राचित से प्राचित से प्राच

न्धन् चुः कें अप्रथ्य उत् प्रते व्याप्त स्थाप्त प्रति व्यापत प्रति

र्देट्र र्हेग्र रायदे म्हार विष्ट हिंग्र विष्ट विर्यं स्था हिस्स रायदे पर य वर्रे नर्ने व सर मुन न सामा मुन स्रुस र् र् र् हिंद्र स्मा हिद्र स्मा हिद्र स्मा हिद्र स्मार् नुरायदे पावि के राउदा से से दायदे से मात्रे ने प्रमारे से सरायदे में से स सःवर्गानदेवःसरःसेदःस्रुसःसदेःइवःसःस्रुःनरःत्यूरःनदेःधेर। र्हेशः ननेवासेन्न्निन्निक्षाया श्रुवाया सेन्यते र्सेन्नुन्न् हिन्यावश्चराविना न्ध्रिन् होन् गाव्य नर्गे अयः यने व यहे व गा्य नहग्र अथः ययः ययः वशुरावानिवादद्विराग्वावानहग्रामासदिवाशुराम्बदाद्यां ळदासास्या ने हिन् ग्री अर्थे वा बिन प्रवेश धेना हेन के अरुन प्रनेन प्राचे प्रवेश धेन प्र <u> न्याया ग्रु:न्रायाया प्रायाके रूप्या स्राया विव किन्तु राष्ट्री रूप्या स्री हो हो स्थार स्राया</u> निवन्त्रीयाशुन्तावन्यायरान्हेनाया देवाने हेंग्यायस्य विषयायरा 

ग्रुअपः (द्वःक्ष्यः नद्वः यरः ग्रुवः यः वः श्रुवः ग्रेट् । यरः वश्रुवः यः )दे

> नेशन्त्रः व्यानेतः के व्यान्ता । ने श्रेष्यतः व्यंतः न्यनः मीश्रः व्यन्ता । यहिश्रः याः प्यनः वे स्थेनः यमः व्यन्ता ।

यायाने न्यासे न्यासे स्थासे न्यासे न

> शुःगुःशःर्नेदःशशःशुःविदः।। शःर्नेदःदेःहेदःग्रेशःहेगशःनविदा। विशःगुःशशःश्रेशःविशःपःशशा। देःशेदःपदेःहेशःशःहेगशा।

गायाने शुग्ता सार्वेदार राजविद श्री श्री ताया सार्श्वे अभिरास के स्त्री सार्थ से सार्य से सार्य से सार्य से सार्थ से सार्थ से सार्य से सार्थ से सार्य से सार्य से सार्य

 सर्वे मुन्ने ।

सर्वे मुन्ने स्वा मुन्ने स्वा मुन्ने स्वा मुन्न स्वा मुन्ने स

মা প্র অ'ম' (বন্দা ঐন্ শ্রুব গ্রইন গ্রীনার্চর স্টেলাশ ন্র্নীর নে অ') মা প্র আ

र्हे हे 'या ने या अप 'या प्रवास के या अप 'दि । हे व 'यने या प्रवास के या अप 'दि । विकास के या अप के य

न्त्रस् (ई हे यो वे यो श्राय वे यो प्रत के यो श्राय

कुः येदः दुः श्चे : नः द्यायात्वदः याद्वे अः याः व्यायाः यः द्राः याद्वः स्वायाः यः द्राः याद्वः विवायाः यः दरा व्यायाः विवायाः यः दरा कुः येदः द्यायाः यः विवायाः यः द्राः विवायाः यः विवायः विवायः यः विवायः विवायः विवायः यः विवायः यः विवायः व

५८:सॅ (कु: से ५ ५५ हु) व ५ वावा व ) दे।

कुट्रस्य प्रश्चित्र से स्वादेश्य से द्वा स्वाद्य स्वा

मुः त्वा प्रदेगः हेव सर्व स्वा मुर्ग ।

यज्ञतेःश्वॅरातुःश्वं मायान् विद्यो। कु'णे'नवे'नय्यानश्चेन्याणेवा। कु'नवे'न्यान्योयान्वयानेन्या। कु'नवे'न्य्ययाश्चेन्ययाश्चेन्यया। कु'नवे'न्य्ययाश्चेन्यया। कु'नवे'न्य्ययाश्चेन्यया।

गहिरामा (हनामि क्यामा क्याम क्यामा क्याम क्यामा क्याम क्यामा क्याम क्याम

गुन्नुः क्रुर्यः अः द्रान्यः द्रायः स्वान्त्र्यः क्रुः सेनः धेवः यः न्यायाः यः व्यान्यः क्रुः सेनः सेनः स्वायाः सः

५८:सें (५वट ध्रुवा की देव देश व्य दवावा यर) दे।

न्नरः धुना वर्ते निये कुः धेव वा ।

च्यायायाय व्याप्त व्य

रे विया न्यन् सुया यान भीत हों या।
यह न स्य या भार के विया न या।
यह न या न या भार के विया न या।
यह न या न या भार के विया न या।
यह न या न या के न या के न या के न या विया ।
यह स्या या के न न या विया या के न या विया ।
यह स्या या के न न या विया या के न या विया ।
यह स्या या के न न या विया या के न या विया ।
यह स्या या के न न या विया या के न या विया ।
यह स्या या के न न या विया या के न या ।

रेक्षेग्रान्यर्ध्यामे र्देव्यारक्षियाधेवाञ्चेयावय्याद्याया

वर्षेत्र ग्रेन् प्रश्र वर्ष्य वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र यशयत्र्रभातुःवसेयावर्षेनातुःवस्तुरानातिःर्ने उगाग्रदावर्देन्सेन्ग्री देवः <u> इिन्'यर'सेन्'यदे'सेर'से'दर्'न'ईस'य'यर'दनर'धुम्'क्र</u>ून'यदे'ळग्रा केंद्रस्था है विवादया है दया वा हो द्राक्षा देवा के स्वाक्षा हवा हि स्वाक्षा हवा हि स्वाक्षा हि स्वाक् शॅगशर्ने त्र ग्री । ह्यन् । यस् । के तर्भे । व्यन् । यन । युगा , तृ : शे । ने गश्य । ये । द्रवःग्रदः वेशःभर्दे। । शःश्रेषाशःवज्ञुदः नः स्रशः स्यः प्रः स्वेतः स्दः प्रवेतः ५८। भ्रे.पहेनाचे५'सदे'से हना'स'५८'द्रव्या सु'चु५'स'त्य क्वें सूँव'५'नाहें८' नदेःग्रें नः सेन्यन्द्रिं व्युद्रं नः सुः सेन्दे निरः मृदः यः सेंग्रें या शे वर्षे सः हाः हिन्द्रा भेगार्द्राचार्थवाम्याने विद्यार्धिताहिन्यार्थवाहे ने स्वापा <u> ५८:माठेमा:सु:५८:५५४:सु:५५:मोठेट:५८:५५:५४:५४:</u> व्यट्यानेटा के पाउँ टा पाउँ टा पाउँ वा वा विकास के प्राप्त के प्रा अपियः द्रमः श्रुमाः में विः दा

> न्तरः श्रुमाः अपियः अवः मार्थः अवः श्रुम्। न्याः अवः श्रूमः वेः नगमाः वेवः श्रुम्। नय्याः अवः मार्थः श्रुम्। नय्याः अवः मार्थः श्रुम्। नय्याः अवः मार्थः श्रुम्। नय्याः अवः मार्थः श्रुम्।

ब्रम्भावतः क्रिंभा उद्यान्त्रवान्यतः द्वान्याः श्रेष्ठः हो त्र्यं भाग्यतः द्वान्यत्रे भागः व्यान्यतः द्वान्यतः द्वान

महिश्यः (हण्यः भेत्र स्वर्णतः क्षेत्र स्वर्णाः स्वर्णतः स्वर्णाः स्वर्णा

र्यवास्त्रिमान्ने स्वास्त्रिमान्ने स्वास्त्रिमान्ये स्वास्त्रिमान्ये स्वास्त्रिमान्ये स्वास्त्रिमान्ये स्वा

कु'त्य'र्चना'त्र'र्थेद्र'

न्नरः श्वृणाः ह्वाः नृर्देशः धेवः स्थाः नेः त्यः भ्वृतः स्थाः स्य

न्त्र्भिन्द्रेश्च्याः स्ट्रिंग्यः स्ट्रिं

त्वरः द्वानां वे अरव्यक्षः व्यक्षेत्रः विष्यं वे प्राप्तः विष्यः विषयः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विषयः वि

ग्रुअ'र्'(हुल'झव्हन्न'र'क्टुं सेन्'पेव्र'र'न्न्न्ना'र'न्न्न्न्'डेव्र'र्न् स्थुर'न्)र्ने

# न्द्रम्यः इतः इतः श्रुःन। ।

त्रे त्रमान्यान्य स्वास्त्र स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्त्र स्वास्य स्वास्य

म्बुस्यः (व्हान्यः व्यसः भ्रेष्ट्रः व्यव्यसः भ्रेष्ट्रः व्यव्यक्षः व्यव्यकः व्यव्यक्षः व्यव्यक्षः व्यव्यक्षः व्यव्यक्षः व्यव्यक्षः व्यव्यकः विष्टेषः व्यव्यक्षः व्यव्यक्षः व्यव्यक्षः व्यव्यक्षः व्यव्यक्षः विष्टेषः व्यवव्यकः विष्टेषः विष्येषः विष्टेषः विष्येषः विष्टेषः विष्येषः विष्येषः

#### श्रे अह्रयादर्शे नाधित प्रमान हें ना

यार्थः व्याद्यः स्वाद्यः स्वादः स

महिश्यः (देश्वन्द्व्यः ने)यः महिश्वा दर्देशः द्वा द्वाः स्वाः सः श्चित्रः से स्वर्धः द्वाः सर्वे । द्वाः सं (द्वाः स्वर्धः स्वरं स्वरं ।

यार्चः र्वे : क्याः प्राप्ते । प्रम्याः प्रम्याः प्रम्याः प्रम्यः प्र

८८.स्.(यार्ड्स.स्.क.स्.न.मी.स्याप्यी.स्

याडियात्यः स्टः स्वेव याश्रु अः हे दःवे।।

श्रेयश्रय्ये व्याप्त श्रेय्य श्रेय श्रेय्य श्रेय्य श्रेय श्रे

शेश्रश्राभेन् ने संरे पित्र मंदे श्वेन् में श्रांय श्रीम्श्राम या के शास्त्र

यदे : अँग्रां श्रां क्षे : इश्रां विष्णां विष्णां स्टां यित्र : विष्णां स्टां विष्णां विष्णां

वित्रश्चे स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्य

मूर्या अस्तर्भ स्थान्य स्थान्

महिरामा(ह्यामाधिकासम्मायामा)वै।

श्रीत्र प्रश्नित्र प्रश्नित्र प्रण्येत्। ।
त्रेत्र प्रश्नित्र प्रण्येत् प्रण्येत् प्रण्येत् ।
त्रम्य प्रप्तेत्र प्रण्येत् प्रण्येत् ।
स्रम्य प्रप्तेत्र प्रयास्य स्रम्य प्रयास्य प्रयास्य प्रम्य प्रयास्य प्रय प्रयास्य प्

यदे : श्रॅन्यश्चि : स्ट्रान्य हेत् : ह्या : संक्षेत् : स्ट्रान्य : स्वा स्व : स्व :

ने'नबिन'नर्देश'र्से'न्नस्थ'रुन्दे।।
से'ह्या'हेन्'नुं'रुश्रेश'से'यर्देन।।
स्याश'र्य'नने'यश्र'यावन'सेन्।।
सने'न'याश्रय'न'से'ह्या'हेन्।।

সাধ্যমান (বর্ষার ফুন মন্ নামন শ্লু শ্লী শ্লীন্যান্না ) বি

म्याने क्रि. व्यान्य स्त्रान्य स्त्

नु:हिन्:शे:वर्नेन्:ग्रम्पात्रश्रमःहिन्नेन्निः।तश्रान्नम्श्रम् श्रीःवर्नेनः न्य:हंश:न्:वनःनि।

ण८'व्याययाया भ्रेष्ट्रम्य'व्युम्स्य सेट्'वायम्भ्रेष्ट्रिट्'से'वर्देट्' ग्रम्पाद्याययासम्बद्धार्योयार्थे'वेयायन्द्री।

> यायाने कुष्यायत्त्रस्यात्त्रस्यात् । वत्रात्ते स्वात्त्रस्यात्रस्यात्रस्यात् । स्रात्ते स्वात्त्रस्यात्रस्यात् स्वात्त्रस्यात्रस्यात् । स्रात्ते स्वात्त्रस्यात्रस्यात् स्वात्त्रस्यात् ।

यायाने कुष्यायव्यसम्बार्यस्य विद्यस्य स्वार्यस्य क्षित्र विद्यस्य विद्यस्य

दहेगाःहेवः इंदिराध्यायायाया वर्षाः हेत्।।

निश्चान्त्रेत्वान्त्रेत्वा । व्यक्षित्वान्त्रेत्वा । व्यक्षित्वान्त्रेत्वा । व्यक्षित्वान्त्रेत्वा । व्यक्षित्वान्त्रेत्वा । व्यक्षित्वान्त्रेत्वा । व्यक्षित्वान्त्रेत्वा । व्यक्षित्वान्त्वा । व्यक्षित्वा । व्यक

यायाने ने याने अप्रार्थ विवायां ने या प्येता प्यारायहिया हे वा है वा स्वाराय धेवर्ते वे व दे व ग्रम्य उव हिंद ग्रे क्षेव य इट क्रेट क्रेट क्रेय य के ग्रम मात्रस्याउन्सिष्टित्रायराय्त्रेन्यसाकुन्स्यात्रायात्रायान्यसान्।येन्यदेन्देन् ग्रड्रा वार्श्याया स्वार्थ । विष्ठ्रा स्वार्थ । विष्ठ्रा स्वार्थ । विष्ठ्रा स्वार्थ । विष्ठ्रा स्वार्थ । षरवे दे हे देवे अप पर्षे द्रायश क्रुवे दु अव प्रव्यव सुर्षे द्राय है अहे अहें र साधिवाने सर्वेदानरावया कुंत्रस्त्रसातुः वित्राम्यास्या उत्तीया नवग्नाराने भेशरावे धेरा धराम्रारा स्थायाने हेन भेशरार वर्देन ग्रीश विंत्र प्रम् अर्वेद प्रमा कु पुरा द्वा या तु अत्र प्रमा प्राय विं । प्राय हे·व्हिम्।हेत्रप्रे अर्वेट्य क्षंत्र अर्दे न्या हेत्र अत्यम्य त्या अर्दे म्यायाया थीत्र देखेः वा दें व वहिया हेव प्रश्रामाश्रया न इसावश्रूम सर्देव प्रश्नम प्रवे महान विवा अर्वेद्रान्यद्रान्तेत्रान्याः वित्रान्तेत्रान्तेत्राच्याः अर्वेद्रान्याः वित्रान्तेत्राच्याः वित्रान्तेत्राच्या धेव'मदे' धेर'र्रे।

गहिरामा (न्तुःसामानाः क्षेत्रं से सहद्दर्भामा )दे।

यात्राने क्ष्यां क्ष्यां स्था ।

देशायाव्याः मह्याः स्था ।

मायाने हिन् स्वरावर्ण स्व

नह्रम्यायायि दिस्यायाया स्माप्ति । दे भी दिस्याये दे प्रस्थित । दे भी स्मार्थित ।

नहनाश्रासंदे निर्देश सं नित्र न्त्री ना त्या हिना स्था असे ना स्था नित्र नित्र स्था नित्य स्था नित

न्यायाः श्रुः न्यायाः स्त्रेः स्त्रे स्त्रे

नेश्व द्वार्थ स्था । नेश्व द्वार्थ स्था द्वार्थ स्था द्वार्थ स्था द्वार्थ । नेश्व द्वार्थ स्था स्था ।

### मोग्रार्थित ने प्यम्य महत्राराधिता।

मुन्न प्रत्या स्था क्ष्र प्रत्या स्था क्ष्र प्रत्या क्ष्र प्रत्य क्ष्र क्ष्र प्रत्य क्ष्र प्रत्य क्ष्र क्ष्र प्रत्य क्ष्र क्ष्र प्रत्य क्ष्र क्ष्

निं पः (क्रुः सेन् न्याया प्रवे नें व स्थुः यः) वि

# दगदण्यम् कुरम्बरम् अप्ता

कु सळंद ने नम दे सूर न विन् ता ने सूर से ग्रम स्थापर न हु सळंद ने नम दे सूर न विन ता है के स्थापर सुर से ग्रम सुर न के सुर न के

न्यः (नन्याःयाव्यःयाहेशःयाःयशः भ्रेः नःन्यायाःयः) दे।

म्ब्रिन्म्द्र्यान्त्रे स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्य

*য়ৣ*ॱग़ॖॱय़ॱऄ॔ॻऻॺॱय़ढ़ॆॱढ़ॼॺॱॻॖॱक़ॺॺॱख़ॖॱख़ॖॸॱड़ॕॸॱॻऻऄॸॱय़ॱऄ॔ॻऻॺॱ यःशॅंॱशॅं चॱइस्रयःयात्रयःयदसः वस्यः उत्। वत्यः पदे क्रेतः इस्ययःयः यः अध्येतः हे 'दे 'धॅद'त्र' दक्षेग्र असु: सुदः नः यश्र अस्त्र स्वेग्र अस्ति ही र 'ददः देवे-दुश्व-वाषदार्षेद्र-वासाधिव-हे-क्रेव-वस्यायरासावश्रूर-वर-श्रूर-त् शे भ्रे निर्दे भ्रे में । मे व ने स्थयायया विवायया विवाय । यः रदः नविवः ग्रीयः ग्रुनः पदेः द्धयः ग्रीयः ग्रुनः वेवः ग्रव्यायः यः यः येवः विदः विषायाश्वास्त्र वात्र प्रत्ये वाष्य स्याधित स्र स्र स्ट वित हुट बट ग्रह सेर्या रेदेः धेरः नर्गायमः हो नर्गावद्ययमः हो नर्गः याववःयाहेशःयाःयशः भ्रेःचः परासेन्द्री । सर्देन्द्रन्धनः सेन्द्रान्याः वयाः कें अं उत्र रूट निवेद ग्री अंग्री नियेद दि। निवाल अंग्रीट की क्री निवेद ये अं गुर भे भे जिरे मा प्रमाग्यमा गुर भे भे कु से दायमा गुर से भे जिसे हो रा यदेः श्रुंग्रासः र्केशः नश्चनः यः पीतः र्वे।

गहिरायं (हेब प्रवेश की महब के मारा) दे।

### र्द्धेन्यान्ययाननेवान्यनान्य्यान्ति।।

श्चुःयाययान्ते। विन् डिंग्पेन्।

श्रुः सम्भाग्याम् प्येतः न्दा ।

श्रुः सम्भाग्येभाने ।

श्रुः सम्भाग्येभाने ।

श्रुः सम्भाग्येभाने ।

श्रुः सम्भाग्येभागे ।

श्ची ।

श्ची स्वास्त्र श्ची स्वास्त

यार विया यार दे छे त भिष्ठा।

सर्वेर शुर दे से द द से द स्मा।

नर्वे अ शुर या तु या अ त कु द र द स स्मा।

दे भ्य तदे द छे द है द है द स्मेर भे द ।

यहरा देशत्यायाः स्टानिव स्थित स्थित

५८.स. (योध्याक्ष्याका वर्षेत्राका वर्षेत्राका वर्षा क्षेत्राच्या वर्षा वरवर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा

न्देशसंखेंन्यरःशुरःयःय।।

# कुः धेशन्त्री श्रामः छेः विवाः धेन। । देवः हे 'ने 'वे 'श्रेन व 'धन। । कुः धेशन्त्री श्रामः छेः विवाः धेन। ।

न्द्रं अर्थे र्राट्र निवेद ग्री अर्थेन् प्रराग्ध्य ग्रुर् भे अन्ते विश्व परि विगाः धॅरामा मुन्ने रामे रामे स्वीता स्वीता स्वीता स्वाता स्वीता स्वीता स्वीता स्वीता स्वीता स्वीता स्वीता स्व षरकुःषेशन्वेशभारेवेशभारे विवार्षिनने वस्त्रेन्से त्रापि स्विमार्थे नु वस्य या उत् कु ते पुरा व से दारा क्षे पा नि स्वा धिव प्रया दे प्रयोग पा स धेव क्री गान्व से द स्रे न वर्गे गा संधिव हैं। विश्व या सु से द से सु न वर्गे गा यः धरः म्राम्यः उतः कुः तुयः शुः धेनः धरः वर्देनः धः न्दः धयः केरः स्टः चित्रः श्रीशः विद्वाराय विद्वाराय विद्वारा विद्वारा विद्वाराय विद्वार विद्वाराय विद न्वीयायरावशुरारी वियावरायात्रीरीयायाययाययायन्यायवि॥ नक्र्वामश्योव सर्ग्रेन्स धीव के । निर्देश सेन् कृषे ग्रेन्स प्रियान् से रुट्यर्यस्यक्षुत्रयाद्वे र्ष्णेद्यायुत्र वेद्यायस्य सक्षेत्र स्रीत्रे स्याप्य सेद्याय डेदे-धुर-भे-द्युर-वे-म्

चे.य.यम्.स्याः मृत्याः मृत्याः यावयः भ्रायः यावयः भ्रायः याक्षु सः प्रायः यावयः स्थाः स्थाः यावयः स्थाः स्याः स्थाः स्याः स्थाः स्य

#### र्देशयम् राव्यान्य परमार विमाधिया

त्रे न न कु स्वा कु धि श ग्रा न न से श्रे न न न से श्रे न न न से श्रे न से श्रे

याववः पपटः नहें अर्थे देशे याव्या याव्या याववः पपटः में देश कें प्रते अर्थः याव्या या

# न्द्रभःस्वरास्त्रभःस्यः वश्यःस्य न्त्रभः

न्देशसेन्द्रंशस्य स्थान्य स्थान्य न्त्रं । क्षुत्र न्त्रं स्यान्य स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्य

স্ট্রিশ'ম'(देशव्यायामप्रम्मविव्यक्षेत्रः श्रीशः श्रीयः प्राचित्राश्रामः )दे।

#### ह्या हु सा क्षेत्र सा स्याया रा हिन्।

स्र में दर्दे से स्र न्यानि स्थित स्थानि स्

ग्रुअ'रा'(देशदाश्चित्रक्षायक्ष्यायक्षेत्रत्तुवाया)दे।

## तर्गे नः है। वसाक्षान् न

#### क्यायरान्ध्रन्वःकुःविरावन्।।

श्चेन्यते तर्शेन्य स्थान्य स्

#### श्चारम्याद्यस्याद्यस्या

### ने केन नुष्ठन सम्सेन।

यर्देन् क्रम् श्राम्य श्रित्र श्रीत् । यद्य श्रीत । यद्य ।

म्रुस्य (देशव क्ष्रें देशे देशे वार्य व्यव देशे वार्य या वार्य वार वार्य वार वार्य वार्य

न्दः सें (महस्य प्राचिष्ठ्य) या प्राचिष्ठ्य। या व्यव्याया सें सें स्वाच्या प्राचिष्ठ्य प्राच्या प्राचिष्ठ्य प्राचिष्

८८.स्. (याय मा जी मून सम्बर्ध स्ता ) द्री

ने सूर रेंद्र प्रदे नहें या इस्राया।

र्चन्यः रु: प्यून्यः रु: प्यून्। यानः यो श्रः ने श्रः म्यून्यः म्यून्यः । प्यून्यः श्रः नक्ष्यः मयनः रु: विवाः प्यून्।।

र्श्नाचित्रः है स्नूत्रं निष्ठा स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्

यद्राच्याः श्रुवाः तश्रूवाः वश्रूवाः वश्रूवेः वश्यूवेः वश्रूवेः वश्यूवेः वश्यूवे वश्यूवे वश्

यदः विवार्चितः संप्रदास्थाः स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः

देशक्त्राम् वित्ताक्ष्याम् वितास्त्राम् वित्ताम् वितास्त्राम् वित्ताम् वितास्त्राम् वित्ताम् वितास्त्राम् वितास्त्रम् वितास्त्रम्

गहिरामः(देहिंग्रामः वायन्य प्रमासेग्रामः)दे।

# বর্ষার্থরেশ শ্রেমার্থনের বর্ষার্থনের বর্ষার্থনের বর্ষার্থনের বর্ষার্থনের বর্ষার্থনের বর্ষার্থনের বর্ষার্থনের ব

नन्नायन्नात्रे कें अप्यास्त्रि वित्राक्ष्मित्र प्रमान्य वित्रे वित्र वित्रास्त्र वित्र वि

कें त्रिते हे अन्यामा व्याप्त है निष्ठ है अत्ये हे अन्यामा विष्ठ है अन्या

५८.स. (क्र.वर्षेत्रेशन्याम्या)दे।

तत्रवाकृतः तते वतः स्वर्ति । स्वतः त्राकृत्वि । स्वतः त्रुवा स्वतः कृत्वि । स्वतः त्रुवा स्वतः कृतः स्वतः कृतः स्वतः कृतः स्वतः स्वतः कृतः स्वतः स्वतः

कें प्यम् राष्ट्रां यह वा केंद्रां यह केंद्रां यह वा केंद्रां यह केंद्रां यह वा केंद्रां यह वा

चार्त्रा ।

यात्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्रम्भ प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्रम्भ प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प

गहिरामा (वहना हेत् ही सदे हे सन्सेना सः) दे।

यदे त्ये र जार द जार के र जार के जार के र जा जार के र जार के जार के र जार के र जार

न्नो निर्देश्व के स्वाहेत् न्या स्वाहेत् । स्वाहेत् निर्देश स्वाहेत् । स्वाहेत् निर्देश स्वाहेत् निर्देश स्वाहेत् । स्वाहेत् स्व

श्रेन्यावाने नायम् श्रास्ता।

### नेराधरायम् कुंनायमायाम्याम्।

श्रीन्यःश्चेतिःश्चेशःन्श्चेत्रःश्चेत्रः वित्रः वित

श्रीत्वाते कित्यते व्यास्त्रा । त्रियत् विष्ठा स्त्री । त्रियत् विष्ठा स्त्री । त्रियत् विष्ठा स्त्री । त्रियत् । त्

स्या नस्य मु अर्के अवद यश वर्षा

श्रीन्यं तिर्वेत्त्रः न्यात् दे दिन्दिन्द् । स्वित्त्रः स्वित्तः स्वित्तः स्वित्तः स्वित्तः स्वित्तः स्वित्तः स्वित्तः स्वित्तः स्वितः स्वतः स्वितः स्वितः स्वितः स्वितः स्वतः स्वितः स्वतः स्वितः स्वतः स्वितः स्वतः स

মা প্র অ'ম' (নই নের্মু মান্তু মান্ত্র ক্রিমান্ত্রু নামর অমার স্থিত নির্মান স্থান স্

नेरके के प्यर श्रुप्त के कि । नेरके के प्यप्त श्रुप्त के ना

## नेर'यर'गर्शेन'न्र्रा । चेर'र्र'नग्रेश्वेश्वेश'नवे'रय'न'र्रा।

> महिन्द्र प्रकेष्ट्र प्रवेश । बेश्व प्रकेष्ट्र स्थित स्थित स्थित । बेश्व प्रकेष स्थित स्थित स्थित । क्षेप्त स्थित स्थित स्थित । क्षेप्त स्थित स्थित स्थित ।

नवि'न'(न्यप्वर्शेनःविद्यःक्षेत्रःक्षेत्रःनगव्यव्यवस्यः)दी

यदे प्रम् म् अक्ष मार्थ प्रम् अक्ष मार्थ प्रम् मार्य प्रम् मार्थ प्रम् मार्थ प्रम् मार्थ प्रम् मार्थ प्रम् मार्थ

नेस्प्यतः इस्राम्येदः मिस्राधः वि । नर्ज्जिमः यदेः सम्राधः वि । नेसः प्यतः द्वार्थाः केतः वि । सूत्रः श्रीतः केतः वि न्याः श्रीतः । सूत्रः श्रीतः वि नर्ज्जितः वि ।

ने स्वी खें या प्राया स्वाय स्वाय स्वी । विस्ति स्वाय स्वाय स्वी ।

तने तर्वे राष्ट्रे अपन्य तर्वे प्रान्त प्रान्त प्रान्त प्रान्त विष्ट्र विष्ट्

श्चरणरादेग्यमङ्ग्री। श्वर्थाक्ष्यात्र्यात्र्व्यात्र्व्यात्र्

श्रायित्रान्त्रेयाः विवर्ति। श्रुट्याये श्री स्थायः विवर्ति। श्री स्यायः विवर्ति। श्री स्थायः विवर्ति। श्री स्थाय

य्ना (देशव रूट मान्त्र पर्वेर पर्वेर पर्वे सूना नस्य मी शास्त्र पाया हा हत मान्य स्था मी

ने स्वान्य के स्वान्य

> न्येरःवःवयायःवियाः प्यरः प्यरः श्वरा । श्वरः भेवः तुः श्वराः यस्यः यस्। । ने श्वरः भेवः तुः श्वराः यस्यः यस्। । यावर्षः ग्रारः यन्याः वेनः स्वरः स्वराः ।

नमेर्न्स्याप्तिः श्रेत्राम्याप्तिः श्रेत्राम्याप्तिः श्रेत्राम्याप्ति । यद्याप्ति । विष्ठितः । विष्रितः । विष्ठितः । विष्ठितः । विष्रितः । विष्ठितः । विष्

ने भून क्षान्त प्रकेशेन या ।

यत्वेद नुश्चित प्रकायाद्य स्थ्य प्रया ।

न्य स्थित स्थित प्रकायाद्य स्थ्य प्रया ।

न्य स्थित स्थित प्रकाय स्थ्य ।

न्य स्थित स्थित प्रकाय स्था ।

न्य स्थित स्थित प्रकाय स्था ।

दे त्यून से स्वाप्त स

ग्रुअ'रा'(श्वेराहे केवारेंदि क्यायदे प्रहेव श्वरण प्रश्वरायं)दे।

ते श्रेन्द्रभगः नश्याः स्थाः विनाः तश्याः । नश्चिनः न्याः नश्चितः स्थाः स्थाः । नश्चिनः न्याः नश्चित्रः स्थाः । नश्चिनः स्थाः स्थाः स्थाः । नश्चिनः स्थाः स्थाः स्थाः । स्राविद्या । विराद्या निर्माणी का विद्या स्रुवा निर्माण के ना निर्माण के निर्माण के ना निर्माण के ना निर्माण के ना निर्माण के ना निर्माण के न

#### लेख-न्गुना ले-स्वन्बस्त्रना

द्विर्यया विश्व विष्य विश्व व

#### यर्ने सःश्रूषःया

है : श्रेन : है : नड्डं न : नश्च न : श्रेन :

चन्यात्यत्येयाश्चर्यः चन्द्रः स्थ्रेतः छ्या। र्षेत्रः प्रते गुत्रः सुः अदे द्वेतः प्षेत्रः प्रश्ना। प्रयो प्राप्ते प्षेत्रः यत्यायो स्थान्त्रस्था। चयाः सर्वेत्रायत्वेशः प्रतः स्थ्रायः स्थ्रायः स्थ्रेतः स्थ्रे

क्ष्यानिविद्यान्त्र्याः स्त्रित्याः स्त्य

महिश्रासं (वेद्धवेश्यस्त्रं)दे। इर-क्रमःश्रेस्यान्यदेः श्रेन्यायायहमायायश निश्रास्यान्ते श्रेन्याते वेद्धे न्त्रायदे॥

#### येतु न इ न न इ न न इ न न इ न न इ

निव प्राच्या अप्ते प्राचित्र श्री न निव स्त्र मान्य स्त्र प्राचित्र श्री न प्राचित्र श्री न प्राचित्र प्र

५८.स्.(ज्वंत्रवाबर्यक्र्यः)यायश्रम

यम् न्यात्र व्यात्र व्यात्य व

५८.स्. (वर्ग्न.व.भीष.वीर.क्षेत्र.मुम्सेम्

यद्याः यो अः श्रुटः ख्यः श्रुटः यः या । दह्याः या इस्रायः य इस्र अः यः यो । द्याः या या देशः देशः या या । श्रुटः ख्यः श्रुटः यः यह याः यदः विया ।

यश्वात्तर्थः हैं या प्राप्तः विष्णः विषणः विषण

र्त्ते. मूं शः मुः अर्द्धे शः (वृशः राः यश् हो स्ट्रेरः कुः हो न शः मुः अर्द्धः के वरः ब्रुटा कि.सर्के.स.सेससार्यर.रे.रे.स्.वटी रि.यपुर.वेट.क्य.लूटस. नर्भेशन्गे न पर्। विरक्षिन अर्धेन नर र्रे ने से बर्। विश्र र्रा में रर् नन्द्रायाष्ट्रमान्वो नावज्ञयातु दुराजन्यित्र यात्रस्यया कु केत्र से विज्ञेत राद्रा अवर्षेत्राद्यात्रः भ्रवत्रात्रुः वद्याराद्युरावा द्वर्याया द्वरायाः भ्रे विद्युष्य विद्युर्ग्य विद्युष्य नर्षे:नायानर्हेन्यराग्रेष् । निराधेनाग्री अर्रायमानगे नदे सामसम उर्-गुर-ह्रस्य-प्राम्यस्य उर्-सिन्धित-प्रान्धेर्-सिन्स्य-स्य अत्र में स्य र्-र-र-र-सर्यामुर्याग्री:सर्पेर्यासुपर्यूर्यास्त्रापर्वे विसामस्र क्षरःर्रे । द्वी नरे प्यर खे दु द्वा य त्र राम निर्म स्त्री विष्ट मा शुरा ननेवासेन्द्राहेंग्रस्ये भेसार्या ग्री हैसा नेवासरे प्राप्त नर्थे नन्दर्भ्रेव प्रथा विद्यार के र से द ग्री पर्दे द ग्री दे प्रवास ग्रा दे व पा हे र ग्री । वर्षःसम्माधिरःसम्भः श्रिमः सर्वेषः वामः म्यान्या क्रिके प्रमाना सम्मान्यमः स् देवे कुरवशुरवदेव प्रशाह्य पर पुराय विकास वर्षे वर्षे ।

বার্ট্র সামা (বর্ষু বাল্ক শব্দ বন্দ্র প্রমা

८८.सू.(यालव.र्स्व.२.यक्.य.)य.याहेश

यहिमा हेव प्रति दिन प्रति दिन प्रति प्रति ।

८८.स्. (यहवाहेब.संदे.ह्व.२.वर्क्च.व.)य.यही

बन्दार्थ्यम् । स्वाप्त्र्यम् । स्वाप्त्र्यम् । स्वाप्त्र्यम् । स्वाप्त्र्यम् । स्वाप्त्र्यम् । स्वाप्त्रम् । स्वाप्त्रम्त्रम् । स्वाप्त्रम् । स्वाप्त्रम्यम्यम्त्रम्त्रम् । स्वाप्त्रम्यम्त्रम्यम्त्रम्यम्त्रम्यम्यम्त्रम्यम्यम्यम्त्रम्यम्यम्त

५८:में (वर्म्स स्वाय क्षेत्र म्यून निष्य वि निष्य क्षेत्र निष्य क्षेत्र ) या निष्य

५८:स् (महमाञ्चनमान्त्रीमन्ने निवेद्द्रम् निवेद्द्रम् निवेद्द्रम्

र्ष्ट्रियाश्चर्द्वस्थायम् स्थान्तः स्य

र्श्वेन्यस्थर्थात्र्वात्र्यः स्थान्त्र्यः स्थान्त्र्यः स्थान्त्र्यः स्थान्त्र्यः स्थान्त्र्यः स्थान्त्र्यः स्थान्त्र्यः स्थान्त्र्यः स्थान्त्रः स्यान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्त्य

महिरामः (अवरःव्यानी नदे नदे द्वार् नक्षेनः) दे।

ने'न'क्विंस्ताहे'श्चेन'न्। व्याप्पदाने'प्यश्चाह्यश्चाह्यश्चाह्यश्चाह्य वर्षे'नश्चाह्यश्चेन्यप्ताह्यस्त्राह्यस्त्राह्यस्त्राह्यस्त्राह्यस्त्राह्यस्त्राह्यस्त्राह्यस्त्राह्यस्त्राह्यस्

तर्वे निर्मादिष्ट्र निर्मादिष्ट्य निर्मादिष्ट्र निर्मादिष्ट्र निर्मादिष्ट्र निर्मादिष्ट्र निर्मादिष्ट्र निर्मादिष्ट्र निर्मादिष्ट्य निर्मादिष्ट्र निर्मादिष्ट्र निर्मादिष्ट्य निर्मादिष्ट्य निर्मादिष्ट्य निर्मादिष्ट्य निर्मादिष

महिश्याप्त हिन्द्र विष्ट्र वि

न्तः र्से (२ ह्यमः नवे स्वान्य स्वान्

नर्शे.नर्दे।

न्तर्भे (भूगानस्य श्री र वि न्यर नर्स्य श्री र वि नर नर्स्य श्री र वि नर्स्य र वि नर्स्य श्री र वि नर्स्य र वि न्य र वि नर्स्य र वि न्य र वि न्य र वि नर्स्य र वि न्य र वि न्य र वि नर्स्य र वि न्य र वि न

यहेगाहेद।प्रस्थान्य अवन्त्रस्था। यादः द्याः हेदेश्य अवन्त्रस्था। दे द्याः हुदे ख्रियः उदः ह्यया। यदे उदः यदे ययः द्यादः यदः विवा।

त्रायाविः सम्यान्त्रम्याः विष्याः विष्यः विष्याः विष्

गहिरामा (बर्प्स्य की सूना नस्य दिन्त )दे।

#### ग्रान्य कुष्ठा व्याः दें विवालिया

कु:तुर:ठव:व्यःश्रॅवाशःयदे:वार:त्रुव्यःतकुत्वःवःवार:वशःवःवारः वशःवश्रःववाःवःह्रथशःवदेःवःवश्चेत्रःवःवेतःवरःवेवाःवेवा। নার্সমান (ড়৴য়৸য়ৢ৴য়ৄ৸৸য়য়৸৻য়৸য়য়ৄ৸৸)য়৸য়য়ৢ

यहारक्ष्यास्त्रस्य क्ष्यास्त्रस्य क्षयास्त्रस्य क्ष्यास्त्रस्य क्ष्यास्त्रस्य क्ष्यास्त्रस्य क्ष्यास्त्रस्य क्ष्यास्त्रस्य क्ष्यास्त्रस्य क्ष्यास्त्रस्य क्ष्यास्त्रस्य क्ष्यास्त्रस्य स्त्रस्य स्त्र

५८:में (ब्रम्क्तानेसम्प्रेसम्प्राम्नेसम्प्रेम्भाग्नेन्स्यानेन्सम्प्रेम्भाग्नेस्यानेन्सम्प्रेम्नाम्स्यानेन्सम्प्रेम्नाम्स्यानेन्सम्प्रेम्नाम्स्यानेन्सम्प्रेम्नाम्स्यानेन्सम्प्रेम्नाम्स्यानेन्सम्प्रेम्नाम्स्यानेन्सम्प्रेम्नाम्स्यानेन्सम्प्रेम्नाम्स्यानेन्सम्प्रेम्नाम्स्यानेन्सम्प्रेम्नाम्स्यानेन्सम्प्रेम्नाम्स्यानेन्सम्प्रेम्नाम्स्यानेन्सम्प्रेम्नाम्स्यानेन्सम्प्रेम्नाम्स्यानेन्सम्प्रेम्नाम्स्यानेन्सम्प्रेम्नाम्स्यानेन्सम्प्रेम्नाम्स्यानेन्सम्यानेनसम्यानेन्सम्यानेनसम्यानेनसम्यानेन्सम्यानेन्सम्यानेनस्यानेनसम

ग्रुट:कुन:शेशश्राद्याते:श्चेत:केत्वश्रा । ग्रुट:नदे:कु:र्ने:समदःप्यशःग्रीश । ज्ञात्रशःहसःमगानशेषःनरःर्नेग ।

गहिरापा(हे विक्राविष्ण्या निष्णा है वा )दी

रयाश्ची विष्यं स्वित्व विषयः स्वा विषयः स्व व

त्रविरंसेयाः इत्रान्याः न्याः न्याः न्याः न्याः ।

त्रविरंसेयाः इत्रान्याः न्याः न्याः न्याः ।

त्रविरंसेयाः इत्रान्याः न्याः न्याः

कः न्यायान्ते के स्थायान्त्र स्थायान्य स्थायान्त्र स्थायान्त्य स्थायान्य स्थायान्त्र स्थायान्त्य स्थायान्त्य स्थायान्त्य स्थायान्य स्थायान्य स्थायान्

ग्रुस्पार्वित्र वित्र म्ह्रियम्बर्धित वित्र म्ह्रियम्बर्धित वित्र म्ह्रियम्बर्धित वित्र महित्र महित

सद्याः सर्हे न श्रेयाश्यक्षेत्र श्रे कर स्पर्या । दिर दश्यक्षेत्र श्रे से हिंगा कर स्पर श्रुरा । स्व : कुंत्र सर्हेत्र श्रे के हिंगा स्पर देव श्रापर हो । देर दश्यक्षेत्र श्रे के हिंगा स्पर से त स्पर हो ॥

ळः न्युत्यः श्रीः येन स्वतः स

निन्। (हे वर्षेर निर्म् निष्ण निष्ण

कु'र्ने'र्न्यभेन्'भेन्न्यन्त्रं व्याप्त्रं व्याप्त्यं व्याप्त्रं व्याप्त्रं व्याप्त्रं व्याप्त्रं व्याप्त्रं व्याप्त्रं व्याप्त्रं व्याप्त्रं व्याप्त्यं व्याप्त्यं व्याप्त्यं व्याप्त्यं व्याप्त्यं व्याप्त्यं व्याप्त्यं व्याप्त्यं व्याप्त्यं

विं कुं विंवा निर्दे कुं नें रन से न्या से न्

স্ট্রিশ্ব (গ্রাল্ব শ্রী অধ্বর্গালী বন্দর শ্রুলি স্বর্গালী

यावर में जुर्भ प्रश्न के प्रत्य में वा प्रश्न के प्रत्य के प्रत्य

त्रः सं (अनवहर्षेन्यके स्वावक्ष्यके व्यक्ष्यके व्यक्षके व्यक्षके व्यक्षके व्यक्ष्यके व्यक्षके व्यक्ष

#### ८८.क्रेथ.क्र्या.क्र्य्याथ.सर.क्र्या

न्द्यस्य स्वत्यस्य स्वतः स्वयः स्वय

স্ট্রিশ্সামা(গ্রুবাসমান্ত্রীনামান্ত্রীস্থামান্ত্রী)বি

बे र्ने मा कर रा श्रें या कु र्रायदे या यया या धीया।

र्त्त्रि:तुर:नरे:नशक्षेत्र:म:यरे:हे:नश्रत्र:म्।

सेसरान्ध्यात्स्यराग्रीयाध्यात्रासङ्ग्यर्वेदायरःविया।

म्बद्धायात्रे में म्ब्याची क्रिया में स्वर्धात्य स्वर्यात्य स्वर्ये स्वर्धात्य स्वर्यात्य स्वयः स्वर्यात्य स्वयः स्वर्यात्य स्वर्यात्य स्वयः स्वर्यात्य स्वयः स्वर्य

ग्रुअ'म'(वह्रममिते-न्व्रम्भमें)कें व्युवा)दे

य्याया प्रत्या प्रत्य प्रत्या प्रत्या प्रत्या प्रत्या प्रत्या प्रत्या प्रत्या प्रत्य प्रत्या प्रत्य प्रत्य

गर्विव वु बुर सुर ठव प्ययर प्रहेगा था या थे र पर र वे प्राप्त के प

र्म्याश्चित्रं त्रं में व्याप्ता हुं र विवाद्धं र विवादंधं र विवा

र्ने अ:देश सेंदि अ:स:दूर।

हाँ न् शे ख्रानक् ते हें न् सन् न् ना नी श्रान्त श्राण्य श्राण्य हो ते हिंद्र श्राण्य हो ते हिंद्र श्राण्य हो ते हो हो ते हैं ते

स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्व

निने नि (हे नि अभागवित ग्री तु भागमा वि नि में क्षेत्र मा ) दे।

ने भूर निर्मानी निर्मे इशागुन नु निर्मा श्रीमाशा

त्रम्य स्थान्य स्थान्

ने १ द्वर निवानी १ द्वी १ इस गुव १ द्वा वार में १ वार में वार में वार में १ द्वा वार में १ दि । से १ वार में १ दि । से १ वार में १ वार

गहिराद्यातिः स्वानस्याने नरानस्याने ।

त्रायम् । व्याप्त । व्यापत । व्यापत

र्टाम्बर्गी प्रत्ये निर्मा कर्षे । स्त्रिम्स्य स्त्रिम्स्य स्त्रिम्स्य स्त्रिम्स्य स्त्रिम् । स्त्रिम्स्य स्त्रिम्स्य स्त्रिम् । स्त्रिम्स्य स्त्रिम् । स्त्रिम्स्य स्त्रिम् । स्त्रिम् स्तिम् स्त्रिम् स्त्रिम् स्तिम् स्त

শাধ্যমান (ড়৽ৼৢয়য়৽য়ৣ৽ৼৄয়ৼ৴য়য়ৄ৾৽য়৽)ঽৢ

# ध्यां त्र शंद्र या प्रत्य या प्रत्य

ह्य निष्ण क्षेत्र स्वा क्षेत्र स्वा क्षेत्र स्व क्षेत

নাধ্যমান (বিষ্টাইন্র্ন্র্র্র্ন) আন্ট্রিমা মুনা নম্ভাবিত্র বার্থান মান্ত্র্র্নির্ন্ত্রান বমান মুনা নম্ভাবিত্র বিশ্বরাবার বার্ত্ত্রিক্র বিশ্বরাবার বার্ত্তিক্র

८८:सू. (श्वानश्यादर व्यानर नर्शे नः)य पति।

५८:सॅ (५न८:सॅ अळट न से ५ डेट सटक की बुवा हु से ५ न र न से न )

व्यट्टा इसराग्री या से मा सर्वेटा विटा ।

> यग्रेव'रा'क्षश्रण्णेश'र्वेर'र्वेन'र्वेग । धु'रव'३श'यग'र्गद'र्वेन'र्वेग । धी'कर'क्षश्रण्णर'षेर'र्शेश'र्वेर'।

#### नहत्रास्त्र सुवासुकार्स्य विवा

खॅ. शुन्रः श्री शः सेंद्रश्चा विष्ठः श्री विष्ठः श्री

মাধ্যমান (ব্ৰান্ত্ৰ মূলানমূল ব্ৰাম্বান্ত্ৰ বাৰ্ত্ৰ মূলানমূল মৌন্ন নর্মিন )বি

शेश्वश्च व्यक्तः स्ट्रेन्स् ।

श्चरः तुः वृत्रः त्रश्च स्ट्रेन्सः स्ट्रेन्सः

नन्गाम्वत् में न्यो निर्देश्वेन पर्ये स्वेत् स्वेत

निन्म (ब्रिंग्य अर्थ पर्यो निवे सूगा नस्य प्रमास्य स्थित ग्री मिर्दे प्रमाने निम्म निस्य हैं नि

दर्शेन्द्रिन्द्र्याने प्रम्थन्त्र । स्थित्र स्थ्या प्रम्थन्त्र स्थ्या प्रम्थन्त्र स्थ्या स्या स्थ्या स्या स्थ्या स्थ्या

र्ट्सान्य अवाश्वास्त्र व्यास्त्र व्

देवः र्से के त्यः र्से नाश्चार देवः देवः तुः क्षा क्षेत्रः त्यह् नाः प्रदेः न्युः क्षेत्रः से ना विद्यान्तः त्या क्षेत्रः त्य क्षेत्रः त्या क

श्चारत्यसर्गियायव्यस्य स्वर्धाः स्थ्यायदेश्याय्याय्यस्य स्वर्धाः स्थ्यायदेश्याय्यस्य स्वर्धाः स्थायदेश्यायदेश्याय्यस्य स्वर्धाः

शुःत्र्या वित्र स्त्र त्या वित्र स्त्र त्या वित्र स्त्र त्या वित्र स्तर स्त्र त्या वित्र स्त्र स्त्र त्या वित्र स्त्र स्त्र त्या वित्र स्त्र स्त्र

र्रे सर्वोद्गः से द्राप्तित्र वित्राः से से से स्थित । से सर्वोद्गः से द्राप्तित्र से द्राप्तित्र से से से स्थित ।

गहिरापा (वर्त्त्र प्रवे त्वा मुन पर वर्षे का) या गहिरा

५८.मू.(श्चिरः क्षेत्रे र्र्न्न्र्न्न्न्र्र्न्न) या पाशुस्रा

ধ্রব্ স্কের্না মার্ম শ্রের্না মার্ম নের্ম্র নের্ম নের

५८:सॅ (स्व क्षंग्रा इंच यर वर्षे च ) य प्रे

५८.स. (हेब.रेज.वर्च्य.क्ट्रिय.

शेर्यश्युव्यश्यश्यः वर्षः वर्षः विद्या । इत्राह्यं क्षेत्रः वर्षः व्यवः विद्या । इयाः हर्षे द्रायः स्वतः व्यवः विद्या । ह्याः हर्षे द्रायः स्वतः व्यवः विवा ।

### वस्याः स्ट्रिन् स्याः स्ट्रिन् । वस्य स्ट्रिन् स्ट्रिन् ।

र्हेश श्रुवः हु शें द्रायः विदेश व्याविश्व श्रुवः विद्रायः व्याविश्व श्रुवः विद्रायः विद्राय

गहिरापा (वळे न से द के र म् ने न हे द सुत सुस के मूस सर न हें न ) दे।

र्हेन्यः सेन् छिन्यस्य । स्टान्यनः दुः विश्वितः स्ट्रिया । सेस्र अस्य उव्यावित्यहेन् स्ट्रिन्द्वा । ने न्यायावित्यहेन् स्टेव्य सेन्यं स्ट्रिया ।

स्व रहं व रें निया से निविद्या से निविद्य

न्गवः श्रुचः उदः चादः चा श्रुचा शः ददः या ।

म्ब्रम्थान्त्र स्त्र श्रुं अस्त्र स्त्र स

कः श्रार मी श्रास्त्र श्रास्त्र श्रास्त्र देन स्त्र स

निवं सं (५वे न सुव सुव स्व सं स्व म्य स्व स्व सं न ) वि व निवा निवं निवं निवं स्व सं स्व स्व सं स्

वट्ट क्रिया क्री से स्वर्थ में स्वर्थ क्रिया क्रिया क्रिया क्री क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्र

र्श्याश्वायामुन्द्रभ्यापात्रम्यस्थाउन्भूत्रभात्रभात्रे ह्या हुः न्यो प्राचेन

गिर्हेश्यः (धरद्यायवेष्यस्य विष्य स्वर्धः वः) यः गिर्हेश्य वरः यसः श्रुवः यदेः वस्य श्रुवे रः सुवः र्केषा शः प्राः श्रुवः यरः श्रुवः यः प्राः स्वर्तः क्रेवः रूपः विष्य विषयः क्रेवः सेपः श्रुवः यदः श्रुवः यदः श्रुवः य

५८.सू. (बर.जम.भूव.सदे.चनम.भूर.सूव.कू.व.मर.भूव.सर.भूव.स.)

च्रा-कुन-श्रेस्रश-दूर-श्रे-त्रव्य-विदः।।

ह्य इंग क्रिया के विष्य का क्ष्म

शेश्रश्चर्गुन्युन्द्रिन्द्र्याणे शेश्रश्चर्यं शेष्ट्रव्यव्यक्षेत्र्यं व्यव्यक्षेत्र्यं व्यव्यक्षेत्रं व्यवस्यक्षेत्रं विष्ठेत्रं विष्यक्षेत्रं विष्ठेत्रं विष्यवेत्रं विष्ठेत्रं विष्ठेत्यं विष्ठेत्रं विष्यवेत्रं विष्ठेत्रं विष्ठेत्रं विष्यं विष्ठेते विष्ठेत्रं विष्ठेत्रं विष्ठेत्रं विष्ठेत्रं विष्ठेत्रं विष्ठेते विष्ठेते विष्यं विष्ठेते विष्ठेते विष्यं विष्ठेते विष्यं विष्यं विष्यं विष्यं विष्य

यरयाक्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्या

नर्राचे त्यमा इसमा श्रूरानर रेविन ।

वीश्रमः (विष्यः भ्रवयः विष्यः निष्यः विष्यः विषयः विष्यः विषयः विषयः

क्टर विद मार्वे द पर वि न मर मर्थे न में।

५८:में (क्रं-देर:बेर:ब्रॅंट्ग्ग्रे:ब्रेंच्ग्हेब:द्यास्त्रम्यःवर्श्यःवः)दे।

शेस्रशास्त्र में 'द्या' वस्रशास्त्र दे। कें प्यर द्रममा से द से र न स स्विमा ह्या हु नदे नद वर्के वशुर विदा।

दक्षे नदे श्वापार मुना स

सेसस उत्रे द्वा वस्र राज्य दे द्वा वस्र राज्य विकास राज्य विकास राज्य विकास राज्य विकास राज्य विकास राज्य विकास वशकें विराधनात्रेन सेर सेर से बुन वस विवाकें सेर न ने विराह्मा हुनि ने नर्वे नर्वे नर्वे र्वे र्वे र्वे न्वे न्वे न्यू प्रमान्य विष्य

> न्यगान्यस्थित्यो क्षेत्र स्था कें रासूत र्सेनारा पराया पार पार पीरा। र्धेग्राम्यस्यमः वस्यमः उत्पातः नरः वैना। वस्र राज्य प्रमान नार्भेना'स'त्य'र्सेनार्स्य सेन्'र्भ'त्र'। यगासवियाधूरासहसारी दुस्ति।

#### रदःमिवन प्रद्यार्थे रामान्या शुरुषे मा

प्रमानम्भानित्वी भ्रीत्रेत्रम्भान्यः स्वाप्तः स्वापतः स्वापतः

वित्रं श्री प्रश्नेयावित्रं स्थित् प्रश्नेया ।

न्तरकुन से समान्यत सर में न्या

रटानी खेनाया स्थाया स्ट्रेट्या द्वा

#### বক্সর'মম'মইন'মম'নপ্রদাম'ফুম'উনা।

र्केश्वाश्वरः प्रदेश्वर्षितः श्रीः पृश्चियः यूर्वतः श्री सः विष्यः यूर्वः स्वाश्वरः स्वश्वरः स्वाश्वरः स्वाश्वरः स्वाश्वरः स्वाश्वरः स्वाश्वरः स्वाश्वरः

स्यायत्यय्ययः यहः क्षेत्रः यहः वि । विराद्याय्ययः यहः विष्यायः यहः वि । विष्यायायः ययः यहः क्षेत्रः यहः स्था

#### कुत्रं भे प्रकर् प्रमः विषा

चुनः भेप्तः वित्रः वित्रः कुनः भेस्रश्रान्यः श्रूनः श्रुर्यः वित्रः वित

ग्रुअ'रा'(नर्गेशप्रवे'र्षे नुन्ह्रा बैराम्बेन्य बे नर्में ना)दे।

क्रिंश्सून परि समुद्र में दर् नुः भूषा पर नु सा शुः कर परने न सा भिराया

श्चरः ह्रेस्य स्वतः वि नवि स्वतः स्

यम्यायः प्रदायायः प्रदायः स्वायः स्वायः प्रदायः स्वायः प्रदायः स्वायः स्वयः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वयः स्वयः स्वयः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वयः स्

निहेश्यः (वेष्वनाक्षः स्वर्वे द्वर्ति वर्षे वर्

नगे'यन्त्रभी'र्नेत'न्धेर्यस्य प्राप्त प्रमे'स्य प्रमे'स्य प्रमे'स्य प्रमे'स्य प्रमे प्रमे

५८:सॅ (५ने व्द्वः क्रेन्द्र हु र न क्रेन्न)दे

यार्ड्यायमा। मिरः इस्रश्रार्थ्यम् यार्थ्यायम् । मिर्ज्ञ्व स्याः मिर्ज्ञ्व स्थाः स्याः स्य

गईना स्वा । तर व नाव स । यदे । द्र्यो । यत् व । इस । या स्वा । या स्व । या

गहिरापा (५ने क्विंप्से में देव ५, नर्के न ) दे।

नश्चनः प्रति । विश्वनः विश्वन

#### रोसरादे यारा रुटार्झे सागुर हेगा

नश्चनःसःसःस्रस्यः स्त्रस्यः स्त्रस्यः स्त्रिः स्त्रिः द्वोः श्चितः स्त्राः स्वाः स्त्रस्यः स्त्

गशुस्रास् (५वे क्विंद्या स्विः द्वा ५ वर्षे वर )दे।

न्योः श्रॅन्यः इस्याः इन्यः विन्। । वस्रमः न्न्यं विन्। ।

न्वे क्रिंट्य इस्र के क्रिंच्य के क्रिंट्य क्रिं

नवि'न'(द्धाराध्यमासुन्सुमार्क्षेन्यमानमानर्क्षाना)दे।

मन्त्रः भन्तः भन

क्रुन्दे थिंदशस्य स्वाप्तापान्ता।

मुंग्राम्यम्यम् गुन् तुः म्यायायः सर्भेग।

दे न्य अधि अर नि । यह वा के नि अर म्य अर नि स्था नि स

य्र'रा'(वन्रमानुनन्देन्यवार्येदमार्श्वेद्नम्यन्तर्थेन्य)ते।

द्यायात्र स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप

त्वःश्रॅटः गोः श्रुवाः नश्र्यः श्राह्यः विदः श्रॅः वाश्रुश्रः श्रीवः यशः द्वाः प्रदेः न्यादः न्यादः विदः श्रीवः यशः श्री

श्रेश्राच्यात्र श्रेश्या । श्रेश्राच्यात्र श्रेश्या । श्रेश्राच्यात्र श्रेश्या । श्रेश्राच्यात्र श्रेश्या । स्वा : तृ : तृ : तृ तृ : श्रुश्या ।

न्गे'नःहे'श्रेन्'र्लन्'नदे'स्त्र्य्यस्य स्वाध्य स्वाध

सरमानुसानुः सहर्पायात्रमानुत्रा । देवावनुनायमानुं निर्दे। ५८:में (ब्रह्म सेसम न्ययः इसम ग्री नित्र देव प्रमुन पर निर्देश नि

### त्रम् द्वार्थं स्थान्य स्थान स्थान

तश्रवः वर्डे शःवर्दे । वहस्रश्रायः श्रायाः श्रायाः वर्षे । वर

गहिरामा (सरसाम् सामी सहरामा सबराधित सरानर्थे ना)दे।

### सर्वेत्र सं धि शही नाट द्वे दिश्या।

ग्रुअपः (१५४-४८-भी निबेदः द्वानामर निर्देशनः)दे।

## ने निविदास्य अप्यास्य अप्य अप्यास्य अप्यास्य अप्यास्य अप्यास्य अप्यास्य अप्यास्य अप्यास्य अप्यास्य अप्यास्य अप

ने निवेद ने प्रत्येष्ठ या । यह निवेद ने प्रत्येष्ठ या । गहेशःमः(रस्त्र्न्य्वर्मः नः)यः पदी

यात्र अभूत्र भी । यात्र प्राप्त क्षेत्र प्राप्त भी व्याप्त क्षेत्र प्राप्त भी व्याप्त क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र क्षेत्त

५८.स्. (विषकाः स्रेचकाः क्षेत्रकाः क्षेत्रकाः क्षेत्रकाः )

नन्याः ग्राम्यम् अपन्यादः देवः श्रीया।

श्रान्त्राद्याद्यस्त्रा । इत्राप्त्राद्याद्यस्त्रा

रनः तृ: हुरः नः वैनः धरः विना

नन्गाने । ता त्र भारत रें ता देशा की त्र भारा त्र भारत स्था भारत स्था ति दा

यर्गन्यर वर्षे नर विष् । के रचया गुव हि सुव यर के यर की र विष । के रचया गुव हि सुव यर के यर की र विष ।

বাট্ট্রমান (বহমান্র দ্রদ্ধান্ত্রমান্ত

यारः कें निष्ण नरः वर्ते नः यवस्य । इतः वनः तेः नरः वर्ते नः त्याः पा । सर्वो वः वें । वहस्य न् व्यन्तः वें ने । यो गाया से नः वर्षा ।

ग्रुअ'रा'(बुद्रक्तःसेसस्द्रिद्र्यःस्याम्स्याम्स्यूर्वःयः)दे

श्चित्रायात्र स्वर्थः व्यायात्र स्वर्थः यात्र स्वर्थः यात्र स्वर्थः यात्र स्वर्थः यात्र स्वर्धः स्वर्धः यात्र स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स

मुंग्राम्य दुः व व संस्थित सम्राम्य मातृ ग्राया सिरो से स्राया उव ग्राव

श्ची मान्या भूनया प्रतास्य प्रमानी प्रति भून प्रति श्चित्र प्राप्त प्रति भून प्रतास्य प्रमानी भूति प्रतास्य प्रतास्य प्रमानी भूति प्रतास्य प्रमानी भूति प्रतास्य प्रतास प्रतास्य प्रतास प्रतास्य प्

देशेन्यवित्रवान्त्रेयान्त्र्यान्त्रयान्यत्यान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्यान्त्रयान्त्रयान्यत्यान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्यान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्यान्त्रयान्त्रयान्यत्यान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्यान्त्यान्त्रयान्त्रयान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्यत्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्रयान्त्यान्त्यान्यत्यान्त्यान्त्यान्यत्यान्यत्यान्यत्यान्यत्यान्यत्यान्त्यान्यत्यान्त्यान्यत्यान्यत्यान्त्यत्यान्यत्यान्त्यत्यान

तर्वे नितः श्रुवा नश्रूवा नश्यूवा नश्

दर्शे निर्देश । विरक्षित्र से स्था निरक्षित्र से स्था निरक्ष से स्था निरक

মা প্র্রামান (বই বরি দেলুদ লাব্ম বঞ্চ্ব দা ক্রম দরি ইব দ্ব দর্শ ব ) বি

तर्वे निर्म्य स्वाप्त स्वाप्त

न्गे'न'हे'श्रेन'र्धन'र्यते'श्रेन्यं प्यानहेत्रत्यं पर्यो निर्म्यानश्यः वययाउन्'येययान्याः त्रुं सेन्यते'श्रेत्यां यात्रेत्याः यात्र्याः यात्र्याः यात्र्याः यात्र्याः यात्र्याः यात्र नाव्ययाः हेन्यान्यत्यां निर्मान्यां स्थेत्यां यात्र्याः यात्याः यात्र्याः यात्र्याः यात्र्याः यात्र्याः यात्र्याः यात्र्याः यात्र्याः यात्र्य

ग्रुअ'म'(नगवद्वेब हे अ शुद्ध प्रश्वापतळवान)दे।

### ग्रान्यो देव छी य द्यो हिं प्रश्नुमा

वह्रमानवे न् जुरुमान्य सुमानकं या वे ।

नन्गाः क्रेवः न्योः नदेः निष्याः विष्यः विष्यः । विषयः । विष्यः । विष्यः । विषयः । वि

यार यो देव छी अ यह या दर या।

#### न्नो नदे न ने यायदर नन्ना स्ना प्रकार केया।

म्चेर्यस्थाः भ्वेष्यः स्वेष्ट्राच्ये । विद्यान्त्रः स्वेष्ट्रः । विद्यान्त्रः स्वेष्ट्रः । विद्यान्त्रः स्वेष्यः विद्यान्त्रः । विद्यान्तः । विद्यानः । विद्यान्तः । विद्यानः । विद्यान्तः । विद्यानः । विद्य

गहिरामा (वेदिवे सळ्वा) दे।

### त्रहार्यस्थात्र स्थात् । वर्ष्ट्र प्राचेश्वात्र स्थात् ।

यह स्वाया स्वया स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वाया स्वया स्वाया स्वया स्

निवःपः(महणणेर्द्रमः)यःगिष्ठेश। नश्रुवःनर्डेशःगारःगेशःसह्दःपःद्राः। ग्राटःगेशःनश्रुरःनदेःद्ध्यः

५८:सें (नमूद्र नहें सम्मानमे सम्मान भे

न्त्रः कुनः श्रेसश्चान्द्रः श्चेत्रः स्वानः स्व

बुगन् भी स्वत्यं स्वत्यं विक्रित्यं स्वत्यं स्वत्यं विक्रित्यं स्वत्यं स्वत्य

भ्रे अ श्रुव् न्य न्त्र क्षेत्र क्ष्य क्षेत्र क्ष्य क्षेत्र क्ष्य क्ष्य

हेव'य्युट'स्वर'य्य'हे'त्वेव'ग्य्य'सं'र्ज्या । स्यग्य'सर्केग्य'ग्रेय'म्युत्र'य्य'हे'त्वेव'र्।। स्रित्र'य्युट'स्वर'य्य'हे'त्वेव'ग्य्य'स्'र्ज्य्या। हेव'य्युट'स्वर'य्य'हे'त्वेव'ग्य्य'सं'र्ज्य्या।

यक्ष्यामे वित्र स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स

हेव'यग्नुर'सवय'द्रर'ञ्चय'चये'द्र्या । सर्वेव'र्स'त्रुपुत्रुच्यवेद'राहे'चवेव'र्।। सरसामुस्य स्थाप्त्रुप्त्रियाचे प्रवेष्ट्रा।

#### न्वें रमायायेयायः है निवेद्यास्य नर्नि ।

यदेरःयनदःद्योःनःस्यःद्यारःकेःर्षिदःदेश। श्रेदःविदेःसुद्रःयशःनकेदशःयवेःवर्शेःनःह्यश।। श्रुदःकुनःसर्केषाःश्रेद्धंदःयःदेरःविष्यशःवश।। श्रेष्यवश्राद्धःद्यस्थःयःर्षेन।

वित्यर्भ्यायाः नेत्र्याक्षः स्वयः वित्यस्यः वित्यक्षः वित्यक्षः वित्यक्षः वित्यक्षः वित्यक्षः वित्यक्षः वित्यक्षः वित्यक्षः वित्यक्षः वित्यः वित्यः

धीयोयित्रेश्वान्त्रें स्थान्त्रें स्थान्त्रें त्र स्थान्त्रें स्यान्त्रें स्थान्त्रें स्थान्त्रें

भैगार्चे र-प्र- क्ष्मार्भे प्रतेष प्रमेष प्रमाणि प्रतेष प्रमेष प्रमाणि प्रतेष प्रमेष प्रमाणि प्रतेष प्रमेष प्रमाणि प्रमेष प्रमेष प्रमाणि प्रमेष प्रमाणि प्रमा